दुर्गार्चन सृतिः

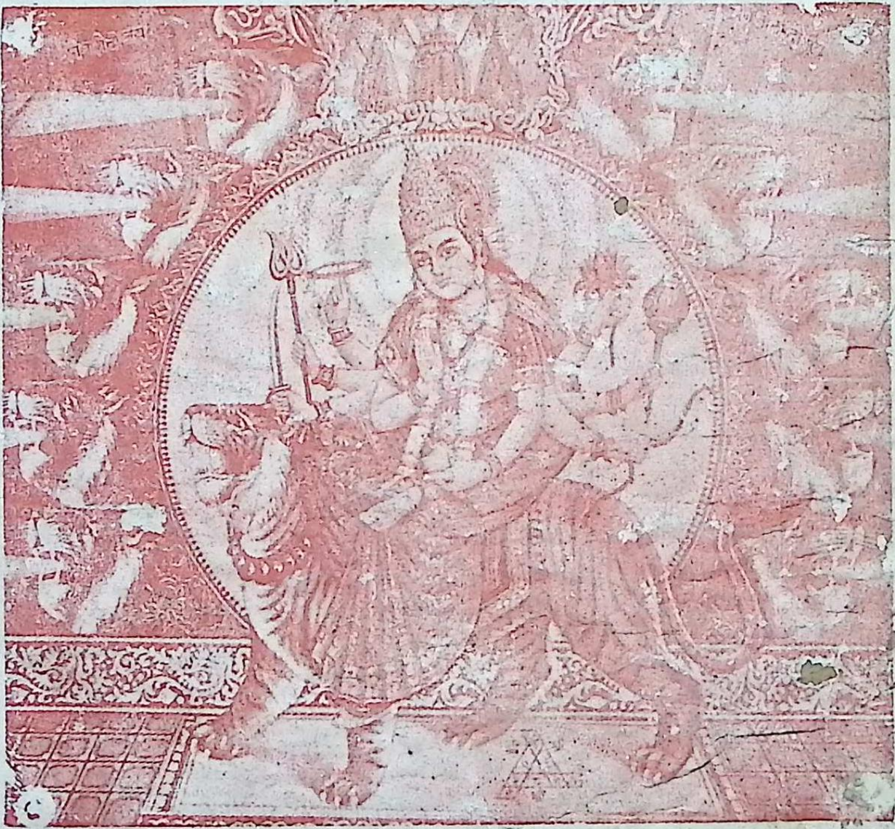

माधव पुस्तकालय
१०३-ए, कमलानगर, दिल्ली ११०००७

जै माता शेरों वाली

श्री लक्ष्मीनारायण गोस्वामी
संगृहीत

दुर्गार्चन सृतिः

संशोधक :

श्रीकण्ठ शास्त्री
एम० ए० व्याकरणाचार्यः
धर्मधाम, कमलानगर, दिल्ली

प्रकाशक—

श्री रामानन्द सुशीलकुमार गुप्ता
श्री सुनीलकुमार सुदर्शनकुमार गुप्ता
बी २/१४५ पश्चिम विहार, नई दिल्ली

मुद्रक : सतीशकुमार कौशिक, धर्मप्रेस कमलानगर दिल्ली-७

पुस्तक मिलने के पते—

श्री रामानन्द सुशीलकुमार गुप्ता
बी २/१४५, पश्चिम विहार, नई दिल्ली

□

जगदम्बा ट्रेडर्स एंड इंजिनीयर्स
शिव मार्केट, वजीरपुर, दिल्ली

□

मैसर्स उमा आयरन एंड स्टील कं०
पीतमपुरा, दिल्ली–३४

□

माधव पुस्तकालय
१०३-ए, कमलानगर, दिल्ली

न्योछावर : १५ रुपये

परन्तु यह पुस्तक संस्कृतज्ञ दुर्गा प्रेमीजनों को निःशुल्क दी जाती है ।
डाक से मंगाने के लिये ३॥) पोस्टेज हेतु भेजें ।

चैत्र नवरात्र २०३८

प्रकाशकीय वक्तव्य

श्रद्धा और विश्वास के सोपान से मनुष्य भक्तिमार्ग पर पहुंचता है परन्तु इसके लिये ईश्वरीय प्रेरणा अवश्य होती है। रामचरित मानस में आया है : 'बिनु सत्संग विवेक न होई, राम कृपा बिनु सुलभ न सोई'। सत्संग की प्राप्ति भगवान् की कृपा के बिना नहीं होती और सत्संग के बिना विवेक नहीं होता। किन्तु सत्संग प्राप्ति के मूल में ईश्वरीय प्रेरणा ही है।

मां वैष्णवी की असीम कृपा से सितम्बर १९८० में मां के दरबार में ही मुझे पंडित प्रेमनाथ शर्मा तथा पंडित ताराचन्द शर्मा का सान्निध्य प्राप्त हुआ, तथा उनकी कृपा, प्रेरणा, मार्ग दर्शन से मुझे दुर्गा सप्तशती महायज्ञ समारोह में सम्मिलित होने का अवसर मिला। मैं माता की अपार कृपा का प्रसाद समझकर दिनांक ९-१०-८० से १८-१०-८० तक मां वैष्णवी देवी के चरणों में २५ महान् याज्ञिक विद्वानों की सेवा में रहा। वहां जिस पुस्तक के द्वारा यज्ञ कार्य होता था, उसको भी देखने का सुअवसर मिला। वह पुस्तक देवी आराधना के लिये सभी प्रकार से पूर्ण तथा आदर्श थी। विद्वानों ने बताया कि यह पुस्तक ५० वर्ष पूर्व विद्या धर्म–वर्धिनी पाठशाला आगरा से प्रकाशित हुई थी और अब अप्राप्य है।

पंडित ताराचन्द शर्मा तथा पंडित प्रेमनाथ शर्मा की प्रेरणा से सेवक को निरन्तर लगन लग गई कि यह दुर्लभ ग्रन्थ अवश्य प्रकाशित एवं वितरित होना चाहिये। इसके लिये पूर्व प्रकाशक विद्या धर्म वर्धिनी पाठशाला आगरा को प्रकाशन की अनुज्ञा प्रदान करने हेतु प्रार्थना की गई। दो मास तक उनके उत्तर की प्रतीक्षा करके 'मौनं स्वीकृति लक्षणम्' मानकर जनोपकार के लिये इस ग्रन्थ को प्रकाशित करने का उपक्रम किया गया। प्रसन्नता का विषय है कि माता की असीम कृपा तथा गुरु आशीर्वाद से आज यह महान् ग्रन्थ आप भक्तजनों के सम्मुख है।

यह ग्रन्थ निःस्वार्थ भाव से भक्तजनों में वितरण के लिये प्रकाशित किया गया है। इच्छुक सज्जन निम्न पते पर सम्पर्क करने का कष्ट करें।

अन्त में मैं धर्मप्रेस, कमलानगर दिल्ली के अध्यक्ष श्री श्रीकण्ठ शास्त्री का हार्दिक आभार व्यक्त करता हूं जिन्होंने अतीव परिश्रम करके इसे समय पर और शुद्ध रूप में मुद्रण करके इस कार्य में हमें सहयोग दिया है।

बी-२/१४५, पश्चिम विहार,
नई दिल्ली-६३

माँ वैष्णव देवी का सेवक
रामानन्द

वैष्णवी देवी आरती

हे मात मेरी, हे मात मेरी
कैसी यह देर लगाई है दुर्गे। हे मात मेरी··
भव सागर में गिरा पड़ा हूँ
काम आदि ग्रह में घिरा पड़ा हूँ
मोह आदि जाल में जकड़ा पड़ा हूँ। हे मात मेरी···
न मुझ में बल है न मुझ में विद्या
न मुझ में भक्ति न मुझ में शक्ति
शरण तुम्हारी गिरा पड़ा हूँ। हे मात मेरी···
न कोई मेरा कुटुम्ब साथी
ना ही मेरा शरीर साथी
चरण कमल की नौका बनाकर
मैं पार हूँगा खुशी मनाकर
यमदूतों को मार भगाकर। हे मात मेरी···
आप ही उबारो पकड़ के बाहों
हे मात मेरी हे मात मेरी
सदा ही तेरे गुणों को गाऊँ
सदा ही तेरे स्वरूप को ध्याऊँ
नित प्रति तेरे गुणों को गाऊँ हे मात मेरी···
न मैं किसी का न कोई मेरा
हे मात मेरी। हे मात मेरी
शरण में पड़े हैं हम सब तुम्हारी
करो यह नैया पार हमारी
कैसी ये देर लगाई है दुर्गे। हे मात मेरी···

प्रकाशक

जगदम्बा माता के अनन्य सेवक

श्री रामानन्द गुप्त

पश्चिम विहार नई दिल्ली

प्रकाशन प्रेरक

पं ताराचन्द शर्मा सुपुत्र पं भगतराम शर्मा

नंगल (कड़ा) वैष्णवदेवी निवासी

विषय सूची

विषय	पृष्ठ
कलशस्थापन विधिः	१
गणेशादि देव स्थापन यंत्र	२
स्वस्तिवाचन	४
संकल्प	७
गणेशादि पूजन	८
प्रधान कलश-स्थापन वेदोक्त	१३
सामान्यार्घं कलश स्थापन	१८
श्रीसूक्तसे स्वदेह न्यास	२०
अग्न्युत्तारण विधिः	२१
प्राणप्रतिष्ठा	२२
वेदोक्त दुर्गा पूजन विधिः	२५
नव दुर्गा पूजन	३७
ज्योति पूजन	३९
नवकुमारी पूजन विधान	४०
घटार्गल यन्त्र चित्र	४६
दीप विघ्ने शान्तिः	४८
कलश विसर्जन विधिः	४८
नीराजन (आरती)	४३
मन्त्र पुष्पाञ्जलि	५६
दुर्गा गायत्री	५७
शान्ति स्तव पाठ	५८
देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रम्	५९
दुर्गा आपदुद्धाराष्टकम्	६१
संकष्टनाशन स्तोत्रम्	६२
अभिषेकः	६३
सरस्वतीस्तोत्रम्	६४
सांकल्पिक नांदी श्राद्ध प्र०	६५
सूतक में पूजन विधिः	६७
रक्षा विधानम्	७१
मन्त्र चैतन्यविधिः	७२
स्वशरीरे सिद्ध पीठ स्थान	७३
सूर्यार्घ्यं बिना पूजन निषेध	७४
यजुर्वेदी पुण्याहवाचनम्	७४
अष्टादशोपचाराः	७६
षोडशोपदशोपचाराः	७७
पूजनेवर्ज्यपदार्थाः	७८
गणेश स्तुतिः	७९
देवी स्तुतिः	८०
तान्त्रिक पूजन पद्धतिः	८६
कुण्डलिनी ध्यानम्	८८
कुल गुरु तर्पणम्	८८
इष्टदेव प्रार्थना	८८
पूजन	९२
कुल्लुका प्राणायाम	९५
भूत शुद्धिः	९६
स्वप्राणप्रतिष्ठा	९८
मातृका न्यासः	१०१
सृष्टि आदि न्यासः	१०५
शक्ति कला न्यासः	२०९
शिव कला न्यासः	११२
न्यासे मुद्रा विधान	११३
शक्तिषडङ्गमुद्रा	११५
षोढा न्यास०,	११६
तत्त्व न्यासः, अक्षर न्यासः	१२१
दुर्गा ध्यानम्	१२२
क्षेत्र कीलनम्	१२४
पञ्चमहाभूत बलिदानम्	१२७
यन्त्र पूजन प्रकारः	१२८
गुरु स्तव	१४१
आवरण पूजन	१४३

विषय	पृष्ठ
आयुध मुद्रा	१५२
आरती करने का क्रम	१६२
जप के लिये माला विधान	१६४
नवलक्ष का पुरश्चरण	१६५
दुर्गा शब्दार्थः	१६६
पाठक्रमः	१६९
पाठारम्भे शापोद्धारादिक विधि	१७१
उत्कीलनम्	१७२
नवार्ण मन्त्रार्थः	१७३
पल्लवादि नियमः	१७५
दुर्गा पाठारम्भः	१७७
शापोद्धार-उत्कीलनादि	१७९
शाप विमोचनादि	१८०
पुरश्चरणे १० प्रकाराः	१८२
पञ्चाङ्ग-उपासना	
परान्न भक्षणान्निष्फलता	१८२
कवचारम्भः	१८३
अर्गला तथा प्रयोग विधान	१९६
अक्षमालाक्रम	२१५
आसन विधान	२१९
संपुट करने का क्रमः	२२९
सिंह के शरीर में देववास	२२४
संपुट करने की विधि उदाहरण सहित	२२९
सप्तश्लोकी दुर्गा	१३१
चण्डिका दल	२३३
सप्तशती हृदय	२३५
अध्याय में इति न बोलना	२४९
अध्याय पूर्ति में आहुति विधान	२५०
महिषासुर की सूक्ष्म उत्पत्ति	२५१
भगवती की व्युत्पत्ति	२५५
नेत्रोपनिषद्	२६१
काली कवच	२६२
दुर्गा शतनाम स्तोत्र	२७७
हवन में कवचाहुति निषेध	२८५
पुरश्चरण हीन मन्त्रनिष्फल	२८७
यन्त्र पूजन विधिः	२८५
शुम्भनिशुम्भ की उत्पत्ति	२९१
तीन वार नमस्तस्यै का प्रमाण	२९३
कौशिकी ध्यान	३०८
ब्राह्मी आदि ८ शक्तियों के ध्यान	३२१
शिवदूती का ध्यान	३२४
रक्त वीज की उत्पत्ति	३२७
शुम्भनिम्भ वध इतिहास	३४०
अस्त्र प्रतिघातास्त्र	३४२
खीर का प्रमाण	३४७
त्रिविध उत्पात	२६२
उपांशु जप लक्षण	३७०
अन्त्यका श्लोक दो वार बोलना	३७३
क्षमापनम्	३८३
कुञ्जिका स्तोत्रम्	३९७
अनुग्रहे ९ श्लोकाः	४०४
सरस्वती कवच	४०५
नवार्ण भेदाः	४०७
प्रयोगान्तराणि	४०७
विजया दशमी यात्रा पूजन	४१०
छाया पात्र दान विधिः	४१३
सर्वतो भद्र मंडल पूजन	४१५
क्षेत्रपाल बलिदान विधिः	४१८
पंच भूसंस्कार	४२०
कुशंडिका विधिः	४२१
पूर्णाहुतिः	४२६
आशीर्वाद	४२८

प्राक्कथन

हिन्दू जाति का जीवन-धन सदा धर्म ही रहा है। यह जाति धर्म के लिये अपने को मिटा देना, धर्म पर अपने को न्यौछावर कर देना सदा सर्वोपरि कर्त्तव्य कर्म और परमधर्म समझती आती रही, इस बात के प्रमाणों से पुराणेतिहास ग्रन्थ भरे पड़े हैं। जब तक हिन्दुओं का धर्म पर अटल विश्वास था, जब तक हिन्दु श्रुति (वेद) स्मृति, पुराण, इतिहास प्रतिपाद्य सनातन धर्म के अनन्य भक्त थे, तब तक धर्म भी उनकी पग-पग पर रक्षा करता था, यह निर्विवाद सिद्ध है। परन्तु जब से हिन्दुओं की आस्था धर्म पर से हटनी प्रारम्भ हुई, जब से हिन्दुओं के धर्म-बन्धन ढीले हुए, जब से धर्म को तर्क की कसौटी पर कसा जाना प्रारम्भ हुआ, तब से धर्म ने भी इसका साथ देना छोड़ दिया और उसी का यह परिणाम हो रहा है कि हिन्दू जाति आज संकटापन्न अवस्था में है और इसकी आज वही दशा हो रही है जैसी किसी नाव की बिना केवट के होती है।

भगवान् मनु ने अपनी स्मृति में स्पष्ट शब्दों में कह दिया है कि—

धर्म एव हतो हन्ति, धर्मो रक्षति रक्षितः।
तस्माद्धर्म्मो न हन्तव्यो, मा नो धर्मो हतोऽवधीत् ॥

(मनु० अ० ८ श्लो० १५)

अर्थात् नष्ट हुआ धर्म ही नाश करता है और रक्षित किया हुआ ही रक्षा करता है। नष्ट धर्म कहीं हमें नष्ट न करे, इसलिए कभी धर्म का नाश नहीं करना चाहिये, क्योंकि—

एक एव सुहृद्धर्मो, निधनेऽप्यनुयाति सः।
शरीरेण समं नाश, सर्वमन्यद्धि गच्छति ॥

(मनु० अ० ८ श्लो० १७)

अर्थात् एक धर्म ही ऐसा मित्र है जो मरने पर भी साथ जाता है और सब तो शरीर के साथ नष्ट हो जाते हैं। धर्म अच्छा है या बुरा इस पर तर्क वितर्क करने की कोई आवश्यकता नहीं। जिस धर्म को हमारे (पूर्वज) पुर्खा मानते आये हैं उसी को हमें मानना चाहिये क्योंकि भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र आनन्द-कन्द ने अपने श्रीमुख से गीता में स्पष्ट कह दिया है कि—

श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात् ।
स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः ॥

अर्थात्

हो परधर्म रुचिर, गुणवाला, पर स्वधर्म निर्गुण भी श्रेय।
मरना भी शुभ है स्वधर्म में, धर्म पराया भयप्रद हेय ॥

इसलिए प्रत्येक जाति वालों को, यदि वह अपना कल्याण चाहते हैं, तो अपने-अपने धर्म का पालन बिना किसी प्रकार के ननु नच तर्क वितर्क और सन्देह के, करना चाहिये तभी वह निस्सदेह सुखी हो सकते हैं। भगवान् मनु ने अपनी स्मृति में लिखा है कि—

आचारः परमो धर्मः, श्रुत्युक्तः स्मार्त एव च।
सर्वस्य तपसो मूलमाचारं जगृहुः परम् ॥

अर्थात् वेद और स्मृति में प्रोक्त आचार ही परमधर्म है। वही सब तपस्याओं का मूल है। जो मनुष्य सदाचारपूर्वक रह कर अपने-अपने उपास्यदेव की आराधना करता है वह सकल वाञ्छितफल प्राप्त कर अपने जीवन को सफल बनाता हुआ अन्त में भगवान् के परमधाम में पहुंच जाता है।

सनातम धर्म में मुख्यतः पांच उपास्यदेव माने गये हैं, जैसे :—

आदित्यं, गणनाथञ्च, देवीं रुद्रञ्च केशवम्।
पञ्चदेवत्वमित्युक्तं सर्वकर्मसु पूजयेत् ॥

भगवान् सूर्य, गणेश, दुर्गा, शंकर और विष्णु। परन्तु कलियुग में 'कलौचण्डीविनायकौ' के अनुसार गणेश और चण्डी अर्थात् दुर्गा की उपासना को मुख्य कहा गया है।

मातेश्वरी श्री दुर्गाजी परमेश्वर की उन प्रधान शक्तियों में से एक हैं जिनको आवश्यकतानुसार समय-समय पर उन्होंने प्रगट किया है, जैसे—

एकैव शक्तिः परमेश्वरस्य, भिन्नाचतुर्धा व्यवहार काले।
पुरुषेषु विष्णुः भोगे भवानी समरे च दुर्गा प्रलये च काली॥

उसी परमेश्वर की दुर्गा शक्ति की उत्पत्ति तथा उसके चरित्रों का वर्णन मार्कण्डेय पुराणान्तर्गत देवी माहात्म्य में है। वह देवी माहात्म्य ७०० श्लोकों में वर्णित है। अतः वह माहात्म्य 'दुर्गा सप्तशती' के नाम से लोक में विख्यात है। उसी माँ दुर्गा शक्ति की उपासना भारतीय चिरकाल से करते चले आते हुए शक्तिशाली बने हुए थे। इसीलिए माँ के चरित्र में वर्णित है कि:—

या देवी सर्व भूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः॥

जब तक माँ अपने उपासकों में शक्ति रूप होकर स्थित थी तब तक किसी की सामर्थ्य नहीं थी जो सामने आ सके और जो कोई आया भी तो उसने वह मुँह की खाई कि छटी का दूध याद आगया।

दुर्गा सप्तशती

श्री वेदव्यास रचित मार्कण्डेय पुराणान्तर्गत दुर्गा सप्तशती विविध पुरुषार्थ साधिका, कर्मोपासना ज्ञानोत्तम सिद्धान्त प्रतिपादिका, वेद वेदांग वेदान्त तत्व प्रकाशिका, सकल भक्ताभीष्ट वरप्रदा, अभयदा एवं अशरण शरणदा है। इसमें जिस विशद, विमल चरित्र का वर्णन है, उसका संक्षेप में वर्णन, हम अपने पाठकों की जानकारी के लिए, यहाँ करते हैं। वास्तव में अस्त्र-शस्त्र धारिणी श्री भगवती के जिस युद्ध का वर्णन वेद में समास रूप से है, उसी को श्री वेदव्यासजी ने अपने ज्ञान-

चक्षु द्वारा देखकर, मार्कण्डेयपुराण में विशद रूप से लिखा है। वह कथा तीन चरित्रों में वर्णित है और उसकी संक्षिप्त कथा इस प्रकार है:—

प्रथम चरित्र

दूसरे मनु के राज्याधिकार में 'सुरथ' नाम का चैत्रवंशोद्भव राजा राज्य करता था। शत्रुओं तथा दुष्ट मन्त्रियों के कारण उसका राज्य, कोष आदि सब कुछ उसके हाथ से निकल गया। राजा हतश्री होकर जंगल में चला गया और वहाँ 'मेधा' नामक ऋषि के आश्रम में पहुँचा। वहाँ पहुँचने पर भी राजा 'सुरथ' मोहवश प्रजा, पुर, शूर, हाथी, धन कोष और दासों की अर्थात् अल्प नाशवान पदार्थों की चिन्ता करके दुखी हुआ। राजा सुरथ की वही दशा हुई जो भगवद्भक्ति विहीन पुरुषों की हुआ करती है।

इसी 'मेधा' ऋषि के आश्रम में 'समाधि' नाम के वैश्य से राजा 'सुरथ' की भेंट हुई। यद्यपि यह वैश्य अपने धन लोलुप स्त्री पुत्रों द्वारा घर से निकाल दिया गया था तब भी उनके दुर्व्यवहार को भूल कर उनके वियोग में दुखी था।

इस प्रकार ये दोनों दुखी जीव 'मेधा' ऋषि की सेवा में उपस्थित हुए। शिष्टाचार पूर्वक अभिवादन कर के ये दोनों ऋषि के पास बैठ गए। राजा ने ऋषि से कहा—जिस विषय में हम दोनों को दोष दीखता है, उसकी ओर भी ममतावश हमारा मन जाता है। मुनिवर, यह क्या बात है कि ज्ञानी (बुद्धिमान) पुरुषों को भी मोह होता है।

महर्षि उनको मोह का कारण बतलाते हुए कहने लगे-इसमें कुछ आश्चर्य नहीं करना चाहिये कि ज्ञानियों को भी मोह होता है, क्योंकि महामाया भगवती अर्थात् भगवान् विष्णु की योग निद्रा (तमोगुण प्रधान शक्ति) ज्ञानी (बुद्धिमान्) पुरुषों के चित्त को भी बलपूर्वक खींच

कर मोहयुक्त कर देती है, वही भक्तों को वर प्रदान करती है और 'परमा' अर्थात् ब्रह्मज्ञान स्वरूपा है।

राजा सुरथ ने भगवती की ऐसी महिमा सुनकर, मेधा ऋषि से 'हे द्विज ! हे ब्रह्मविदांवर ! (ब्रह्मज्ञानियों में श्रेष्ठ) के सम्बोधन से तीन प्रश्न किये:—

(१) वह महामाया देवी कौन है ? (२) वह कैसे उत्पन्न हुई ? और (३) उसकी कर्म तथा प्रभाव क्या है ? मुनि ने उत्तर दिया:—

"नित्यैव सा जगन्मूर्तिस्तया सर्व मिदं ततम् ॥"

अर्थात् वह मूर्ति नित्या है, और उसी से यह सब व्याप्त है। तब भी उसकी उत्पत्ति देवताओं की कार्य्यसिद्धि के अर्थ कही जाती है।

प्रथम चरित्र की संक्षिप्त कथा

जब प्रलय के पश्चात् भगवान् विष्णु शेषशय्या पर योग निद्रा में निमग्न हुए, तब उनके कानों के मैल से मधु और कैटभ नाम के दो असुर उत्पन्न होकर हरि-नाभि-कमल-स्थित ब्रह्माजी को ग्रसने चले। तब ब्रह्माजी भगवान् की योगनिद्रा की षट्तुरीया शक्ति के रूप में सुन्दर सरस स्तुति (रात्रिसूक्त) परम प्रेम पूर्वक करने लगे और उसमें उन्होंने ये तीन प्रार्थनाएँ कीं—(१) भगवान् विष्णु को जगा दीजिये। (२) उन्हें असुर द्वय के संहारार्थ उद्यत कीजिये। और (३) असुरों को विमोहित करके भगवान् द्वारा उनका नाश कराइये। श्री भगवती ने स्तुति से प्रसन्न होकर ब्रह्माजी को दर्शन दिया। उस (योग निद्रा) से मुक्त होकर श्रीभगवान् उठे और असुरों को ब्रह्माजी को ग्रसने के लिए उद्यत देख उनसे युद्ध करने लगे। तदुपरान्त दोनों असुर योगनिद्रा से मोहित होगए और उन्होंने श्रीभगवान् से वर माँगने को कहा। अन्त में उसी वरदान के अनुसार वे न्भगवा के हाथों मारे गये।

इस कथा से श्री ब्रह्माजी ने यह उपदेश दिया कि जो भगवती की उपासना करते एवं कर्तृत्व के अभिमान तथा सुकृत-दुष्कृत रूपी कर्मफल को त्याग कर अपने विहित कर्म में प्रवृत्त रहते हैं उनका जीवन शान्तिपूर्वक निर्विघ्न रूप से व्यतीत होता है। यही ब्राह्मी स्थिति है, जिसे पाकर मनुष्य मोह-ग्रस्त नहीं होता। महर्षि मेधा; सुरथ राजा तथा समाधि नाम वैश्य दोनों जिज्ञासुओं के निराकरणार्थ कर्म के उच्चतम सिद्धान्त का निरूपण करके उपासना तथा ज्ञानयोग के तत्व को भगवती के अन्यान्य प्रभावों द्वारा वर्णन करने लगे।

मध्यम चरित्र

मध्यम चरित्र की कथा का सारांश इस चरित्र में ऋषि ने राजा सुरथ तथा समाधि नाम वैश्य के प्रति मोहजनितसकामोपासना द्वारा अर्जित फलोपभोग के निराकरण के लिए निष्कामोपासना का उपदेश किया है। चरित्र की संक्षिप्त कथा इस प्रकार है--

प्राचीन काल में महिष नामक एक अति बलवान असुर उत्पन्न हुआ। वह अपनी शक्ति से इन्द्र, सूर्य, चन्द्र, यम, वरुण, अग्नि वायु तथा अन्य सुरों को हटाकर स्वयं इन्द्र बन गया और उसने समस्त देवताओं को स्वर्ग से निकाल बाहर किया। अपने स्वर्ग सुख भोगैश्वर्य से वंचित होकर दुखी देवगण साधारण मनुष्यों की भाँति मर्त्यलोक में भटकने लगे। अन्त में व्याकुल होकर वे लोग ब्रह्माजी के साथ भगवान विष्णु और शिवजी के निकट गये और उनके शरणागत होकर उन्होंने अपनी कष्ट कथा कही।

देव-वर्ग की करुण कहानी सुन लेने पर हरि-हर के मुख से महत्तेज प्रगट हुआ। इसके पश्चात् ब्रह्मा, इन्द्र, सूर्य, चन्द्र, यमादि देवताओं के शरीर से भी तेज निकला। यह सब एक होकर, तीनों

लोकों को प्रकाशित करने वाली एक दिव्य देवी के रूप में परिणत हो गया।

विधि-हरि-हर त्रिदेवों तथा अन्य प्रमुख सुरों ने अपने-अपने अस्त्र-शस्त्रों में से दिव्य प्रकाशमयी उस तेजोमूर्ति को अमोघ अस्त्र-शस्त्र दिये। तब श्रीभगवती अट्टहास करने लगी। उनके उस शब्द से समस्त लोक कम्पायमान होगये।

तब असुर राज महिष "आः यह क्या है?" ऐसा कहता हुआ सम्पूर्ण असुरों को साथ लेकर उस शब्द की ओर दौड़ा। वहाँ पहुँच कर उसने उस महाशक्ति देवी को देखा, जिसकी कान्ति त्रैलोक्य में फैली है और जो अपनी सहस्र भुजाओं से दिशाओं के चारों तरफ फैलकर स्थित है। इसके पश्चात् असुर देवी से युद्ध करने लगे।

श्रीभगवती और उनके बाहन सिंह ने कई करोड़ असुर सैन्य का विनाश किया। तत्पश्चात् श्रीभगवती के द्वारा चिक्षुर, चामर, उदग्र, कराल, बाष्कल, ताम्र, अन्धक, अतिलोम, उग्रास्य, उग्रवीर्य, महाहनु, बिडालास्य, महासुर, दुर्धर और दुर्मुख—चौदह असुर सेनापति मारे गये। अन्त में महिषासुर, भैंसा, हाथी, मनुष्यादि के रूप धारण करके श्रीभगवती से युद्ध करने लगा और मारा गया।

अपने समग्र शत्रुओं के मारे जाने पर देवगण ने प्रसन्न होकर आद्या शक्ति की स्तुति की और वर माँगा—

जब-जब हम लोग विपद्ग्रस्त हों तब-तब आप हमें आपदाओं से विमुक्त करें और जो मनुष्य आपके इस पवित्र चरित्र को प्रेमपूर्वक पढ़ें या सुनें वे सम्पूर्ण सुख और ऐश्वर्यों से सम्पन्न हों।"

श्रीभगवती देवताओं को ईप्सित वरदान देकर अन्तर्धान हो गईं। इस चरित्र में मेधा-ऋषि ने इन्द्रादि देवगण के राज्याधिकार का अपहरण, आत्म-शक्ति द्वारा उनके दुःखों का निराकरण तथा पुनः

स्वराज्य प्राप्ति का वर्णन करके सुरथ राजा के शोक मोह के निवारण के लिए उसी आत्म-शक्ति की भक्ति का उपदेश किया है।

उत्तर चरित्र

मध्यम चरित्र में मोह का कारण कर्मफलासक्त देवों द्वारा दिलाया जाकर, उत्तर्म चरित्र में परानिष्ठा ज्ञान के बाधक आत्म मोहन अहंकारादि के निराकरण का वर्णन किया गया है।

उत्तम चरित्र की कथा का सारांश —

पूर्वकाल में शुम्भ और निशुम्भ दो महा पराक्रमी असुर हुए। उन्होंने इन्द्र का त्रैलोक्य का राज्य और यज्ञों का भाग छीन लिया। वे दोनों ही सूर्य, चन्द्र, कुवेर, यम, वरुण, पवन और अग्नि के अधिकारों के अधिपति बन बैठे और उन्होंने सुर समाज को स्वर्गलोक से निकाल दिया। तब बड़े ही दुखी होकर सशोक देवतागण मृत्युलोक में आए। देवताओं को बार-बार का यह क्लेश अत्यन्त असहनीय हुआ और वे सदा के लिए इससे छुटकारा पाने का उपाय सोचने लगे। अन्त में वे हिमाद्रि पर्वत पर जाकर दयार्द्र हृदया श्री दुर्गा देवी के चरण कमलों की दिव्य ज्ञानमयी बन्दना करने लगे। श्रीभगवती पार्वती अपने वचनानुसार हिमालय पर्वत पर गङ्गाजी के किनारे प्रकट हुईं और उन्होंने सुरों से पूछा—'तुम किसकी स्तुति कर रहे हो? उनके इतना कहते ही उनके शरीर से शिवा निकलकर कहने लगीं—"ये शुम्भ-निशुम्भ से लड़ाई में हारे हुए स्थानच्युत किए हुए सब देवगण इकट्ठे होकर मेरी स्तुति कर रहे हैं।"

पार्वती के शरीर से अम्बिका उत्पन्न हुई, एतदर्थ ये कौशिकी नाम से प्रसिद्ध है और भगवती पार्वती के शरीर से शिवा के निकल जाने पर उनका वर्ण काला हो गया। अतएव ये कालिका के नाम

मे विख्यात होकर हिमालय पर रहने लगीं, तत्पश्चात् परम सुन्दरी अम्बिका को शुम्भ निशुम्भ के भृत्य चण्ड मुण्ड ने देखा। और उन दोनों ने शुम्भ से जाकर उसके अतुल सौन्दर्य्य की प्रशंसा की। उसने अपने भृत्यों की बात सुन कर सुग्रीव नामक असुर को अम्बिका को ले आने के लिए भेजा।

सुग्रीव ने भगवती के पास पहुँच कर शुम्भ निशुम्भ के ऐश्वर्य्य की बड़ी प्रशंसा की, और उससे परिग्रह की बात कही।

भगवती ने गम्भीर भाव से मुस्कराते हुए कहा—तूने जो कुछ कहा सब सत्य है; परन्तु इस विषय में मैंने जो प्रतिज्ञा करली है उसे मैं झूठी कैसे करूँ। जो मैंने अज्ञानता से प्रतिज्ञा की है उसे सुन. वह प्रतिज्ञा यह है—

जो लड़ाई में मुझको जीत लेगा, जो मेरे दर्प (घमण्ड) को दूर कर देगा, जो सारे संसार में मेरे प्रतिबल (बराबर ताकत वाला) होगा, वही मेरा स्वामी होगा। इसलिए महाअसुर शुम्भ निशुम्भ यहाँ आवें और मुझको जीत कर जल्दी ही विवाह करलें।

दूत ने कहा—हे देवि! तुझको घमण्ड हो गया है। मेरे सामने ऐसी बात मत कह। तीनों लोक में ऐसा कौन मनुष्य है जो शुम्भ निशुम्भ के सामने ठहर सके। सुन, लड़ाई में राक्षसों के सामने सब देवता भी नहीं ठहर पाते, तब हे देवि! तू अकेली स्त्री कैसे ठहर सकती है। इसलिये तू मेरे कहने से शुम्भ निशुम्भ के पास चली चल; नहीं तो बाल पकड़ कर घिसटती हुई अपनी प्रतिष्ठा बिगड़वा कर कहीं मत जाना। देवी ने कहा—जो तूने कहा सब सच है शुम्भ ऐसा ही बलवान है और निशुम्भ भी बहुत वीर्य्यवान् है, पर क्या करूँ, मन्द बुद्धि होने के कारण मैंने ऐसी प्रतिज्ञा करते समय पहिले नहीं विचारा, अब लाचार हूँ। अब तू जाकर मैंने जो कुछ कहा है वह राक्षसाधिप शुम्भ को समझा कर कहना वह (शुम्भ) जो उचित समझे सो करे।

सुग्रीव ने शुम्भ निशुम्भ के निकट जाकर भगवती अम्बिका की प्रतिज्ञा विस्तार पूर्वक कह सुनाई । असुरेन्द्रों ने कुपित होकर धूम्रलोचन नामक असुर को भेजा । भगवती ने धूम्रलोचन को हुङ्कार मात्र से भस्म कर दिया और भगवती ने तथा उसके वाहन सिंह ने असुर-सेना का विनाश कर दिया । तदुपरान्त असुरराज शुम्भ ने चण्ड-मुण्ड दोनों को बहुत बड़ी सेना के साथ भगवती कौशिकी को पकड़ लाने अथवा मार डालने के लिए भेजा । वे सब हिमालय पर जाकर भगवती को पकड़ने का प्रयत्न करने लगे । तब अम्बिका ने शत्रुओं पर अत्यन्त कोप किया और उसके ललाट से एक भयानक काली देवी प्रकट हुई । उसने असुर सेना का विनाश किया, और चण्ड-मुण्ड का शिर काट कर अम्बिका के पास ले गई; इसी कारण उसका नाम चामुण्डा हुआ ।

चण्ड-मुण्ड के बध का समाचार सुनकर असुरेशों ने एक बड़ी सेना, जिसमें सात सेना-नायकों का विभाग था, भगवती से युद्ध करने के लिए भेजी । उस समय ब्रह्मा, विष्णु, शिव, इन्द्र, महावराह, नृसिंह स्वामिकार्तिक इन सात प्रमुख देवों की शक्तियाँ असुरसेना से युद्ध करने के लिए आयीं । फिर अम्बिका के शरीर से अत्यन्त भयङ्कर शक्ति निकली; और भगवती ने शुम्भ-निशुम्भ के पास शिवजी को दूत रूप में भेज कर उनसे कहलाया—'यदि तुम अपना कल्याण चाहते हो तो देवताओं को उनके छीने हुए लोक एवं यज्ञाधिकार लौटा दो और पाताल में जाकर रहो ।'

बल से उन्मत्त शुम्भ-निशुम्भ ने देवी की बात नहीं मानी और युद्धस्थल में सेना सहित उपस्थित हो गये । भगवती ने देवशक्तियों की सहायता से असुर सैन्य का संहार करना प्रारम्भ किया और असुर युगल का रक्तबीज नामक एक सेनाध्यक्ष भगवती देवशक्तियों से युद्ध करने लगा । उसके शरीर से शोणित के जितने विन्दु पृथ्वी पर गिरते थे, उतने ही रक्तबीज उत्पन्न हो जाते थे । अन्त में देवी ने चामुण्डा को आज्ञा दी कि वह अपने मुख का विस्तार करके रक्तबीज

के शरीर के रक्त को अपने मुख में ले और उससे उत्पन्न असुरों को भक्षण करे। चामुण्डा ने ऐसा ही किया और भगवती ने उस असुर का शिर काट डाला। तत्पश्चात् निशुम्भ भगवती से युद्ध करने लगा और मारा गया। तब शुम्भ ने क्रोधित होकर अम्बिका से कहा—'तू दूसरों के बल का सहारा लेकर अभिमान करती है।"

श्रीभगवती ने उत्तर दिया—'संसार में "मैं" एक ही हूँ; ये समस्त विभूतियाँ मेरी ही रूपान्तरमात्र हैं। ये मुझ से ही प्रगट हुई हैं और मुझ में ही विलुप्त हो जायँगी।'

इसके पश्चात् नव शक्तियाँ, जो देवी के शरीर से निकली थीं, उसी में प्रविष्ट हो गईं और शुम्भ भी देवी के युद्ध-कौशल से मारा गया। देवगण ने हर्षित होकर ३४ श्लोकों में अम्बिका की स्तुति की। अन्त में देवी प्रसन्न होकर बोली—'संसार का उपकार करने वाला वर माँगो।'

देवताओं ने कहा—'जब जब हमारे शत्रु उत्पन्न हों तब तब उनका नाश हो।'

भगवती आद्याशक्ति ने 'एवमस्तु' कहा, और भविष्य में सात बार भक्त रक्षणार्थ अवतार लेने की कथा तथा दुर्गा चरित्र के पाठ का महात्म्य वर्णन करके अन्तर्धान होगई।

भगवती चण्डिका अपनी स्तुति का माहात्म्य और उसका फल तथा पूजा विधि कह कर अन्तर्द्धान हो गई। और मेधा ऋषि ने उसी महाशक्ति को धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष फलप्रदा कहकर यह उपदेश किया—'हे महाराज! आप उसी परमेश्वरी की शरण में जाइये। वह अपनी आराधना से प्रसन्न होकर मनुष्यों को भोग, स्वर्ग एवं मोक्ष प्रदान करती है।

राजा सुरथ और समाधि नाम वैश्य श्रीभगवती के चरित्र तथा महर्षि 'मेधा' के उपदेश को सुनकर उन महादेवी भगवती को प्रसन्न करने के लिए नदी तट पर महती तपश्चर्य्या एवं उपासना करने लगे। जगद्धात्री चण्डिका ने प्रसन्न होकर उन दोनों को दर्शन दिये और कहा—"मैं तुम दोनों से प्रसन्न हूँ, तुम जो कुछ माँगोगे वही मैं तुम्हें दूँगी। आद्या देवी की बात सुन राजा ने यह विचार किया—'मेरे लिए अपना क्षात्रकर्म करना ही उचित है। अपने आश्रित जनों को कष्ट में छोड़ कर अकेले वन में चले आना क्षात्रधर्म के विरुद्ध है। यदि मैं ब्रह्माजी के समान अपने कर्तृत्व के अहंकार को भुलाकर उसी महामाया की आराधना करता तो वह महाशक्ति जैसे उसने मधुकैटभ से ब्रह्मा की रक्षा की थी, वैसे हमारी भी करती। राजधर्म का आदर्श कर्मयोग के उत्तम सिद्धान्त पर स्थित है। अतएव मुझे चाहिये कि जिस प्रकार इन्द्रादि देवताओं ने अधिकार से निकला हुआ स्वराज्य भगवती की कृपा से प्राप्त किया था, उसी प्रकार अपने गए हुए राज्य को पुनः प्राप्त करूँ और न्याय नीति से अपनी समस्त प्रजा को सुखी बनाऊँ।'

इस विचार के पश्चात् राजा ने आगामी जन्म में अखण्ड राज्य और इस जन्म में निज बल से शत्रु शक्ति का नाश करके अपना गया हुआ राज्य प्राप्त करने का वर मांगा।

महादेवी भगवती ने उसे कुछ ही दिनों में शत्रुओं पर विजयी होकर स्वराज्य प्राप्त करने तथा दूसरे जन्म में भूमण्डल पर सूर्यसुत सावर्णिः नामक मनु होने का वर प्रदान किया।

जब श्री भगवती ने वैश्यवर्य्य समाधि से वर मांगने को कहा तो उसने विचार किया--यह संसार दुःखमय है। देवताओं का कई बार अधिकारच्युत होना, और सुरथ राजा का राज्यभ्रष्ट होना यह प्रमाणित करता है कि सांसारिक भोगैश्वर्य अनित्य है। जिस तुच्छ सांसारिक सुख में मेरा मोह था। वह वास्तव में दुःखरूप ही

था। जब त्रैलोक्य पर्वत का सुख अनित्य है; तब मुझे इससे विरक्त होकर इस परमेश्वरी की अनुकम्पा से ऐसा ज्ञान प्राप्त करना चाहिये जिससे नित्य अक्षय सुख स्वरूप में प्रविष्ट हो सकूं। निवृत्ति मार्ग पथिक ज्ञाननिष्ठ समाधि नामक वैश्य ने अपने नाम जाति को सार्थक करने वाले उपर्युक्त विचार से अनन्तर श्रीदेवीजी से मोह विनाशक ज्ञान मांगा। उसे मनोवाञ्छित वर की संसिद्ध के लिए ज्ञान देकर श्री दुर्गा शीघ्र अन्तर्द्धान होगई।

जिस प्रकार भगवती की आराधना से राजा सुरथ और समाधि नाम वैश्य का मनोरथ सिद्ध हुआ उसी प्रकार हर एक व्यक्ति का, जो भगवती का अनन्य भक्त होकर उपासना करे, मनोरथ सिद्ध हो सकता है। देवी की उपासना करने का मार्ग सुगम नहीं है और उसको हर एक जानता भी नहीं है। इसीलिए मनोरथ की सिद्धि आज कल होना कठिन ही नहीं असम्भव सा होगया है। जब सिद्धि नहीं होती तब लोगों का विश्वास उस पर न रहना एक स्वाभाविक बात है। यद्यपि माँ भगवती इतनी दयार्द्र हृदया है कि केवल १०० बार दुर्गा सप्तशती का पाठ मात्र करने से मनोरथ सिद्ध कर देती हैं, पर होना चाहिये एकाग्रचित्त होकर, तन्मय होकर विधि विधान से। यदि ऐसा नहीं होता तो हमारे मनोरथों की सिद्धि नहीं हो सकती। आजकल जो प्रायः सिद्धि नहीं होती उसका मुख्य कारण विधि विधान का न जानना ही है। आजकल जो पाठ होते है वे प्रायः अधम रीति से किये जाते हैं जिनका फल नहीं मिलता। क्योंकि शास्त्र में लिखा है कि:—

गीती शीघ्री, शिरः कम्पी तथा लिखित वाचकः।
अनर्थज्ञोल्प कण्ठश्च पडैते पाठकाऽधमाः ॥

पाठ इस प्रकार करना।

माधुर्यमक्षरव्यक्तिः पदच्छेदस्तु सुस्वरः। धैर्यंलय समर्थं च षड़ेते पाठका गुणाः।

अर्थात्—गाकर पाठ करना, जल्दी-जल्दी पाठ करना, पाठ करते में हिलते जाना, जैसा शुद्धाशुद्ध लिखा है वैसा ही पाठ करना अर्थ के जाने विना पाठ करना और अल्पकण्ठ अर्थात् आधा पढ़ना आधा न पढ़ना—इतने प्रकार के ६ पाठ अधम पाठ कहलाते हैं अधम पाठ करने से ही सिद्धि नहीं होती।

भगवती की आराधना विधि विधान से करने का ज्ञान प्राप्त कराने के लिए ही यह संग्रह 'दुर्गार्चन स्मृति' के नाम से किया गया है। इसमें कलश स्थापन से लेकर पूर्णाहुति तक का विधान सप्रमाण दिया है। इसमें जितना भी परिश्रम किया गया है वह उसी समय सार्थक समझा जा सकेगा जब कि जिज्ञासु जन इससे लाभ उठावेंगे। इस विषय के ज्ञाता विद्वानों से निवेदन है कि उनके विचार में यदि इसमें कोई त्रुटि हो अथवा और कोई दोष हो तो वे कृपा कर उसकी सूचना संग्रहकर्त्ताजी को देदें जिससे उचित जँचने पर अगले संस्करण में संशोधन कर दिया जा सके। मुझे विश्वास है कि भक्तजन इससे लाभ उठाकर मेरे प्रयत्न को सफल करेंगे।

सर्वेतु सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत् ॥

विशेष द्रष्टव्य।

सम्पूर्ण उपासकों को विदित हो कि मन्त्र की उपासना के लिये पूर्व में गुरु मुख द्वारा मन्त्रोपदेश ग्रहण करने के उपरान्त मन्त्र के १० संस्कार तदनन्तर सेतु, महासेतु, मुखशोधन, कुल्लुका, शापोद्धार, संजीवन, उत्कीलन, निर्मलीकरण, आदि विषयों को गुरु द्वारा जानकर प्रयोग करने से जल्दी सिद्धी होती है इसलिये इन सब भेदों को गुरु द्वारा जाने।

रुद्रकल्पे वरणद्रव्याणि ॥

भोजनं भोजनाधारश्छत्रोपानत्कमण्डलुः ।
आसनं वसनं मुद्राकर्णभूषोपवीतकम् ॥
एतद्दशविधं देयं पदं वरण सिद्धये ।
पदाभावेत्रयं देयं पात्र वस्त्रांगुलीयकम् ॥ १ ॥

अथ प्रेतवाधाशान्तिकरण विधिः ॥

आचम्य प्राणानायम्य ॥ अद्येत्यादि देशे च मम शास्त्रोक्त पुण्य फलावाप्तये अमुक तीर्थे मध्यान्हे स्नान विधिना सन्ध्या स्नानमहं करिष्ये ॥ सन्ध्या तर्पण नित्य कर्म विधाय ॥ अत्राद्य देशे च मम प्रेत चतुर्दशि महा पर्वणि निमित्तं तिलपिंड विष्णु तर्पण करणे अधिकारार्थं महा विष्णु प्रीत्यर्थं विष्णोः षोड़शोपचारैः न्यासपूर्वकं विष्णु पूजन महं करिष्ये ॥ अनया यथाकृतपूजया महापापहारि विष्णु प्रसादात् परिपूर्णतामस्तु ॥ अस्तु ॥ चरणामृतं ॥ आचमनं ॥ प्राणायामः ॥ ओं अपवित्रः पवित्रो वा० ॥ दी० पांसुरे ॥ अपसव्यम् ॥ दक्षिणाभिमुखः ॥ सप्त व्याधा० ॥ तिरश्चिरन्द्रोनुष्टुप् ॥ एतोन्विन्द्रं ॥ अवत्सार सोमपवमानो गायत्रि० ॥ नरत्स० ॥ अपसव्यं ॥ तिलपिंड दान उपहाराणां पवित्रतास्तु ॥ मधुव्वाता० ॥ मधु ३ ॥ अत्राद्य कार्तिक मासे शुक्लपक्षेचतुर्दश्यां तिथौ —प्रेत चतुर्दशिनिमित्तं अनिर्दैष्टाप्रेक्षक संभव सकल पीड़ोपशान्त्यर्थं सर्वेषां पूर्वजानां उद्धरणार्थं तिलपिंड दान विष्णुतर्पणमहं करिष्ये ॥ (पातितवाम जानुः) ओं अपहतारेखाकरणं ॥ उल्मुकधारणम् ॥ अवनेजन मंत्रः ॥ पितृवंशे ॥ इमं तोयं तिलैर्मिश्रं अवनेजन संज्ञकम् ॥ ददामितेभ्यः प्रेतेभ्यो ये पीडां कुरुते मम ॥ पिंड दानम् ॥ इमं तिल मयं पिंडं मधु सर्पि समन्वितं ॥ ददामितेभ्यो प्रेतेभ्यः ये पीड़ां कुरुते मम ॥ ये केचित्तामसाः प्रेताभूमौ विष्ठन्ति सर्वदा ॥ तिल पिंड प्रदानेन गतिं गच्छन्ति ते

ध्रुवम् ॥ तमो रूपाश्च ये केचिद्वर्तते पितरा मम ॥ पिनाक पिंड दानेन ते तृप्यन्तु क्षुधान्विता ॥ अवनेजन मंत्रः ॥ पितृवंशे ॥ इमं तोयं तिलैर्मिश्रं अवनेजन संज्ञकम् ॥ ददामि तेभ्यः प्रेतेभ्यो ये पीड़ां कुरुते मम ॥ ॐ नमोवः पितरो० दत्त ॥ वस्त्रादि पूजा कुर्यात् ॥ तत्र मन्त्रः ॥ इमं तोयं तिलैर्मिश्रं अवनेजन संज्ञकं ॥ ददामि तेभ्यः प्रेतेभ्यो ये पीड़ां कुरुते मम ॥ पिंडार्चनं नैवेद्यं ते स्वधा ॥ अनेन प्रेतचतुर्दशि निमित्तं श्राद्धं तिलपिंडदानं परिपूर्णतामस्तु ॥ अस्तु ॥ गयायां पिंड दानेन या० सर्वे० ॥ सव्यम् ॥ आचमनं ॥ ईशान विष्णु० ॥ दीर्घायुर्भव० ॥ सुप्रोक्षितादि० अस्तु ॥ पिंडाग्रे विष्णु तर्पणम् ॥ विष्णुसूक्तेन॥ सहस्रशीर्षा ३२ अ.१६ मंत्र य० सं ऋचाप्रति ॥ अतोदेवा० ॥ विष्णोर्नुकं वीर्या० ॥ अतसीपुष्प संकाशं३मन्त्र ॥ प्रार्थना मंत्रः दिव्यन्तरिक्षं भूमिस्थ सात्विकाराजसास्तथा ॥ प्रेताश्च तामसाज्ञेया शान्तिर्गच्छन्तु तर्पिता ॥ अस्य प्रेतचतुर्दशिनिमित्तं तिलपिंड दानं विष्णु तर्पण सिद्धयर्थं यथासंपन्नान्नेन तृप्ति पर्यन्तेन भोजनेन ब्राह्मणमेकमहं तर्पयिष्ये ॥ तेन अनिर्देष्टा प्रेक्षक प्रीयन्तां नमम ॥ अस्य तिलपिंडदान विष्णु तर्पण प्रतिष्टा सिद्धयर्द्धं रजत दक्षिणा निष्क्रय एतं मनसि संकल्पितं द्रव्यं कस्मैचिद्ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे ॥ सव्यं ॥ दक्षिणाः पान्तु ॥ तिलकं कुर्यात् ॥ आशिषः प्रतिगृह्यतां ॥ अपसव्यम ॥ क्षमध्वं क्षमस्व ॥ स्वर्गंगच्छ ॥ संचरणमभ्युक्ष ॥ सव्यम् ॥ स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु ॥ ॐ स्वस्ति० अस्य प्रेत चतुर्दशि निमित्तं तिल पिंड दानं विष्णु तर्पण करणे यन्न्यूनं यदतिरिक्तं तत्सर्वं श्री विष्णोः प्रसादात्सर्वं परिपूर्णमस्तु ॥ शास्त्रोक्त पुण्यफलावाप्तिरस्तु ॥ यस्य स्मृत्याच० ॥ अपसव्यं ॥ धारा ॥ आमावाजस्य प्रसवोजगम्थादे मेद्यो वा पृथिवी विश्वरूपे आमागन्ता पितरा मातराचा मा सोमो अमृतत्वेन गम्यात् ॥ सव्यं ॥ आचमनं ॥ आयुः प्रजां० ॥ तिल पिण्ड दान विधिः ॥

अथ अक्षयनवम्यां अश्वत्थ मूले तर्पणम् ॥ उपहार ॥ कलश ३ ॥ कच्चा दूध, तिलाक्षत, सर्वोषधी, ॥ मुंद्रापन ॥ पूगीफल ॥ आर्द्रदर्भा ॥ सालिग्राम ॥ चन्दन, तुलशी, धूप, दीप, नैवेद्य, पान, तन्दुलादि गृहीत्वा

उदकाश्रये अश्वत्थसनिधौ गच्छेत् ॥ स्नानं, नित्य कर्म प्राणायामान्तंकृत्वा, आचम्य ॥ अद्येत्यादि देशे च कार्तिकमासे शुक्लपक्षे नवम्यां तिथौ वासरे अक्षयनवमी युगादि पर्वणि निमित्तं अश्वत्थमूले श्री महाविष्णोः षोडशोपचारैः पूजनपूर्वकं योगेश्वरादि देवतानां पितृणां माता महानां ॥ एकोद्दिष्टानां अन्येषां श्लोकोक्तानां च प्रीत्यर्थं शास्त्रोक्त फल अवात्यर्थं अश्वत्थमूले तर्पण महं करिष्ये ॥ पूर्वे षोडशोभिरुपचारैः श्री महाविष्णोः पूजनं कुर्यात् ॥ अश्वत्थ पूजन मन्त्रः ॥ ओं अश्वत्थेवोनिषदनं पर्णोवोवसतिष्कृता ॥ गोभाजऽइत्किलासथयत्स नवथ पूरुषम् ॥ कलशं पूरयित्वा ॥ तिलाक्षतं दुग्धं सर्वौषधी मुंद्रापन प्रक्षिपेत् ॥ अथपूजा मन्त्रः ॥ ओं योगेश्वराय पादौतु योगगम्याय जानुनि ॥ महायोगायऊरुभ्यां गुह्ये पुष्टि प्रदाय च ॥ कट्यां च योगयज्ञाय नाभौनारायणाय च ॥ योगात्मने च उदरे विश्वनाथाय वै हृदि ॥२॥ कण्ठे विश्वसृजे पूज्यो वाह्वोः विश्वेश्वराय च ॥ आस्ये च विश्वपुरुषाय नाड्यां नागेश्वराय च ॥३॥ कर्णौ कृष्णायदेवाय जगन्नाथाय चाक्षिणी ॥ भ्रुवौ भगवते पूज्यो ललाटे पीतवाससे ॥४॥ एवं सम्पूज्यदेवेशं शिरो वै यज्ञमूर्तये ॥ ज्ञानात्मने तथा वाहू स्वनात्मा चायुधानि च ॥५॥ नमस्ते देव देवेश योगेश्वर जगत्पते ॥ नमस्ते सृष्टिनाथाय जगदादि नमो नमः ॥६॥ योगेश्वराय सर्वाङ्गं एष देवार्चनं विधिः ॥ सम्प्राप्य वारुणं योगं कार्तिके नवमीसिते ॥७॥ अप्रतिगृह्यतां देव सर्व कामप्रदोभव ॥८। प्रथम कलशः ॥ योगेश्वराय देवाय योगगम्यायवेधसे ॥ परमात्मस्वरूपायक्षेत्रज्ञाय हराय च ॥१॥ शिवायशिवरूपाय ब्रह्मणे विश्वरूपिणे ॥ जलशायि जगज्योतिः केशवः प्रीयतामिति ॥२॥ अपसव्येन द्वितीयकलशमादाय ॥ पिता पिता महश्चैव तथैवप्रपितामहः ॥ मातापितामहीचैव तथै व प्रपिता मही ॥३॥ मातामहस्ततःपश्चात्प्रमाता महएवच ॥४॥ वृद्धःप्रमातामहपश्चात्तृप्तिर्गच्छंतिशाश्वती अन्येयेममहस्तेन एको द्दिष्टाश्चगोत्रिणः ॥ तेभ्योनीरं मयादत्तं तृप्तायान्तु परांगतिम् ॥५॥ तृतीय कलशमादाय ॥ वृक्षयोनिगतायेच वियोनि चापि

येगताः ॥ मुद्गलत्वगताये च ये च प्रेतत्वमागताः ॥६॥ भूतयोनिगता ये च कृमियोनिगताश्चये ॥ ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गच्छन्तु गति मुत्तमाम् ॥७॥ ममहस्तेन नीरेण वोधिभूलेतुसिंचता ॥ आप्लुवन्ति मे पितरो परांतृप्ति जगत्पते ॥८॥ सव्यं ॥ आचमनम् ॥ पुरुषसूक्तेन तर्पणम् ॥ सुप्रोक्षादि करणम् ॥ अस्य अक्षयनवमी युगादि तर्पण प्रतिसिद्ध्यर्थं यथासम्पन्नान्नेनतृप्ति पर्यन्तेन भोजनेन ब्राह्मणमेकमहं तर्पयिष्ये ॥ दक्षिणा संकल्पः ॥ अनेन अश्वत्थरूपी महाविष्णोः पूजनेन योगेश्वरादि श्लोकोक्ता देवतामातरो पितरो माता महाएकोद्दिष्टा अन्याश्च श्लोकाक्ताः प्रीयन्ताम् ॥ अस्य अक्षय नवमी तर्पण कृतस्यविधेः यन्न्यूनं यदतिरिक्तं तत्सर्वं श्री महाविष्णोः प्रसादात् ब्राह्मणानां प्रसादाच्च सर्वं पूर्णतामस्तु शास्त्रोक्त पुण्यफलावाप्तिरस्तु ॥ इति तर्पण विधिः ॥

अथ वालक संस्कारः ॥

मधुलाजाभ्यां नाड़ी छेदनात्प्राक् स्वर्णशलाकया यज्ञदारुशिखया श्वेतदूर्वया वा वालकस्य जिह्वामोष्ठं वा दक्षिण पाणिना त्रिवारं सम्मार्ज्य तत्र पिता पंक्त्याकारेण मूलमन्त्रं विलिख्य देवीं पूजयेत् ॥ तदुक्तं मत्स्य सूक्ते । अथवा मधुलाजाभ्यां जिह्वायां वालकस्य च ॥ नाड़ी छेदाद्यथापूर्वं लिखेत्स्वर्ण शलाकया ॥ मूलमन्त्रं लिखेन्मन्त्री यस्योष्ठे श्वेतदूर्वया ॥ वाक्योच्चारणतो वालो वाग्मी द्रुतकविर्भवेत् ॥ महोग्रताराकल्पे ॥ नैमित्तिक संस्कारानन्तरमेवमन्त्रलिखनं कार्यम् ॥ तदुक्तं महोग्रे ॥ जन्म संस्कारकं नाम पुत्रे जाते प्रशस्यते ॥ जिह्वायान्तु लिखेन्मन्त्रं यज्ञदारु कुशेन वा ॥ वारत्रयन्तु संमार्ज्य दक्षिणेनैव पाणिना ॥ मूलमुच्चार्य प्रत्येकं पंक्तिं कुर्यात् सुशोभनम् ॥ आदौ संस्कार कर्तव्यस्तदन्ते विलिखेन्मनुम् ॥ गन्ध चन्दन पुष्पैश्च पूजयेत्तारिणीं शिवाम् ॥ उत्तराभिमुखो

भूत्वा स्थापयेत्पीठमुत्तमम् ।। पूजयेत्तारिणीं देवीं नाना भक्ष्यैः सुशोभनैः ।। कविर्वाग्मी भवेत्पुत्रः सत्यवादी जितेन्द्रियः ।। अत्र तारिणी पदमुपलक्षणम् देवी मात्रमेव वोद्धव्यम् ।। बृहत्श्री क्रमादि तन्त्रे वालक संस्कार दर्शनात् ।। तदुक्तं तत्रैव ।। वालकस्यतु जिह्वायां त्रिदिनाभ्यन्तरे लिखेत् ।। मधुना श्वेतदूर्वाभिर्लिखेत्स्वर्णशलाकया ।। आम्बं वाग्भवकूटञ्चलिखेद्वै जननान्तरम् ।। आम्बमित भैरव्या वाग्भव कूटमित्यर्थः ।। अथैकादशाहे देवतां सम्पूज्य मन्त्रं लिखेदिति कश्चित् ।। अथ यदिपिता दूरेस्था भवति पितृव्योमातुलो वा मन्त्रं लिखेदिति ।। तदुक्तं महोग्रे ।। पितुर्भ्राता लिखेन्मन्त्रं मातुर्भ्राताथवा पुनः ।। पितुरेव लिखेन्मन्त्रं नान्य एव कदाचन ।। मातुः क्रोड़े तु संस्थाप्य दर्भानास्तीर्ययत्नतः ।। शान्ति कुर्याद्वालकस्य ब्राह्मणैः सह साधकः ।।

शान्ति मन्त्रः ।।

इदं पुत्रं कामयतः कामजानामिहैवहि ।। देवेभ्यः पुष्णाति सर्वमिदं मज्जननं शिवशान्तिस्तारायै केशवेभ्यस्तारायै रुद्रेभ्य उमायै शिवाय शिव यशसे ।। इत्यनेन कुशोदकेन शांतिं कुर्यात् ।।

तन्त्रोक्त नवग्रह मन्त्राः ।।

ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः ।। स्रां स्रीं स्रौं सः चन्द्रमसे नमः ।। क्रां क्रीं क्रौं सः कुजाय नमः ।। ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः ।। ज्रां ज्रीं ज्रौं सः बृहस्पतये नमः श्रां श्रीं श्रौं सः शुक्रायनमः ।। ब्रां ब्रीं ब्रौं सः शनिश्चराय नमः ।। द्रां द्रीं द्रौं सः राहवे नमः ।। प्रां प्रीं प्रौं सः केतवे नमः ।। उँ रांराधिकायै नमः ।। नन्यासं योषितानां च न ध्यानं न च पूजनम् ।। केवलं जप मात्रेण मन्त्राः सिद्ध्यन्ति योषिताम् ।। वैछिन्नत्वादिक दोषा ये पंचाशन्मन्त्र संस्थिता ।। तैर्दोषैः सकला व्याप्ता मनवः सप्त कोटयः ।। अतस्तद्दोष शान्त्यर्थं संस्कार दशकं चरेत् ।। मन्त्र महो दधौ ।।२० ।।६७।।

जननं दीपनं चैव बोधनं ताड़नं तथा ।। अथाभिषेको विमलीकरणं जीवनं तथा ।। तर्पणं गोपनं चैव आप्यायनमिति स्मृतम् ।। संस्कार

दशकं प्रोक्तं मनूनां दोष नाशनम् ॥ यह १० संस्कार मन्त्र सहित चौथे संस्करण की संध्या में सविस्तर छपे हैं। मंगवाइये।

अथ वाराहीमायातन्त्रयोश्चण्डी पाठ फलम् ॥

॥ श्री शिवउवाच ॥

चण्डी पाठ फलं देवि शृणुष्वगदतोमम । एकावृत्यादि पाठानां यथावत् कथयामिते ॥ सङ्कल्प्य पूर्वं सम्पूज्य न्यस्याङ्गे च मनुं सकृत् ॥ पाठाद्बलिप्रदानाद्धि सिद्धि माप्नोति मानवः ॥ उपसर्गोपशान्त्यर्थं त्रिरावृत्तं पठेन्नरः । ग्रहोपशान्तौ कर्तव्यं पञ्चावृत्तंवरानने ॥ महाभये समुत्पन्ने ॥ सप्तावृत्ति मुदीरयेत् । नवावृत्ताद्भवे च्छान्तिर्वाजपेयफलं लभेत् ॥ राजवश्याय भूत्यैच रुद्रावृत्ति मुदीरितम् । अर्कावृत्तेर्काम्यसिद्धिर्वैरिहानिश्च जायते ॥ मन्वावृत्तादि पूर्वस्य तथा स्त्री वश्यतांनयेत् । सौख्यं पञ्चादशावृत्ताच्छ्रियमाप्नोतिमानवः ॥ कलावृत्तात्पुत्र पौत्र धनधान्यागमंविदुः । राज्ञां भीति विमोक्षाय वैरस्योच्चाटनायच ॥ कुर्यात्सप्तदशावृत्तं तथाष्टादशकं प्रिये । महाव्रणविमोक्षाय विंशावृत्तं पठेन्नरः॥ पञ्च विंशावर्तनाच्च भवेद्बन्धविमोक्षणम् । संकटे समनुप्राप्ते दुश्चिकित्सामये तथा ॥ जातिध्वंसे कुलोच्छेदे आयुषोनाश आगते ॥ वैरिवृद्धौ व्याधि वृद्धौ पुरनाशे प्रजाक्षये ॥ तथैव त्रिविधोत्पाते महोत्पातोपपातके ॥ कुर्याद् यत्नाच्छतावृत्तंततः संपद्यते शुभम् ॥ नश्यन्ति विपदस्तस्य अन्तेयाति पराङ्गतिम् ॥ श्रियोवृद्धिः शतावृत्ताद्राज्य वृद्धिस्तथापरे ॥ मनसाचिन्तितंदेवि सिद्ध्येदष्टोत्तराच्छतात् ॥ शताश्वमेधयज्ञानां फलमाप्नोति सुव्रते ॥ सहस्रावर्तमाल्लक्ष्मीरावृणोति स्वयं स्थिरा ॥ भुक्त्वा मनोरथं कामान्नरो मोक्षमवाप्नुयात ॥ यथाश्वमेधः क्रतुराड् देवानां च यथा हरिः ॥ स्तवानामपि सर्वेषां तथासप्तशतीस्तवः ॥ अथवा बहुनोक्तेन किमेतेन वरानने॥ चण्ड्याः शतावृत्तिपाठात्सर्वाः सिद्ध्यन्तिसिद्धयः ॥

अग्नेःसम्मुख करण प्रकारप्रश्न ।।

आहुती देवमुत्पाद्यपश्चात्कर्मसमाचरेत् ।। अधोवक्त्रोर्ध्वपादश्च प्राङ्मुखोहव्य वाहन ।। तिष्ठत्येवंप्रभावेन आहुती कस्य दीयते ।। अस्योत्तरः ।। सपवित्राम्बु हस्तेन वन्हेःकुर्यात्प्रदक्षिणम् ।। हव्यवाट्सलिलं दृष्ट्वाविभीतो संमुखो भवेत् ।।

शस्त्रास्त्रमन्त्रैर्होतव्यं पायसं घृतसंयुतम् ।।

दुर्गाभक्तितरङ्गिण्यादि गौडग्रन्थेष्वपि नवम्यां होम उक्तः ।। डामरतन्त्रे विशेषः ।। पायसंसर्पिषायुक्तं तिलैः शुक्लैर्विमिश्रितम् । होमयेद्विधिवद्भक्त्या दशांशेन नृपोत्तम ।। रुद्राध्यायेयथा होमोमन्त्रेणैकेन साध्यते ।। तथा स्तोत्रं जपेद्धोमं श्लोकेनैकेन साधयेत् ।। यद्वासप्तशती जाप्ये होमे मन्त्री नवाक्षरः ।। कृत्य रत्नावल्यां देवीपुराणे च ।। पूजयेत्तिल होमैश्च दधिक्षीर घृतादिभिः ।। मन्त्रश्च जयन्तीत्यादि ।। मार्कण्डेयपुराणगत सप्तशतीस्तवेन प्रतिश्लोकंच स्वाहान्तेनतिलपायसेन होमं कुर्वन्ति ।। प्रतिश्लोकंच जुहुयात्पायसं तिलसर्पिषा” इति रहस्य ग्रन्थ वचनात् ।। पुरश्चरणकार्येतु विल्वपत्रयुतै स्तिलैः ।। इति वचनाद्विल्वपत्र युतैस्तिलैर्होम इति स्मार्तः ।। रुद्रयामलेपि “प्रधान द्रव्य मुद्दिष्टं” पायसान्नंतिलास्तथा ।। किंशुकैः सर्षपैः पूगैर्लाजादूर्वाङ्कुरैस्तथा ।। यवैर्वाश्रीफलैर्दिव्यैर्नानाविधफलैस्तथा । रक्त-चन्दन खंडैश्चगुग्गुलैश्चमनोहरैः ।। प्रतिश्लोकंच जुहुयात् सर्व द्रव्याणि च क्रमात् ।। पायसान्नेन जुहुयात्पूजिते हेमरेतसि ।। म० म-१८-१४७

आयुःक्षयंयवाधिक्यंयवसाम्यंधनक्षयः सर्वकामसमृद्ध्यर्थंतिलाधिक्यं सदैवहि ।। हवनेआहुतिदान प्रकारः ।। सकारे सूतकंविद्याद्धकारे मृत्युमादिशेत् ।। आहुतिस्तत्र दातव्यःयत्र आकार दृश्यते ।। अग्निज्वालने विधिः ।। वस्त्रवाते भवेद्व्याधिः शूर्पेण च धनक्षयः ।। पाणिना जायतेमृत्युः कर्मसिद्धिर्मुखेन तु ।

तन्त्रान्तरोक्त होम द्रव्यम् ॥

यवस्यभागाश्चत्वारो तदर्द्धं तण्डुलं स्मृतम् ॥ तदर्द्धं च तिलंज्ञेयं-शर्कराचतदर्द्धिका ॥ होमद्रव्यमितिख्यातं घृतंशर्करया समम् ॥

पाठान्तरम् ॥

तिलार्द्धन्तुयवाप्रोक्तायवार्द्धं तण्डुलास्तथा ॥ तण्डुलैस्त्रिगुणं चाज्यं यथेष्टं शर्करामता ॥ तिलाधिक्येभवेल्लक्ष्मी यवाधिक्ये दरिद्रता ॥ घृताधिक्येभवेन्मुक्तिः सर्वसिद्धिस्तुशर्करा ॥

सृष्टिक्रम पाठ व्यवस्था ॥

“मार्कण्डेय उवाच सावर्णिः सूर्यतनयः” इत्यारभ्य “सूर्याज्जन्मसमासाद्य सावर्णिर्भवितामनुः” इत्यन्तं शान्ति कर्मणिज्ञेयम् ॥

स्थितिक्रमस्तु ॥

“ऋषिरुवाच ॥ पुराशुम्भनिशुम्भाभ्यामसुराभ्यांशची पतेः” ॥ इत्यादि शक्रादिस्तव समाप्ति पर्यन्तं स्थितिकर्मणि ज्ञेयम् ॥

संहारक्रमस्तु ॥

“एवं देव्यावरं लब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्षभः ॥
सूर्याज्जन्म समासाद्य सावर्णिर्भवितामनुः ॥”

इति श्लोकादारभ्यसंहार क्रमेण “सवर्णिः सूर्यतनयः” मार्कण्डेय उवाच इत्यन्तं पठनीयः ॥ एवं संहारक्रमः स्त्री पुत्र क्षेत्रापहार कर्मणि बोध्यम् ॥

वाराही तन्त्रे ॥

आदि मारभ्य प्रजपेत्सृष्टि क्रम इहोच्यते ॥ पुरा शुम्भ निशुम्भाभ्यामारभ्य प्रजपेत्सुधीः ॥ आद्याच्छक्रादिपर्यन्तं स्थिति क्रम उदाहृतः ।, शेषमारभ्य आद्यन्तं संहारोऽयं क्रमो भवेत् ॥, स्थिति पाठः सर्वकामे मुक्ति कामे च संहृतिः ॥, स्त्री कामे पुत्र कामे च सृष्टि क्रम उदाहृतः ॥, शतमादौ शतञ्चान्तेजपेन्मन्त्रं नवाक्षरम् ।, चण्डी सप्तशती मध्ये संपुटोयमुदाहृतः ॥, सकामे संपुटोजाप्यः निष्कामे संपुटंविना ॥ १० ॥, अथात्र

होम द्रव्याणां प्रमाणमभिधीयते ।।, कर्ष मात्रं घृतं होमे शुक्तिमात्रं पयः स्मृतम् ।।, उक्तानि पञ्च गव्यानि तत्समानि मनीषिणः ।।, तत्समंमधुदुग्धान्नमक्तमात्रमुदाहृतम् ।, दधि प्रसृतिमात्रं स्याल्लाजाः स्युर्मुष्टि संमिताः ।। पृथुकास्तत्प्रमाणाः स्युः शक्तवोपितथोदिताः ।। गुड़ं पलार्द्धं मानं स्याच्छर्करापि तथा मता ।।, ग्रासार्द्धं चरु मानं स्यादिक्षुः पर्वावधिर्मता ।।, एकैकं पत्र पुष्पाणि तथाऽपूपानि कल्पयेत् ।। कदली फल नारंग फलान्येकैकशो विदुः ।।, मातुलिंगं चतुः खण्डं पनसं दशधा कृतम् ।।, अष्टधानारिकेलानि खण्डेतानि विदुर्बुधाः ।।, त्रिधाकृटं फलं विल्वं कपित्थं खण्डितं त्रिधा ।।, उर्वारुकफलं होमे चोदितंखण्डितं त्रिधा ।।, फलान्यन्यानि खण्डानि समिधः स्युर्दशांगुलाः ।।, दूर्वात्रयंसमुद्दिष्टं गुडूची चतुरंगुलाः ।।, व्रीहयोमुष्टि मात्रास्युर्मुद्ग माष यवा अपि ।।, तण्डुलास्युर्तदर्द्धांशाः कोद्रवामुष्टि संमितः ।।, गोधूम रक्त कमला विहिता मुष्टि मानतः ।। तिलाश्चुलुक मात्रा स्युः सर्षपास्तत्प्रमाणकाः ।। शुक्तिप्रमाणं लवणं मरीचान्यकविंशतिः ।।, पुरुर्बदर मानःस्याद्रामठं तत्समं स्मृतम् ।।, चन्दनागुरु कस्तूरी कर्पूर कुंकुमानि च ।।, तिन्तडीवीज मानानि समुद्दिष्टानिदेशिकः ।। वैश्वानरं स्थितंध्यायेत्समिद्धोमेषु देशिकः ।।, शयानमाज्यहोमेषु निषण्णंशेषवस्तुषु ।।

अग्नेरास्यादीनां लक्षणम् ।।

सधूमोग्निः शिरोज्ञेयं निर्घूमश्चक्षुरेवहि ।।, ज्वलत् कृष्णो भवेत्कर्णः काष्ठमग्रे मनस्तथा ।। प्रज्वलोग्निस्तथाजिह्वा एतदेवाग्नि लक्षणम् ।।, आस्यान्तर्जुहुयादग्ने विपश्चित्सर्व कर्मसु ।। कर्णे होमे भवेद्व्याधिर्नेत्रेऽन्धत्वमुदीरितम् ।। नासिकायांमनः पीडा मस्तके धन संक्षयः ।।, स्वर्णसिन्दूर बालार्क कुंकुमक्षौद्रसन्निभः ।। सुवर्णरेतसोवर्णः शोभनः परिकीर्तितः ।। भेरीवादित्र हस्तीन्द्र ध्वनिर्वह्नेः शुभावहः ।।, नाग चम्पक पुन्नाग पाटला यूथिका निभः ।। पद्मेन्दी वर कल्हार सर्पिर्गुग्गुल सन्निभः ।। पावकस्य शुभोगन्ध इत्युक्तं तन्त्रवेदिभिः ।। प्रदक्षिणास्त्यक्त-

कम्पाश्छत्राभः शिखिनः शिखाः ॥ शुभदायजमानस्य राज्यस्यापि विशेषतः ॥ कुन्देन्दु धवलोधूमोवन्हेः प्रोक्तः शुभावहः ॥, कृष्णः कृष्णगतेर्वर्णोः यजमानं विनाशयेत ॥ खरस्वर समोवन्हे ध्वंनिः सर्वविनाश कृत ॥, पूतिगन्धो हुतभुजो होतुर्दुःखप्रदो भवेत् ॥ छिन्नावर्ता शिखा कुर्यान्मृत्युं धनपरिक्षयम् ॥ शुक पक्षनिभो धूमः पारावतसमप्रभः ॥ हानिं तुरग जातीनां गवां च कुरुते चिरात् ॥ एवं विधेषु दोषेषु प्रायश्चित्तायदेशिकः ॥ मूलेनाज्येन जुहुयातपञ्चविंशतिमाहुतीः ॥ १६६ ॥ शारदायां ५ पटले होमोपयुक्त कुण्डादि नियम ज्ञानार्णवे ॥

अथ होमोप युक्तानि कुण्डानि तेषां पृथकत्व न्यायेन क्रत्वर्थ—
पुरुषार्थो भय रूपतां च दर्शयति ।
यौनि कुण्डे भगा कारे वर्तले वाऽर्ध चन्द्रके ॥
नव त्रिकोण कुण्डेवा चतुर श्रेष्ठ पत्रके ॥ १ ॥
योनि कुण्डे भवेद्वाग्मी भगे चाकृष्टिरुत्तमा ॥
वर्तुलेतु भवेल्लक्ष्मी रर्द्ध चन्द्रे त्रयं भवेत् ॥ २ ॥
नवत्रिकोण कुण्डे तु खेचर त्वं प्रजायते ॥
चतुरस्त्रे भवेच्छान्तिर्लक्ष्मीः पुष्टिररोगता ॥ ३ ॥
पद्माभे सर्वसम्पत्ति रचिरादेव जायते ॥
अष्टकोणे तु सुभगे समीहित फलं भवेत् ॥

अथ संपुटितहोमे मंत्र संख्या निर्णयः ॥

मन्त्रपुटं बीजपुटं दुर्गास्तोत्रं पठेत्सदा ॥ मन्त्रबीज पुटादुर्गा कामना सिद्धिदामदा ॥१॥ होमकालेसदामंत्रंदुर्गामन्त्रं पृथक्हुनेत् ॥ कामनाबीज संयोगो दुर्गामंत्रेण सं हुनेत् ॥२॥ दुर्गास्तवन मंत्राणां संख्यासप्तशतं भवेत् ॥ कामना मंत्र संख्या च शतं चैव चतुर्दश ॥३॥ मध्येमंत्रान्सप्तशतहोमकालेतु योजयेत् ॥ पाठे मंत्रपुटं वाच्यं होमे मंत्राः पृथक् पृथक् ॥४॥ होम संख्या च मंत्राणां शतं वै चैकविंशतिः ॥ पाठे बीजपुटंवाच्यं

होमेबीजपुटं हुनेत् ॥५॥ मंत्रपुटं श्लोकार्धं लौकिक वैदिकादि मंत्रपुटं ॥ बीजपुटं ऐं ह्रीं क्लीं इत्यादि ना संपुटम् ॥ बीजसंयोगः दुर्गामंत्रेण संहुनेत् ॥ मंत्रसंयोगे पृथक् होमः तेषां संख्या चतुर्दश शतम् ॥ बीजमंत्र १ से ९ अक्षर पर्यन्त पुनः मंत्र संख्या ३२ अक्षर पर्यन्त इसके उपरान्त माला मंत्र होता है ॥

धनदा यक्षिणी गुप्त साधन तंत्रे ९ पटले ॥

कुवेरऋषिःपंक्तिश्छन्दः रतिप्रियादेवताभीष्ट सिद्धयेज०वि०॥ दीर्घमायया ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः षडंगं कृत्वा मानसोपचारैः पूजयेत् ध्यानम् ॥ देवीं कांचनकान्तिविमलांरक्तांशुकाच्छादितां ॥ हेमांभोजयुगाभयां कुशकरीं रत्नोल्लसत्कुण्डलीं ॥ सर्वाभीष्ट फलप्रदां त्रिनयनां नागेन्द्रहारोज्वलां ॥ वृन्दे सर्वभयापदां त्रिजगतां पापापहारीं परां ॥ स्वकीयात्मा स्वरूपां तांभावयेच्चित्स्वरूपिणीं ॥ एकंध्यात्वा महेशानि मानसैः पूजनं चरेत् ॥ पाद्यं अर्घ्यं आचमनं स्नानं गंधं पुष्पं धूपं दीपं नैवेद्यौदिभिः पूजनं कुर्यात् ॥ ॐ रति प्रियायै नमः ॥ अनेन मंत्रेण पुनः मूलमंत्रेण आवाहनं चरेत् ॥

धं ह्रीं श्रीं रतिप्रिये स्वाहा ॥ अंगदेवताः लक्ष्मीं, पद्म, श्रियं, हरिप्रियां, भवां, कमलां, अरजां, चंचलां, लोलां, प्रणवादिनमोन्तेन पूजयेत् ॥ जपं कृत्वादेवी वामहस्ते गुह्याति गुह्य० समर्पयेत् ॥ किंचिन्नैवेद्यंस्वीकृत्ययथासुखं विहरेत् ॥

धनदा स्तोत्रं ॥

अथातः सं प्रक्ष्यामि धनदास्तोत्रमुत्तमं ॥ यथोक्तं सर्वतन्त्रेषु इदानीं तत्प्रकाशितं ॥ नमः सर्व स्वरूपेण नमः कल्याणदायिके ॥ महा सम्पत्प्रदेदेविधनदायैनमोस्तु ते ॥१॥ महाभोगप्रदेदेविमहाकामप्रपूरिते ॥ सुखमोक्षप्रदेदेविधनदायैनमोस्तु ते ॥२॥ ब्रह्मरूपेसदानन्देसदानन्दस्वरूपिणि ॥ द्रुतसिद्धिप्रदेदेवि धनदायै नमोस्तु ते ॥३॥ उद्यत्सूर्यप्रकाशाभे उद्यदादित्यमण्डले ॥ शिवतत्वप्रदेदेविधनदायै नमोस्तु ते ॥४॥ विष्णु रूपे विश्वमते विश्वपालकारिणि ॥ महासत्वगुणाक्रान्ते धनदायै नमोस्तु ते ॥ शिवरूपे

शिवानन्दे कारणानन्दविग्रहे ॥ विश्वसंहाररूपे च धनदायै नमोस्तु ते ॥६ पञ्च तत्व स्वरूपे च पंचाचार सदारते ॥ साधकाभीष्टदे देवि धनदायै नमोस्तु ते ॥ ७॥ इदं स्तोत्रं मया प्रोक्तं साधकाभीष्टदायकम् ॥ यः पठेत्पाठयेद्वापि सलभेत्सकलं फलम् ॥८॥ त्रिसंध्यंयः पठेन्नित्यं स्तोत्रमेतत्समाहितः ॥ ससिद्धिंलभतेशीघ्रं नात्रकार्याविचारणा ॥९॥ इदं रहस्यं परमं स्तोत्रं परम दुर्लभं ॥ गोपनीयं प्रयत्नेन स्वयोनिरिव पार्वति ॥१०॥ अप्रकाश्यमिदंदेवि गोपनीय परात्परं ॥ प्रपठेन्नात्रसंदेहो धनवाञ्जायतेऽचिरात् ॥ इति धनदास्तोत्रं ॥

धनदा कवचम् ॥

श्री देव्युवाच ॥ धनदाया महाविद्या कथितान प्रकाशिता ॥ इदानीं श्रोतुमिच्छामि कवचं पूर्वं सूचितं ॥१॥ श्री शिव उवाच ॥ शृणुदेवि प्रवक्ष्यामि कवचं मंत्र विग्रहं ॥ सारात्सारतरं देवि कवचंमन्मुखोदितम् ॥२॥ धनदा कवचस्यास्य कुबेर ऋषिरीरितः ॥ पङ्क्तिश्छन्दोदेवता च धनदा सिद्धिदा सदा ॥३॥ धर्म्मार्थं काममोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः ॥ धं बीजं मे शिरः पातु ह्रीं बीजं मे ललाटकं ॥४॥ श्रीं बीजं मे मुखंपातुरकारंहृदिमेदवतु । तिकारं पातु जठरं प्रिकारं पृष्ठतोऽवतु ॥५॥ ये कारंजंघयोर्युग्मेस्वाकारं पादयोर्युगे ॥ शीर्षादि पाद पर्यन्तंहाकारं सर्वतोऽवतु ॥६॥ इत्येतत्कथितं कान्ते कवचं सर्व सिद्धिदं ॥ गुरु मभ्यर्च्य विधिवत्कवचं प्रपठेद्यदि ॥७॥ शतवर्ष सहस्राणां पूजायाः फलमाप्नुयात् ॥ गुरु पूजां विनादेवि नहि सिद्धिः प्रजापते ॥८॥ गुरुपूजापरोभूत्वा कवचं प्रपठेत्ततः ॥ सर्वसिद्धि युतोभूत्वाविचरेद्भैरवोयथा ॥९॥ प्रातःकाले पठेद्यस्तुमन्त्रजाप पुरः सरं ॥ सोभीष्ट फलमाप्नोति सत्यं २ न संशयः ॥१०॥ पूजाकाले पठेद्यस्तु देवींध्यात्वा हृदाम्बुजे ॥ षण्मासाभ्यन्तरेसिद्धिनात्रकार्याविचारणा ॥११॥ सायंकाले पठेद्यस्तु सशिवोनात्र संशयः ॥ भूर्येविलिख्य गुटिकां स्वर्णस्थां धारयेद्यदि ॥१२॥ पुरुषो दक्षिणे वाहौयोषिद्वामभुजे तथा ॥ सर्वसिद्धियुतो भूत्वा धनवान्पुत्रवान्भवेत् ॥ १३ ॥ इदं कवचमज्ञात्वायोजपेद्धनदांशुभे ॥ सशस्त्रघातमाप्नोति सोचिरान्मृत्युमाप्नुयात् ॥ कवचेनावृतोनित्यं, यत्र यत्रैव गच्छति ॥ अतएव महादेवि संपूज्योनात्र संशयः ॥१५॥ समाप्तं कवचं देविकिमन्यच्छ्रोतुमिच्छसि ॥

इति धनदा कवचम् ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ अथ दुर्गा पूजने ॥

कलश स्थापन विधिः

जेतुं यस्त्रिपुरं हरेण हरिणा व्याजाद्बलिं बध्नता ।
स्रष्टुं वादि भवोद्भवेन भुवनं शेषेण धर्तुंधराम् ॥
पार्वत्या महिषासुर प्रमथने सिद्धाधिपैः सिद्धये ।
ध्यातः पञ्चशरेण विश्व जितये पायात्स नागाननः ॥

तत्र प्रतिपदि पूर्वाह्ने पुष्पतैलादिना कृतमङ्गल स्नानः* नित्यक्रियां कृत्वा नवेवाससी परिधाय चन्दन मृगमद कुँकुमैः सर्वाङ्गमनुलिप्य त्रिपुण्ड्रं ऊर्ध्वपुण्ड्रं वा कृत्वा ‡पूर्वाभिमुखो देवीमुखो वा समुपविश्य सोपग्रहपाणिराचम्य ॥ ॐ मूलम् आत्मतत्त्वाय नमः स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ मूलम् विद्यातत्त्वाय नमः स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ मूलम् शिवतत्त्वाय नमः स्वाहा ॥ ३ ॥ (मूलम् चात्र दुर्गे दुर्गे रक्षिणि स्वाहेति)

---

* रुद्रयामले ॥ स्नानं मांगलिकं कृत्वा ततो देवीं प्रपूजयेत् । शुभाभिर्मृत्तिकाभिश्च पूर्वे कृत्वा तु वेदिकाम् ॥ १ ॥

‡ देवतापूजने प्राची मध्ये पूजक पूज्ययोः ॥

पूजन की सामिग्री क्या किधर रखना गन्धर्व तन्त्र से देखिये ॥ आसन उपविशो देवि ! वद्ध्वा वीरासनादिकम् ॥ उपविश्यततो-मन्त्री द्रव्याणिस्थापयेत्पुरः ॥ गन्धपुष्पाक्षदींश्च दत्तेदीपांश्च सर्वतः ॥

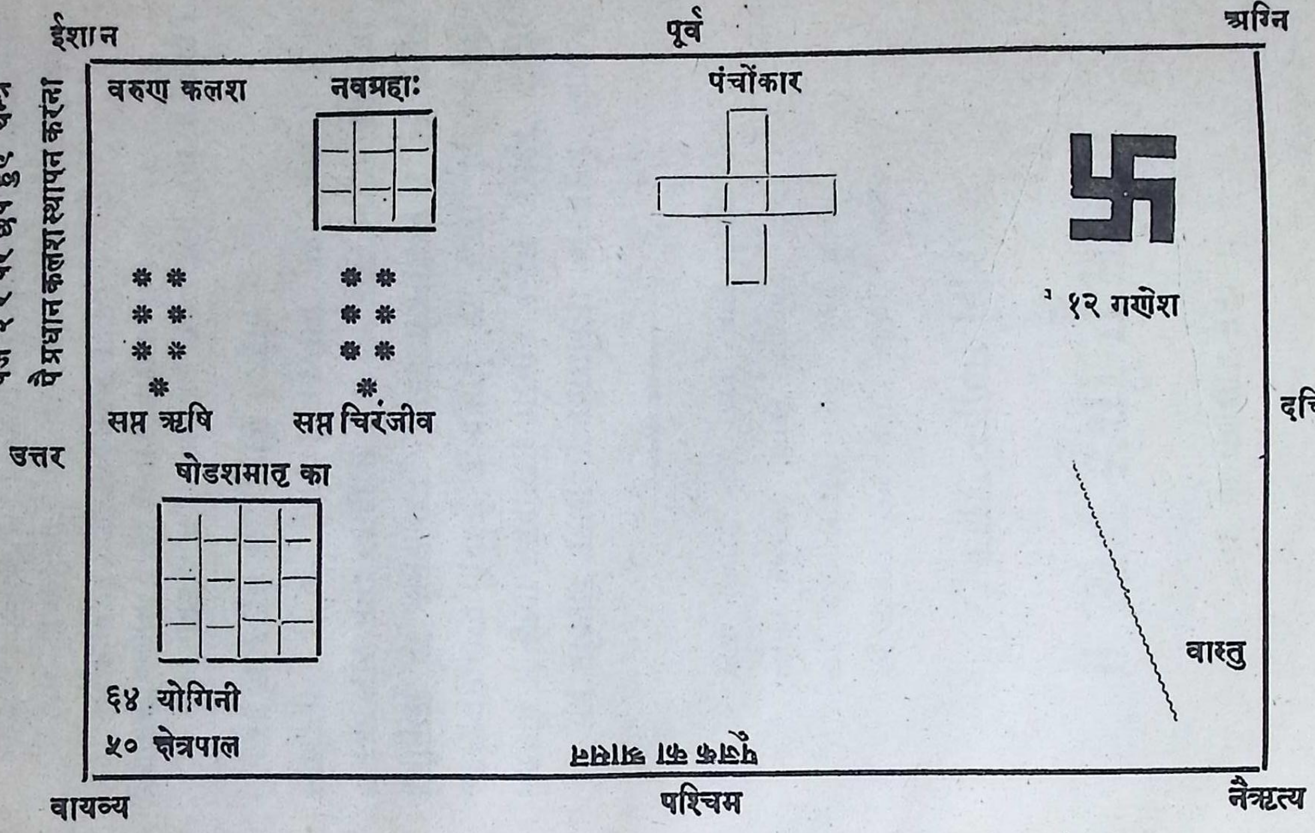
ईशान
पूर्व
अग्नि
वरुण कलश
नवग्रहाः
पंचोंकार
१२ गणेश
सप्त ऋषि
सप्त चिरंजीव
उत्तर
दक्षिण
षोडशमातृ का
वास्तु
६४ योगिनी
५० क्षेत्रपाल
पूजक का आसन
वायव्य
पश्चिम
नैऋत्य

पेज ३२ पर छपे हुए यन्त्र
पै प्रधान कलश स्थापन करना

हाथों को धोकर प्राणायाम करे।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स वाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥ ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलंछन्दः कूर्मोदेवता आसनोपवेशने विनियोगः ॥ ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुनाधृता। त्वं च धारय मान्देवि पवित्रंकुरुचासनम् ॥

नैवेद्यं दक्षिणे वामे पुरतो वा न पृष्ठतः ॥ घृत दीपं दक्षिणे तु तैलदीपन्तु वामतः ॥ वामतस्तु तथा धूपमग्रेवा नतु दक्षिणे ॥ निवेदयेत्पुरोभागे गन्ध पुष्पञ्च भूषणम् ॥ सर्वं स्वदक्षिणे स्थाप्यं वामेचार्घ्यं निवेशयेत् ॥ स्थापयेद्भक्ष्यचोष्यादिनैवेद्यादीनिसंनिधौ ॥ करयोः क्षालनार्थाय पृष्ठे पात्रं विनिर्दिशेत् ॥ स्वस्य शक्त्यनुरूपेण सर्वं संपाद्ययत्नतः ॥ पूजाद्रव्याणि संप्रोक्ष्य मूलमंत्रेण साधकः ॥ दर्शयेद्धेनु मुद्रां च द्रव्य शुद्धिरितीरिता ॥ नैवेद्यादिकं च यत्तु पुष्पगन्धादिकञ्च यत् ॥ सर्वमाच्छादितं कार्यं यावदावाहयेत्पराम् ॥ राक्षसाः प्रति गृह्णन्तिनिराच्छादनकंयतः ॥

(१) पूजागृहस्य ईशानदिशि पूजास्थानं कल्पयित्वा गोमयोपलिप्तायां धरायां विन्दु-त्रिकोण-षट्कोणा-ष्टदल-षड्विंशतिदल-भूपुरयुतं यंत्रं विलिख्य वा विन्दु त्रिकोणं वृत्तं चतुरस्रं लिखेत् ॥ तस्योपरि तीर्थमृत्तिकया शुभमृत्तिकाभिर्वेदीं रचयित्वा यवान् गोधूमान्वा वापयेत् ॥ तत्समीपे काष्ठपीठोपरि श्वेतवस्त्रं प्रसार्य गणेशादीन्स्थापयित्वा पूजयेत् ॥ पश्चात् कलशं संस्थाप्य दुर्गां पूजयित्वा स्तुवीत ॥ नवमीदिने स्थापितदेवानां उत्तर पूजनं कृत्वा विसर्जयेत् ॥

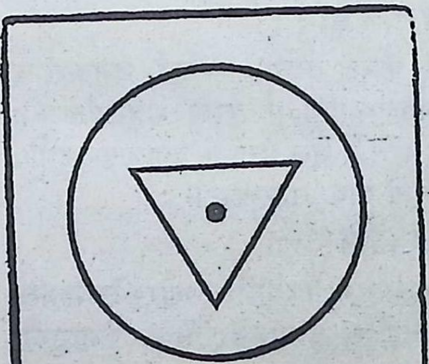

कुलार्णवे १ उल्लासे ॥ लोको मोह सुरांपीत्वा नवेत्ति हितमात्मनः ॥ संपदः—स्वप्न संकाशा यौवनं कुसुमोपमं ॥ तडिच्चंचलमायुश्च कस्य कस्मादतो धृतिः ॥

यजमान के हाथ में फूल सुपारी और अक्षत लेकर स्वस्तिवाचन बोलना।

ॐ श्रीमन्महागणाधिपतये नमः ॥ हरिः ॐ गणानान्त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिꣳ हवामहे वसोमम ॥ आहमजानिगर्भधमात्वमजासि गर्भधम् ॥ १ ॥ स्वस्तिनऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषाविश्ववेदाः॥ स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिःस्वस्तिनोबृहस्पतिर्दधातु ॥ २ ॥ पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः ॥ पयस्वतीः प्रदिशः सन्तुमह्यम् ॥ ३ ॥ विष्णोरराट-

---

जौ बौने से शुभाशुभ ज्ञान ॥

सिद्धान्तशेखरोक्त यवांकुर परीक्षा ॥

यजमानाभिवृद्ध्यर्थं अङ्कुराणिपरीक्षयेत् ॥ सम्यगूर्ध्वं प्ररूढानि कोमलानि सितानि च ॥ धूम्रवर्णान्यपूर्वाणि तथातिर्यग्गतानि च ॥ श्यामलानि च कुब्जानि वर्जयेदशुभानि च ॥

यवांकुर से फल ज्ञान ।

अवृष्टिंकुरुते कृष्णं धूम्राभं कलहं तथा ॥ अपूर्णं जननाशं च दुर्भिक्षं श्यामलांकुरं ॥ तिर्यग्गतेभवेद्व्याधिः ॥ कुब्जे शत्रुभयंतथा ॥ अशुभेचांकुरे जाते शान्तिहोमंसमाचरेत् ॥ मूल मन्त्रेण जुहुयाद्गुरुर्मूर्तिधरैः सह ॥ अघोरास्त्रेण चास्त्रेण शतं वाथ सहस्रकम् ॥

सारस्वतेपि

प्ररूढैरंकुरैः कर्तुर्निर्दिशेच्चशुभाशुभं ॥ श्यामैः कृष्णैरंकुरैरर्थहानिस्तिर्यग्रूढैर्व्याधिरांदोलितैस्तैः ॥ कुब्जैर्दुःखं दुःप्ररूढैर्मृतिं च रोगाभुग्नैः स्थानदेशेष्ट हानिः ॥

यवांकुर रोपण नियमः

दीक्षादिवसात्प्राक् सप्तभिर्दिनैः ॥ एतेन दीक्षादिनमष्टमं यथा भवति तथा कर्त्तव्यमित्युक्तं ॥ विधिवदित्यनेननवभिःत्रिभिः सद्योवेत्युक्तं ॥ तदुक्तं सिद्धान्तशेखरे ॥ प्रतिष्ठायां च दीक्षायां स्थापनेचोत्सवे तथा ॥

मसिविष्णोः श्नपूत्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसि ॥ वैष्णवमसि विष्णवेत्वा ॥ ४ ॥ अग्निर्देवता वातोदेवता सूर्योदेवता चन्द्रमादेवता वसवोदेवता रुद्रादेवता दित्यादेवता मरुतोदेवता विश्वेदेवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रोदेवता वरुणोदेवता ॥ ५ ॥ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्ति रापःशान्ति रोषधयः शान्तिः ॥ वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामाशान्तिरेधि

संप्रोक्षणे च शान्त्यर्थं विवाहेमौंजिबंधने ॥ सर्व मंगलकार्येषु कारयेदंकुरार्पणम् ॥ प्रतिष्ठादिवसात्पूर्वं नवमे सप्तमेदिने ॥ पंचमेवातृतीयेवासद्योवा चांकुरार्पणम् ॥ पुण्याहघोषणं कृत्वा ब्राह्मणैः सहदेशिकः ॥ संगलांकुरस्य वपनं कुर्यात्तत्रैव चाहनि ॥ सप्तमान्नवमाद्वापि प्रागेव यज्ञ कर्म्मणि ॥ इति

तन्त्रान्तरेपि

उत्सवेषु विविधेष्वपि दीक्षास्थापनादिषु पवित्रविधौ च । मंगलाङ्कुर विशेषणपूर्वमंगलं भवति कर्मकृतं तत् ॥ शस्तयोगदिवसात्तु पुरस्तात् सप्तमेहनि शुभे नवमे वा ॥ पंचमेथ सुदिवसे सुमुहूर्ते मंगलाङ्कुर विधिं विदधीतेति ॥ तत्र पूर्वेद्युरुपवासं कृत्वा स्वगृह्योक्तविधिना नान्दीश्राद्धं कृत्वा अंकुरार्पणमारभेत ॥ तदुक्तं गुरुर्विशुद्धः प्रागेव शुद्धाहात् प्रथमेहनि ॥ संकल्प्योपोष्य कर्तव्यमंकुरारोपणंशुभम् ॥ कुर्यान्नांदी मुखं श्राद्धं पूर्वेद्युः स्वस्तिवाचनं ॥ स्वगृह्योक्तप्रकारेण तदेतद्विदधीतवै ॥ इति ॥ संहितायामपि ॥ सर्वत्राभ्युदयश्राद्धमंकुरोत्पादनंतथा ॥ आदावेव प्रकुर्वीत कर्मणोभ्युदयात्मनः ॥ इति

हवन क्रम सूत्र ॥

आदौ गणेश्वरः पूज्यः ॐकारं पंचधा ततः ॥ गणयागो गणेशस्य वास्तु योगिनि पूजनम् ॥ मातरो मातृपूजा च वृद्धिः श्राद्धमतः परम् ॥ ऋत्विजां वरणं रक्षाविधिवच्चकुशंडिका ॥ उत्पत्तिस्थापनंप्रोक्तंकलशस्तदनन्तरम् ॥ प्रधानावाहनं पूजाग्रहादीनां च पूजनम् ॥ होमंचबलिदानं च पूजायास्तदनन्तरम् ॥ वेदपाठोग्रहां स्तुत्वाद्विजातीनां प्रतर्पणम् ॥ पूर्णाहुत्यभिषेकं च ततोयज्ञप्रदक्षिणा ॥ विसर्जनंक्रमःशान्तेर्घनश्यामेनकीर्तिता ॥

॥ ६ ॥ विश्वानिदेवसवितर्दुरितानि परासुव ॥ यद्भद्रन्तन्नआसुव
॥ ७ ॥ एतन्तेदेवसवितर्यज्ञं प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे ॥
तेन यज्ञमवतेन यज्ञपतिन्तेन मामव ॥ ८ ॥ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य
बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनो त्वरिष्टं यज्ञठ० समिमन्दधातु ॥
विश्वेदेवासऽइहमादयन्तामों ३ प्रतिष्ठ ॥ ९ ॥ एषवै प्रतिष्ठानाम
यज्ञो यत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते सर्वमेवप्रतिष्ठितम्भवति ॥ १० ॥
ॐ शान्तिः सुशान्तिः सर्वारिष्ट शान्तिर्भवतु ॥ ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च
कपिलोगजकर्णकः ॥ लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो
विनायकः ॥ ११ ॥ धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः ॥
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ॥ १२ ॥ विद्यारम्भे
विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा ॥ संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य
न जायते ॥ १३ ॥ शुक्लाम्बरधरन्देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ॥
प्रसन्नवदनंध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये ॥ १४ ॥ अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं
पूजितो यः सुरासुरैः ॥ सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये
नमः ॥ १५ ॥ सर्वमंगलमंगल्ये शिवेसर्वार्थसाधिके ॥
शरण्येत्र्यंबके गौरि नारायणि नमोस्तु ते ॥ १६ ॥ सर्वदा सर्वकार्येषु
नास्ति तेषाममंगलम् । येषां हृदिस्थोभगवान्मंगलायतनो
हरिः ॥ १७ ॥ लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः ॥ येषामिन्दीवरश्यामो
हृदयस्थो जनार्दनः ॥ १८ ॥ विनायकं गुरुं
भानुं ब्रह्माविष्णुमहेश्वरान् ॥ सरस्वतीं प्रणम्यादौ शान्तिकार्यार्थसिद्धये
॥ १९ ॥ सर्वेष्वारंभकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः ॥
देवादिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः ॥ २० ॥ वक्रतुण्ड
महाकाय सूर्यकोटिसमप्रभ ॥ अविघ्नंकुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा
॥ २१ ॥ ॐ सिद्धि बुद्धि सहित श्री मन्महागणाधिपतये नमः ॥
ॐ वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः ॥ ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यान्नमः ॥

ॐ उमामहेश्वराभ्यान्नमः ॥ ॐ शचीपुरन्दराभ्यान्नमः ॥ ॐ मातापितृचरणकमलेभ्यो नमः ॥ ॐ कुलदेवताभ्यो नमः ॥ ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः ॥ ॐ ग्रमदेवताभ्यो नमः ॥ ॐ स्थानदेवताभ्यो नमः ॥ ॐ वास्तुदेवताभ्यो नमः ॥ ॐ सर्वेभ्योदेवेभ्यो नमः ॥ ॐ सर्वेभ्योब्राह्मणेभ्यो नमः ॥ ॐ सर्वेभ्यो तीर्थेभ्यो नमः ॥ ॐ एतत्कर्मप्रधान श्रीदुर्गादेव्यै नमः ॥ ॐ पुण्यंपुण्याहं दीर्घमायुरस्तु ॥ वामे गुँ गुरुभ्यो नमः ॥ दक्षिणे भँ भद्रकाल्यै नमः ॥ उपरि गँ गणपतये नमः ॥ हृदि दुँ दुर्गायै नमः ॥ ॐ तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पान्तदहनोपम ॥ भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञांदातुमर्हसि ॥

हाथ के अक्षत फूलों को गणेशजी पर चढ़ाना फिर हाथ में संकल्प के लिए फूल अक्षत दक्षिणा और सुपारी जल सहित लेकर संकल्प करना चाहिये।

ॐ स्वस्तिश्रीमन् मुकुन्दसच्चिदानन्दस्याज्ञयाप्रवर्तमानस्याद्य ब्रह्मणो द्वितीये प्रहरार्द्धे एकपंचाशत्तमेवर्षे प्रथममासे प्रथमपक्षे प्रथम दिवसे अह्नो द्वितीयेयामे तृतीयेमुहूर्ते रथन्तरादि द्वात्रिंशत्कल्पानांमध्ये अष्टमे श्रीश्वेतवाराहकल्पे स्वायंभुवादि मन्वन्तराणां मध्ये सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे कृतत्रेताद्वापरकलिसंज्ञानांचतुर्युगानांमध्ये वर्तमाने अष्टाविंशतितमे कलियुगे तत्प्रथमचरणे तथा पंचाशत्कोटियोजनविस्तीर्णभूमंडलान्तर्गतसप्तद्वीपमध्यवर्तिनि जम्बूद्वीपे तत्रापि नवखंडानांमध्ये नवसहस्रयोजनविस्तीर्णे भरतखंडे तत्रापि परमपवित्रे भारतवर्षे आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मावर्तैकदेशे कुमारिकाक्षेत्रे मथुरामण्डले[1] रेणुका समीप क्षेत्रे[2] श्री गंगायमुनयोः पश्चिमेतटे श्रीनर्मदायाउत्तरेदेशेदेवब्राह्मणानांसन्निधौश्रीमन्नृपति वीर विक्रमादित्यराज्यातीतअमुकसंख्यापरि-

---

(१) समीपवर्ती मंडल। (२) समीपवर्ती क्षेत्र।

मिते प्रवर्तमानसंवत्सरेप्रभवादिषष्ठिसंवत्सराणांमध्येअमुकनामसंवत्सरे अमुकायने अमुकगोले अमुकऋतौ अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थे सूर्ये अमुकराशिस्थे चन्द्रे अमुकराशिस्थे देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा यथा राशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवंग्रहगणविशेषणविशिष्टायांशुभ पुण्यतिथौ अमुकगोत्रअमुकनामशर्म्मा, वर्म्मा, गुप्ता, दासअहं ममइहजन्मनिदुर्गाप्रीतिद्वारा सर्वपापक्षयपूर्वक दीर्घायुर्विपुलधन, पुत्रपौत्राद्यनवच्छिन्नसंततिवृद्धि, स्थिरलक्ष्मी, कीर्तिलाभ, शत्रुपराजय, सदभीष्टसिद्ध्यर्थं यथासम्पादितसामग्र्या शारद (वासन्तिक) नवरात्रिप्रतिपदिविहित कलशस्थापन दुर्गापूजा कुमारीपूजादि करिष्ये ॥ तदंगत्वेन निर्विघ्नतापरिसमाप्त्यर्थं गणपति, पंचोंकार, वास्तु, दिव्यादि ६४ योगिनी, अजरादि ५० क्षेत्रपाल, सप्तचिरंजीव, सप्तऋषि, गौर्यादिषोड़शमातृका, वरुणकलश, सूर्यादि नवग्रह, तदंगभूत अधिदेवता प्रत्यधिदेवतादि स्थापनपूजनानन्तर भित्तौदुर्गास्थापनावाहनं कलशस्थापनं तस्योपरि दुर्गापूजनं वा प्रतिपदारभ्य नवमीपर्यन्तं तथा च त्रिघट्यु परिअखंडदीपकं तिलतैलपूरितं तूलिकावर्तियुतं च करिष्ये वा ब्राह्मण द्वाराकारयिष्ये ॥

अग्निकोण में गणेश पूजन ॥

हाथ में अक्षतों को लेकर मन्त्र बोलना ॥

ॐ गणानांत्वागणपतिंहवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम् ॥ ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पतआनः शृण्वन्नूतिभिः सीदसादनं ॥ ॐ हे हेरंब ! त्वमेह्येह्यंबिकात्र्यम्बकात्मज ॥ सिद्धिबुद्धिपतेत्र्यक्ष कोटिसूर्यसमप्रभ ॥ नागास्य नागहार त्वं गणराजचतुर्भुज ॥ भूषितः स्वायुधैर्दिव्यैः पाशांकुशपरश्वधैः ॥ आवाहयामि पूजार्थं

रक्षार्थं च मम क्रतोः ।। इहागत्य गृहाण त्वं पूजां रक्ष च मे क्रतुम् ।। ॐ भूर्भुवः स्वः गणेश इहागच्छ इहतिष्ठ गणपतये नमः गणपतिमावाहयामि स्थापयामि नमः ।। पादयोः पाद्यं समर्पयामि नमः ।। हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि नमः ।। मुखे आचमनीयं समर्पयामि नमः ।। सर्वांगे स्नानीयं समर्पयामि नमः ।। वस्त्रोपवस्त्रार्थे अलंकारणार्थे कौसुम्भसूत्रं साक्षतञ्च समर्पयामि नमः ।। यज्ञोपवीतं समर्पयामि नमः ।। गंधंविलेपयामि नमः ।। अक्षतान्समर्पयामि नमः ।। पुष्पाणि समर्पयामि नमः ।। दूर्वांकुराणि समर्पयामि नमः ।। धूपमाघ्रापयामि नमः ।। प्रत्यक्षदीपं(१) दर्शयामि नमः ।। धूपदीपपात्रयोरक्षतान्निक्षिपेत् ।। हस्तौप्रक्षाल्य ।। नैवेद्यंनिवेदयामि नमः ।। जलेनाभ्युक्ष्य ।। गन्धपुष्पाभ्यामाच्छाद्य ।। धेनुमुद्रया अमृतीकृत्य सत्यंत्वर्तेन परिषिंचामि (ऋतंत्वासत्येन परिषिंचामि इति सायं) ग्रासमुद्रां प्रदर्श्य ॐ प्राणाय स्वाहा– ॐ अपानाय स्वाहा–ॐ उदानाय स्वाहा ॐ व्यानाय स्वाहा– ॐ समानाय स्वाहा–मध्ये २ आचमनीयं समर्पयामि नमः ।। उत्तरापोषणार्थे किंचिन्नैवेद्यं निवेदयामि नमः ।। पुनरांचमनीयं समर्पयामि नमः ।। करोद्वर्तनार्थे गंधं समर्पयामि नमः ।। हस्तप्रक्षालनार्थे मुखप्रक्षालनार्थे जलंसमर्पयामि नमः ।। मुखशुद्ध्यर्थे ताम्बूलं पुङ्गीफलं एला लवंग कर्पूरयुतं समर्पयामि नमः ।। यथाशक्ति दक्षिणाद्रव्यं समर्पयामि नमः ।।

।। प्रार्थना ।।

ॐ भक्तार्त्तिनाशनपराय गणेश्वराय सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय ।। विद्याधराय विकटाय च वामनाय, भक्तप्रसन्नवर-

---

(१) देवतायाः धूपपात्रं तैलदीपं वामे । घृतदीपं सितवर्तियुतं दक्षिणे, रक्तवर्तियुतं घृतदीपमपि वामे । सितवर्तियुतं तैल दीपमपिदक्षे ।।

दाय नमो नमस्ते ॥१॥ विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय ॥ नागाननाय सितसर्पविभूषिताय गौरीसुताय गणनाथ ! नमो नमस्ते ॥२॥ अनया पूजया सिद्धिबुद्धिसहितमहागणपतिः सांगः सपरिवारः प्रीयताम् ॥

अथ पूर्व में पंचोंकार का पूजन ॥ अक्षत लेकर ॥

ॐ आब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः शूरऽइषव्योतिव्याधी महारथो जायतान्दोग्ध्रीधेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णुरथेष्ठाः सभेयोयुवास्य यजमानस्य वीरो जायतान्निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्योनऽओषधयः पच्यन्तांयोगक्षेमो नः कल्पताम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः पूर्वे ब्रह्मन् इहागच्छ इहतिष्ठ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणं आवाहयामि स्थापयामि नमः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः दक्षिणे गायत्रि इहागच्छ इहतिष्ठ गायत्र्यै नमः ॥ गायत्रीमावाहयामि स्थापयामि नमः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः पश्चिमे गोवर्द्धन इहागच्छ इहतिष्ठ गोवर्द्धनाय नमः गोवर्द्धनमावाहयामि स्थापयामि नमः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः उत्तरे पृथिवि इहागच्छ इहतिष्ठ पृथिव्यै नमः ॥ पृथिवीमावाहयामि स्थापयामि नमः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः मध्ये यज्ञपते इहागच्छ इहतिष्ठ यज्ञपतये नमः यज्ञपतिमावाहयामि स्थापयामि नमः ॥ इति प्रतिष्ठाप्य ॥

पूर्ववत् पाद्यादि से पूजन कराकर प्रार्थना ॥

ॐ ब्रह्मा देवी च गायत्री तथा गोवर्द्धनेश्वरः ॥ पृथ्वी यज्ञपतिश्चैतान् पंचोङ्कारान्नमाम्यहम् ॥ अनया पूजया सांगाः सपरिवाराः ब्रह्मादिपंचप्रणवाः प्रीणन्तु नमम ॥ तत्रैव गणेश समीपे—

अथ अग्निकोण में वक्रादिद्वादशगणेश का पूजन कराना चाहिये।

ॐ नमोगणेभ्योगणपतिभ्यश्चवोनमोनमोव्रातेभ्योव्रातपति-

भ्यश्चवोनमोनमोगृत्सेभ्योगृत्सपतिभ्यश्चवोनमोनमोविरूपेभ्यो–विश्वरूपेभ्यश्चवोनमोनमः । ॐ भूर्भुवः स्वः वक्रादि-द्वादशमूर्ति गणपा इहागच्छत इहतिष्ठत ।। वक्रादिद्वादशमूर्तिगणपेभ्यो नमः वक्रादि-द्वादश-मूर्ति-गणपान्आवाहयामि स्थापयामि नमः ।।

पाद्यादि से पूजन कराकर ।। ।। प्रार्थना ।।

ॐ नमो देवगणेशाय नमस्ते विघ्ननाशन ।। नमो मूषकमारूढ़ शुभकर्त्रे नमोनमः ।। नमः कात्यायनीपुत्र नमः परशुपाणये ।। रवेरुदयतेरूप विद्याबुद्धि विचक्षण ।। देहि मे रूप सौभाग्यं देहि मे पुत्रसम्पदः ।। इच्छासिद्धिप्रदो देव यथोक्तभव मे सदा ।। अनया पूजया सांगाः सपरिवाराः वक्रादि १२ गणपाः प्रीणन्तु नमम ।।

अथ नैर्ऋत्यकोण में वास्तु पूजन कराना ।।

ॐ वास्तोष्पतेप्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशोऽअनमीवोभवानः यत्त्वेमहेप्रतितन्नोयुषस्वशन्नोभवद्विपदे शंचतुष्पदे ।। ॐ भूर्भुवः स्वः वास्तुपुरुष इहागच्छ इहतिष्ठ वास्तु पुरुषाय नमः ।। वास्तुपुरुषमावाहयामि स्थापयामि नमः ।।

पाद्यादि से पूजन कराकर प्रार्थना ।।

नागपृष्ठसमारूढं शूलहस्तं महाबलम् ।। पाताल नायकंदेवं वास्तुदेवं नमाम्यहम् ।। अनयापूजया सांगः सपरिवारः वास्तुदेवः प्रीणातु नमम ।।

अथ वायव्यकोण में दिव्यादि ६४ योगिनी का पूजन कराना ।।

ॐ जातवेदसेसुनवाम सो ममरातीयतोनिदहातिवेदः सनः पर्षदति दुर्गाणिविश्वानावेवसिन्धुन्दुरितात्यग्निः ।। ॐ भूर्भुवः स्वःदिव्यादि ६४ योगिन्य इहागच्छत इहतिष्ठत ।। दिव्यादि ६४ योगिनीभ्यो नमः ।। दिव्यादि ६४ योगिनीः आवाहयामि स्थापयामि नमः ।।

पाद्यादि से पूजन कराकर प्रार्थना ॥

ॐ जयादिसर्वायोगिन्यः दुर्गारूपाश्चताःस्मृता पूजयाबलिदानेनसन्तुष्टास्संतु मे सदा ॥ अनया पूजया सांगाःसपरिवाराः दिव्यादिचतुष्षष्ठियोगिन्यः प्रीणन्तु नमम ॥

अथ वायव्यकोण में योगिनी के समीप अजरादि ५० क्षेत्रपाल का पूजन कराना ॥

ॐ अजारेपि शंगिलास्वावित्कुरुपिशंगिलाशसआस्कन्दमारेशसत्याहिपन्थांविसर्पति ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अजरादि पंचाशत्क्षेत्रपाइहागच्छत इहतिष्ठत अजरादिक्षेत्रपेभ्योनमः अजरादिक्षेत्रपान्आवाहयामिस्थापयामि नमः ॥

पाद्यादि से पूजन कराकर प्रार्थना ॥

ॐ क्षेत्रपालान्नमस्यामिसर्वारिष्टनिषूदनान् ॥ अस्ययागस्यसिध्यर्थं पूजयाराधितान् मया ॥ अनया पूजयासांगाःसपरिवाराः अजरादिपंचाशत्क्षेत्रपाः प्रीणन्तु नमम् ॥

उत्तर दिशा में अथ षोड़षमातृ का पूजन कराना ॥

ॐ गौरीर्मिमायसलिलानि तक्षत्येकपदी द्विपदी सा चतुष्पदी अष्टापदी नवपदी बभूवुशी सहस्राक्षरापरमेव्योमन् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्यादिषोडशमातर इहागच्छत इहतिष्ठत ॥ गौर्यादि १६ मातृभ्योनमः ॥ गौर्यादिमातृः आवाहयामिस्थापयामि नमः ॥

पाद्यादि से पूजन कराकर—प्रार्थना ॥

ॐ गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया ॥ देवसेना स्वधा स्वाहा मातरोलोकमातरः ॥ हृष्टिःपुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनः कुलदेवता ॥ गणेशेनाधिकाह्येता वृद्धौपूज्याश्चषोड़श ॥ अनयापूजया साँगाः सपरिवाराः गौर्यादि १६ मातरः प्रीणन्तु नमम ॥

वसोर्द्धारापू० ॥ वसोः पवित्रमसि० ॥ गंधादिभिः संपूज्य ॥ श्रीर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा श्रद्धा प्रज्ञासरस्वती ॥ घृतेन पूजितास्सर्वा

सप्तैता घृत मातरः ॥ वसोर्द्धारे महामाये चामुण्डे मुण्ड मालिनि ॥ शीघ्रं ममवरंदेहि परांगति नमोस्तुते ॥

सांकल्पिक नान्दी श्राद्धः दक्षिणोत्तर क्रमेण ॥

देशकालौ संकीर्त्य अद्यदुर्गाहवनाङ्गत्वेन सांकल्पिक विधिना ब्राह्मणयुग्म भोजन पर्याप्तान्ननिष्क्रयी भूत यथाशक्ति हिरण्ययेन नांदी श्राद्धं करिष्ये ॥ ॐ सत्य वसु संज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यंपादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः ॥ अमुक गोत्राः ततः अस्मन्मातृ पितामही प्रपितामह्यः नांदीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः ॥ अमुक गोत्रास्मत्पितृ पितामह प्रपितामहाः नान्दी मुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः ॥ द्वितीय गोत्रा अस्मन्मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमातामहाः सपत्नीकाः नांदीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यंपादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः ॥ अथ आसनदानम् ॥ ॐ सत्यवसु संज्ञकानां विश्वेषां देवानां नान्दीमुखानां ॐ भूर्भुवः स्वः इदमासनं सुखासनं स्वाहा नमः ॥ इति कुशत्रयं सर्वतो दक्षिण गतं पूर्वाग्रमुत्सृजेत् एवं सर्वत्र ॥ ॐ नांदी श्राद्धे क्षणौ क्रियेताम् ॥ ॐ तथाप्राप्नुतां भवन्तौ प्राप्नुवाव ॥ ॐ अमुक गोत्रणां अस्मन्मातृपितामही प्रपिता महीनां नान्दीमुखीनां ॐ भूर्भुवः स्वः इदमासनं सुखासनंस्वाहानमः ॥ ॐ नान्दी श्राद्धे क्षणौ क्रियेताम् ॥ तथा प्राप्नुतां भवन्तौ प्राप्नुवाव ॥ ॐ अमुक गोत्राणां अस्मत्पितृ पितामह प्रपितामहानां नान्दीमुखानां ॐ भूर्भुवः स्वः इदमासनं सुखासनं स्वाहा नमः ॥ ॐ नान्दी श्राद्धे क्षणौ क्रियेताम् ॥ ॐ तथा प्राप्नुतां भवन्तौ प्राप्नुवाव ॥ अमुक गोत्राणां अस्मन्मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहानां सपत्नीकानां नान्दी

मुखानां ॐ भूर्भुवः स्वः इदमासनं सुखासनं स्वाहा नमः।। नांदी श्राद्धे क्षणौ क्रियेताम् ।। ॐ तथाप्राप्नुतां भवन्तौ प्राप्नुवाव ।। ततो गंधादि दानम् ।। ॐ सत्यवसु संज्ञकेभ्यो विश्वेभ्यो देवेभ्यो नांदीमुखेभ्यो ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गंधाद्यर्चनं स्वाहा संपद्यताम् वृद्धिः ।। अमुक गोत्राभ्योऽस्मन्मातृ पितामही प्रपितामहीभ्यो नान्दीमुखीभ्यो ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गंधाद्यर्चनं स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः ।। अमुक गोत्रेभ्योऽस्मत्पितृ पितामह प्रपितामहेभ्योनांदीमुखेभ्यो ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गंधाद्यर्चनं स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः ।। द्वितीय गोत्रेभ्योऽस्मन्मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमातामहेभ्यः सपत्नीकेभ्यः नांदीमुखेभ्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गंधाद्यर्चनं स्वाहा संपद्यताम्वृद्धिः ।। ततो भोजन निष्क्रय द्रव्य दानम् ।। ॐ अद्य तत्सन्मात्रादित्रयपित्रादित्रय मातामहादित्रय नांदीश्राद्ध संबंधिनः सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नांदी मुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः युग्मब्राह्मण भोजन पर्याप्तंदास्यमानमन्नं वा तन्निष्क्रयी भूतं किंचिद्धिरण्यं अमृतरूपेण दत्तं स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः ।। ॐ अद्यतत्सदमुक गोत्राः मातृ पितामही प्रपितामह्यो नांदी मुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वो युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं दास्यमानमन्नं वा तन्निष्क्रयी भूतं किंचिद्धिरण्यं अमृत रूपेण स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः ।। अमुक गोत्राः पितृ पितामह प्रपितामहाः नांदी मुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वो युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं दास्यमान मन्नं वा तन्निष्क्रयीं भूं किंचिद्धिरण्यं अमृत रूपेण स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः ।। अमुक गोत्राः मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमातामहाः सपत्नीकाः नांदी मुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वो युग्म ब्राह्मण भोजनपर्याप्तं दास्यमान मन्नं वा तन्निष्क्रियीभूतं किंचिद्धिरण्यं अमृत रूपेण स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः ।। सक्षीर मुदकदानम्।।

ॐ सत्य वसु संज्ञका विश्वेदेवाः नांदीमुखाः प्रीयंताम् ॥ अमुक गोत्राःमातृ पितामही प्रपितामह्यो नांदीमुख्यः गोत्राः पितृ पितामह प्रपितामहाः नांदी मुखाः द्वितीय गोत्राः मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः नांदीमुखाः सपत्नीकाश्च प्रीयन्ताम् ॥ ततः ॐ स्वस्तिनऽइन्द्रोवृद्धश्रवाः० इति मन्त्रं पठेत् ॥ अथ दक्षिणादानम् ॥ ॐ सत्यवसु संज्ञकेभ्यो विश्वेभ्यो देवेभ्यो नान्दी मुखेभ्यः कृतस्य नांदीश्राद्धस्यफल प्रतिष्ठा सिद्धयर्थं द्राक्षामलक यवमूल निष्क्रयीं भूतां दक्षिणां दातु महमुत्सृजे ॥ ॐ अमुक गोत्राभ्यो मातृ पितामही प्रपितामहीभ्यो नान्दी मुखीभ्यः कृतस्य० ॥ ॐ अमुक गोत्रेभ्यः पितृ पितामह प्रपितामहेभ्यो नान्दी मुखेभ्यः कृतस्य० ॥ ॐ अमुक गोत्रेभ्यो मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहेभ्यः सपत्नीके० ना० कृतस्य० ॥ आशिषोग्रहणम् ॥ गोत्रंनो वर्द्धताम् ॥ वर्द्धतांवोगोत्रम् ॥ दातारोनोऽभि वर्द्धताम् ॥ अभिवर्द्धताम्वोदातारः ॥ वेदाश्चनोऽभिवर्द्धताम् ॥ अभिवर्द्धताम्वोवेदाः ॥ संततिर्नोवर्द्धताम् ॥ वर्द्धताम्वः संतति ॥ श्रद्धा च नोमाव्यगमत् ॥ माव्यगमद्वः श्रद्धा ॥ वहुदेयंचनोऽस्तु ॥ अस्तुवो वहुदेयम् ॥ याचितारश्चनः सन्तु ॥ सन्तु वो याचितारः ॥ एता आशिषाः सत्यासन्तु ॥ सन्त्वेतास्सत्याशिषाः ॥ ॐ माता पितामही चैव तथैव प्रपितामही ॥ पिता पितामहश्चैव तथैव प्रपितामहः ॥ १ ॥ मातामहस्तत्पिता च प्रमातामहकादयः ॥ एतेभवन्तु सुप्रीताः प्रयच्छन्तु च मङ्गलम् ॥ २ ॥ अस्मिन्नांदीश्राद्धे न्यूनातिरिक्तोयोविधिः स उपविष्ट ब्राह्मणानां वचनात् नान्दी मुखप्रसादात् सर्वः परिपूर्णोस्तु अस्तु परिपूर्ण इति विप्राः ॥ इति सांकल्पिक नान्दी श्राद्ध प्रयोगः ॥

ॐ अद्येत्यादि पूर्ववत् अमुकगोत्र अमुक शर्माहं अस्मिन्दुर्गा

हवन कर्मणि अमुक गोत्रं अमुक नाम शर्माणं ब्राह्मणं एभिर्वरण द्रव्यैः आचार्यत्वेन त्वामहं वृणे ।। वृतोस्मीति आचार्यः ।। बृहस्पते ऽअतीमंत्रेणइतिपूजनम् ।। पादप्रक्षालनं ।। ॐ यत्फलं कपिलादाने कार्तिक्यां ज्येष्ठ पुष्करे ।। तत्फलंपांडव श्रेष्ठ विप्राणां पाद शौचने ।। गंधं ।। गंध द्वारांदुराधर्षां नित्य पुष्टां करीषिणीम् ।। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहो पह्वयेश्रियम् ।। अक्षतान् ।। पुष्प माल्याम् ।। श्री श्चतेति ।। कंकण वंधनम् ।।व्रतेन दीक्षामाप्नोति ।। प्रार्थना ।। आचार्यस्तुयथास्वर्गे शक्रादीनां बृहस्पतिः ।। तथात्वं ममयज्ञे ऽस्मिन्नाचार्यस्तु भवप्रभो ।। यथाविहितं कर्मकुरु ।। यथाज्ञानतः करवाणीति ।। एवं ब्रह्मा वरणम् ।। प्रार्थना ।। यथा चतुर्मुखो ब्रह्मासर्व वेदधर प्रभो ।। तथात्वंममयज्ञेस्मिन्ब्रह्मा भवद्विजोत्तम ।। ब्रह्मयज्ञान मंत्रेण पूजनम् ।। सर्वपूर्ववत् ।।

रक्षा विधानम् ।।

यवान्कुशान्तथा दूर्वा दक्षिणाक्ष सर्षपान् ।। गोमयं दधि संयुक्तं कारयेत्ताम्रभाजने ।। १ ।। नमस्ते शारदादेवी काश्मीर प्रतिवासिनी ।। अहं शरणमाप्नोमि विद्यादानं ददासि मे ।। २ ।। ॐ गणाधिपं नमस्कृत्य नमस्कृत्यपितामहं ।। विष्णुंरुद्रंश्रियं देवीं वंदे भक्त्या सरस्वतीम् ।। स्थानं क्षेत्रं नमस्कृत्य दिननाथं निशाकरं ।। धरणी गर्भ संभूतंशशिपुत्रंबृहस्पतिं ।। दैत्याचार्यं नमस्कृत्य सूर्यपुत्रंमहाग्रहं ।। राहुंकेतुं नमस्कृत्य यज्ञारम्भे विशेषतः ।। शक्राद्याः देवताः सर्वे मुनीनां कथयाम्यहं ।। गर्गमुनिंनमस्कृत्य नारदोपि महामुनिः ।। वसिष्ठं मुनि शार्दूलं विश्वामित्रो महामुनिः ।। व्यासं कविं नमस्कृत्य सर्वशास्त्र विशारदाः ।। विद्याधिकास्तु मुनयः आचार्यास्तु तपोधनाः ।। सर्वेंतेप्रणिपत्येन यज्ञरक्षां करोतु मे ।। रक्षो हणं वलगहनं वैष्णवीमिद महन्तंवलग-

मुत्किरामि यम्मेनिष्ट्यो यममात्यो निचखानेद महन्तं वलग मुत्किरामि यम्मे समानोयम समानोनि च खानेद महन्तं वलग मुत्किरामियम्मे सबंधुर्यमसबंधुर्नि च खानेद महन्तंवलगमुत्किरामियम्मे सजातो यम सजातो निचखानोत्कृत्याङ्किरामि ॥५॥२३॥ रक्षोहणो वोव्वलगहनः प्रोक्षामि वैष्णवान्नूक्षो हणो वोव्वल गहनोवनयामि वैष्णवान्नूक्षोहणो वोवल गहनो वस्तृणामि वैष्णवान्नूक्षाहणौवांवलगहनाऽउपदधामि वैष्णवी रक्षोहणौ वांवलगहनौ पर्यूहामि वैष्णवी वैष्णवमसि वैष्णवास्थ ॥ ७ ॥ २५ ॥ रक्षसां भागोसि निरस्तꣳ रक्षऽइदमहꣳ रक्षोभितिष्ठामीदमहꣳ रक्षोवबाधऽइदमहꣳ रक्षोधमन्तमोनयामि ॥ घृतेनद्यावा पृथिवी प्रोर्णु वाथांवायोव्वेस्तोकानामग्नि राज्यस्य वेतु स्वाहा स्वाहा कृतेऽऊर्ध्व नभसम्मारुतंगच्छतम् ॥६॥१६॥ रक्षोहाविश्व चर्षणिरभियोनि मयोहते॥ द्रोणेसधस्थमामदत् ॥२६॥२६॥पूर्वेरक्षतुगोविन्द आग्नेयां गरुडध्वजः ॥ याम्यां रक्षतु वाराहो नारसिंहस्तु नैर्ऋते॥ केशवो वारुणीं रक्षेद्वायव्यां मधुसूदनः ॥ उत्तरे श्रीधरोरक्षेदीशान्ये च गदाधरः ॥ ऊर्ध्वंगोवर्द्धनोरक्षेदधश्चैवजनार्दनः ॥ एवंदशदिशोरक्षेद्वासुदेवो जनार्दनः ॥ यज्ञाग्रेरक्षते शंखः पृष्ठे पद्मं च उत्तमं ॥ वामपार्श्वेगदारक्षे दक्षिणे च सुदर्शनः ॥ उपेंद्रो रक्षतेब्रह्मा आचार्यपातुवामनः ॥ अच्युतः पातु ऋग्वेदं यजुर्वेदमधोक्षजः ॥ कृष्णो रक्षतु सामं च अथर्वाणं च माधवः ॥ उपद्रष्टास्तु ये विप्रास्तेपिरुद्रेण रक्षिताः ॥यजमानं सपत्नीकं पुँडरीकाक्ष रक्षतु ॥ रक्षाहीनं तु यत्स्थानं तत्सर्वं रक्षतो हरिः ॥ वेद मंत्रैश्च कर्तव्या रक्षा शुभ्रैश्च सर्षपैः ॥ तस्मात्सर्वं प्रयत्नेन रक्षां कुर्यात्सदा बुधः ॥

॥ अथ यजमान हस्ते रक्षाबन्धनम् ॥

ॐ त्वंयविष्ठदाशुषोनॄःपाहि शृणुधीगिरः ॥ रक्षातोकमु-

तत्कमना ॥ ये न बद्धोबली राजादानवेन्द्रो महाबलः॥ तेनत्वां प्रतिबध्नामि रक्षेमाचलमाचल ॥ इति रक्षा विधानं ॥

॥ अथ पुण्याहवाचनं ॥

कलश स्थापनानन्तर वरुणं साङ्गं पूजयित्वा पुण्याहवाचनं कुर्यात् ॥ संपूज्यगंधमाल्याद्यैर्ब्राह्मणान्स्वस्तिवाचयेत् ॥ धर्म्म कर्मणिमांगल्येसंग्रामेऽद्भुतदर्शने ॥१॥ पुण्याहवाचनंदैवंब्राह्मणस्यविधीयते ॥ एतदेवनिरोंकारंकुर्यात्क्षत्रियवैश्ययोः ॥ २ ॥ अवनिकृतजानु ंडलः कमलमुकुलसदृशमंजलिं शिरस्याधाय दक्षिणेनपाणिना सुवर्णपूर्णकलशं धारयित्वा दीर्घानागानद्योगिरयस्त्रीणिविष्णुपदानिच ॥ तेनायुः प्रमाणेनपुण्याहंदीर्घमायुरस्तु ॥ अपां मध्येस्थितादेवाः सर्वमप्सुप्रतिष्ठितम् ॥ ब्राह्मणानां करेन्यस्ताः शिवाआपोभवंतुताः ॥१॥ शिवाआपः संतु ॥ अस्तु शिवा आपः ॥ लक्ष्मीर्वसतिपुष्पेषुलक्ष्मीर्वसतिपुष्करे ॥ सा मे वसतुवैनित्यंसौमनस्यंतथास्तुनः ॥१॥ सौमनस्यमस्तु ॥ अस्तु सौमनस्यम् ॥ अक्षतंचास्तुमेपुण्यं दीर्घमायुर्यशोबलम् ॥ यद्यच्छ्रेयस्करं लोकेतत्तदस्तुसदामम ॥१॥ अक्षतं चारिष्टं चास्तु ॥ अस्त्वक्षतमरिष्टम् ॥ ब्राह्मणानांहस्तेगंधादिदत्त्वा ॥ गंधः प्रदेयोदेवानामपत्यपुष्टिदश्चनः ॥ गंधद्वारांदुराधर्षामितिमंत्रेणभक्तितः ॥१॥ गंधाः पांतुसौमंगल्यंचास्तु ॥ अस्तु सौमङ्गल्यम् ॥ पुष्पाणिपान्तु सौश्रेयसमस्तु ॥ अस्तुसौश्रेयम् ॥ अक्षताःपांतुआयुष्यमस्तु ॥ अस्तु आयुष्यम् ॥ तांबूलानिपांतु ऐश्वर्यमस्तु ॥ अस्तु ऐश्वर्यम् ॥ दक्षिणाः पांतुआरोग्यमस्तु ॥ अस्तु आरोग्यम् ॥ दीर्घमायुः श्रेयः शांतिः पुष्टिस्तुष्टिश्चास्तु, अस्तु ॥ श्रीर्यशोविद्याविनयोवित्तंबहुपुत्रंचारोग्यंचायुष्यंचास्तु, अस्तु ॥ यंकृत्वासर्ववेद यज्ञक्रियाकरणकर्म्मारंभाः शुभाः शोभनाः प्रवर्तंते तमहमोंकारमा-

दिक्कृत्वाऋग्यजुः सामाथर्वाशीर्वचनं बह्वृषिसंमतं समनुज्ञातंभवद्भिरनुज्ञातः पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये ॥ वाच्यताम् ॥ यजुः ॥ द्रविणोदाः पिपीषति जुहोतप्रचतिष्ठत ॥ नेष्ट्रादृतुभिरिष्यत ॥ यजुः ॥ सवितात्वासवानाꣳ सुवतामग्निगृहपतीनाꣳसोमोव्वनस्पतीनाम् ॥ बृहस्पतिर्व्वाचऽइन्द्रोज्यैष्ठयायरुद्रः पशुभ्यो मित्रः सत्योव्वरुणो धर्मपतीनाम् ॥ १ ॥ यजुः ॥ ॐ नतद्रक्षाꣳसिनापिशाचास्तरंतिदेवानामोजः प्रथमजꣳ ह्येतत् ॥ योबिभर्तिदाक्षायणꣳ हिरण्यꣳ सदेवेषुकृणुतेदीर्घमायुः समनुष्येषुकृणुतेदीर्घमायुः ॥ १ ॥ यजुः ॥ उच्चातेजातमन्धसोदिविसद्भूम्याददे ॥ उग्रꣳ शर्म्ममहिश्रवः ॥५॥ इत्येताऋचः पुण्याहेब्रूयात् ॥ व्रतनियम तपः स्वाध्याय क्रतुदयादमदानविशिष्टानां सर्वेषां ब्राह्मणानांमनः समाधीयताम् ॥ समाहित मनसः स्मः ॥ प्रसीदन्तु भवन्तः प्रसन्नाः स्मः ॥ अथ पूर्वस्थापितकलशात्ताम्रपात्रे जलमादाय यजमानमूर्धनिदूर्वयासेचनं कुर्यात् ॥ शान्तिरस्तु पुष्टिरस्तु तुष्टिरस्तु वृद्धिरस्तु ऋद्धिरस्तु अविघ्नमस्तु आयुष्यमस्तु आरोग्यमस्तु शिवमस्तु शिवं कर्म्मास्तु कर्म्मसमृद्धिरस्तु धर्मसमृद्धिरस्तु वेदसमृद्धिरस्तु धनधान्यसमृद्धिरस्तु इष्टसंपदस्तु अनिष्टनिरसनमस्तु ॥ भूमौ ॥ यत्पापंरोगमशुभमकल्याणंतद्दूरेप्रतिहतमस्तु ॥ पात्रे ॥ यच्छ्रेयस्तत्तदस्तु उत्तरेकर्मणिनिर्विघ्नमस्तु ॥ उत्तरोत्तरमहरहरभिवृद्धिरस्तु ॥ उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः संपद्यंतां ॥ तिथिकरणमुहूर्त्तनक्षत्र ग्रहलग्नसंपदस्तु तिथिकरणमुहूर्त्तनक्षत्रग्रहलग्नाधिदेवताः प्रीयंताम् ॥ तिथिकरणेसमुहूर्त्ते सनक्षत्रे सग्रहेसलग्ने सदैवते प्रीयेतां ॥ दुर्गापांचाल्यौ प्रीयेताम् ॥ अग्निपुरोगाविश्वेदेवाः प्रीयन्ताम् ॥ इन्द्रपुरोगामरुद्गणाः प्रीयंताम् ॥ वशिष्ठपुरोगाऋषिगणाःप्रीयंताम् ॥ माहेश्वरीपुरोगाउमामातरः प्रीयंताम् ॥

अरुन्धतीपुरोगा एकपत्न्यः प्रीयताम् ॥ विष्णुपुरोगाः सर्वेदेवाः प्रीयंताम् ॥ ब्रह्मपुगेगाः सर्वेवेदाः प्रीयंताम् ॥ आदित्य पुरोगाः सर्वेग्रहाःप्रीयंतां॥ब्रह्मचब्राह्मणाश्चप्रीयंताम्॥अंबिकासरस्वत्यौप्रीयेताम्॥श्रद्धामेधेप्रीयेताम्॥भगवतीकात्यायनीप्रीयताम्॥ भगवतीमाहेश्वरीप्रीयताम्॥ भगवतीऋद्धिकरीप्रीयताम् ॥ भगवती वृद्धिकरीप्रीयताम् ॥ भगवतीसिद्धिकरीप्रीयताम् ॥ भगवती पुष्टिकरी प्रीयताम् ॥ भगवतीतुष्टिकरीप्रीयताम् ॥ भगवंतौ विघ्नविनायकौ प्रीयेताम्॥सर्वाः कुलदेवताः प्रीयंताम् ॥सर्वाः ग्रामदेवताः प्रीयंतां॥ सर्वा इष्टदेवताः प्रीयंताम्॥ भूमौ॥ हताश्चब्रह्मद्विषः ॥ हताः परिपंथिनः॥ हताश्चविघ्नकर्तारः॥ शत्रवःपराभवंयान्तु॥ शाम्यंतुघोराणि॥शाम्यंतुपापानि॥ शाम्यंत्वीतयः॥पात्रे॥ शुभानिवर्धंतां॥शिवा आपःसंतु॥ शिवाऋतवःसन्तु॥ शिवाअग्नयःसंतु॥ शिवाआहुतयःसंतु॥ शिवाओषधयःसंतु ॥ शिवावनस्पतयःसंतु ॥ शिवा अतिथयःसंतु॥ अहोरात्रेशिवेस्याताम्॥ यजुःशाखिनांमंत्रः॥ ॐ निकामेनिकामेनः पर्जन्योवर्षतु फलवत्योनऽओषधयः पच्यंतां योगक्षेमोनः कल्पताम् ॥ ६ ॥ पूर्णपात्रे जलं क्षिपेत् ॥ शुक्रागारकबुधबृहस्पतिशनैश्चरराहुकेतु सोमसहिता आदित्यपुरोगाः सर्वेग्रहाः प्रीयंताम् ॥ भगवान्नारायणः प्रीयताम् ॥ भगवान्स्वामी महासेनःप्रीयताम्॥पुरोनुवाक्ययायत्पुण्यंतदस्तु॥ याज्ययायत्पुण्यं तदस्तु॥ वषट्कारेणयत्पुण्यंतदस्तु॥ प्रातःसूर्योदयेयत्पुण्यंतदस्तु॥ एतत्कल्याणयुक्तं पुण्यमस्तु॥ पुण्याहकालान्वाचयिष्ये॥ वाच्यताम् ॥ ब्राह्मंपुण्यमहर्यच्चसृष्टयुत्पादनकारकम् ॥ वेदवृक्षोद्भवं नित्यंतत्पुण्याहंब्रुवंतुनः ॥ १ ॥ भोब्राह्मणाः ममसकुटुम्बस्य सपरिवारस्यगृहेपुण्याहंभवंतोब्रुवन्तु ॥ २ ॥ ॐ पुण्याहम् ३ ॥ यजुः॥ ॐ पुनंतुमादेवजनाः पुनंतुमनसाधिपः॥ पुनंतुविश्वा-

भूता।नजातवेदः पुनीहिमा ॥७॥ पृथिव्यामुद्धृतायांतुयत्कल्याणं पुराकृतम् ॥ ऋषिभिः सिद्धगंधर्वैस्तत्कल्याणंब्रुवंतु नः ॥ १ ॥ भोब्राह्मणाः ममसकुटुम्बस्यसपरिवारस्यगृहेकल्याणंभवंतोब्रुवंतु ॥ ३ ॥ ॐ कल्याणम् ॥ ३ ॥ यजुः ॥ ॐ यथेमांवाचंकल्याणीमावदानिजनेभ्यः ॥ ब्रह्मराजन्याभ्याᳪंशूद्रायचार्य्याय च स्वायचारणायच ॥ प्रियोदेवानांदक्षिणायैदातुरिहभूया समयम्मेकामः समृद्ध्यतामुपमादोनमतु ॥ ८ ॥ सागरस्यतुयाऋद्धिर्महालक्ष्म्यादिभिःकृता ॥ संपूर्णासुप्रभावाचतांतामृद्धिंब्रुवंतुनः ॥ १ ॥ भो ब्राह्मणाः ममसकुटुम्बस्यसपरिवारस्यगृहेऋद्धिंभवंतोब्रुवंतु ॥ ३ ॥ ॐ ऋद्ध्यताम् ॥ ३ ॥ यजुः ॥ ॐ सत्रस्यऽऋद्धिरस्यगन्मज्योतिरमृताऽअभूम ॥ दिवंपृथिव्याऽअद्ध्याऽरुहामाविदामदेवान्स्वर्ज्योतिः ॥ ९ ॥ स्वस्तिस्तुयाऽविनाशाख्यापुण्यकल्याणवृद्धिदा ॥ विनायकप्रियानित्यंतांतांस्वस्तिंब्रुवंतुनः ॥ १ ॥ भोब्राह्मणाः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्यगृहेस्वस्तिंभवंतोब्रुवंतु ॥ ३ ॥ ॐस्वस्ति ॥ ३ ॥ यजुः ॥ ॐस्वस्तिनऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषाविश्ववेदाः ॥ स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनोबृहस्पतिर्दधातु ॥१०॥ मृकंडसूनोराहुर्यद्ध्रुवलोमशयोस्तथा ॥ आयुपातेनसंयुक्ताजीवेमशरदःशतम् ॥ १ ॥ जीवंतुभवंतः ॥३॥ यजुः॥ ॐ शतमिन्नुशरदोऽअंतिदेवायत्रानश्चक्राजर संतनूनाम् ॥ पुत्रासो यत्र पितरोभवंति मानोमध्यारारिषतायुर्गंतोः ॥११॥ शिवगौरीविवाहेयायाश्रीरामेनृपात्मजे ॥ धनदस्यगृहेयाश्रीरस्माकंसास्तुसद्मनि ॥ १ ॥ भोब्राह्मणाः मम सकुटुम्बस्यसपरिवारस्यगृहेश्रीरस्तुइतिभवंतोब्रुवंतु ॥ ३ ॥ ॐ अस्तु श्रीः ॥ ३ ॥ यजुः ॥ ॐ मनसःकाममाकूतिंवाचः सत्यमशीमहि ॥ पशूनाᳪंरूपमन्नस्य रसोयशः श्रीः श्रयताम्मयिस्वाहा ॥ २ ॥ प्रजापतिर्लोकपालो-

धाताब्रह्मामदेवराट् ॥ भगवाञ्च्छाश्वतोनित्यंसनोरक्षतुसर्वतः ॥ १ ॥ भगवान्प्रजापतिः प्रीयताम् ॥ यजुः ॥ ॐ प्रजापतेनत्वदेतान्यन्योविश्वारूपाणिपरिताबभूव ॥ यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽअस्त्वयममुष्य पिताऽसावस्यपितावयर्ठ॰स्यामपतयो रयीणाꣳ स्वाहा ॥१३॥ आयुष्मतेस्वस्तिमतेयजमानायसंततम् ॥ कृताः सर्वाशिषःसंतुऋत्विग्भिर्वेदपारगैः ॥ १ ॥ देवेन्द्रस्ययथास्वस्तियथास्वस्ति गुरोर्गृहे ॥ एकलिंगेयथास्वस्तितथास्वस्तिसदामम ॥ २ ॥ ॐ आयुष्मतेस्वस्ति ॥३॥यजुः॥ ॐ प्रतिपन्थामपद्महिस्वस्तिगामनेहसम् ॥ येनविश्वाःपरिद्विषोवृणक्ति विन्दतेवसु ॥१४॥ यजुः ॥ ॐ विश्वानिदेवसवितदु र्रितानिपरासुव ॥ यद्भद्रंतन्नऽआसुव॥मंत्रार्थाः सफलाःसन्तुपूर्णाः सन्तुमनोरथाः ॥ शत्रूणांबुद्धि नाशोऽस्तुमित्राणामुदयोऽस्तु नः॥१॥ ऋग्वेदोऽथयजुर्वेदःसामवेदोह्यथर्वणः॥ब्रह्मवक्त्रेस्थितानित्यंनिघ्नंतुतवशात्रवान् ॥ २ ॥ अक्षतान्विप्रहस्तात्तुनित्यंगृह्णन्ति ये नराः ॥ चत्वारितेषांवर्धंतेआयुः कीर्तिर्यशोबलम् ॥ ३ ॥ आयुष्कामो यशस्कामों पुत्र पौत्रस्तथैव च ॥ आरोग्यं धनकामश्च सर्वेकामाः भवन्तु मे (ते) ॥४॥श्रीर्वर्चस्व मायुष्य मारोग्य माविधात्पवमानम्महीयते ॥ धान्यं धनं पशुं बहुपुत्र लाभं शत सम्वत्सरं दीर्घमायुः ॥ १५ ॥ स्वस्त्यस्तु ते कुशलमस्तु चिरायुरस्तु गोवाजिवृद्धि धनधान्य समृद्धिरस्तु ॥ ऐश्वर्यमस्तु कुशलोस्तुरिपुक्षयोस्तु सन्तानवृद्धि सहिता हरिभक्तिरस्तु ॥ ६ ॥ आनन्द काले स्थिर राज्य लक्ष्मीः शिवप्रसादाद्बहुवाक्य सिद्धिः ॥ वाचाकृतं शत्रुविनाशनं च दकारशब्दन्तु दरिद्रनाशः ॥ ७ ॥ इति दानखण्डोक्त पुण्याह वाचनम् सम्पूर्णम् ॥

पंच भू संस्कार करके अग्नि स्थापन कराकर ईशानकोण में वरुण पूजन करना ॥

ॐ इमम्मेवरुणश्रुधीहवमद्या च मृडय । त्वामवस्युराचके ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुण इहागच्छ इहतिष्ठ वरुणाय नमः ॥

वरुणमावाहयामि स्थापयामि नमः ॥

पाद्यादि से पूजन कराकर—प्रार्थना ॥

ॐ नागपाशधरं देवं वरुणं नक्रवाहनम् ॥ शुद्धस्फटिकसंकाशं प्राणरूपं नमाम्यहम् ॥ पाशहस्तं च वरुणमर्णसाँ प्रतिमीश्वरम् ॥ आवाहयामियज्ञेस्मिन्पूजेयंप्रति गृह्यताम् ॥ अनयापूजया साँगः सपरिवारः वरुणदेवः प्रीणातु नमम ॥

अथ ईशानकोण में सूर्यादिनवग्रह पूजन कराना ॥

ॐ आकृष्णेनरजसावर्तमानो निवेशयन्नमृतंमर्त्यंच ॥ हिरण्ययेनसवितारथेन देवो यातिभुवनानिपश्यन् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सूर्यादिनवग्रहाः इहागच्छत इहतिष्ठत सूर्यादिनवग्रहेभ्यो नमः ॥ सूर्यादिनवग्रहानावाहयामिस्थापयामि नमः ॥

पाद्यादि से पूजन कराकर—प्रार्थना ॥

ॐ ब्रह्मामुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशीर्भूमिसुतोबुधश्च ॥ गुरुश्चशुक्रश्शनिराहु—केतवःसर्वेग्रहाः शान्तिकराभवन्तु ॥ ॐ अधिदेवताभ्यो नमः ॥ ॐ शिवोगौरीतथास्कन्दो विष्णु ब्रह्मापुरन्दरः ॥ यमःकालश्चित्रगुप्तश्चाधिदेवा इमे स्मृताः ॥ ॐ प्रत्यधिदेवताभ्यो नमः ॐ अग्निरापोमहीविष्णुरिन्द्र रिन्द्राणिका तथा ॥ प्रजापतिर्भुजंगश्च ब्रह्माप्रत्यधिदेवताः ॐ गणेशादिपंचलोकपालेभ्यो नमः ॥ ॐ विनायकस्तथा दुर्गा वायुराकाशमेव च ॥ अश्विनौचैवपंचैतांल्लोकपालान्नमाम्यहम् ॥ ॐ इन्द्रादिदशदिग्पालेभ्यो नमः ॥ ॐ इन्द्रो वह्निः पितृपतिर्नैरृतो वरुणो मरुत् ॥ कुवेर ईशो ब्रह्मा च अनन्तश्च दिगीश्वराः ॥ अनयापूजया सांगाः सपरिवाराः सूर्यादयः प्रीणन्तु नमम ॥

अथ प्रधान कलशस्थापनम्

॥ अथ भूमिस्पर्शनम् ॥

ॐ भूरसिभूमिरस्यदितिरसिविश्वधायाविश्वस्यभुवनस्यधर्त्री ॥

पृथिवींयच्छपृथिवीन्दृꣳह पृथिवींमाहिꣳसीः ॥ अथवा ॥ महीद्यौः पृथिवि चनऽइमंयज्ञंमिमिक्षताम् ॥ पिपृताम्नोभरीमभिः ॥ इतिभूमिंस्पृष्ट्वा ॥

अथ मृत्तिका की वेदी में जौ या गैहूँ मिलावे *

ॐ धान्यमसिधिनुहिदेवान्प्राणायत्वोदानायत्वाव्यानायत्वा ॥ दीर्घामनुप्रसिति मायुषेधान्देवोवः–सविताहिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेणपाणिनाचक्षुषेत्वामहीनां पयोसि ॥ अथवा ॐ ओषधयःसंवदन्तेसोमेनसहराज्ञायस्मैकृणोतिब्राह्मणस्तंराजन्पारयामसि ॥ इतियवान्गोधूमान्वा प्रक्षिपेत् ॥

॥ अथ कलश रखना ॥

ॐ आजिघ्रकलशंमह्यात्वाविशंत्विन्दवः पुनरूर्जानिवर्तस्वसानः ॥ सहस्रंधुक्ष्वोरुधारापयस्वतीपुनर्माविशताद्रयिः ॥त्रा॥ आकलशेषुधावतिपवित्रपरिषिच्यते ॥ उक्थैर्यज्ञेषुवर्द्धते ॥ इतिकलशंसंस्थाप्य ॥

अथ कलश मे जल गेरना ॥

ॐ वरुणस्योत्तंभनमसिवरुणस्यस्कंभसर्जनीस्थोवरुणस्यऽऋतसदन्यसिवरुणस्यऽऋतसदनमसिवरुणस्यऽऋतसदनमासीद॥ इति जलप्रक्षेपः ॥

अथ कलश में तीर्थजल, गंगाजल या जमना जल गेरना ॥

तन्त्रान्तरे, कामनाभेदेन कलशे विशेष वस्तु ॥ धर्म्मकामः क्षिपेद्भस्म धन कामस्तुमौक्तिकम् ॥ श्री कामः कमलं दद्यात्कामार्थी रोचनं तथा ॥ १ ॥ मोक्षकामो न्यसेद्दूर्स्त्रंजयकामोपराजिताम् ॥ उच्चाटनार्थेव्याघ्रीं च वश्यार्थंशिखिमूलिकाम् ॥ २ ॥ मारणाय मरीचञ्च कैतवं मोहनायच ॥ आकर्षणाय पारन्तीं प्रक्षिपेत्कलशोदरे ॥ ३ ॥ इति कार्यानुसारेणैतानि कलशे क्षिपेत् ॥ अपराजिता बड़ी खिरैटी प्रसिद्धा ॥ व्याघ्री छोटी कटेरी ॥ शिखिमूलिका मोरपंखी ॥ कैतवं धत्तूरम् ॥

* यवान्वै वापयेत्तत्र गोधूमैश्चापि संयुतान् ॥ तत्र संस्थापयेत् कुम्भं विधिना मन्त्रपूर्वकम् ॥

ॐ इमम्मेगंगेयमुनेसरस्वतिशुतुद्रिस्तोमेसचतापरुष्ण्यामरुद्वृधेवितस्तयार्जीकीयेश्रृणुह्यासुषोमया ।। इति तीर्थजलेनापूर्य ।।

अथ गन्ध (चन्दन) गेरना ।।

ॐ गंधद्वारांदुराधर्षां नित्य—पुष्टांकरीषिणींईश्वरींसर्वभूतानांतामिहोपह्वयेश्रियम् ।। इति कलशे गंध प्रक्षेपः ।।

अथ सर्वोषधी गेरना ❀

ॐ याऽओषधीः पूर्वायातादेवेभ्यस्त्रियुगंपुरा ।। मनैनुबभ्रूणामहर्ठ० शतंधामानिसप्तच ।। इति सर्वोषधी प्रक्षेपः ।।

अथ दूर्वा गेरना ।।

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्तीपरुषःपरुषस्परि ।। एवानोदूर्वेप्रतनुसहस्रेणशतेनच ।। इति दूर्वाप्रक्षेपः ।।

अथ कुशा गेरना ।।

ॐ पवित्रेस्थोवैष्णव्यौसवितुर्वःप्रसवऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः ।। तस्यतेपवित्रपतेपवित्रपूतस्ययत्कामः पुनेतच्छकेयम् ।। इति कुशप्रक्षेपः ।।

अथ[1] सप्तमृत्तिका गेरना ।।

ॐ स्योनापृथिविनोभवान्नृक्षरानिवेश ।। नीयच्छानः शर्मसप्रथाः ।। इतिसप्तमृदप्रक्षेपः ।।

अथ पुङ्गीफल गेरना ।।

ॐ याःफलिनीर्याऽअफलाऽअपुष्पायाश्चपुष्पिणीः ।। वृहस्पतिप्रसूतास्तानोमुञ्चन्त्वर्ठ० हसः ।। इति पुङ्गीफलप्रक्षेपः ।।

अथ[2] पंचरत्नानिप्रक्षेपणम् पंचरत्नी गेरना ।।

❀ कुष्टं मांसी हरिद्रे द्वे मुरा शैलेय-चन्दनम् ।। वचा चंपक मुस्ते च सर्वौषध्यो दशास्मृताः ।।

१—गजाश्वरथ वल्मीक सङ्गमाद्ध्रद गोकुलात् ।। मृदमानीय कुम्भेषु प्रक्षिपेच्चत्वरात्तथा ।। गोकुलावधि सप्त चत्वरेणसहाष्टौभवेयुः ।।

२—कनकं कुलिशं नीलं पद्मरागं च मौक्तिकम् ।। एतानि पंचरत्नानि रत्नशास्त्र विदो विदुः ।।

ॐ परिव्राजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत् ॥ दधद्रत्नानिदाशुषे ॥ वा ॥ सहिरत्नानिदाशुषेसुवातिसविताभगःतंभागंचित्रमीमहे ॥ इति पंचरत्नानिप्रक्षेपः ॥

सोने के अभाव में दक्षिणा गेरना।

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत् ॥ सदाधार पृथिवीन्द्या मुतेमां कस्मैदेवाय हविषा व्विधेम ॥ इति दक्षिणा प्रक्षेपः ॥

[1]अथ पंच पल्लव गेरना

ॐ अश्वत्थेवो निषदनं पर्णोवोवसतिष्कृता ॥ गोभाजऽइत्किला सथयत्सनवथ पूरुषम् ॥ इति पंच पल्लवानि प्रक्षेपः ॥

अथ कलश के गले में मौली (सूत्र) बाँधना।

ॐ युवा सुवासाः परिवीतऽआगात्सऽउश्रेयान् भवति जायमानः ॥ तन्धीरासः कवयऽउन्नयन्ति साध्यो मनसा देवयन्तः॥ इतिकौसुम्भसूत्र बंधनम् ॥

पात्र में चावल भर कर कलश के ऊपर रखना।

ॐ पूर्णादर्विपरापत सुपूर्णा पुनरापत ॥ वस्ने वविक्रीणा वहाऽइष मूर्जठ० शतक्रतो ॥ इति कलशोपरि तन्दुल पूर्णपात्र निधानम् ॥

अथ नारियल के ऊपर स्वस्तिक लगा सूत्र बाँधकर पूर्ण पात्र के ऊपर रखना।

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहो रात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् ॥ इष्णन्निषाण मुम्म ऽइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण ॥ इति श्रीफलनिधानम् ॥

कलश में वरुण का पूजन करना ॥

ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो

१—ब्राह्मे । अश्वत्थोदुम्बर प्लक्ष चूत न्यग्रोध पल्लवाः ।
पंच भंगा इति ख्याता सर्वं कर्मसु शोभनाः ॥ १ ॥

हविर्भिः अहेडमानो वरुणे हवोध्युरुशर्ठ०समानऽआयुः प्रमोषीः ॥ इत्यनेन पाद्यादिभिः वरुणं संपूज्य ।

॥ प्रार्थना ॥

ॐ कलशस्य मुखे विष्णुः कंठे रुद्रः समाश्रितः ॥ मूले तत्रस्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः ॥१॥ कुक्षौ तु सागसस्सप्त सप्तद्वीपा वसुन्धरा ॥ ऋग्वेदोथ यजुर्वेदो सामवेदोह्यथर्वणः ॥२॥ अंगैश्चसहिताः सर्वे कलशन्तु समाश्रिताः ॥ अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टि करी सदा ॥३॥ आयान्तु "यजमानस्य" (मम गृहे च) दुरित क्षयकारकाः ॥ सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः ॥४॥ आयान्तु "[2]यजमानस्य" (मम गृहे च) दुरित क्षयकारकाः ॥ देव दानव संवादे मथ्यमाने महोदधौ ॥५॥ उत्पन्नोसि तदा कुँभः विधृतो विष्णुना स्वयम् ॥ त्वत्तोये सर्व तीर्थानि देवाः सर्वे त्वयिस्थिताः ॥६॥ त्वयितिष्ठन्तिभूतानित्वयिप्राणाः प्रतिष्ठिताः ॥ शिवःस्वयंत्वमेवासि विष्णुस्त्वंच प्रजापतिः ॥७॥ आदित्यावसवोरुद्राविश्वेदेवाः स पैतृकाः ॥ त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः काम फल प्रदाः ॥८॥ त्वत्प्रसादादि यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भवः ॥ सान्निध्यं कुरुमे देव ! प्रसन्नोभव सर्वदा ॥९॥ ॐ पाशपाणे नमस्तुभ्यं पद्मिनी जीवनायक ! ॥ प्रधान पूजनं यावत्तावत्त्वं सन्निधौ भव ॥ इतिकलशपूजनम् ॥

अथ तान्त्रिक रक्षा ॥

ॐ सूर्यः सोमोयमः काल सन्ध्ये भूतान्यहक्षपाः ॥ पवनो दिग्पतिर्भूमिराकाशंखचरामरा ॥ ब्राह्यं शासन मास्थाय कल्पध्वमिह संनिधिम् ॥ इत्यनेन भूमिं स्पृष्ट्वा दिग्बंधनं कुर्यात् ॥

सामान्यार्घ कलश स्थापनम् ॥

१-२ —देवपूजार्थं इत्यपिपाठः ।

* पंचगव्य से भूमि तथा सामग्री को छिड़क कर शुद्ध करना, पूजन के लिये अपने वाम भाग में साधारण कलश स्थापन करना।

ॐ रँ इति जलधारया अग्नि प्राकारं विचिन्त्य पूजा मारभेत् ॥ तत्र साधारण कलशं संस्थाप्य वरुणं सम्पूज्य पीठ पूजां कुर्यात् ॥ स्ववामभागे त्रिन्दु त्रिकोण वृत्त चतुरस्र मण्डलं निर्माय ॥ ॐ ह्रीं आधार शक्तयेनमः ॥ इति सम्पूज्य तत्राधारं संस्थाप्य ॥ षडङ्ग पूजनं कुर्यात् ॥ ॐ क्रः अस्त्रायफट् इत्येनेन पात्रं प्रक्षाल्य ॥ ॐ क्रां हृदयायनमः इति जलेनापूर्य ॥ मँ दशकलात्मने वह्नि मण्डलायनमः ॥

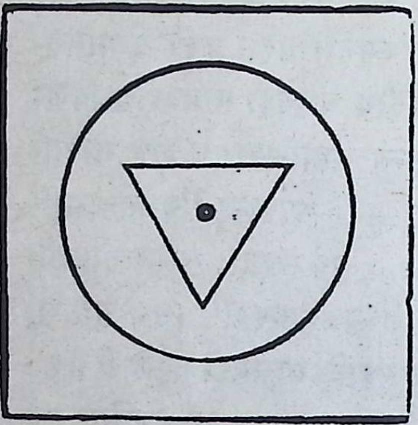

---

* पंचगव्य प्रामाण—वसिष्ठ संहितायाम् ॥ गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पि कुशोदकं॥ पंचगव्यमिदं प्रोक्तम्महापातक नाशनम् ॥१॥ गोशकृद्द्विगुणं मूत्रं दुग्धं दद्याच्चतुर्गुणम् ॥ घृतं चाष्ट गुणं चैव पंचगव्ये तथादधि॥

पंचगव्य संमेलन प्रकार:

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् ॥ गोमूत्रं ॥ ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ॥ ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वयेश्रियम् ॥ गोवर ॥ ॐ आप्यायस्व समेतुतेविश्वतः सोमवृष्ण्यम् ॥ भवाव्वाजस्य संगथे ॥ दूध ॥ ॐ दधिक्राव्णोऽअकारिषञ्जिष्णो रश्वस्य व्वाजिनः ॥ सुरभिनोमुखाकरत्प्रणऽआयूꣳषितारिषत् ॥ दही ॥ ॐ तेजोसिशुक्रमस्यमृतमसिधामनामासि ॥ प्रियं देवानामना घृष्टंदेवयजनमसि ॥ घी॥ इन सब को कुशा से एक पात्र में मिलाना नीचे लिखे मन्त्र से ॥

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेश्विनोर्बाहुभ्याम्पूष्णो हस्ताभ्याम् ॥ बाद में कुशा से अपने चारों ओर छिड़के तथा यजमान और आचार्य आदि को भी पीना चाहिये ॥

ॐ अँ द्वादश कलात्मने सूर्य मण्डलायनमः ।। [1]मूलेन तीर्थोदकैः पूरयेत् ।। पुनः गंधादिभिः सम्पूज्य ।। ॐसं–षोड़श कलात्मने सोममण्डलाय नमः ।। ॐ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ।। नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन्संनिधिं कुरु ।। इत्यंकुश मुद्रया[2] तीर्थान्यावाह्य ।। मूलमष्टवारं जप्त्वा धेनु[3] मत्स्य[4] कुम्भ[5] मुद्राः प्रदर्श्य तज्जलेन आत्मानं पूजा सामग्रीञ्च सम्प्रोक्ष्य ।। इतिसामान्यार्घकलशस्थापनम् ।।

पहिले श्री सूक्त के १६ मन्त्रों से अपने शरीर में देह न्यास करे ।।

इसी प्रकार भगवती की मूर्ति से फूल लगाकर भगवती की मूर्ति में भी इन्हीं सब अंगों का ध्यान से न्यास करना चाहिये ।।

ॐ हिरण्य वर्णां हरिणीं सुवर्ण रजतस्रजाम् ।। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ।।१।। शिरसि ।। ॐ ताम्म आवह जातवेदो लक्ष्मी मनप गामिनीम् ।। यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ।।२।। नेत्रयोः ।। ॐ अश्वपूर्णां (र्वां) रथमध्यां हस्तिनाद प्रबोधिनीम् ।। श्रियंदेवी मुपह्वये श्रीर्मादेवीजुषताम् ।।३।। कर्णयोः ।। ॐ कांसोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तांतर्पयन्तीम् ।। पद्मे स्थितां पद्म वर्णां तामिहो पह्वये श्रियम् ।।४।। घ्राणयोः ।। ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्ती श्रियं लोके देवि जुष्टामुदारां ।। तां पद्मनी (ने) मीं शरणमहं

१—ऐंह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे वा दुर्गे रक्षिणि स्वाहा ।। अंकुशमुद्रा २—ऋज्वीं मध्यमिकां कृत्वा तर्जनीं मध्य पर्वणि । संयोज्याकुँचयेत्किंचिन्मुद्रैषांकुशा संज्ञिता: ३—योनिमुद्रा वामांगुलीनां मध्येषु दक्षिणांगुलि संस्थिता ।। नियोज्य तर्जनी दक्षा वाम मध्यमया तथा ।। दक्ष मध्यमया वामा तर्जनींच नियोजयेत् ।। दक्षयानामयावामां कनिष्ठांचनियोजयेत् ।। पिहिताधोमुखी चैषां धेनु मुद्रा प्रकीर्तिता ।। ४—वामोपरिष्ठात्संस्थाप्य दक्ष हस्त प्रसारयेत ।। अंगुष्ठौ युतयोः पार्श्वेमत्स्य मुद्रेयमीरिता ।। ५—हस्तद्वयेन सावकाशिक मुष्टिकरणे कुम्भ मुद्रा ।।

प्रपद्ये अऽलक्ष्मीर्मेनश्यतां त्वां वृणे ॥५॥ मुखे॥ ॐ आदित्यवर्णो तपसोधि जातो वनस्पतिस्तववृक्षोऽथबिल्वः ॥ तस्यफलानि तपसानुदन्तु मायान्तरायाश्चवाह्या अलक्ष्मीः ॥६॥ ग्रीवायां ॥ ॐ उपैतु मां देव सखः कीर्तिश्चमणिना सह ॥ प्रादुर्भूतो (स्मि) सुराष्ट्रे ऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ॥७॥ करयोः ॥ ॐ क्षुत्पिपासामलांज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ॥ अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुदमे गृहात् ॥८॥हृदि॥ ॐ गन्धद्वारांदुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ॥ ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वयेश्रियम् ॥९॥ नाभौ ॥ ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि ॥ पशूनां रूपमन्नस्यमयि श्रीः श्रयतांयशः ॥१०॥ लिङ्गे ॥ ॐ कर्दमेनप्रजाभूता मयि संभव कर्दम ॥ श्रियंवासय मे कुलेमातरं पद्ममालिनीम् ॥११॥ गुदे ॥ ॐ आपः स्रजन्तुस्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे ॥ निचदेवीं मातरं श्रियंवासय मे कुले ॥ १२ ॥ ऊर्वोः ॥ ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलांपद्ममालिनाम् ॥ चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥१३॥ जानुनोः ॥ ॐ अर्द्रीं यः करिणीं यष्टीं सुवर्णां हेममालिनीम् ॥ सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥१४॥ जंघयोः ॥ ॐ ताम्म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ॥ यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावोदास्योश्वान्विंदेयं पुरुषानहम् ॥१५॥ चरणयोः ॥ ॐ यः शुचिःप्रयतोभूत्वाजुहुयादाज्यमन्वहम् ॥ सूक्तं पंचदशर्चं च श्रीकामः सततंजपेत् ॥१६॥ सर्वाङ्गे ॥

ततः कलशोपरि स्वर्णमयीं श्री दुर्गा प्रतिमां अग्न्युत्तारणपूर्वकं संनिधाय पट्टवस्त्रैराच्छाद्य पुरुष सूक्तेन श्रीसूक्तेनपुराणोक्त मार्गेण वा षोडशोपचारैः यथोपचारैर्वा संपूजयेत् ॥ तद्यथा ॥

अथाग्न्युत्तारण विधिः ॥

तत्र तावत्साचार्यो यजमानः ॥ देशकालौसंकीर्त्य ॥ अस्याः स्वणमयी श्री दुर्गा प्रतिमायाः घटनादि दोषपरिहारार्थं अग्न्युत्तारण पूर्वकं प्राणप्रतिष्ठां करिष्ये ॥ मूर्तिं घृतेनाभ्यज्य ॥ तदुपरि दुग्ध मिश्रित जलधारां कुर्यात् पातयेद्वा ॥

अग्न्युत्तारण मन्त्राः ॥

ॐ समुद्रस्यत्वा व्वकयाग्ने परिव्ययामसि ॥ पावकोऽअस्मभ्यर्ठ० शिवोभव ॥१॥ ॐ हिमस्य त्वा जरायुणाग्ने परिव्ययामसि ॥ पावकोऽअस्मभ्यर्ठ० शिवोभव ॥२॥ ॐ उपज्मन्नुपवेतसे वतरनदीष्वा ॥ अग्ने पित्तमपामसि मण्डूकिताभिरागहि ॥ सेमन्नोयज्ञं पावकवर्ण ठ० शिवंकृधि ॥ ३ ॥ ॐ अपामिदं न्ययनर्ठ० समुद्रस्य निवेशनम् ॥ अन्याँस्तेऽअस्मत्तपन्तु हेतयः ॥ पावको अस्मभ्यर्ठ० शिवोभव ॥ ४ ॥ ॐ अग्ने पावक रोचिषामन्द्रयादेवजिह्वया ॥ आदेवान्वक्षियक्षि च ॥ ५ ॥ ॐ सनः पावकदीदिवोग्ने देवाँ २ ऽइहावह ॥ उपयज्ञर्ठ० हविश्च नः ॥ ६ ॥ ॐ पावक या यश्चितयन्त्वा कृपाक्षामनूरुरुच ऽ उषसोनु भानुना ॥ तूर्वन्नया मन्नेतशस्य नूरणऽआयोघृणेनततृषाणोऽ अजरः ॥७॥ ॐ नमस्ते हरसेशोचिषे नमस्तेऽअस्त्वर्चिषे ॥ अन्यांस्ते अस्म पन्तु हेतयः पावको अस्मभ्यर्ठ० शिवोभव ॥८॥ ॐ नृषदेव्वेडप्सुषदेव्वेड्वर्हिषदेव्वेड्वनसदेव्वेड् स्वर्विंदेवेट् ॥ ९ ॥ ॐ ये देवादेवानां यज्ञियायज्ञिया ठं संवत्सरीण मुपभागमासते ॥ अहुतादोहविषोयज्ञेऽअस्मिन्त्स्वयं पिबन्तुमधुनोघृतस्य ॥ १० ॥ ॐ येदेवा देवेष्वधि देवत्वमा यन्ये ब्रह्मणः पुरऽएतारोऽअस्य ॥ येभ्योनऽऋते पवतेधाम किञ्चननतेदिवोन पृथिव्याऽअधिस्नुषु ॥११॥ ॐ प्राणदाऽअपानदा व्यानदा व्वर्चोदा वरिवोदाः ॥ अन्यांस्तेऽअस्मत्तपन्तुहेतयः पावकोऽअस्मभ्यर्ठ० शिवोभव ॥१२॥ ततः

प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात् ॥ ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं हं सः सोहम् अस्याः श्रीदुर्गा प्रतिमायाः प्राणा इह प्राणाः ॥ ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं सं हं ळं क्षं हं सः सोहं अस्याः श्री दुर्गा प्रतिमायाः जीव इहस्थितः ॥ ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं हं सः सोहं अस्याः श्री दुर्गा प्रतिमायाः सर्वेन्द्रियाणि वाङ् मनस्त्वक्चक्षुः श्रोत्र जिह्वाघ्राणपाणि पाद पायूपस्थानि इहैवागत्य सुखंचिरंतिष्ठन्तुस्वाहा ॥ ॐ मनोजूतिर्जुषतामाजस्य बृहस्पतिर्यज्ञ मिमन्तनोत्वरिष्टं यज्ञठं० समिमन्द्धातु ॥ विश्वे देवासऽइहमादयन्तामों ३ प्रतिष्ठ ॥ ॐ एषवै प्रतिष्ठा नामयज्ञो यत्रैतेन यज्ञे न यजन्ते सर्वमेव प्रतिष्ठितम्भवति ॥ इति प्रतिष्ठाप्य ॥ अथ नेत्रोन्मीलनम् ॥ ॐ वृत्रस्यासि कनीन कश्चक्षुर्दाऽअसिचक्षुर्मेदेहि ॥ गंधादि पंचोपचारान्दत्वा संस्कारसिद्धये षोडषप्रणवावृत्तिं कुर्यात् ॥ अनेन अस्याः श्री दुर्गा प्रतिमायाः गर्भाधानादि षोडश संस्कारान्संपादयामि ॥ इति वदेत् ॥ ततः श्री दुर्गा प्रतिमां प्रधान कलशोपरिधृत्वा षोड़शोपचारैः पञ्चोपचारैः यथोपचारैर्वा पूजयेत् ॥

फूल हाथों में लेकर अपने हृदय में ध्यान करना ॥

ॐ जटाजूट समायुक्तामर्द्धेन्दु कृतलक्षणाम् ॥ लोचनत्रय संयुक्ताम्पद्मेन्दु सदृशाननाम् ॥ १ ॥ अतसीपुष्प वर्णाभां सुप्रतिष्ठां सुलोचनाम् ॥ नवयौवन संपन्नां सर्वाभरण भूषिताम् ॥२॥ सुचारुवदनां तद्वत्पीनोन्नतपयोधराम् ॥ त्रिभंगस्थान संस्थान महिषासुरमर्दिनीम् ॥ ३ ॥ त्रिशूलं दक्षिणोद्घ्यात्खड्गं चक्रं क्रमादधः ॥ तीक्ष्णबाणं तथाशक्तिं वामतोपि निबोधत ॥ ४ ॥ खेटकं पूर्ण चापं च पाशमंकुशमूर्द्ध्वजम् ॥ घंटां वा परशुं वापि वामतः सन्निवेदयेत् ॥५॥ अधस्तान्महिषं तद्वद्विशिरस्कं प्रदर्शी-

येत् ॥ शिरश्छेदोद्भवंतद्वद्दानवं खड्गपाणिनम् ॥६॥ हृदि शूलेन-निर्भिन्नं निर्दयन्त्र विभूषितम् ॥ रक्तरक्तीकृताङ्गञ्च रक्तविस्फारितेक्षणम् ॥७॥ वेष्टितं नागपाशेन भ्रुकुटीभीषणाननम् ॥ सपाश वामहस्तेन धृतकेशं च दुर्गया ॥८॥ वमद्रुधिरवक्त्रञ्च देव्याः सिंहं प्रदर्शयेत् ॥ देव्यास्तु दक्षिणं पादंसमंसिंहोपरि स्थितम् ॥९॥ किंचिदूर्ध्वं तथा वाममंगुष्ठो महिषोपरि ॥ स्तूयमानञ्च तद्रूपममरैः सन्निवेशयेत् ॥१०॥उग्रचण्डाप्रचण्डा च चण्डोग्रा चण्ड नायिका ॥ चण्डा चण्डवती चैव चंडरूपातिचण्डिका ॥११॥ आभिः शक्तिभिरष्टाभिः सततंपरिवेष्टितम् ॥ चिन्तयेत्सततं देवीं धर्म कर्मार्थ मोक्षदाम् ॥१२॥

माथे में जटाओं के जूड़े पर अर्द्ध चंद्रमा सुशोभित है। बड़े २ सुन्दर तीन नेत्र कमल के खिले हुए फूल के समान सुन्दर गोल मुख ॥ १ ॥ अलसी के पुष्प के सदृश शरीर का नीला रंग नवीन यौवन सम्पन्न उत्तम आभूषणों (गहनों) से शोभायमान ॥ २ ॥ उत्तम शरीर कठोर और उन्नत पयोधी तीन जगह से झुकी हुई महिषासुर को मर्दन करने वाली ॥ ३ ॥ दाहिने हाथों में त्रिशूल, खड्ग, चक्र, पैना बाण, भाला ॥ ४ ॥ वाम हाथों में ढाल, धनुष, पाश (नाग पाश), अंकुश, घंटा वा फरसा धारण करे हुए ॥ ५ ॥ नीचे पृथ्वी में महिषासुर के दो सिर कटे हुए तथा महिषासुर दानव हाथ में तलवार लेकर युद्ध करते हुए के ॥ ६ ॥ हृदय को त्रिशूल से चीर दिया उससे उसके सब अंग रक्त से भीग गये और दोनों नेत्र फटे रह गये ॥ ७ ॥ नागपाश से दानव के गले को बाँध दिया इससे उसकी भौंह और मुँह भयानक प्रतीत होने लगा तथा बाएँ हाथ से दुर्गा भगवती ने उस दानव के सिर के बाल एवं पाश को धारण कर लिया ॥ ८ ॥ उस समय दानव ने रुधिर की वमन करते हुए देवी के सिंह को और देवी के दाहिने पैर को बराबर सिंह के ऊपर रखा देखा ॥ ९ ॥ और उसी प्रकार वाम पैर के अंगूठे को थोड़ा उठा हुआ उस दानव ने अपने ऊपर विराजमान देखा इस रूप को देखकर इन्द्रादि सब देवगण स्तुति करने लगे ॥ १० ॥ उग्र चण्डा, प्रचण्डा, चण्डोग्रा, चण्ड नायिका, चण्डा, चण्डवती,

चण्डरूपा, अति चण्डिका ॥ ११ ॥ इन आठ शक्तियों से निरन्तर वेष्टित धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष देने वाली भगवती का हर समय ध्यान करता हूँ ॥ १२ ॥

इति ध्यात्वा करस्थित पुष्पाणि कलशे मूर्तौ वा क्षिपेत् ॥

हाथ में फिर फूल लेकर प्रार्थना करे

ॐ महिषघ्नीं महादेवीं कुमारीं सिंहवाहिनीम् ॥ दानवांस्तर्जयन्तीञ्च सर्वकामदुघां शिवाम् ॥१॥ ध्यायामि मनसा दुर्गां नाभिमध्ये व्यवस्थिताम् ॥ आगच्छ वरदे ! देवि ! दैत्यदर्पनिपातिनि ! ॥२॥ पूजांगृहाण सुमुखि ! नमस्ते शङ्करप्रिये ! ॥ सर्वतीर्थमयं वारि सर्वदेवसमन्वितम् ॥३॥ इमं घटं समागच्छ तिष्ठ देवगणैः सह ॥ दुर्गे ! देवि ! समागच्छ सान्निध्यमिह कल्पय ॥ ४ ॥ बलिपूजां गृहाणत्वमष्टाभिः शक्तिभिः सह ॥ अस्मिन् घटे समागच्छ स्थितिं मत्कृपया कुरु ॥ रक्षां कुरु सदा भद्रे ! विश्वेश्वरि ! नमोस्तुते ॥ एह्येहि दुर्गे ! दुरितौघनाशिनि ! ॥ प्रचण्ड दैत्यौघ विनाशकारिणि ! ॥ उमे ! महेशार्द्ध शरीरधारिणि ! ॥ स्थिरा भव त्वं मम यज्ञकर्मणि ॥

इति देवीं ध्यात्वा मूलाधारात्कुण्डलिनीमुत्थाप्य ॥ तयासह शिवेन संयोज्य वायुबीजेन नासापुटेन देवीं कुसुमाञ्जलावानीय—

एहि दुर्गे ! महाभागे ! रक्षार्थं मम सर्वदा ॥
आवाहयाम्यहं देवि ! सर्व कामार्थ–सिद्धये ॥

इत्यनेन पुष्पाञ्जलिं कलशे यन्त्रे वा निधाय ॥ आत्मानं देवी रूपं विभाव्य पूजयेत् ॥ तत्रमंत्राः ॥

अथ वेदोक्त दुर्गापूजन विधिः

[1]अथ आवाहनम् ॥

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजां ॥ चन्द्रां हिरण्मयीं

टि० १ तत्रैववाचस्पतौ ॥ कुर्यादावाहनंमूर्तौम्नृन्मय्यां सर्वदैवहि ॥ प्रतिमायां जले वह्नौ नावाहनविसर्जनम् ॥
आवाहनादि की मुद्रा यन्त्र पूजन में लगाई जायँगी ॥

लक्ष्मीं जातवेदो ममावह ॥ ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥ सभूमिर्ठं० सर्वतस्पृत्वात्यतिष्ठद्दशांगुलम् ॥१॥ ॐ आगच्छेहमहादेवि ! सर्वसम्पत्प्रदायिनि ! ॥ यावद्व्रतं समाप्येत तावत्त्वं सन्निधौ भव ॥ इत्यावाहनम् ॥

अनन्तर आसन के लिये पुष्प हाथ में लेकर ॥

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ॥ यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥ ॐ पुरुषएवेदर्ठं० सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम् ॥ उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥२॥ अनेकरत्नसंयुक्तं नानामणिगणान्वितम् ॥ कार्तस्वरमयं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम् ॥ इत्यासनम् ॥

भगवती के पैर धुलाने के लिये जल में नीचे लिखे पदार्थ मिलाना
श्यामाक, विष्णुक्रान्ता, कमलपुष्प, दूर्वा, जल आदि

पाद्यम् ॥

ॐ अश्वपूर्णां (र्वां) रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम् ॥ श्रियंदेवीमुपह्वये श्रीर्मादेवीजुषताम् ॥ ॐ एतावानस्य महिमातोज्यायांश्चपूरुषः ॥ पादोस्यविश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि ॥३॥ गङ्गादि सर्व तीर्थेभ्यो मया प्रार्थनयाहृतम् ॥ तोयमेतत्सुखस्पर्शं पाद्यार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ इतिपाद्यम् ॥

अर्घ्यम् ॥

दूर्वा, तिल, दर्भा, सर्षप, यव, पुष्प, अक्षत, चन्दन जल में
मिलाकर अर्पण करना ॥

ॐ कांसोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ॥ पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ ॐ त्रिपादूर्ध्वउदैत्पुरुषः पादोस्येहाभवत्पुनः ॥ ततो विष्वंव्यक्रामत्साशनानशनेअभि ॥ निधीनां सर्व रत्नानां त्वमनर्घ्यगुणाह्यसि ॥ सिंहोपरिस्थिते देवि ! गृहाणार्घ्यंनमोस्तुते ॥४॥ इत्यर्घ्यम्

[1]अथ मधुपर्कम् ॥

दधि मधु घृत समान भाग न हों ।

ॐ मधुव्वाताऋतायते मधुक्षरन्तिसिन्धवः ॥ माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः ॥ दधिमधुघृतसमायुक्तं पात्रयुग्मसमन्वितम् ॥ मधुपर्कं गृहाण त्वं शुभदा भव शोभने ! ॥ ५ ॥

अथाचमनम् ॥

ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियंलोकेदे वजुष्टामुदारां ॥ तां पद्मनेमिंशरणमहंप्रपद्ये अलक्ष्मीर्मेनश्यतां त्वां वृणे ॥ ॐ ततो विराडजायतव्विराजोऽअधिपूरुषः ॥ सजातोऽअत्यरिच्यतपश्चाद्भूमिमथोपुरः ॥ कर्पूरेणसुगंधेन सुरभिस्वादु शीतलम् ॥ तोयमाचमनीयार्थं देवि ! त्वं प्रतिगृह्यताम् ॥ ६ ॥ इत्याचमनम् ॥

अथ स्नानम् ॥ पहले मलापकर्षण स्नान कराना ।

ॐ आदित्यवर्णे तपसोधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथबिल्वः ॥ तस्यफलानितपसानुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः ॥ ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः संभृतंपृषदाज्यम् ॥ पशूँस्ताँश्चक्रेवायव्या नारण्याग्राम्याश्चये ॥ मन्दाकिन्याःसमानीतैर्हेमांभोरुहवासितैः ॥ स्नानं कुरुष्वदेवेशि ! सलिलैश्च सुगन्धिभिः ॥ इतिस्नानम् ॥७॥

पुनराचमनीयम् ॥

उच्छिष्टोप्यशुचिर्वापि यस्यस्मरणमात्रतः ॥ शुद्धिमाप्नोतितस्मै ते पुनराचमनीयकम् ॥ स्नानवस्त्रोपवीतान्तेऽपितत्स्मृतम् ॥ ८ ॥

सुगन्धित तैल व इत्र मल कर स्नान कराना ।

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि ॥ एवानो दूर्वेप्रतनुसहस्रेणशतेन च ॥ ॐ स्नेहंगृहाण स्नेहेन लोकेश्वरि !

---

[1] पाराशरः । सर्पिरेक गुणं प्रोक्तं शोधितं द्विगुणं मधु ॥
मधुपर्के विधौ प्रोक्तं सर्पिषा च समं दधि ॥
घी १ भाग छना हुआ, शहद २ भाग, दधि १ भाग ॥

महानघे ! ॥ सर्वलोकेषु शुद्धात्मन् ! ददामि स्नेहमुत्तमम् ॥९॥

अब पंचामृत से स्नान कराना । पहिले दूध से स्नान कराना ।

ॐ पयः पृथिव्यांपयओषधीषु पयोदिव्यन्तरिक्षेपयोधाः ॥ पयस्वतीः प्रदिशः सन्तुमह्यम् ॥ कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषांजीवनं परम् ॥ पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम् ॥१०॥ शुद्ध जल से स्नान कराना ।

दही से स्नान कराना ।

ॐ दधिक्राव्णोअकारिषं जिष्णोरश्वस्यव्वाजिनः ॥ सुरभिनो मुखाकरत्प्रण आयू ꣳ षितारिषत् ॥ पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम् ॥ दध्यानीतं मया देवि ! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥११॥ शुद्ध जल से स्नान कराना ।

अब घृत से स्नान कराना ।

ॐ घृतं घृत पावानः पिवत व्वसां वसापावानः पिवतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा ॥ दिशः प्रदिशऽ आदिशोव्विदिशउद्दिशोदिग्भ्यः स्वाहा ॥ नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसंतोषकारकम् ॥ घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥१२॥

पुनः शुद्ध जल से स्नान कराना ।

शहद से स्नान कराना ।

ॐ मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवर्ठ० रजः ॥ मधु द्यौरस्तुनः पिता ॥ तरुपुष्पसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु ॥ तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ १३ ॥

पुनः शुद्ध जल से स्नान कराना ।

अब शर्करा (बूरा) से स्नान कराना ।

ॐ अपाꣳ रसमुद्वयसर्ठ० सूर्ये सन्तर्ठ० समाहितम् ॥ अपाꣳ रसस्य योरसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोसीन्द्रायत्वा जुष्टं गृह्णाम्येषते योनिरिन्द्रायत्वा जुष्टतमम् ॥ इक्षुसार समुद्भूता शर्करा पुष्टिकारिका ॥ मलापहारिका दिव्या

स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥१४॥ फिर शुद्ध जल से स्नान कराना ॥

[1]पंचामृत मिलाकर स्नान कराना।

ॐ पंचनद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः ॥ सरस्वती तु पंचधा सो देशे भवत्सरित् ॥ पयोदधि घृतं चैव मधु च शर्करान्वितम् ॥ पंचामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ १५ ॥

शुद्ध स्नान के बाद गन्ध (चन्दन) से स्नान कराना।

ॐ गन्ध द्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ॥ ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ मलयाचलसंभूतं चन्दनागरुसंभवम् ॥ चन्दनं देवि! देवेशि ! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥१६॥

फिर शुद्ध जल से स्नान कराना।

सुगन्धित (उबटना) लगाकर स्नान कराना।

ॐ अर्ठ॰ शुनातेऽअर्ठ॰ शुः पृच्यताम्परुषापरुः ॥ गन्धस्ते सोम मवतु मदाय रसोऽअच्युतः ॥

नानासुगन्धि द्रव्यं च चन्दनं रजनीयुतम् ॥
उद्वर्त्तनं मया दत्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥१७॥

अब शुद्ध जल से स्नान कराना।

ॐ शुद्धवालः सर्व शुद्ध वालो मणिवालस्तऽ आश्विनाः श्येतः श्येताक्षो ऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णायामाऽअवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः ॥

पुनराचमनीयं समर्पयामि नमः ॥ आगे श्री[1] सूक्त वा पुरुष सूक्त के १६ मन्त्रों से मूर्ति पर शंख से महाभिषेक करना चाहिये। तिसके बाद दो वस्त्र (धोती दुपट्टा) वा लेंगा ओढ़नी आँगी धारण कराकर सिंहासन व कलश पर दुर्गा-मूर्ति को स्थापित कर पूजन करना।

---

१ स्कांदे—क्षीराद्दशगुणं दध्ना घृतेनैवदशोत्तरम् ।
मधुनातद्दशगुणंसितयातुततोधिकम् ॥

१—श्री सूक्त के मन्त्र ३४ सफे से छपे हैं।

दो वस्त्र ॥

ॐ उपैतुमां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ॥
प्रादुर्भूतो सुराष्ट्रेस्मिन् कीर्तिं वृद्धिं ददातु मे ॥
तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऋचः सामानि जज्ञिरे ॥
छन्दाᳬंसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥
पट्टकूलयुगं देवि ! कंचुकेन समन्वितम् ॥
परिधेहि कृपां कृत्वा दुर्गे ! दुर्गतिनाशिनि ! ॥

इति युग्म वस्त्रम् ॥ पुनराचमनीयम् ॥

अथोपवीतम् ॥

ॐ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहं ॥ अभूतिमसमृद्धिं च सर्वान्निर्णुद मे गृहात् ॥ ॐ तस्मादश्वाऽअजायन्त येकेचो भयादतः ॥ गावोहजज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाताअजावयः ॥

स्वर्ण-सूत्रमयं दिव्यं ब्रह्मणा निर्मितं पुरा ॥
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वरि ॥

इति यज्ञोपवीत के बाद आचमन कराना ।

अथ चन्दन चढ़ाना ॥

ॐ गन्ध द्वारां दुराधर्षांनित्यपुष्टां करीषिणीम् ॥
ईश्वरीं सर्व भूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥
ॐ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्पुरुषञ्जातमग्रतः ॥
तेन देवा अयजन्त साध्याऽऋषयश्च ये ॥
श्रीखण्डचन्दनंदिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् ॥
विलेपनं च देवेशि ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ॥

इति चन्दनम् ॥ सौभाग्य सूत्र दानम् ॥

ॐ सौभाग्यसूत्रं वरदे ! सुवर्ण-मणि-संयुतम् ॥
कंठे बध्नामि देवेशि ! सौभाग्यं देहि मे सदा ॥
कंठ सूत्रं समर्पयामि नमः ॥

अक्षत चढ़ाना ।

ॐ अक्षन्नमीमदन्तह्यवप्रियाऽअधूषत ॥ अस्तोषतस्वभानवो विप्रानविष्ठयामतीयोजान्विन्द्रते हरी ॥

अक्षतान्निर्मलान् शुद्धान् मुक्तामणिसमन्वितान् ॥ गृहाणेमान्महादेवि ! देहि मे निर्मलां धियम् ॥ इत्यक्षतान् ॥

हरिद्राचूर्ण चढ़ाना ।

हरिद्रारञ्जिते देवि ! सुखसौभाग्यदायिनि ॥
तस्मात्त्वांपूजयाम्यत्र सुखं-शान्ति प्रयच्छ मे ॥

हरिद्राचूर्णं समर्पयामि नमः ॥

गुलाल चढ़ाना ।

कुंकुमं कान्तिदं दिव्यं कामिनीकामसंभवम् ॥ कुंकुमेनार्चिते देवि ! प्रसीद परमेश्वरि ! ॥

इति कुङ्कुमं (गुलाल) समर्पयामि नमः ॥

सिंदूर ।

सिन्दूरमरुणाभासं जपाकुसुमसन्निभम् ॥ अर्पितंते मया देवि ! प्रसीद परमेश्वरि ! ॥

सिंदूरं समर्पयामि नमः ॥

कज्जल चढ़ाना ।

चक्षुर्भ्यां कज्जलंरम्यं सुभगे ! शान्तिकारकम् ॥ कर्पूरज्योतिरुत्पन्नं गृहाण परमेश्वरि ! ॥

इति नेत्रे कज्जलं समर्पयामि नमः ॥

दूर्वाङ्कुर चढ़ाना (क्षेपक है)

ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलांपद्ममालिनीम् ॥ चन्द्रांहिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदोमावह ॥

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्तीपरुषः परुषस्परि ॥ एवानोदूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेनच ॥ दूर्वादले श्यामलेत्वं महीरूपेहरिप्रिये ! ॥ अतोदूर्वाभिर्भवतीं पूजयामि सदा शिवे ! ॥

इति दुर्वाङ्कुरान् समर्पयामि नमः ॥

विल्वपत्र अर्पण करना ।

ॐ आर्द्रां यः करिणींयष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ॥ सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदोम आवह ॥ ॐ नमो विल्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च व्वरूथिने च नमः ॥ श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च नमः ॥ अमृतोद्भवः श्री वृक्षोमहादेवप्रियः सदा ॥ विल्वपत्रं प्रयच्छामि पवित्रं ते सुरेश्वरि ! ॥

इति विल्वपत्राणि समर्पयामि नमः ॥

पल्लव अर्पण करना ।

ॐ तांम आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ॥ यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावोदास्योश्वान् विन्देयंपुरुषानहम् ॥ ॐ अश्वस्थेवो निषदनं पर्णेवोव्वसतिष्कृता ॥ गोभाजइत्किलासथयत्सनवथ पूरुषम् ॥ गृह द्वारे चोग्रमपिदुष्टासुर निवर्हिणि ॥ पूजां करोमि चार्वंगि ! पल्लवैर्नंदनोद्भवैः ॥

इति पल्लवान्समर्पयामि नमः ॥

फलमाला अर्पण करना ।

ॐ महादेवी च विद्महे विष्णु पत्नीं च धीमहि ॥ तन्नो देवीः प्रचोदयात् ॥ ॐ याः फलनीर्याऽअफलाऽअपुष्पायाश्चपुष्पिणीः ॥ वृहस्पति प्रसूतास्तानोमुश्चन्त्वꣳठ॰ हसः ॥ शरत्काले समुद्भूतां निशुम्भासुर मर्दिनी ! ॥ फलमालां वरां देवि ! गृहाण सुरपूजिते ! ॥

इति फलमालां समर्पयामि नमः ॥

* रत्नमाला धारण कराना ।

ॐ परिवाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत् ॥ दधद्रत्नानिदा-

---

* मुक्ता माणिक्य वैडूर्य। गोमेदान्वज्रविद्रुमौ ॥
पुष्परागं मरकतं गरुडीद्गार (नीलम्) मेवच ।
एभिस्तुग्रथिता 'स्वर्णेरत्नमालेति' कथ्यते ॥ —शारदायां ॥

शुभे ।। ॐ कर्दमेनप्रजाभूता मयि सम्भ्रम कर्दम ।। श्रियं वासय मे गृहे मातरं पद्म मालिनीम् ।। मुक्ताफलयुतां मालां रत्नवैडूर्य सुप्रभाम् ।। माणिक्यस्वर्ण ग्रथितां गृह्यतां वरदे ! नमः ।।

इति रत्नमालां समर्पयामि नमः ।।

फूलों की माला धारण कराना ।

ॐ आपःस्रजन्तुस्निग्धानिचिक्लीत वसमेगृहे ।। (नो) निचदेवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ।। ॐ श्रीश्चतेलक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वेनक्षत्राणिरूपमश्विनौव्यात्तम् ।। इष्णन्निषाणामुम्मइषाण सर्वलोकम्मइषाण ।। पद्म शंखज पुष्पादि शतपत्रैर्विचित्रताम् ।। पुष्पमालां प्रयच्छामि गृहाण त्वं सुरेश्वरि ! ।।

इति पुष्पमालां समर्पयामि नमः ।।

पुष्प चढ़ाना ।

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि ।। पशूनां रूप मन्नस्य मयिः श्रीः श्रयतां यशः ।।

ॐ यत्पुरुषंव्यदधुः कतिधाव्य कल्पयन् ।। मुखङ्किमस्यासीत्किम्बाहूकिमूरूपादाउच्येते ।। पुष्पैर्नानाविधैर्दिव्यैः कुमुदैरथचम्पकैः ।। पूजाते क्रियते देवि पुष्पाणि प्रतिगृह्यताम् ।।

मंदारपारिजातादि पाटली केतकानिच ।।
जाती चंपक पुष्पाणि गृहाणेमानि शोभने ! ।।

इति पुष्पाणि समर्पयामि नमः ।।

दुर्गा प्रदेय पुष्पाणि ।

कुन्दमन्दार पुन्नाग पाटली नाग केशरम् ।। आरग्वधं कर्णिकारं जयन्ती नवमल्लिका ।।१।। सौगन्धिकं सकंकोलं पुन्नागाशोकमल्लिका ।। अन्यान्यपि सुगन्धीनि पुष्पपत्राणिदेशिकैः ।।२।।

इति शक्ति पल्लवे ।।

अलङ्कारम् ।

हार-कंकण-केयूर-मेखला-कुंडलादिभिः ।। रत्नाढ्य कुंडलो-

पेतं भूषणं प्रतिगृह्यताम् ॥

अलङ्काराभावे अक्षतान् समर्पयामि नमः ॥

सुगन्धित इत्र चढ़ाना ।

ॐ अहिरिवभोगैः पर्येतिबाहुं ज्यायाहेतिंपरिबाधमानः ॥ हस्तघ्नोविश्वाव्वयुनानिविद्वान्पुमान्पुमाꣳसम्परिपातुविश्वतः ॥ चन्दनागरु कर्पूर कुंकुमं रोचनं तथा ॥ कस्तूर्यादि सुगन्धांश्च सर्वांगेषु विलेपयेत् ॥

इति परिमल (इत्र) द्रव्यं समर्पयामि नमः ॥

मालान्त पूजन के बाद अङ्ग पूजा करना ।

ॐ दुर्गायै नमः पादौ पूजयामि नमः ॥ ॐ महाकाल्यै नमः गुल्फौ पूजयामि नमः ॥ ॐ मंगलायै नमः जानुद्वयं पूजयामि नमः ॥ ॐ कात्यायन्यै नमः हृदयं पूजयामि नमः ॥ ॐ भद्रकाल्यै नमः कटिं पूजयामि नमः ॥ ॐ कमलवासिन्यै नमः नाभिं पूजयामि नमः ॥ ॐ शिवायै नमः उदरं पूजयामि नमः ॥ ॐ क्षमायैनमः हृदयं पूजयामि नमः ॥ ॐ कौमार्यै नमः स्तनौ पूजयामि नमः ॥ ॐ उमायैनमः हस्तौ पूजयामि नमः ॥ ॐ महागौर्यै नमः दक्षिणबाहुं पूजयामि नमः ॥ ॐ रमायै नमः स्कन्धौपूजयामि नमः ॥ ॐ महिषमर्दिन्यै नमः नेत्रे पूजयामि नमः ॥ ॐ सिंहवाहिन्यै नमः मुखं पूजयामि नमः ॥ ॐ माहेश्वर्यै नमः शिरः पूजयामि नमः ॥ ॐ कात्यायन्यै नमः सर्वाङ्गं पूजयामि नमः ॥ इत्यङ्ग पूजनम् ॥

अथ धूप अर्पण करना व अक्षत छोड़कर घंटा बजाना ।

ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ॥ सूक्तं पंच दशर्चञ्च श्रीकामः सततंजपेत् ॥ ॐ धूरसि धूर्व धूर्वंतन्धुवतं योऽस्मान्धूर्वति तं धूर्वयं वयं धूर्वामः ॥ देवानामसिवन्हितमꣳ सस्नितमं पप्रितमञ्जुष्टतमन्देवहूतमम् ॥ दशाङ्गगुग्गुलं धूपं चन्द-

नागरु संयुतम् ॥ समर्पितं मया भक्त्या महादेवि ! प्रगृह्यताम् ॥

धूप पात्रं देवता वामे, इति धूपमाघ्रापयामि नमः ॥

अथ दीपक बलाना व अक्षत छोड़कर घंटा बजाना ।

ॐ सरसिजनिलयेसरोजहस्ते धवलतरांशुकगन्धमाल्यशोभे ॥ भगवति ! हरिवल्लभे ! मनोज्ञे ! त्रिभुवनभूतिकरि ! प्रसीद मह्यम् ॥ ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा ॥ अग्निर्वर्चोज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ॥ ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ॥ घृतवर्तिसमायुक्तं महातेजोमहोज्वलम् ॥ दीपं दास्यामि देवेशि ! सुप्रीताभवसर्वदा ॥

इति दीपं दर्शयेत् घृतदीपं सितवर्ति युतं देवतादक्षभागे ।
तैल दीपं रक्तवर्ति युतं देवता वाम भागे ।

अथ नैवेद्यम् ॥

नैवेद्यं निवेदयामिनमः ॥ जलेनाभ्युक्ष्य ॥ गंधपुष्पाभ्यामाच्छाद्य ॥ धेनुमुद्रया अमृतीकृत्य ॥ योनिमुद्रां प्रदर्श्य ॥ सत्यन्त्वर्तेन परिषिञ्चामि इति प्रातः (ऋतंत्वासत्येन परिषिञ्चामि इति सायं) ॥ घंटांवादयेत् ॥

ग्रासमुद्रां प्रदर्श्य ॥ ॐ प्राणाय स्वाहा, अंगुष्ठ अनामिका कनिष्ठाभिः ॥ ॐ अपानाय स्वाहा अंगुष्ठ तर्जनीमध्यमाभिः ॥ ॐ उदानाय स्वाहा अंगुष्ठ मध्यमाऽनामिकाभिः ॥ ॐ व्यानाय स्वाहा अंगुष्ठतर्जनीमध्यमाभिः ॥ ॐ समानाय स्वाहा सर्वांगुलीभिः ॥ ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ॥ सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥ ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्षꣳ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत ॥ पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकां२अकल्पयन् ॥ अन्नं चतुर्विधं स्वादु रसैः षड्भिः समन्वितम् ॥ नैवेद्यं गृह्यतां देवि ! भक्तिमेह्यचलां कुरु ॥

नैवेद्यं निवेदयामि नमः ॥

मध्ये-मध्ये आचमनीयं समर्पयामिनमः ॥ उत्तरापोषणार्थेपुनः पुनर्नैवेद्यं निवेदयामि नमः ॥ पुनराचमनीयं समर्पयामि नमः ॥

आचमनम् ॥

ॐ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं पिङ्गलां पद्म-मालिनीम् ॥
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥
ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञ मतन्वत ॥
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्मइध्मःशरद्धविः ॥
आचम्यतां त्वया देवि ! भक्तिं मे ह्यचलां कुरु ॥
ईप्सितं मे वरं देहि परत्र च परां गतिम् ॥

आचमनं समर्पयामि नमः ॥

करोद्वर्तनम् ॥

करोद्वर्तनकं देवि ! सुगन्धैः परिवासितैः ॥
ईप्सितं मे वरं देहि परत्र च पराङ्गतिम् ॥
कराद्वर्तनार्थे गन्धं समर्पयामि नमः ॥

हस्त प्रक्षालनार्थे जलम् ॥

गन्धतोयं समानीतं सुवर्णकलशे स्थितम् ॥
हस्तप्रक्षालनार्थाय पानीयं ते निवेदये ॥

ऋतु फलम् ॥

ॐ याः फलिनीर्याअफलाअपुष्पा याश्चपुष्पिणीः ॥ बृहस्पति प्रसूतास्ता नोमुञ्चन्त्वꣳ हसः ॥ द्राक्षा खर्जूर कदली पनसाम्रकपित्थकम् ॥ नारिकेलेक्षुजंबादि फलानि प्रतिगृह्यताम् ॥ ऋतुफलानि समर्पयामि नमः ॥

ताम्बूल पुङ्गीफलम् ॥

ॐ तांमआवह जात वेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ॥ यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावो दास्योश्वान्विन्देयं पुरुषानह ॥ ॐ सप्ता-

स्या सन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः ॥ देवा यद्यज्ञं तन्वाना-अवध्नं पुरुषं पशुम् ॥ एलालवङ्गकस्तूरीकर्पूरैः पुष्पवासितां ॥ वीटिकां मुखवासार्थमर्पयामि सुरेश्वरि ! ॥

दक्षिणाद्रव्यम् ॥

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकआसीत् ॥ सदाधार पृथिवींद्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ पूजाफलसमृद्ध्यर्थं तवाग्रे स्वर्णमीश्वरि !॥ स्थापिता तेन मे प्रीता पूर्णान्कुरु मनोरथान् ॥

ध्यानम् ॥

दुर्गे ! स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैःस्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ॥ दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता ॥ इति नत्वा॥ ॐ देवा आयान्तु यातुधाना अपयान्तु ॥ दुर्गे ! देवि ! यजनं रचस्वेति भूमौ प्रादेशं कृत्वा प्रणमेत् ॥

नव दुर्गा पूजनम् ॥ प्रथमं शैलपुत्री पूजनम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः शैलपुत्रि ! इहागच्छ इहतिष्ठ ॥ शैलपुत्र्यै नमः शैलपुत्रीमावाहयामि स्थापयामि नमः ॥ पाद्यादिभिः पूजनं विधाय ॥ ॐ जगत्पूज्ये जगद्वन्द्ये सर्वशक्तिस्वरूपिणि ! ॥ पूजां गृहाण कौमारि ! जगन्मातर्नमोस्तुते ॥ १ ॥

ब्रह्मचारिणी पूजनम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मचारिणि ! इहागच्छ इहतिष्ठ ब्रह्मचारिण्यै नमः ॥ ब्रह्मचारिणीमावाहयामि स्थापयामि नमः ॥ पाद्यादिभिः पूजनं विधाय ॥ ॐ त्रिपुरां त्रिगुणाधारां मार्गज्ञानस्वरूपिणीम् ॥ त्रैलोक्यवंदितां देवीं त्रिमूर्तिं पूजयाम्यहम् ॥ २ ॥

चन्द्रघण्टा पूजनम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः चन्द्रघंटे इहागच्छ इहतिष्ठ चन्द्रघंटायै नमः ॥

चन्द्रघंटामावाहयामि स्थापयामिनमः ।।पाद्यादिभिः पूजनंविधाय।। ॐ कालिकां तु कलातीतां कल्याणहृदयां शिवाम् ।। कल्याणजननीं नित्यं कल्याणीं पूजयाम्यहम् ।। ३ ।।

कूष्माण्डा पूजनम् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः कूष्माण्डे इहागच्छ इहतिष्ठ कूष्माण्डायै नमः।। कूष्माण्डामावाहयामि स्थापयामिनमः।। पाद्यादिभिः पूजनं विधाय ।। ॐ अणिमादिगुणोदारां मकराकारचक्षुषम् ।। अनन्त शक्ति भेदां तां कामाक्षीं पूजयाम्यहम् ।। ४ ।।

स्कन्दमाता पूजनम् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दमातः ! इहागच्छ इहतिष्ठ स्कन्दमात्रे नमः ।। स्कन्द मातरमावाहयामि स्थापयामि नमः ।। पाद्यादिभिः पूजनं विधाय ।। चण्डवीरां चण्डमायां चण्डमुण्ड प्रभञ्जिनीम्।। तां नमामि च देवेशीं चण्डिकां पूजयाम्यहम् ।। ५ ।।

कात्यायनी पूजनम् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः कात्यायनि ! इहागच्छ इहतिष्ठ कात्यायन्यै नमः ।। कात्यायनीमावाहयामि स्थापयामि नमः ।। पाद्यादिभिः पूजनं विधाय ।। ॐ सुखानन्द करीं शान्तां सर्व देवैर्नमस्कृताम्।। सर्वभूतात्मिकां देवीं शाम्भवीं पूजयाम्यहम् ।। ६ ।।

कालरात्री पूजनम् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः कालरात्रि ! इहागच्छ इहतिष्ठ कालरात्र्यै नमः ।। कालरात्रीमावाहयामि स्थापयामिनमः।। पाद्यादिभिः पूजनं विधाय।। चण्डवीरां चण्डमायां रक्तबीज प्रभञ्जिनीम् ।। तां नमामि च देवेशीं गायत्रीं पूजयाम्यहम् ।। ७ ।।

महागौरी पूजनम् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः महागौरि ! इहागच्छ इहतिष्ठ ।। महागौर्यै नमः ।। महागौरीमावाहयामि स्थापयामि नमः ।। पाद्यादिभिः

पूजनं विधाय ॥ ॐ सुन्दरीं स्वर्णवर्णाङ्गीं सुख सौभाग्यदायिनीम् ॥ सन्तोष जननीं देवीं सुभद्रां पूजयाम्यहम् ॥ ८ ॥

सिद्धिदा पूजनम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्धिदे ! इहागच्छ इहतिष्ठ सिद्धिदायै नमः ॥ सिद्धिदामावाहयामि स्थापयामिनमः ॥ पाद्यादिभिः पूजनं विधाय ॥ ॐ दुर्गमे दुस्तरेकार्ये भयदुर्ग विनाशिनि ! ॥ पूजयामि सदा भक्त्या दुर्गां दुर्गतिनाशिनीम् ॥ ९ ॥

इति नव दुर्गा पूजनम् ॥

ज्योतिः पूजनम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आद्यासर्वसुरौजोद्भव तेजस्वरूप श्री दुर्गायै नमः ॥ ॐ जातवेदसे सुनवामसोममरातीयतो निदहाति वेदः ॥ सनः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः ॥ पाद्यादिभिः पूजनं विधाय ॥

ध्यानम् ॥

प्रधान साधार विकल्प सत्ता स्वभाव भावाद्भुवन त्रयस्य ॥ सा विद्यया व्यक्तमपीह माया ज्योतिः परा पातु जगन्ति नित्यम् ॥ (योगिनी तंत्रे)

देश कालौ संकीर्त्य नव दुर्गा महोत्सवे ॥ श्री दुर्गा प्रसाद सिद्धि द्वारा सर्वापच्छान्ति पूर्वकं ममाभीष्ट सिद्धये निर्विघ्नतया परिसमाप्त्यर्थं वटुक गणेशादि सहितं कुमारी पूजनं करिष्ये ॥

गणेश—वटुक सहित नव कुमारी[1] (कन्या) पूजनम् ॥

वायव्यकोण से प्रारम्भ करके ईशान कोण पर्यन्त आसन बिछाना तिनके ऊपर प्रथम गणेश दूसरा वटुक और नवकुमारियों को बिठाकर पाद्यादि से पूजन करना ॥ यदि ९ कुमारी पूजन की शक्ति न होवे वा न मिलें तो १ । ३ । ५ । ७ । ९ । गणेश वटुक सहित का पूजन करना ॥

---

[1] अथ कुमारी पूजा तत्प्रकारश्च देवीपुराणे ॥ ब्रह्मोवाच ॥ न तथा तुष्यते शक्र ! होमदान. जपेन तु ॥ कुमारी भोजनेनात्र यथा देवी

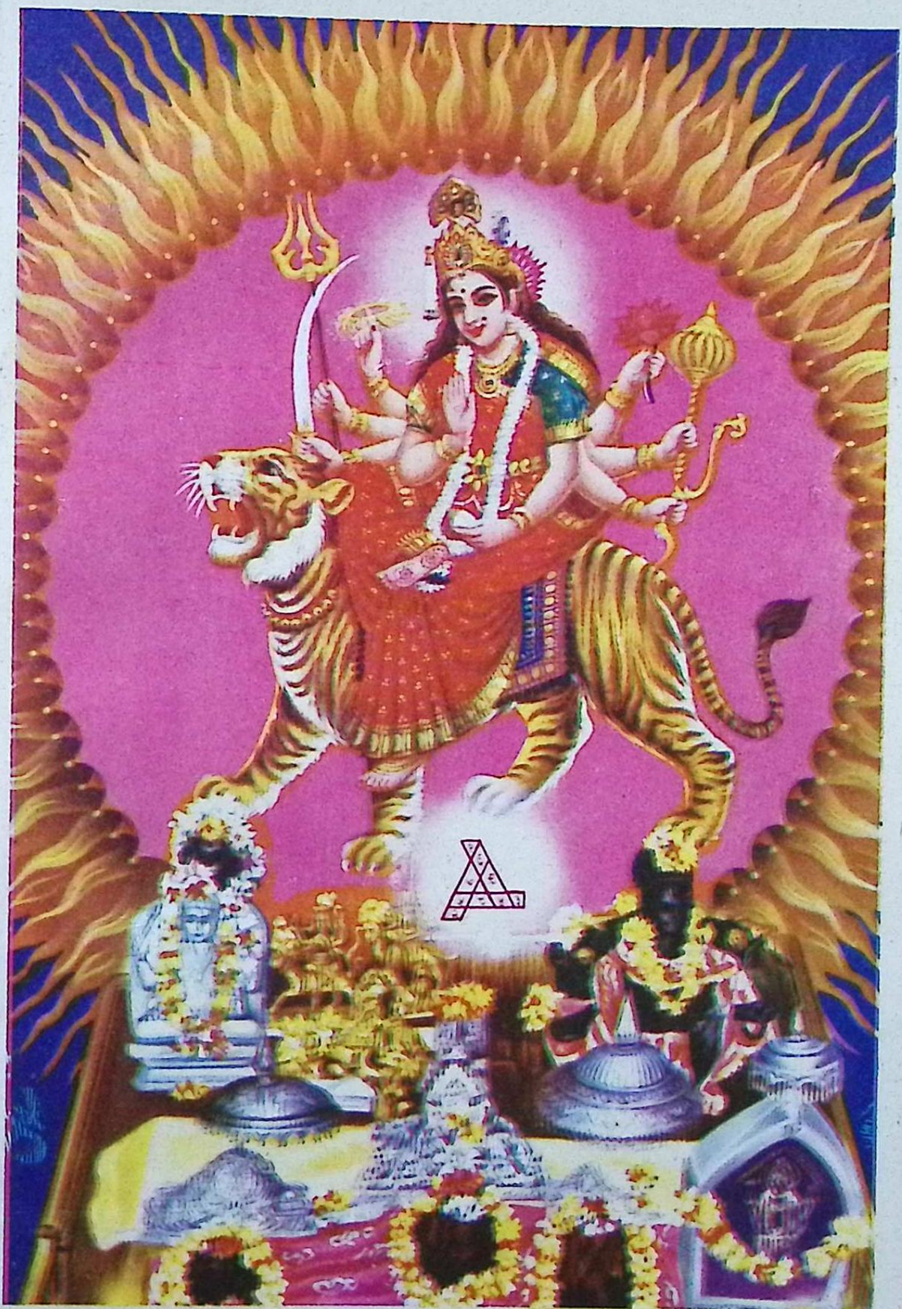

MAA KE DARSHAN

गणेश पूजनम् ॥

ॐ गं गणपतये नमः ॥ पाद्यादि पूजनं विधाय ॥

ध्यानम् ॥

ॐ उद्यद्दिनेश्वर रुचिं निज हस्त पद्मैः ॥
पाशांकुशाभय वरान्दधतं गजास्यम् ॥
रक्ताम्बं सकल दुःख हरं गणेशं ॥
ध्यायेत्प्रसन्नमखिलाभरणाभिरामम् ॥ १ ॥

प्रसीदति ॥ अत्र नवरात्रे—प्रक्षाल्य पादौ सर्वासां कुमारीणां च वासव । सुलिप्ते भूतले रम्ये तत्र ता आसने स्थिताः ॥ पूजयेद्गन्धपुष्पैश्च स्रग्भिश्चापि मनोरमैः ॥ पूजयित्वा विधानेन भोजनं तासु दापयेत् ॥ खण्डं लड्डु गुडं सर्पि दधिक्षीरं समाक्षिकम् ॥ तासां देयं कुमारीणां शनैस्संभोजयेत्तु ताः ॥ पानीयं याचितं देयमन्नं वा याचितं शुभम् ॥ वास्तृप्तास्तु यदा सर्वास्तदा त्वाचमनंददेत् ॥ आचम्य चाक्षतान्दत्वा त्वया क्षन्तव्य मित्युत ॥ दातुः शिरसि दातव्याः कन्यकाभिरथाक्षताः ॥ तेनापि प्रणिपातस्तु कर्तव्यो भक्ति पूर्वकः ॥ अनेन विधिना शक्र! देवी क्षिप्रं प्रसीदति ॥ ददाति विविधान्कामान्मनोभीष्टान्सुराधिप! ॥ राज्यं कृत्वा ततः पश्चाद्देवीलोकञ्च गच्छति ॥ स्कान्देऽपि ॥ एकैकां पूजयेत्कन्यामेकवृद्धया तथैव च ॥ द्विगुणं त्रिगुणं वापि प्रत्येकं नवकं वरम् ॥ नवभिर्लभते भूमिमैश्वर्यं द्विगुणेन तु ॥ एक वृद्धया लभेत्क्षेममेकैकेनश्रियंलभेत् ॥ एकवर्षा तु या कन्यां पूजार्थं तां तु वर्जयेत् ॥ गन्ध पुष्प फलादीनां प्रीतिस्तस्या न विद्यते ॥ यथोक्ताऽलाभेतु विवाहितापि या पुष्पिणी तावत् पूज्या विवाहान्तरमपि कन्यात्वमुपजायते ।' तावत्संपूज्यते कन्या यावत्पुष्पं न दृष्यते ॥ इति भगवन्त भास्कर कृत देवी पुराणवचनात् ॥ कामना परत्वेन आसां क्रमेण पूजायां विशेष उक्तः ॥ तत्रैव ॥ दुःख दारिद्र् नाशाय शत्रूणां नाशनाय च ॥ आयुषे बल वृद्धयर्थं कुमारीः पूजयेन्नरः ॥ आयुष्कामस्त्रिमूर्तिं तु त्रिवर्गस्य फलाप्तये ॥ अपमृत्यु व्याधि पीड़ा दुःखानामपनुत्तये ॥ सौख्य धान्यधनारोग्य पुत्र पौत्रादि वृद्धये ॥ कल्याणीं पूजयेद्धीमान्नित्यं कल्याण वृद्धये ॥ आरोग्य सुख कामी तु धन कामस्तथैव च ॥ यशस्कामी नरोंनित्यं रोहिणीं परिपूजयेत् ॥ विद्यार्थी च जयार्थी च राज्यार्थी च विशेषतः ॥

ॐ खर्वं स्थूलतनुं गजेन्द्रवदनं लम्बोदरं सुन्दरं,
प्रस्यन्दन्मद गन्धलुब्ध मधुप व्यालोल गण्डस्थलम् ॥
दन्ताघात विदारितारिरुधिरैः सिन्दूर शोभाकरं,
वन्दे शैलसुता सुतं गणपतिं सिद्धिप्रदं कामदम् ॥ २ ॥

वटुक पूजनम् ॥

ॐ वं वटुकाय नमः ॥ पाद्यादि पूजनं विधाय ॥

ध्यानम् ॥

ॐ कर कलित कपालः कुण्डली दण्डपाणिस्तरुण तिमिर नील व्याल यज्ञोपवीती ॥ क्रतु समय सपर्या विघ्नविच्छेद हेतुर्जयति वटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम् ॥

तत्रविधिः ॥

यजमानः पूजयेच्च कन्यानां नवकं शुभम् ॥ द्वि वर्षाद्याद्-शाब्दान्ताः कुमारीः परि पूजयेत् ॥ १ ॥ अर्थादेक हायनाल्व-

---

शत्रूणां च विनाशार्थी कालिकां पूजयेन्नरः ॥ संग्रामे जय कामश्च चण्डिकां परिपूजयेत् ॥ दुःख दारिद्र्य नाशाय नृप सम्मोहनाय च ॥ महापाप विनाशाय शाम्भवीं च प्रपूजयेत् ॥ सर्व लोकेषु शत्रूणामुग्र-साधन कर्मणि ॥ दुर्गां दुर्गार्ति नाशाय पूजयेद्यत्नतो बुधः ॥ सौभाग्य धन धान्यादि वांछितार्थ फलाप्तये ॥ सुभद्रां पूजयेन्मर्त्यो दासी दास विवृद्धये ॥ पूजा प्रकारश्च तत्रैव ॥ प्रातः काले विशेषेण कृताभ्यङ्गो विशेषतः ॥

॥ अथ वर्ज्य कन्या आह ॥

हीनाधिकाङ्गीं कुष्ठादि विकारां कुकुलां तथा ॥ ग्रन्थि स्फुटित सर्वाङ्गीं रक्त पूय व्रणाङ्कितां ॥ जात्यन्धां केकरां काणां कुरूपां तनु रोमशाम् ॥ संत्यजेद्रोगिणीं कन्यां दासी गर्भ समुद्भवाम् ॥

अथ ज्ञाति भेदेन कामना भेदेषु तत्पूज्यतामाह ॥ ब्रह्माणीं सर्व कार्येषु जयार्थे नृप वंशजाम् ॥ लाभार्थे वैश्य वंशोत्थां सुतार्थे शूद्र वंशजाम् ॥ दारुणे चान्त्य जातीयां पूजयेद्विधना नरः ॥

अथ वर्ण भेदेन पूजाभेदः ॥ गौरीं सर्वेष्ट संसिद्ध्यै पीताङ्गी जय कीर्तये ॥ लाभार्थेऽरुणवर्णाङ्गीमसितामारणादिष्विति क्वचित् ॥ एक वँश समुद्भूतां कन्यां सम्यक् प्रपूजयेदिति ॥ कौलावली तन्त्रे ॥

वयस्का वर्ज्याः ॥ ता आसने उपवेश्यावाहयेत् मन्त्रेण ॥ अथ-आवाहन मन्त्रः ॥ ॐ मन्त्राक्षर मयीं लक्ष्मीं मातृणां रूप धारिणीम् ॥ नवदुर्गात्मिकां साक्षात्कन्यामावाहयाम्यहम् ॥ अनेनैव मन्त्रेण नवापि आवाहयेत् ॥ अशक्ता यथाशक्ति एकामपि पूजयेत् ॥ पाद्यादि पूजनं विधाय ॥

द्विवर्षा कुमारी संज्ञा ॥

सर्वस्वरूपे ! सर्वेशे ! सर्वशक्ति स्वरूपिणि ! ॥ पूजां गृहाण कौमारि ! जगन्मातर्नमोस्तु ते ॥ १ ॥

त्रिहायना त्रिमूर्ति संज्ञा ॥

त्रिपुरां त्रिपुराधारां त्रिवर्ग ज्ञान रूपिणीम् ॥ त्रैलोक्य वन्दितां देवीं त्रिमूर्तिं पूजयाम्यहम् ॥ २ ॥

चतुरब्दा कल्याणी ॥

कलात्मिकां कलातीतां कारुण्य हृदयां शिवाम् ॥ कल्याण जननीं देवीं कल्याणीं पूजयाम्यहम् ॥ ३ ॥

पंचवर्षा रोहिणी ॥

अणिमादि गुणाधारामकाराद्यक्षरात्मिकाम् ॥ अनन्तां शक्तिकां लक्ष्मीं रोहिणीं पूजयाम्यहम् ॥ ४ ॥

षडब्दा कालिका ॥

कामचारां शुभां कान्तां कालचक्र स्वरूपिणीम् ॥ कामदां करुणोदारां कालिकां पूजयाम्यहम् ॥ ५ ॥

सप्तहायनी चण्डिका ॥

चण्डवीरां चण्डमायां चण्ड मुण्ड प्रभंजनीम् ॥ पूजयामि-सदा देवीं चण्डिकां चण्डविक्रमाम् ॥ ६ ॥

अष्टवर्षा शांभवी ॥

सदानन्दकरीं शान्तां सर्व देव नमस्कृताम् ॥ सर्व भूतात्मिकां लक्ष्मीं शाम्भवी पूजयाम्यहम् ॥ ७ ॥

नवहायनी दुर्गा ॥

दुर्गमे दुस्तरे कार्ये भवदुःख विनाशिनीम् ॥ पूजयामि सदा भक्त्या दुर्गां दुर्गार्ति नाशिनीम् ॥ ८ ॥

दशवर्षा सुभद्रा ॥

सुन्दरीं स्वर्ण वर्णाभां सुख सौभाग्यदायिनीम् ॥ सुभद्रजननीं देवीं सुभद्रां पूजयाम्यहम् ॥ ९ ॥

नित्य आरती यहाँ करना ॥

कुमारी पूजनान्ते तद्धस्तादक्षतादिकं स्वशिरसि विधाय भक्त्या अनुव्रजेत् सुवासिनीं— ब्राह्मणान् भोजयेत् पश्चात् इष्टमित्र बांधवादिना सह स्वयमपिभुंजीत शेष कालं गीत वाद्यादिभिर्नयेत् ॥

इति कुमारी पूजनम् ॥

अष्ट रात्रे न दोषोऽयं नवरात्रे तिथिक्षये ॥ सूतके पूजनं प्रोक्तं जपदानं विशेषतः ॥ देवी मुद्दिश्य कर्त्तव्यं तत्र दोषो न विद्यते रजस्वलां तथाशौचे ब्राह्मणैश्च सुपूजयेत् ॥ सभर्तृकाणां स्त्रीणां नवरात्रे गंधादि सेवनं न दोषाय ॥ तदुक्तं हेमाद्रौ ॥ गंधालंकार ताम्बूल पुष्पमाल्यानुलेपनैः ॥

कुमारी पूजने विशेषः कौलावली तन्त्रे ॥

एवं प्रणवयोगेन चैतन्यं तत्तुमर्चयेत् ॥ वाणी माया तथा लक्ष्मीर्माया कूर्चद्वयं ततः ॥ एते च प्रणवाः ज्ञेया कुमार्याः परिपूजने ॥ चतुर्दश स्वरेणाढ्यो भृगुविन्द्विन्दु संयुतः ॥ चैतन्य बीजं कथितं साधकानां समृद्धिदम् ॥ एवं द्वाभ्यां त्रिभिश्चैव सप्तधानवधा पुनः ॥ नित्य क्रमेण नियतं पूजयेद्विधि पूर्वकम् ॥ वाग्भवेन जलंदेयं मायया पादशौचकम् ॥ लक्ष्म्याचार्घ्यं प्रदद्यात्तु कूर्चबीजेन चन्दनं ॥ शक्ति बीजेन पुष्पाणि धूपं षष्ठेन दापयेत् ॥ वाग्भवेन पुरक्षोभं मायया च गुणाष्टकम् ॥ श्री बीजेन श्रियोलाभः मायया शत्रु संक्षयः ॥ भैरवेण तु बीजेन षण्डत्वमनुगच्छति ॥

न्यासादिकं प्रकुर्वीत् आदौस्वीय क्रमेण तु ॥ कुमार्याङ्गे ततः पश्चाद्विशेषन्यासमुत्तमम् ॥

ततोऽखण्ड दीपदानम् ॥ दीपादि विचारो डामर तन्त्रे ॥

सौवर्णं राजतं ताम्रं कांस्यं लोहं च मार्तिकम् ॥ गोधूम माष मुद्गानां चूर्णेन घटितं तथा ॥ सौवर्णे कार्यसिद्धिः स्याद्रौप्ये वश्यंजगद्भवेत् ॥ ताम्रंतयोरभावेऽपि कांस्ये विद्वेषणंभवेत् ॥ मारणं लौहपात्रेस्यादुच्चाटो मृण्मये तथा ॥ गोधूम-चूर्ण घटिते विवादे विजयो भवेत् ॥ माषजे शत्रुसंस्तंभो मौद्गेस्याच्छान्तिसत्तमा ॥ सन्धिकार्ये नदीकूलद्वयमृत्स्ना समुद्भवम् ॥ अलाभेसर्व पात्राणां कुर्यात्ताम्रं च मार्तिकम् ॥

सुवर्णादिजे दीपे सुवर्णादिमानं तत्रैव ॥

सहस्र पल संख्यायां पात्रं शतपलैः स्मृतम् ॥ शतार्द्धपलमानेतु त्रिशतापात्रमुत्तमम् ॥ पादोनशत संख्यायां षष्टिकं पात्र मुच्यते ॥ शतमानेतदर्द्धंतदधिकं पल संयुतम् ॥ सहस्र संख्यके प्रोक्तं दिग्पले दिग्पलं स्मृतम् ॥ नित्य दीपे प्रमाणं हि पलैः सप्तभिरम्बिके ! ॥

अथ दीप स्वरूपम् ॥

बुघ्नेषडंगुलं प्रोक्तमुच्छ्राये च षडंगुलम् ॥ षोड़शांगुल मायामं सुन्दरं पात्रमुत्तमम् ॥ नित्य दीपेतदर्द्धार्द्धं मानं सर्वेषु कर्मसु॥ (बुघ्नं-मूलम्) अथ घृत तैलयोर्विशेषस्तत्रैवोक्तः ॥ गोघृतेन प्रकर्तव्यो दीपः सर्वार्थ सिद्धये ॥ मारणेमाहिषं प्रोक्तमुष्ट्रं विद्वेषणे भवेत् ॥ आविकं शान्तिके प्रोक्तमाजं चोच्चाटने भवेत् ॥ तिलतैलेन वा दीपः कार्यः सर्वार्थ सिद्धये ॥ घृताभावे महेशानि ! मारणे सार्षपेण चेति ॥

अथ वर्तिः ॥

अयुग्मा वर्तिका ग्राह्या एकोत्तर शतावधि ॥ गुरुकार्येऽधिका प्रोक्ता अल्पे अल्पा मता प्रिये ! ॥ सूत्रं श्वेतं तथा पीतं मांजिष्ठं

च कुसुम्भकम् ॥ कृष्णं च कर्वुरं चेति षट्कर्मसु नियोजयेत् ॥ सर्वाभावे सितेनैव कुर्याद्वर्त्तीः पृथक् पृथक् ॥

अथ चालनार्थं शलाकापि तत्रैव ॥

षोड़शांगुल माना च सौवर्णीतु शलाकिका ॥ राजतौदुम्बरी वापि सुलक्षा बुध्नका तथा ॥ तीक्ष्णाग्रा सरला मध्ये त्रिशूलेनाङ्किता तथेति ॥

अथ दीपमुखं तत्रैव ॥

पूर्वाभिमुखे तु सर्वाप्तिः स्तम्भोच्चाटनयोस्तथा ॥ रक्षा विद्वेषयोः कार्यं पश्चिमास्यं प्रदीपकम् ॥ लक्ष्मी प्राप्तावुत्तरास्यं मारणे दक्षिणामुखमिति ॥

अथ दीप दाने प्रतिज्ञा ॥

तत्र पूर्वं कलशाग्रे *घटार्गल यन्त्रं षट्कोण यन्त्रं वा विलिख्य ॥ तिथि वाराद्युच्चार्य ॥ अद्येहैतद्दीप शिखा सम संख्य वर्ष सहस्रावच्छिन्न समयपरिच्छिन्न दुर्गानुचरत्व प्राप्ति पूर्वक भगवती प्रीति कामोऽद्यारभ्य नवम्यन्तमहर्निश वातादि दोष रहितमिमं दीपं श्री दुर्गा देवताकं श्री दुर्गायाः पुरतः प्रज्वालयिष्ये ॥ इति प्रतिज्ञाय ॥ उक्त कामेषु तत्तत्कामनामुच्चार्योक्त विधिना दीपं दत्वा तं गंधाक्षतादिभिः पूजयेत् ॥

दीप स्थापने शकुन विघ्नादयो डामर तन्त्रे ॥ तथाहि ॥

दीपस्य शकुनान्वच्मि शृणु देवि ! यथाक्रमम् ॥ येन विज्ञात मात्रेण जायते च फलाफलम् ॥ दीपारम्भे सुरेशानि ! नवदेदशुभं वचः ॥ तस्मिन्काले यदुक्तं हि तत्तथैव भवेद्ध्रुवम् ॥ वर्जयेदशुभां वाणीं तस्मिन्काले विशेषतः ॥ रक्ताम्बरो द्विजोऽभ्यङ्गो रक्तमाल्यानुलेपनः ॥ दीपारम्भे समायाति तस्य सिद्धिर्न संशयः ॥ शूद्र वर्णः समायाति सिद्धः प्रोक्तातु मध्यमा ॥ म्लेच्छस्य दर्शने

---

*घटार्गल यन्त्र प्रकारः ॥ शारदायां ६ पटले ६५ श्लोके ॥ चित्र देखो ॥

❀ कलश स्थापने ❀

घटार्गलयन्त्रम् ।।

"दुर्गार्चन सृतौ"

शारदायां नवमपटले ।।
श्लो० ९५ तः १०० पर्यन्तम् ।।

अग्नि कोणे नमः

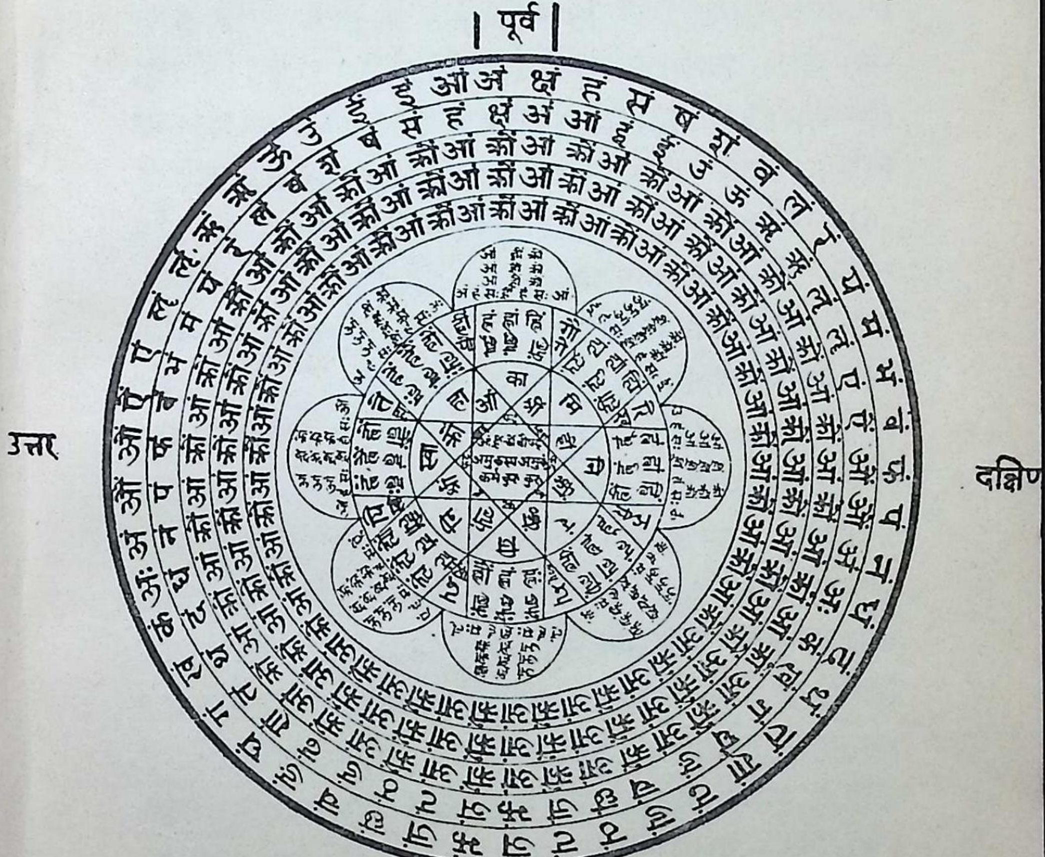
पूर्व
उत्तर
दक्षिण
पश्चिम

इस यन्त्र के ऊपर कलश व दीपक स्थापन करना चाहिये ।

नोट अग्नि कोण में नमः बिगड़ गया है, कृपया उसे बना लें।

प्रोक्तं बंधनं दीपदस्य वै ।। मार्जार मूषकादीनां मध्यमं दर्शनं स्मृतम् ।। कृते दीप वरे देवि ! वीक्ष्यते च शुभाशुभम् ।। दीपज्वाला समाश्लक्ष्णा जायते यदि सुन्दरि ! ।। अष्टभिर्दिवसैस्तस्य कार्यसिद्धिर्भवेद्ध्रुवम् ।। दीप ज्वाला तु देवेशि ! यदि वक्रा भवेत्तदा ।। नाशस्तस्य च बन्धूनां प्रोक्तः सर्वार्थ नाशकः ।। खरकङ्क प्रभाज्वाला यदि स्याच्चसुरेश्वरि ! ।। दीपकर्तुः सविघ्नो वै मरणं जायते ध्रुवम् ।। दीप ज्योत्स्नाम्बिके ! कृष्णा जायते च सुरार्चिते ! ।। शत्रूणां जायते कार्यं दीपकर्तुर्निरर्थकम् ।। कृते दीपेयदानाशस्तत्वयाज्ञायतेऽम्बिके! ।। कार्यसिद्धिर्विलम्बेन भविष्यति न संशयः ।। कृत दीपस्य नाशःस्यात्प्रहरत्रय मध्यतः ।। मासे वर्षे तथा प्रोक्ता कार्य्य सिद्धिर्हि सुन्दरि ! ।। दीपवर्यस्य नाशः स्याद्यदि रात्रौ कदाचन ।। तस्य गेहे धनं वस्तु नष्टं भवति निश्चितम् ।। दत्ते दीपे यदि पुनश्चट चटेति ध्रुवम्भवेत् ।। तदा तस्य च कार्यं वै नष्टंयाति तथादिशेत् ।। वमतेदीपवर्य्यश्चेच्चौरतोभयमाददेत् ।। दीपपात्रं यदि पुनः वते देवि ! सुन्दरि ! ।। गोनाशो जायते तस्य दीप कर्तुर्न संशयः ।। दीपवर्यस्य पात्रं वै भग्नं वै दृश्यते यदि ।। अष्टादश दिनादर्वाग्यजमानः सबांधवः ।। श्राद्धदेवस्य सदनं गच्छति प्रिय कामिनि ! ।। दीपेनष्टे पुनर्दीपंज्वालयेन्मूढ चेतनः ।। दीप दाता दीप कर्ता मन्द चक्षुर्भवेत्सदा ।। कृते दीपे पुनर्वार्ता कारयेद्यदि मानवः ।। कार्य्य सिद्धि र्हि देवेशि! षण्मासात्स्यादनन्तरम् ।। प्रज्वालितं दीपवर्य्यमशुचिर्मानवः स्पृशेत् ।। दीपकर्तुः शरीरे तु व्याधिर्वै जायते नृणाम् ।। दीपकाष्ठाशुभे ! श्वानो मार्जारो मूषकादयः ।। यदि स्पृशन्ति कल्याणि ! ताडनं राजतो दिशेत् ।। एवं दीपवरे विघ्नाः वहवः संभवन्ति हि ।। तस्माद्दीपं सुरेशानि ! विलोक्यं तु पदे पदे ।।

अथ दीपविघ्ने शान्तिः ॥

तत्र शर्कराज्य तिलतंडुलैस्सघृतैः कमलैर्वा जयंती मंत्रेण दशांशतो होमं कुर्यादित्यन्ये ॥ नवार्ण मन्त्रेणेत्यपरे ॥ देवि ! प्रहणार्ति हरे प्रसीदेति, देवि ! प्रसीदेति, करो तु सानः शुभेति मन्त्राणामन्यतमेन पूर्वोक्त द्रव्येण होमः कार्य इति साम्प्रदायिकाः॥

कलश विसर्जन विधिः ॥

स यजमानो स्वस्ति वाचन पूर्वकं संकल्पं विधाय ॥ देश कालौ संकीर्त्य प्रतिपदि गणपत्यादि स्थापितानां देवानां नारिकेल बलिसहित उत्तर पूजन महं करिष्ये ॥ इति प्रतिज्ञां कृत्वा यथोपचार सहितं गणपत्यादि देवान् प्रपूज्य ॥ ततो शुद्ध नारिकेलं, कूष्मांडं वा गृहीत्वा तं संपूज्य तत्र जीव न्यासादिकं कृत्वा ॥ ॐ महामाये ! जगन्मातः सर्व काम प्रदायिनि ! ॥ ददामि नारिकेल (कूष्मांड) *बलिः प्रसीद वरदाभव ॥ अर्द्ध भागं देव्यग्रे संस्थाप्य पुनः ॐ प्राणाय स्वाहा ॥ ॐ अपानाय स्वाहा ॥ ॐ उदानाय स्वाहा ॥ ॐ व्यानाय स्वाहा ॥ ॐ समानाय स्वाहा ॥ एभिः स्वाहान्त मन्त्रैः पंचाहुतिं ज्योतिरग्नौ जुहुयात् ॥

तत्र यथा कुलाचारमष्टम्यां नवम्यां दशम्यां वा देवी पूजान्ते तां प्रणम्य पुष्पाण्यादाय कृतांजलिः ॥ कुछ महानुभाव यहाँ कलश के ऊपर स्थापित नारियल का बलि देते हैं यह शास्त्र विरुद्ध है ।

*अथ बलिदानम् ॥ १ ॥

अत्र पक्षत्रयं प्रत्यहञ्च बलिन्दद्यादित्येकः ॥ कन्या संस्थे रवौ शक्र ! शुक्लाष्टम्यां प्रपूज्य च ॥ द्रोण पुष्पैश्च विल्वाम्र जाती पुन्नाग चम्पकैः ॥ पञ्चाहं लक्षणोपेतं गन्ध पुष्प समन्वितम् ॥ विधिवत्कालि ! कालीतिजप्त्वा खड्गेन घातयेदिति ॥ देवी पुराण वचनादष्टमी नवम्योरिति द्वितीयः ॥

---

*टिप्पणी निरुत्तर तंत्रे । पूजया लभते पूजां जपात्सिद्धिर्न संशयः ॥ होमेन सर्वसिद्धि स्यात्तस्मात्त्रितयमर्चयेत् ॥

‡ बलिहीने तु दुर्भिक्षं गन्धहीने त्वभाग्यताम् ॥
धूपहीने तथोद्वेगं वस्त्रहीने धनक्षयम् ॥ —भविष्ये ॥

ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे ॥ उपप्रयन्तु मरुतः सुदानवऽइन्द्र प्राशूर्भवासचा ॥ १ ॥ ॐ ब्रह्मणस्पते त्वमस्ययन्तासूक्तस्य बोधितनयंच जिन्व ॥ विश्वन्तद्भद्रं यदवन्तिदेवाबृहद्वदेमविदथे सुवीराः ॥ यऽइमाविश्वा विश्व कर्म्मायोनः पितान्नपतेनो देहि ॥ २ ॥

सर्व रूपमयी देवी सर्वं देवीमयं जगत् ॥ अतोऽहं विश्वरूपां त्वां नमामि परमेश्वरीम् ॥

विधिहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं यदर्चितम् ॥ पूर्णं भवतु तत्सर्वं त्वत्प्रसादान्महेश्वरि ! ॥ मातः क्षमस्वेत्युक्त्वा ॐ

नवम्यां बलिदानञ्च कर्तव्यं वै यथाविधीति ॥ नवम्यां च विधानाच्छिष्ट समाचाराच्च नवम्यामेव कार्यमिति तृतीयः पक्षः ॥ अत्रदेशाचारात्कुलाचाराद्वा पक्षत्रयान्यतमः पक्ष आदरणीयः ॥ अत्रापि पक्षत्रयं पूर्व पक्षे पक्षत्रयं प्रतिपदमारभ्यनवम्यन्त प्रत्यहं* पूजाजप होम ‡बलिदानाद्यनुष्ठानमित्येकः ॥

प्रतिपक्षः सप्तम्यन्तं केवलं पूजा जप बलिदानाद्यनुष्ठानमष्टम्यान्तु सहोममिति द्वितीयः ॥ प्रतिपतोष्टम्यन्तं प्रत्यहं केवलं जप बलिदानाद्यनुष्टानं नवम्यां सहोममिति तृतीयः ॥ अत्र पूर्व पक्षमाश्रित्य बलिदानस्य प्राथम्यमङ्गी कृतमुर्वरित पक्षाश्रयणे तु यत्रोचितं तत्रैव कार्यम् शिष्टैरिति ॥

अथ बलिदान प्रकारः

तत्र स्वस्तिवाचनं कृत्वा पशुमानीयाञ्जलिम्बध्वा ॥ प्राणिनामुपकारार्थं पशुश्रेष्ठ मयाधुना प्रोक्षितश्चण्डिका प्रीत्या मामात्मानञ्च तारयेदितिपठेत् । ततोमेघाकार स्तम्भमध्ये पशुबन्धेबध्वा ॥ उत्तराभिमुखो भूत्वा बलिं पूर्व मुखं तथेति ॥

कालिका पुराणे ॥

पूर्व मुखं पशुं शंखोदकेन स्नापयेत् ॥ वाराही यमुना गङ्गा करतोया सरस्वती ॥ कावेरी चन्द्र भागा च सिन्धु भैरव सागराः ॥ छाग स्नाने महेशानि ! सान्निध्यं कल्पयन्त्विहेतिमन्त्रेण ॥ ततः कुशोदकेन प्रोक्षयेत् ॥ सुरास्त्वां वसवो रुद्रा विमानोत्तम चारिणः ॥ ग्रहा लोकेश्वराः साध्या अश्विनेयौभिषग्वरौ ॥ एतेचान्ये च ऋषयः प्रोक्षन्तु त्वां कुशोदकैः ॥ एवं प्रोक्ष्य ॥

दुर्गायैनमः ।। इत्यैशान्यामेक पुष्पंनिक्षेपेण विसर्जयेत् ।। ततोस्थापित कलशोदकेन यजमानाभिषेकः ।। ततोमृदादिमूर्ति सत्वेस्रोतसि तत्प्रवाहणं कर्तुमुत्थापयेत् ।।

ॐ उत्तिष्ठ देवि ! चण्डेशि ! शुभां पूजां प्रगृह्य च ।। कुरुष्व मम कल्याणमष्टाभिः शक्तिभिः सह ।। ३ ।। गच्छ गच्छ परं

पशोरङ्गेषु न्यासं कुर्याद्यथा ।।

वाचं ते शुन्धामि प्राणन्ते शुन्धामि चक्षुस्ते शुन्धामि श्रोत्रन्ते शुन्धामि नाभिन्ते शुन्धामि मेढ्रन्ते शुन्धामि पायुन्ते शुन्धामि चरित्रांस्ते शुन्धामि योनि ते क्रूराणि तानि तेसह महोभ्यः प्रोक्षन्तु स्वाहा ।।

शिरो ललाटं हृदये च कर्णौ नाभिश्चकण्ठं गुरुसेफसीच ।। क्रोडंच पादांश्च तथान्यदङ्गं मुञ्चन्तु शीघ्रं पशु दैवतानि ।। पशुयोनि प्रसूतोसि बलियोग्य विवृद्धये ।। विमुच्य रोम कूटानि शीघ्रं गच्छन्तु देवताः ।। इति ।। तत्रस्थान्देवानुद्वास्य ।। पंचोपचारैश्छाग पूजां कृत्वा शृङ्गयोः सिन्दूरमालिप्य माल्यानिवध्नीयात् ।। ततोऽग्ति दैवतं पशुं दुर्गा प्रीति जनकं विभाव्य सर्वाङ्गे पिशताशिन्यैनमः ।। इत्यङ्गानि विशोध्य ।। पशुरुत्पादितो देवैर्यज्ञार्थेषु विधानतः ।। धर्मार्थ काममोक्षार्थं पशो ! त्वां घातयाम्यहम् ।। इति तं संप्रार्थ्य ।। तत उत्तराभिमुखस्तत्कर्ता दक्षिण कर्णं धृत्वा पठेत् ।। पशु ! त्वं बलिरूपेण मम भाग्यादुपस्थितः ।। प्रणमामि ततः सर्वरूपिणं बलिरूपिणम् ।। चण्डिका प्रीति दानेन दातुरापद्विनाशनम् ।। चामुण्डा बलिरूपाय बले ! तुभ्यं नमोस्तुते ।। यज्ञार्थं पशवः सृष्टा स्वयमेव स्वयम्भुवा ।। अतस्त्वां घातयिष्यामि तस्माद्यज्ञे वधोबधः ।। ऐं ह्रीं श्रीं इति मन्त्रेणामत्स्वरूपं विचिन्तयित्वातन्मूर्द्ध्नि पुष्पं न्यस्य तत्र भरवमभिषिंच्य दक्षिण करं धृत्वा ।। छागल ! त्वं महावाहो अग्नेर्देवस्य वाहनः ।। पशो ! त्वद्बलिदानेन तुष्टामेस्तु हरेःप्रिया ।। इदं रूपं परित्यज्य गन्धर्वत्वमवाप्नुहि ।। सर्व काम प्रदानाय छागलाय नमोनमः ।। इति पठेत् ।। ततो दक्षिण कर्णं गृहीत्वा ।। ॐ अद्येहामुक गोत्रस्य अस्य यजमानस्य सर्ववाधा प्रशमनं धन धान्य समृद्धिमत्व वपुरारोग्याचल लक्ष्मी प्राप्ति हेतुक पशु रोममित वर्षानवरत देवी लोक सुख सन्तति प्राप्ति कामः कात्यायनीय गोत्रायै भगवत्यै महामूर्त्यै श्री दुर्गायै इमं छागं (कूष्माण्डं नारिकेलंवा) सुस्नापितमग्नि दैवतंघातयिष्ये ।।इति संकल्प्य।। पशुगायत्रीं पठेत् ।। ॐ पशुराजाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो दुर्गा

स्थानं स्वस्थानं देवि ! चण्डिके ! ॥ अजस्रोतो जलंवृद्ध्यै स्थीयतां च जलेत्विह ॥४॥ ॐ दुर्गे ! देवि ! जगन्मातः स्वस्थानं गच्छ पूजिता ॥ सम्बत्सरे व्यतीते तु पुनरागमनाय वै ॥५॥ इमां

प्रचोदयात् ॥ छागेतु ॥ ॐ छागलाग्नि दैवताय विद्महे शिरश्छेदाय धीमहि तन्नश्छागः प्रचोदयात् ॥ इत्येवं पठित्वा ॥ इमं छागं (बलिं) गृहाणत्वं शक्ति हेतोर्दिवौकसाम् ॥ शत्रु दर्प विनाशाय सर्वाभीष्ट प्रसिद्धये ॥ इति देव्यै निवेद्य ॥

ततः 'शृङ्ग' गृहीत्वा ॥ छागशृङ्ग गृहीतोसि पशुत्वं विप्रहीयतामितिपठेत् ॥

ततः खड्ग पूजा ॥

तत्र प्रतिज्ञां पूर्ववत्कृत्वा ॥ नन्दकस्व परामूर्ते, ममशत्रुनिवर्हण ॥ नीलोत्पलदल श्यामकृत्स्न दुःस्वप्न नाशन ॥ असिर्विशसनः खड्गस्तीक्ष्णधारो दुरासदः ॥ श्री गर्भो विजयश्चैव धर्माधारस्तथैवच ॥ इत्यष्टौ तव नामानि स्वयमुक्तानि वेधसा ॥ नक्षत्रं कृतिका तन्तुगुरुर्देवो महेश्वरः ॥ रोहिण्यश्च शरीरं ते दैवतं च जनार्दनः ॥ पिता पिता महोदेवस्त्वां मां पालयतात्सदा ॥ इयं येन धृता क्षोणी हतश्च महिषासुरः ॥ तीक्ष्णधाराय शुद्धाय तस्मै खड्गाय ते नमः ॥ अग्र्यः प्रहरणानां त्वं खड्गो माद्रवतीसुतः ॥ ॐ ह्रों ह्रों खड्ग इतिध्यात्वा ॥ ततोर्घ्यादि दत्वा ॥ ॐ कालि ! कालि ! यज्ञेश्वरि ! लोहदण्डायै नमः ॥ मुष्टि देशे सरस्वती ब्रह्मभ्यां नमः ॥ मध्ये लक्ष्मी नारायणाभ्यां नमः ॥ अग्रे उमामहेशाभ्यां नमः ॥ इति पंचोपचारैः सम्पूज्य ॥ ॐ आं ह्रीं फट् इति मंत्रेण विमलं खड्गं गृहीत्वा ॥ एक हस्तेन द्वाभ्यां वा एक च्छेदेनघातयेत् ॥ ततः खर्परं गृहीत्वा ॥ देशकालादि स्मृत्वा दुर्गायै इमं छाग खर्परं मांस सहितं नानोपकरणान्वितं तुभ्यमहंसप्रददे ॥ पयोमध्वाज्य सत्खण्ड भक्ष्य द्रव्य फलैर्युतम् ॥ खर्प्परं गृह्ण चामुण्डे ! सदीपं मांस संयुक्तम् ॥ इति दत्वा ॥ तदुत्थं रुधिरं गृहीत्वा नैर्ऋतेभ्यः प्रदातव्यम् ॥ महा कौशिकमंत्रितमिति वचनात् ॥ ॐ ऐं ह्रीं कौशिक्यै नमो रुधिरेणाप्यायता मिति सनैर्ऋतायै तस्यै सदीपं दद्यात् ॥ अत्र ये ह्यु पयुज्यन्ते प्राणिनो महिषादयः ॥ ते सर्वे स्वर्गतिं यान्ति हन्ता पापं न विन्दति ॥ यावन्न चालयेद्गात्रं पशुस्तावन्न हन्यते ॥ इति चण्डिका बलिदाने तु सर्वत्रैवं विधिस्मृतः ॥ इति छेदानिष्टे सुवर्णं देयम् ॥ इदञ्च बलिदानमग्निषोमीय पशु हिंसा न्यायेन धर्म्यमपि क्षत्रियादि विषय-

पूजां मयादेवि ! यथा शक्त्योपपादिताम् ॥ रक्षार्थं त्वं समादाय व्रजस्थानमनुत्तमम् ॥ ६ ॥

इति स्रोतसि प्रवाह्य तन्मन। गृहमेत्य हस्तौ पादौ प्रक्षाल्याचम्य पूजा स्थाने यजमानः सपरिवार उपविश्य विप्रभोजनादि समाप्य बन्धुभिः सहभुंजीत ॥

सेवतदेतत्स्पष्टमुक्तं॥ देवी पुराणे ॥ तदर्द्धयामिनीशेषे विजयार्थं नृपोत्तमः॥ पञ्चाहं लक्षणोपेतं गन्ध धूप स्रगर्चितम् ॥ विधिवत्कालि ! कालीति जप्त्वा खड्गेन घातयेदिति ॥ ब्राह्मणस्यतु सात्विकी जप यज्ञाद्यनैंवेद्यैश्च निरामिषैरित्युक्तेर्जपादि रूपा सात्विक्येव पूजा भवति तस्य सात्विक कर्मण्येवाधिकारस्य श्रुति स्मृत्यादिषुप्रतिपादित्वात् ॥ यत्तु–माष कल्माष मांसाद्यैर्देयो दिक्षुबलिर्निशि ॥ कूष्माण्ड मिक्षु दण्डश्च *मद्यमासव एव च ॥ एते बलि रूमाख्येयास्तृप्तौ छाग समा स्मृताः ॥ तथा माषान्नेन बलिर्देयो ब्राह्मणेन विजानता इति ॥

कालिका पुराणे ॥

रम्भेक्षु नारिकेलञ्च गुवाकं कण्टकी फलम् ॥ उर्वारुकं करञ्जञ्च छेदयेच्छुरिकादिनेति ॥ तथा—ओदनं मांस माष वदित्यन्नदाकल्प भगवन्त भास्कर धृत वचोभ्यां चाऽशक्त क्षत्रियादेर्ब्राह्मणस्य च बलिदातृत्व मायातं तत्रायं विचारः ॥ ब्राह्मणश्चेद्राजसीं पूजां कर्तुमिच्छेत्तदा पार्श्वतर कूष्माण्डादि छेदयेदेवं सात्विकोऽशक्तश्च क्षत्रियादि रपि ॥ सात्त्विक ब्राह्मणस्यतु बलिदानं न युक्तं ॥ सात्विकीजप यज्ञाद्यैर्नैवेद्यैश्च निरामिषैरिति प्रागुक्ते : ॥ ब्राह्मणेन सदा देयं कूष्मांडं बलि कर्मणि ॥ श्री फलं वा सुराधीश ! छेदं नैवतु कारयेदिति ॥ निर्णयसिन्धूक्तं तच्छेदन निषेधाद्ज्ञापकाच्च ॥ अतएव सुरया स्वगात्र रुधिरेण च पूजा ब्राह्मणस्य न भवति ॥ स्वगात्र रुधिरं दत्वा ब्रह्महत्यामवाप्नुयादिति ॥ तथा मद्यं दत्वा ब्राह्मणस्तु ब्राह्मण्या देव हीयते ॥

इति कालिका पुराणात् ॥

दुर्गारहस्य श्यामा रहस्य, निरुत्तरतन्त्र, आदि अनेक तन्त्र के मत से भी ब्राह्मण को मद्य मांसादि पूजन निषेध है ॥

---

* सुराभावे च गोक्षीरं द्विजो दद्याद्युगे युगे ।
द्रव्याभावे चानुकल्पैः पूजयेत्परदेवताम् ॥
निरुत्तर तन्त्रे ५ पटले ॥

घृत की बत्ती बनाकर कपूर सहित आरती में रखकर गंध पुष्प से पूजन कर नीचे लिखे मन्त्रों से आरती खड़े होकर करना यथाशक्ति *बाजे बजते रहें ॥

आरती ॥

ॐ आरात्रि पार्थिव ठं० रजः पितुर प्रायि धामभिः ॥ दिवः सदा ৺ং सिबृहती वितिष्ठऽआत्वेषं वर्तते तमः ॥ चन्द्रादित्यौ च धरणी विद्युदग्निस्तथैवच ॥ त्वमेव सर्व ज्योतींषि आर्तिक्यं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्री देवी नीराजनम् ॥

ॐ जय जय जगदम्बे !, मा जय जय जगदम्बे ! ॥ नीराजनमवलोचय २. मोचय भयमम्बे ! ॥ १ ॥ जय देवि २ ॥ कैलासोपरि सुन्दर मणिमय मंदिरगां ॥ मा मणिमय० ॥ त्वां ध्यायन्तिमहान्तः मा त्वां० परिशंकर सहिताम् ॥ दिव्यकुसुम शुभगंधै, मण्डित सुभगांगीं मा मंडित सु० ॥ दिव्याम्बर वर-भूषण भूषित, सर्वाङ्गीम् ॥ जय देवि० ॥२॥ विधि हरि हर शक्रादिक, सेवितमृदुचरणे मा सेवित० ॥ विविध वधू परमादर २ परि रचिताभरणे ॥ धनदादिक सुरवन्दित, निरजर वर शरणे ॥ मा निर० ॥ तेषां मुकुटमणीचय, नीराजित चरणे ॥ जय देवि २॥३॥ अप्सरसांसुरनिकरैः, कृत-पूजन समये मा कृत० ॥ ताण्डववेणु विवादन, कोमल-गानमये, को० ॥ धिङ् धिङ्तां धिङ् धिट्तां मूर्च्छध्वनिसहिते मामूर्च्छध्वनि० ॥ झणणण झननन, नूपुर रवमुदते ॥ जय देवि २ ॥४॥ विविधचतुश्चक्रागत, शक्त्यर्चनसुखदे मा शक्त्य० ॥ संशयपापविनाशिनि निन्दक-जनदुःखदे नि० ॥ प्रौढ़ोल्न्हास विलासिनि, सेवकमनसुखदे ॥ मा सेवक० ॥ तस्मिन्मुदितसमाजे, मधुमुदिताहससे ॥ मधु० ॥ जय० ॥५॥ सावर्णवटुकादिक, गणपति बलि सहितं ॥ मा

---

* शिवागारे झल्लकं च सूर्यागारे च शंखकम् ॥
दुर्गा गारे वंशिवाद्यं मधुरीं च न वादयेत् ॥
झल्लकं कांस्य निर्मित करतालं ॥ योगिनी तन्त्रे ॥

गणप० ॥ स्वीकारं कुरुपूजनमव मां, जह्यहितम् २ ॥ नवनिधिरचितविधानं, शृणुत्वं जगदम्बे ॥ मा शृणु० ॥ कुरुमातवचरणानांशरणागतमम्बे ! ॥ माश० ॥ जयदेवि ! जयदेवि ! ॥६॥

भाषा की आर्तिः ॥

जय अम्बेगौरी मैया जय श्यामागौरी ॥ मैया जय मंगलकरणी मैया जय आनन्द करणी ॥ तुमको निशिदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिवरी ॥ जय० ॥१॥ मांग सिन्दूर विराजत टीको मृगमद को ॥ मैया टीको० ॥ उज्ज्वल से दोऊ नैना, चन्द्र वदन नीको ॥ जय अम्बे० ॥२॥ कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजै ॥ मैया रक्ता० ॥ रक्त पुष्प गल माला, कण्ठन पर साजै ॥ जयअम्बे०॥३॥ केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी ॥ मैया० खड्गख० ॥ सुर नर मुनि जन सेवत, तिनके दुःखहारी ॥ जय अम्बे० ॥४॥ कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती ॥ मैया नासा० ॥ कोटिक चन्द्र दिवाकर, राजत सम ज्योती ॥ जय अ० ॥ ५ ॥ शुम्भ निशुम्भ विदारे, महिषासुर घाती ॥ मैया महिषा० ॥ धूम्र विलोचन नैना, निशिदिन मदमाती ॥ जय अम्बे० ॥ ६ ॥ चण्ड मुण्ड संहारे शोणित बीज हरे ॥ माई शोणित० ॥ मधु कैटभ दोऊ मारे सुर भयहीन करे ॥ जय अं० ॥७॥ ब्रह्माणी रुद्राणी तुम कमला रानी ॥ माई तुम क० ॥ आगम निगम बखानी तुम शिव पटरानी ॥ जय अं० ॥ ८ ॥ चौंसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरों ॥ मैया नृ० ॥ बाजत ताल मृदंगा, और बाजे डमरू ॥ जय अं० ॥ ९ ॥ तुम ही जग की माता तुम ही हो भरता ॥ माई तुम० ॥ भक्तन की दुःख हरता ॥ सुख संपति करता ॥ जय अं० ॥१०॥ भुजा चार अति शोभित, वर अभय धारी ॥ मैया वर० ॥ मन वांछित फल पावत, सेवत नरनारी ॥ जय० ॥११॥ कंचन थाल विरा-

जत अगर कपुर बाती ।। माई अग० ।। श्रीमालकेतु में राजत कोटिरतन ज्योती ।। जय अंबे० ।। १२ ।। अम्बेजी की आरति, जो कोई नर गावै ।। मैयाजो० ।। कहत शिवानन्द स्वामी, सुख सम्पति पावै ।। जय अम्ब गौरी ।। १३ ।।

देव्या आरार्तिक स्तोत्रं नीराजन समये पठनीयम् ।।

ॐ जयदेवि ! जयदेवि ! हे शङ्कर ललने !

ॐ मा हे शङ्कर ललने ! ।। कुरु कुरु चेतः सदयंमयिमातर्मिलिने ।। १ ।। मध्ये स्थापित दीपै रालीशत यूथैऽर्मा आलीशतयूथैः ।। निज करताल ध्वनिभिर्नादित दिग्पटलैः ।। क्रीडन गायन हासर्नन्दिनि मृदु हृदयां भावयचेतः सततं भुवनेशीं सदयां ।। जयदेवि० २ ।। भवभयसागरपारंकर्तुं ह्यषदुदिता, विदिताद्न्यत्प्रापयितुं मुदिता ।। सर्वाप्येवंलीलाजनता जनतायै नकथं द्रवसे ।। हृदय जगतो ममतायै ।। जयदेवि० २ ।। ३ ।। नाना मणिमयभूषामण्डित दोर्युगलेनूपुर मधुर ध्वनि भिर्नादित दिग्पटले ।। उद्यद्दिनकर भानु प्रतिभट रुचिरास्येध्यातुः ।। किं किं दुर्लभ महमिह नहि जाने ।। जयदेवि० २ ।। ४ ।। जगतः सृष्टि स्थितयो हृतयः प्रतिकल्प, लोचन मीलन लीलोन्मेषसातः कुरुषे ।। को वा प्रभवित तस्याः स्मृतये मनसा, येमहिमा वेदा यत्र स्मृतिभिः सहचकिता ।। जयदेवि० २ ।। ५ ।। पाशाभय वरहस्ता रजनी पतिमाला ।। रक्ताम्बरपरिधाना सृणि भूषित हस्ता ।। रवि शशि लोचन युग्मा हुतवह नयनैनां ।। मानस भावय जननीं सततं भुवनैनाम् ।। जयदेवि० २ ।। ६ ।। सर्वं खल्विदमखिलं तदहं भुवनाधीशानी ।। नान्यत्किंचिन्मधुसूदन सततम् ।। इति या सम्यक् शिशवे हरये वट पत्रे ।। प्रवदति भुवना तस्यै नम एतत्कुर्मः ।। जयदेवि० २ ।। ७ ।। पद्यैरेतैरमलर्मनुजो भुवनेश्याः कर्पूरार्त्या यजते पर्याकिलभक्त्या ।। तस्य-

पौत्रागेहे विमलं पदमन्ते ।। क्षोणीपतयो वशगा धन धान्यं पुत्राः जयदेवि जयदेवि ।। ८ ।।

श्रीमच्छङ्कराचार्य विरचितं देव्या आरार्तिक स्तोत्रम् ।।

आरती रखकर शंख में जल भरकर उतारे और थोड़ा थोड़ा दोनों ओर जल शंख से छोड़ता रहे ।। बाद में थोड़ा जल हाथ में लेकर उपस्थित भक्तों के ऊपर छिड़क कर नीचे लिखे मंत्र हाथों में पुष्प लेकर बोले ।। आरती की पूर्ण विधि तान्त्रिक पूजन में देखना ।।

मंत्र पुष्पाञ्जलिः ।।

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन् ।। ॐ तेहनाकम्महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्तिदेवाः ।। ॐ राजाधिराजायप्रसह्य साहिने नमोवयं वैश्रवणाय कुर्महे ।। समे कामान्कामकामायमह्यं ।। कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु कुवेरायवैश्रवणाय राजाधिराजाय महाराजायनमः ।। ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठयं राज्यं महाराज्य माधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात् सार्वभौमः सार्वायुष आन्तादापरार्धात् ।। पृथिव्यै समुद्रपर्यान्ताया एकराडिति ।। तदप्येष श्लोकोभिगीतोमरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्या वसन्गृहे ।। आवीक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति ।। ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो वाहुरुत विश्व तस्पात् ।। सम्बाहुभ्यान्धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देवएकः ।। मन्त्र पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि नमः ।। सेवन्तिका वकुल चम्पक पाटलाब्जैः ।। पुन्नाग जाति करवीर रसाल पुष्पैः।। विल्व प्रवाल तुलसीदल मंजरीभिः ।। त्वां पूजयामि जगदीश्वरि ! मे प्रसीद ।। पापोहं पाप कर्म्मा हं पापात्मा पाप संभवः ।। त्राहि मां सर्वदा मातः सर्व पाप हरा भव ।।

दुर्गा गायत्री ।।

ॐ महादेव्यै विद्महे दुर्गायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् ।।

एवं पुनः पुनः प्रणम्य स्तुवीत ।।

*प्रदक्षिणा ॥

ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्य मन्वहम् ॥ सूक्तं पञ्चदशर्चंश्च श्री कामः सततं जपेत् ॥ ॐ येतीर्थानि प्रचरन्ति सृका हस्ता निषङ्गिणः ॥ तेषाꣳसहस्र योजने वधन्वानि तन्मसि ॥ नमस्ते देव देवेशि ! नमस्ते ईप्सित प्रदे ! ॥ नमस्ते जगतां धात्रि ! नमस्ते शंकर प्रिये ! ॥ नमः सर्व हितार्थायै जगदाधार हेतवे ॥ साष्टाङ्गोऽयं प्रणामस्ते प्रयत्नेन मया कृतः ॥

इति प्रदक्षिणा ॥

‡साष्टाङ्ग प्रणाम करना ॥

पुनः शान्ति स्तवम् पठेत् ॥

ॐ दुर्गां शिवां शान्ति करीं ब्रह्माणीं ब्रह्मणः प्रियाम् ॥ सर्व लोक प्रणेत्रीं च प्रणमामि सदाम्बिकाम् ॥ १ ॥ मंगलां शोभनां शुद्धां निष्कलां परमां कलाम् ॥ विश्वेश्वरीं विश्वधात्रीं चण्डिकां प्रणमाम्यहम् ॥ २ ॥ सर्व देवमयीं देवीं सर्व लोक भयापहाम् ॥ ब्रह्मेश विष्णु नमिताम् प्रणमामि सदा उमाम् ॥३॥ विन्ध्यस्थां विन्ध्यनिलयां दिव्यस्थान निवासिनीम् ॥ योगिनीं योगजननीं चण्डिकां प्रणमाम्यहम् ॥ ४ ॥ ईशानमातरं देवी-मीश्वरीमीश्वर प्रियाम् ॥ प्रणतोस्मि सदा दुर्गां संसारार्णव तारिणीम् ॥ ५ ॥ यइदं पठति स्तोत्रं शृणुयाद्वापि यो नरः ॥ समुक्तः सर्व पापेभ्यो मोदते दुर्गया सह ॥ ६ ॥

इतिमत्स्यसूक्तोक्त दुर्गास्तोत्रम् ॥

---

* एका चण्डयां रवौसप्त तिस्रो दद्याद्विनायके ॥
चतस्रः केशवे देया शिवस्यार्द्धं प्रदक्षिणा ॥

‡ उरसा शिरसा दृष्ट्या मनसा वचसा तथा ॥
पद्भ्यां कराभ्यां जानुभ्यां प्रणामोष्टाङ्ग ईरितः ॥
बाहुभ्यां च सजानुभ्यां शिरसा मनसाधिया ॥
पञ्चाङ्ग कः प्रणामः स्यात् सर्वत्र प्रवराविमौ ॥
इति तन्त्रान्तरे ॥

वर प्रार्थना ॥

रूपं देहि यशोदेहि भगं भगवति ! देहि मे ॥ पुत्रान्देहि धनन्देहि सर्वान्कामांश्च देहि मे ॥१॥ ॐ महिषघ्नि ! महामाये ! चामुण्डे ! मुण्डमालिनि ! ॥ आयुरारोग्य विजयंदेहि देवि ! नमोस्तु ते ॥२॥ भूत प्रेत पिशाचेभ्यो रक्षोभ्यः परमेश्वरि ! ॥ भयेभ्यः मानुषेभ्यश्च देवेभ्यो रक्ष मां सदा ॥ ३ ॥ सर्व मंगल मंगल्ये शिवे ! सर्वार्थ साधिके ! ॥ उमे ! ब्रह्माणि ! कौमारि ! विश्वरूपे ! प्रसीद मे ॥४॥ कुंकुमेन समा लब्धे चन्दनेन विलेपिते ॥ विल्व पत्र कृता पीडे दुर्गे ! त्वां शरणं गतः ॥ ५ ॥ गतं पापं गतं दुःखं गतं दारिद्र्यमेवच ॥ आगता सुख सम्पत्तिः पुण्याच्चतव दर्शनात् ॥ ६ ॥ ॐ हर पापं हर क्लेशं हर शोकं हरासुखम् ॥ हर रोगं हर क्षोभं हर मारीं हरप्रिये ! ॥ ७ ॥ ॐ कायेन मनसा वाचा कर्मणायत्कृतं मया ॥ ज्ञानाज्ञान कृतं पापं दुर्गे ! त्वं हर दुर्गतिम् ॥ ८ ॥ पूजा ‡फलाग्नि कार्याद्यैः सुकृतं यन्मयार्चितम् ॥ तत्सर्वं फलदं मेस्तु भुक्ति मुक्तिच देहि मे ॥ ९ ॥ लक्ष्मि ! त्वत्प्रज्ञयानित्यं कृतापूजा तवाज्ञया ॥ स्थिरा भव गृहेह्यस्मिन्मम सन्तान (ऐश्वर्य) कारिणि ॥ १० ॥

विपद्गण ध्वान्त सहस्र भानवः ॥ समीहितार्थान्प्रति कामधेनवः ॥ अपार संसार समुद्र सेतवो मां पातु चंडी चरणाब्जरेणवः ॥ इत्युच्चार्य मूल मन्त्रेण पुष्पांजलित्रयं दद्यात् ॥

अथ देव्यपराध क्षमापन स्तोत्रम् ॥

श्री गणेशायनमः ॥ न मंत्रं नो यंत्रं तदपि च न जाने स्तुति महो न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुति कथाः ॥ न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं परं जाने मातस्त्वद-

---

‡ पूजाफल सुकार्याद्यैः ॥

नुसरणं क्लेश हरणम् ॥ १ ॥ विधेरज्ञानेन द्रविण विरहेणालसतया विधेयाशक्यत्वात्तवचरणयोर्याच्युतिरभूत् ॥ तदेतत्क्षन्तव्यं जननि ! सकलोद्धारिणि ! शिवे ! कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥ २ ॥ पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि ! बहवः सन्ति सरलाः परं तेषां मध्ये विरल तरलोऽहं तव सुतः ॥ मदोयोयंत्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे ! कुपुत्रोजायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥ ३ ॥ जगन्मातर्मातस्तव चरण सेवा न रचिता न वा दत्तं देवि ! द्रविणमपि भूयस्तव मया ॥ तथापि त्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत्प्रकुरुषे कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥ ४ ॥ परित्यक्त्वा देवान्विविध विधसेवाकुल तया मया पंचाशीतेरधिकमुपनीते तु वयसि ॥ इदानां चेन्मातस्तव यदि कृपानापि भविता निरालम्बो लम्बोदर जननि ! कं यामि शरणम् ॥ ५ ॥ श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपम गिरा निरातंको रंको विहरति चिरं कोटि कनकैः ॥ तवापर्णे कर्णे विशति मनु वर्णे फलमिदं जनःकोजानीते जननि ! जपनीयं जपविधौ ॥ ६ ॥ चिताभस्मा लेपो गरलमशनं दिकपटधरो जटाधारी कण्ठे भुजग पतिहारी पशुपतिः ॥ कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं भवानि ! त्वत्पाणि ग्रहण परिपाटी फलमिदम् ॥ ७ ॥ न मोक्षस्या कांक्षा न च विभव वांछापि च न मे नविज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुनः ॥ अतस्त्वांसंयाचे जननि ! जननं यातु मम वै मृडानी रुद्राणी शिव ! शिव ! भवानीति जपतः ॥ ८ ॥ नाराधितासि विधिना विविधोपचारः किं रुक्ष चिन्तन परैर्नकृतं वचोभिः ॥ श्यामे त्वमेव यदि किंचन मय्यनाथे धत्से कृपामुचितमम्ब ! परं तवैव ॥९॥ आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं करोमि दुर्गे ! करुणार्णवेशि ॥ नैतच्छठत्वं

मम भावयेथाः क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरन्ति ॥ १० ॥ जगदम्ब विचित्र मत्र किं परिपूर्णा करुणास्ति चेन्मयि ॥ अपराध परं पराघृतं नहि माता समुपेक्षते सुतम् ॥ ११ ॥ मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा न हि ॥ एवं ज्ञात्वा महादेवि यथायोग्यं तथा कुरु ॥१२॥ इति श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीमच्छंकराचार्य विरचितं देव्यपराधक्षमापन स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

हे मैया तेरा मन्त्र (जपने का) यन्त्र (पूजा करने का) स्तुति (प्रार्थना करना) आवाहन (बुलाना) ध्यान (मूर्ति के स्वरूप को हृदय में धारण करना) स्तुति कथा (भक्तों का उद्धार करने वाला चरित्र) मुद्रा (हाथ की आकृतियों से बनती हैं) और विलाप यह सब कुछ नहीं जानता हूँ; किन्तु यह जानता हूँ कि तू सब प्रकार के क्लेशों को दूर करती है इसलिये तेरी शरण में रहना सुन्दर है ॥१॥ सब की सहायता करने वाली हे शिवे ! (कल्याण करने वाली) हे जननि ! तेरे पूजन की रीति न जानने से द्रव्य की कमी में, आलस्य से, तथा पूर्व में कही विधि को न जानने से तेरे चरणों की सेवा करने में जो भूल हुई हो तो क्षमा करना, कारण पुत्र तो कुपुत्र होता है परन्तु मा कुमाता नहीं हुआ करती है ॥२॥ हे माता ! पृथ्वी पर तेरे सीधे पुत्र बहुत से हैं लेकिन उन सब में मैं ही एक चंचल हूँ इस कारण हे शिवे ! (कल्याण करने वाली) मुझे छोड़ न देना इसलिये कि पुत्र तो कुपुत्र होता है परन्तु मा कुमाता नहीं हुआ करती है ॥३॥ हे संसार की माता ! हे मैया ! मैंने तेरे चरण कमलों की सेवा नहीं करी और तेरी सेवा में विशेष धन भी नहीं लगाया। परन्तु फिर भी मुझ पर तू इस प्रकार अनुपम स्नेह करता है सो ठीक ही है क्यों कि पुत्र तो कुपूत होता है परन्तु माता कुमाता नहीं हुआ करती है ॥४॥ हे लम्बोदर (गणेश) की मां ! अपनी ८५ वरष से भी विशेष अवस्था बीतने पर भी मैंने अनेक विधि के साथ पूजन करने को छोड़कर समस्त देवताओं को त्याग दिया आगे तेरी कृपा जो अब भी न हो तब मैं बिना किसी सहारे किधर किस की शरण में रहूँ ॥५॥ हे माता अपर्णे ! (दुर्गे) ! जो तेरे मन्त्र के अक्षर (दूसरे व्यक्ति द्वारा जपने से) कान में पहुँचते ही "श्वपाक" चांडाल भी सुन्दर एवं मधुर वाणी द्वारा अद्वितीय वाचाल होता है तथा रंक जो

महान् दरिद्री है वह भी कोट्यधीश होकर बहुत समय तक निडर होकर आनन्द करता है तब तेरे मन्त्र का विधि पूर्वक अनुष्ठान करने वाला जो फल प्राप्त करेगा उसको कौन जानेगा ॥६॥ जो शिवजी महान् अपवित्र चिता की भस्म लगाये रहते हैं विष को (भक्षण) करते हैं दिगंबर अर्थात् नग्न रहते हैं शिर की जटाओं का जूड़ा बांधे हुए गले में बड़े २ विषैले सर्पों की माला पहरे हाथ में खप्पर (कपाल) धारण करे पशुपति एवं भूतगण के स्वामी हैं वह (शिव) भी जो जगदीश्वर (संसार के स्वामी) की पदवी प्राप्त किये हुए हैं सो सब हे भवानि ! तेरे ही साथ विवाह होने का कारण है ॥७॥ हे चन्द्रमा के समान शीतल मुख वाली माता ! मैं मोक्ष नहीं चाहता संसार के सुख की भी इच्छा नहीं रखता विज्ञान औरसुख(सुखदेने वाला) नहीं इस कारण "मैं" तुझसे यही चाहता हूँ कि मेरी सम्पूर्ण अवस्था मृडानी रुद्राणी शिव शिव भवानी आदि स्मरण करते २ समाप्त हो ॥८॥ हे श्यामे ! (काली) पंचोपचार, दशोपचार, षोड़शोपचार, आदि विधियों से तेरी सेवा न करी किन्तु इसके प्रतिकूल दूसरों को निरर्थक हानि पहुँचाने की इच्छा से मैंने क्या नहीं किया ? अर्थात् बहुत ही बुराई की परन्तु फिर भी मुझ दीन पर तू कृपा करती है सो ठीक ही है इस लिये कि तू मेरी माता ही तो है ॥९॥ हे करुणा के समुद्र स्वरूप शिवे ! जब कभी मैं किसी विपत्ति में प्रवेश करता हूँ तब तेरा ही ध्यान करता हूँ इसको तू मेरी दुष्टता ही न जानना प्रत्युत भूखे प्यासे बच्चे अपनी मा को ही याद करते हैं ॥१०॥ हे जगत् माता ! मेरे पर तेरी पूर्ण दया है सो इसमें आश्चर्य ही क्या ? इसलिये कि बहुत से अपराध होने पर भी माता पुत्र को नहीं छोड़ती ॥११॥ हे जगदम्ब ! हे महा देवि ! मेरे बराबर कोई पापी नहीं और तेरे समान कोई पाप से छुटाने वाली नहीं ऐसा विचार कर जैसा त उचित समझे वैसा कर ॥१२॥

अथ दुर्गा आपदुद्धाराष्टकम् ॥

नमस्ते शरण्ये शिवे सानुकम्पे, नमस्ते जगद्व्यापिके ! विश्वरूपे ॥ नमस्ते जगद्वन्द्य पादारविन्दे नमस्ते जगत्तारिणि ! त्राहि दुर्गे ! ॥ १ ॥ नमस्ते जगच्चिन्त्यमान स्वरूपे नमस्ते महायोगि विज्ञान रूपे ॥ नमस्ते नमस्ते सदानन्द रूपे

नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ॥ २॥ अनाथस्य दीनस्य तृष्णातुरस्य, भयार्त्तस्य भीतस्य वद्धस्य जन्तोः ॥ त्वमेकागतिर्देवि निस्तार कर्त्री, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ! ॥ ३ ॥ अरण्ये रणे दारुणे शत्रुमध्ये जले संकटे राजगेहे प्रवाते ॥ त्वमेकागतिर्देवि ! निस्तार हेतुर्नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ! ॥ ४ ॥ अपारेमहादुस्तरेत्यन्तघोरे विपत्सागरेमज्जतां देहभाजां ॥ त्वमेकागतिर्देवि निस्तार नौका नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ! ॥५॥ नमश्चण्डिके ! चण्डदोर्दण्डलीलासमुत्खंडिता खंडलाशेषशत्रोः॥ त्वमेकागतिर्विघ्न सन्दोह हर्त्री नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ! ॥६॥ त्वमेकासदाराधिता सत्यवादिन्यनेकाखिला क्रोधना क्रोधनिष्ठा॥इड़ा-पिङ्गला त्वं सुषुम्णा च नाड़ी नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ॥७॥ नमो देवि ! दुर्गे ! शिवे ! भीमनादे ! सदासर्व सिद्धि प्रदातृ स्वरूपे ! ॥ विभूतिः सतांकालरात्रिः स्वरूपे नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ! ॥ ८ ॥ शरणमसिसुराणांसिद्धविद्याधराणां मुनिदनुजवराणांव्याधिभिः पीड़ितानाम् ॥ नृपति गृहगतानां दस्युभिस्त्रासितानां त्वमसिशरण मेकादेवि दुर्गे ! प्रसीद ॥ ९ ॥

इदंस्तोत्रं मयाख्यातमापदुद्धारमष्टकम्॥ त्रिसंध्यमेक सन्ध्यं वा पठनादेव संकटात्॥१॥ मुच्यतेनात्रसंदेहो भुविस्वर्गे रसातले ॥ सिद्धेश्वरतन्त्रे हरगौरी सम्वादे आपदुद्धाराष्टकं स्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

हे शिवे ! भक्तों को शरण देने वाली तेरे लिये नमस्कार है। हे दया करने वाली सम्पूर्ण जगत् में व्यापक विश्व रूप तेरे लिये नमस्कार है। संसार से तेरे चरण कमल वन्दित हैं तेरे लिये नमस्कार है। संसार के आवागमन से छुटाने वाली दुर्गे देवि रक्षा कर तेरे लिये नमस्कार है ॥१॥ चिन्त्यमान स्वरूप जगत के चराचर में व्याप्त तुझे नमस्कार है, हे महायोग विज्ञान (ब्रह्मज्ञान) स्वरूप तेरे लिये नमस्कार है। हे सत्य

आनन्द स्वरूप तेरे लिये नमस्कार है। हे संसार के आवागमन को छुटाने वाली तेरे लिये नमस्कार है। दुर्गे रक्षा कर ॥ २ ॥ अनाथ, दीन, तृष्णा में भ्रमण करने वाला, भय से दुखी, डरा हुआ, बन्धन में पड़े हुए जीव को पार करने के लिये हे देवि तू एक ही है। जगत के आवागमन को छुटाने वाली दुर्गे रक्षा कर ॥ ३ ॥ निर्जन वन में दारुण युद्ध, शत्रुओं के मध्य, जल में, संकट में, राजद्वार में, अंधकार आदि स्थानों में, सहायता करने वाली कारण स्वरूप एक तू ही गति है तेरे लिये नमस्कार है, हे संसार के आवागमन को छुटाने वाली दुर्गे ! रक्षा कर ॥ ४ ॥ जो पार न हो सके बड़ा दुस्तर घोर विपत्तियों के समुद्र में डूबे हुए मनुष्यों को तू एक ही नौका रूप पार करने की गति है तेरे लिये नमस्कार, हे संसार के आवागमन को छुड़ाने वाली दुर्गे रक्षा कर ॥५॥ हे चंडिके ! तेरे लिये नमस्कार ! चंड आदि भयंकर जो राक्षस हैं और इन्द्र के अशेष शत्रुओं शत्रुओं को नाश करने वाली तू एक ही गति समस्त विघ्नों को हरने वाली तेरे लिये नमस्कार है। हे दुर्गे ! संसार के आवागमन को छुटाने वाली रक्षा कर ॥ ६ ॥ तू एक ही हमेशा सेवा कराने वाली सत्यंवादिनी और क्रोध करने वालों में एक ही क्रोध की निष्ठा है। इड़ा (सूर्य स्वर) पिंगला (चन्द्र स्वर) सुषुम्ना (दोनों मिले स्वर) नाड़ी रूप तू ही है तेरे लिये नमस्कार, हे संसार के आवागमन को छुटाने वाली दुर्गे ! रक्षा कर ॥ ७ ॥ हे देवि ! हे दुर्गे ! हे शिवे ! हे भीमनादे ! (भयंकर शब्द वाली) नित्य प्रति सब सिद्धि प्रदान करने वाली सज्जनों की विभूति कालरात्रि स्वरूप तेरे लिये नमस्कार है। हे संसार के आवागमन को छुटाने वाली दुर्गे ! रक्षा कर ॥ ८ ॥ देवता, सिद्ध, विद्याधर, मुनि, उत्तम राक्षस, बीमारी से सताये हुए, राजा के बन्दीगृह में गये हुए, चोरों से सताये हुए मनुष्यों की रक्षा करने वाली हे देवि ! हे दुर्गे ! तू एक ही है प्रसन्न हो ॥ ९ ॥ यह आपदुद्धाराष्टक स्तोत्र मैंने कहा जो कोई तीनों समय वा एकबार पाठ करेगा वह संकट से छूट जायगा स्वर्ग पाताल वा मृत्युलोक कहीं होय

अथ संकष्ट नाशन स्तोत्रम् ॥

ॐ परब्रह्म स्वरूपाञ्च वेदगर्भाञ्जगन्मयीम् ॥ शरण्ये त्वामहं वन्दे दुर्गां दुर्गति नाशिनीम् ॥ १ ॥ कामाख्यां कामदां श्यामां

कामरूपां मनोरमाम् ॥ ईश्वरीं त्वामहं वन्दे दुर्गां दुर्गति नाशिनीम् ॥२॥ त्रिनेत्रां हास्य संयुक्तां सर्वालंकार भूषिताम् ॥ विजयां त्वामहं वन्दे दुर्गां दुर्गति नाशिनीम् ॥ ३ ॥ ब्रह्मादिभिः स्तूयमानां सिद्धगन्धर्व सेविताम् ॥ भवानींन्त्वामहं वन्दे दुर्गां दुर्गति नाशिनीम् ॥४॥ निशुम्भ शुम्भ मथिनीं महिषासुर घातिनीम् ॥ दिव्यरूपामहं वन्दे दुर्गां दुर्गति नाशिनीम् ॥५॥ विंशत्यर्द्ध भुजां देवीं शुद्ध कांचन संनिभाम् ॥ गौरीरूपामहं वन्दे दुर्गां दुर्गति नाशिनीम् ॥६॥ त्रिशूलं खड्गं चक्रं च वाणं शक्ति परश्वधम् ॥ दधानां त्वामहं वन्दे दुर्गां दुर्गति नाशिनीम् ॥७॥ जगन्मयीं महा विद्यां सृष्टि संहार कारिणीम् ॥ सर्वदैव महं वन्दे दुर्गां दुर्गति नाशिनीम् ॥८॥ इदन्तु कवचं दिव्यं महा मन्त्रं महाफलम् ॥ यः पठेन्मानवो नित्यं अस्मद्भक्ति समन्वितः ॥ धनं धान्यं प्रयच्छामि सकृदावर्तनेन तु ॥ मत्स्य सूक्तोक्त दुर्गा संकष्ट नाशनस्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥ मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि ! ॥ तत्सर्वं क्षम्यतां देवि ! प्रसीद परमेश्वरि ! ॥ न्यूनं वाप्यधिकं वापि यन्मया मोहतः कृतम् ॥ सर्वं तदस्तु संपूर्णं त्वत्प्रसादान्महेश्वरि ! ॥ आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ॥ पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वरि ! ॥

परब्रह्म स्वरूप जिसके गर्भ में चारों वेद हैं सम्पूर्ण चर अचर में व्यापक सबको शरण में रखने वाली और दुर्गति को नाश करने वाली दुर्गा देवी को नमस्कार करता हूँ ॥ १ ॥ कामरू (बंगाल) देश में कामख्या नाम से निवास करने वाली कामनाओं को देने वाली श्यामा (काली) कामरूपा (अनेक रूप को धारण करने वाली) मनोरमा (सुन्दर स्वरूप) को ईश्वरी (ईश्वर जो शिव हैं उनकी शक्ति ईश्वरी) दुर्गति को नाश करने वाली दुर्गा को नमस्कार करता हूँ ॥ २ ॥ तीन नेत्र वाली मुसकराती हुई सब प्रकार के गहनों से शोभायमान सम्पूर्ण कार्यों में विजय करने वाली विजया स्वरूप दुर्गति

को नाश करने वाली दुर्गा को नमस्कार करता हूँ ॥ ३ ॥ ब्रह्मादि देवताओं से स्तुति की हुई सिद्ध, गन्धर्व आदि से सेवा की हुई दुर्गति को नाश करने वाली भवानी (भव जो महादेव की शक्ति) दुर्गा को नमस्कार करता हूँ ॥ ४ ॥ निशुम्भ शुम्भ को मथन करने वाली महिषासुर को मारने वाली शोभायमान रूप दुर्गति नाश करने वाली दुर्गा को नमस्कार करता हूँ ॥ ५ ॥ बीस की आधी अर्थात दश भुजा वाली, सुवर्ण के समान शरीर की शोभा वाली गौरी स्वरूप दुर्गति को नाश करने वाली दुर्गा को नमस्कार करता हूँ ॥ ६ ॥ त्रिशूल, खड्ग, चक्र, बाण, शक्ति (भाला) फरसा धारण करने वाली दुर्गति को नाश करने वाली दुर्गा को नमस्कार करता हूँ । ७ ॥ संसार में व्यापक महाविद्या रूप संसार को पैदा करने तथा संहार करने वाली दुर्गति को नाश करने वाली दुर्गा को नमस्कार करता हूँ ॥ ८ ॥ जो पुरुष इस महामंत्र स्वरूप दिव्य कवच को नित्य मेरी भक्ति करके युक्त एक वार भी पढ़ैगा तो धन धान्य की वृद्धि होगी ॥

मत्स्यसूक्त में कहा गया दुर्गा संकट नाशन स्तोत्र की भाषा टीका समाप्त ॥

कलश का जल किसी पात्र में लेकर सकुटुम्ब यजमान को अभिषेक करना।

ॐ पुनस्त्वा रुद्रादित्यानसवः समिन्धताम्पुनर्ब्रह्माणोव्वसुनीथयज्ञैः ॥ घृतेनत्वं तन्वंवर्द्धयस्वसत्याः सन्तुयजमानस्यकामाः ॥ ॥ १ ॥ इषेत्वोर्जेत्वावायवस्थदेवोवः सविता प्रार्पयतुश्रेष्ठतमाय कर्मणऽआप्यायध्वमघ्न्याऽइन्द्रायभागं प्रजावतीरनमीवाऽअयक्ष्मा मा वस्तेनऽईशतमाघशꣳसोध्रुवाऽअस्मिन्गोपतौस्यात वह्वीर्यजमानस्यपशून्पाहि ॥ करोतुस्वस्ति ते ब्रह्मा स्वस्तिचापि द्विजातयः ॥ सरीसृपाश्चयेश्रेष्ठा स्तेभ्यस्ते स्वस्ति सर्वदा ॥ ययातिनहुषश्चैव धुन्धमाराभगीरथः ॥ तुभ्यंराजर्षयः सर्वेस्वस्तिकुर्वन्तुनित्यशः ॥ स्वस्तितेस्तु द्विपादेभ्यश्चतुष्पादेभ्यएव च ॥ स्वाहास्वधाशची चैव स्वस्ति कुर्वन्तु ते सदा ॥ लक्ष्मीररुन्धती चैव कुरुतां स्वस्तितेऽनघ ॥ असितोदेवलश्चैवविश्वामित्रस्तथांगिराः ॥ स्वस्तितेद्य प्रयच्छन्तु कार्तिकेयश्चषण्मुखः ॥ विवस्वान्भगवा-

न्स्वस्तिकरोतु तव सर्वशः ॥ दिग्गजाश्चैवचत्वारः क्षितिजागगनंग्रहाः ॥ अधस्ताद्धरणीं योसौनागोधारयतेसदा ॥ शेषश्च पन्नगाः श्रेष्ठो स्वस्ति तुभ्यंप्रयच्छति ॥ मंत्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः ॥ शत्रूणां बुद्धि नाशोस्तु मित्राणामुदयस्तथा ॥ अपुत्राः पुत्रिणः सन्तु पुत्रिणः सन्तु पौत्रिणः ॥ अधनाः सधनाः सन्तु सन्तु सर्वार्थ साधकाः ॥ आयुष्कामो यशस्कामो पुत्र पौत्रस्तथैवच ॥ आरोग्यं धन कामश्च सर्वे कामाः भवन्तु ते (मे) ॥

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु माकश्चिद् दुःखभागभवेत्॥

प्रसङ्गात्स्तोत्र पाठ विधिः ।
न च स्वयं कृतं स्तोत्रं तथान्येन च यत्कृतम् ॥
यतः कलौ प्रशंसंति ऋषिभिर्भाषितं तु यत् ॥

सरस्वती स्तोत्रम् ॥

श्री भैरव उवाच ॥ शृणुदेविप्रवक्ष्यामिस्तोत्रं परम् दुर्लभम् ॥
वागीश्या मन्त्र गर्भंतु भुक्तिमुक्ति फलप्रदम् ॥

ॐ अस्य श्री वाग्वादिनी शारदा स्तोत्र मन्त्रस्य मार्कण्डेयाश्वलायन ऋषिः गृधरानुष्टुप् छन्दः श्री सरस्वती देवता ह्रीं बीजं ॐ शक्ति ऐं कीलकम्आशु वाग्विवृद्धयेजपे विनियोगः ॥ ध्यानम् ॥ शुक्लां ब्रह्म विचार सार परमामाद्यां जगद्व्यापिनीम् ॥ वीणा पुस्तक धारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम् ॥ हस्ते स्फाटिक मालिकां विदधतीं पद्मासने स्थिताम् ॥ वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धि प्रदां शारदाम् ॥ १ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ ह्रीं

ह्रीं हृद्यैकबीजे शशि रुचि कमला कल्प विष्पष्ट शोभे ॥ भव्ये भव्यानुकूले कुमति वनदहे विश्ववन्द्याङ्घ्रि पद्मे ॥ पद्मे पद्मोपविष्टे प्रणतजनमनो मोदसंपादयित्रि ॥ प्रोत्प्लुष्टाज्ञानकूटेहरिनिजदयितेदेविसंसार सारे ॥ २ ॥ ऐं ऐं ऐं इष्ट मंत्रे कमलभवमुखांभोजरूप स्वरूपे ॥ रूपारूप प्रकाशे सकल गुणमये निर्गुणे निर्विकारे ॥ न स्थूलेनैव सूक्ष्मेप्यविदित त्रिषये नापिविज्ञाततत्वे ॥ विश्वे विश्वान्तराले सुरवर नमितेनिष्कले नित्य शुद्धे ॥ ३ ॥ ह्रीं ह्रीं ह्रीं जाप तुष्टे हिमरुचि मुकुटे वल्लकी व्यग्रहस्ते ॥ मातर्मातर्नमस्ते दह-दह जड़तां देहि बुद्धिं प्रशस्तां ॥ विद्ये वेदान्त गीते श्रुति परि पठिते मोक्षदे मुक्ति मार्गे ॥ मार्गातीत प्रभावे भव मम वरदा शारदे शुभ्रहारे ॥ ४ ॥ ध्रीं ध्रीं ध्रीं धारणाख्ये धृतिमतिनुतिभिर्नामभिः कीर्तनीये नित्येऽनित्ये निमित्ते मुनिगण नमिते नूतने वै पुराणे ॥ पुण्येपुण्यप्रभावे हरिहर नमिते नित्य शुद्धे सुवर्णे मन्त्रे मन्त्रार्थ तत्वे मति ! मति ! मतिदे माधव प्रीति नादे ॥ ५ ॥ ह्रीं क्लीं ध्रीं ह्रीं स्वरूपे दह दह दुरितं पुस्तक व्यग्रहस्ते ॥ संतुष्टाकारचित्ते स्मितमुखि सुभगे जृंभिनी स्तंभविद्ये ॥ मोहे मुग्ध प्रभावे मम कुरु विमतिं ध्वांत विध्वंसनीये ॥ गीर्गीर्वाग् भारतीत्वं कविवृषरसना सिद्धिदा सिद्ध विद्या ॥ ६ ॥ स्तौमि त्वां त्वां च वन्दे भज मम रसनां मा कदाचित्त्यजेथाः ॥ मा मे बुद्धिर्विरुद्धा भवतु न च मनो देवि मे जातु पापम् ॥ माने दुःखं कदाचिद्विपदि च समयेऽप्यस्तु मे नाकुलत्वं ॥ शास्त्रेवादे कवित्वे प्रसरतु ममधीर्मास्तु कुंठा कदाचित् ॥ ८ ॥ इत्येतैः श्लोक मुख्यैः प्रति दिन मुषसि स्तौति यो भक्त नम्रो वाणीं वाचस्पते रप्यभि मत विभवो वाक् पटुर्मृष्टपंकः ॥ सस्यादिष्टार्थलाभः सुत मिव सततं पाति तं सा च देवी ॥ सौभाग्यं तस्य लोके

प्रसरति कविता विघ्नमस्तं प्रयाति ॥ ६ ॥ ब्रह्मचारी व्रती मौनी त्रयोदश्यां निरामिषः ॥ सारस्वतो नरः पाठात्सस्यादिष्टार्थ लाभवान् ॥ १७ ॥ पक्षद्वयेऽपियोभक्त्यात्रयोदश्येकविंशतिम् ॥ अविच्छेदंपठेद्धीमान् ध्यात्वा देवीं सरस्वतीम् ॥ ११ ॥ शुक्लांवर धरांदेवी शुक्लाभरणभूषिताम् ॥ वाञ्छितं फलमाप्नोति सलोकेनात्रसंशयः ॥ १२ ॥ इति ब्रह्मास्वयं प्राहसरस्वत्याः स्तवं शुभम् प्रयत्नेन पठेन्नित्यंसोमृतत्वं च गच्छति ॥ १३ ॥ इतिश्रीरुद्रयामलेतन्त्रे दशविद्यारहस्ये सरस्वती स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

सूतके पूजन विधिः ॥

विश्वसारे ॥ महाविद्यां गृहीत्वा च जपेज्जीवावधि प्रिये ॥
महागुरुनिपातादौ न पूजायां विकल्पना ॥
मोहाद्वा यदिवादैवात्पूजयेन्न च साधकः ॥
तस्य सर्व विनाशः स्यान्मारयेत्तं सदा शिवः ॥
अशुचौवाशुचौवापिसर्वकालेपिसर्वदा ॥
पूजयेत्परयाभक्त्यानात्रकार्याविचारणा ॥
रुद्रयामले ॥ पूजयेन्मृतकेऽपि स्याज्जनने सरुजोपिवा ॥
सर्वत्रैव विधिः प्रोक्तः सर्व कामफल प्रदः ॥
अथ सूतकिनः पूजां वक्ष्याम्याग मचोदिताम् ॥
वाह्यपूजा क्रमेणैवध्यानयोगेनपूजयेत् ॥
देवी विषये वाह्य पूजा कर्तव्या विशेष विधानात् ॥
तथा चोक्तंवाराही तन्त्रे ॥
तारायाश्चैव काल्याश्च त्रिपुरायाश्चसुव्रते ! ॥
सूतकेमृतकेचैवनत्यजेयुर्जपार्चनम् ॥
यामले ॥
अशुचिर्वाशुचिर्वापिगच्छंस्तिष्ठन्स्वपन्नपि ॥
न दोषोमानसेजाप्येसर्वदेशेषुसर्वदा ॥

विश्वसारे ॥

जाग्रच्छयानउत्तिष्ठन्भुंजानोगमनेपिवा ॥
सिद्धमन्त्रे न दोषःस्यादशौचनियमेपि च ॥
नकल्पनादिवारात्रौ न च सन्ध्यावसानके ॥

श्रुतौ ॥ तदनन्तरमशौच मपिनप्रतिवन्धकम् ॥
व्रतयज्ञविवाहेषुश्राद्धेहोमेऽर्चनेजपे ॥
आरब्धे सूतकंनस्यादनारब्धेतुसूतकम् ॥
आरम्भोवरणंयज्ञे ंकल्पोव्रतजापयोः ॥
नान्दीश्राद्धंविवाहादौश्राद्धे पाकपरिष्क्रिया ॥
निमंत्रणान्तु वा श्राद्धे आरम्भःस्यादितिश्रुतिः ॥

रुद्रयामले—

*जात सूतकमासै स्यादस्ते च मृतसूतकम् ॥ सूतक द्वय संयुक्तो न मन्त्रः,सिद्धिदायकः ॥

जपादौ जपान्ते च सूतकद्वयमित्यर्थः ॥ ब्रह्म बीजं मनोर्दत्वा चाद्यन्त परमेश्वरि ! ॥ सप्त वारं जपेन्मन्त्रं सूतक द्वय मुच्यते ॥

इति राघव भट्ट कृत विष्णु वचनात् ॥ दीक्षा शब्दार्थ माह यामले ॥

दीक्षा शब्दार्थः ॥

दिव्य ज्ञानं यतो दद्यात्कुर्यात्पापक्षयं यतः ॥
तेन दीक्षेति लोकेस्मिन्कीर्तिता तन्त्रपारगैः ॥

कुलार्णवे १५ उल्लासे ॥ मन्त्रजपे पाठे च भेद. ॥

मनसा यः स्मरेत्स्तोत्रं वचसा वा मनुं जपेत् ॥
उभयं निष्फलं देवि ! भिन्न भाण्डोदकं यथा ॥

गुरुशब्दार्थः ॥

गुशब्दस्त्वन्धकारः स्याद्रुशब्दस्तन्निरोधकः ॥
अन्धकार निरोधित्वाद्गुरुरित्यभिधीयते ॥

---

*यह अनन्य उपासकों के लिये है दोनों सूतकों में गृहस्थों को मानसिक पूजन करने का विधान है ॥

गकाराद् ज्ञान संपत्ती रेफः पापस्य दाहकः ॥
उकारा च्छिवतादात्म्यं दद्यादिति गुरुः स्मृतः ॥

कुल चूड़ामणौ ॥

उदासीनो ह्युदासीनां वनस्थाः वनवासिनः ॥
यतीनाञ्च यतीप्रोक्तो गृहस्थानां गुरुर्गृही ॥
वैष्णवे वैष्णवो ग्राह्यः शैवे शैवस्तथा पुनः ॥
शाक्त के त्रितयं विद्याद्दीक्षास्वामी न संशयः ॥

गुरुरपि गृहस्थ एव कुलार्णवे ॥

सर्व शास्त्रार्थ वेत्ता च गृहस्थो गुरु रुच्यते ॥

गुरु शब्दार्थः यामले ॥

गकारः सिद्धिदः प्रोक्तो रेफः पापस्य दाहकः ॥
उकारः शक्ति इत्युक्तस्त्रितयात्मा गुरुः स्मृतः ॥

मन्त्र शब्द व्युत्पत्ति माह ॥

मननं विश्व विज्ञानं त्राणं संसार बंधनात् ॥
यतः करोति सं सिद्धो मन्त्र इत्युच्यते ततः ॥

पिंगलामते ॥

मननात्त्राणनाच्चैव मद्रूपस्यावबोधनात् ॥
मन्त्र इत्युच्यते सम्यङ् मदधिष्ठानतः प्रिये ॥

रुद्रयामले ॥

गुप्तोपदेश तो मन्त्री मनना त्राणनादपि ॥

तन्त्रान्तरे ॥

तोड़ल तन्त्रोक्त मन्त्र चैतन्य विधिः ॥

सर्व मंत्रस्य चैतन्यं शृणु पार्वति सादरं ॥ सहस्रारे महापद्मे विन्दुरूपं परं शिवं ॥ कुण्डलिनीं समुत्थाप्य हंसेन मनुना सुधीः ॥ नासाग्रे या स्थिरा दृष्टिर्जायते परमेश्वरि ॥ तदैव मन्त्र चैतन्यं कुण्डली चक्रगं भवेत् ॥ सहस्रारे महापद्मे कुण्डल्या सहितं गुरुं ॥ भावयेत्सर्व मंत्राणां चैतन्यं जायते प्रिये ॥ तदेव अजपेन्मन्त्रं सिद्धिदं नात्रसंशयः ॥

देवी प्रतिमास्थापने विशेषः ॥

याम्यास्या शुभदा दुर्गा पूर्वास्या जय वर्द्धिनी ॥ पश्चिमाभि मुखी नित्यं न स्थाप्या सोम्यदिङ् मुखी ॥

देवी भक्ति तरङ्गियां, देवी पुराणे च

तोड़लतन्त्रे ॥

श्रीशिव उवाच ॥ मूलाधारेकाम रूपं हृदिजालंधरं प्रिये ! ॥ पूर्ण गिरिमधोभागे उड्डियानंतदूर्ध्वके ॥ वाराणसी भ्रुवोर्मध्ये ज्वलन्ती लोचनत्रये ॥ मायावती मुखवृत्ते कण्ठेचाष्ट पुरीतथा ॥ नाभिमूलेमहेशानि ! अयोध्यापुरी संस्थिता ॥ कांची पीठंकटीदेशे श्रीचक्रंपृष्ठदेशके ॥ मूलाधारात् शताश्चैव अतलंपरिकीर्तितम् ॥ सुतलं च वर्षशतं तलातलशतं प्रिये ॥ ऋषिवाणेन्दु वर्षान्तं संस्थितं च महातलम् ॥ शतद्वयान्तं पाताल द्विशतं वै रसातलम् ॥ मूलाधाराच्च देवेशि ! द्वंगुली चान्तिकेस्थिते ॥ तयोर्मध्ये च पाताल स्तिष्ठन्ति परमेश्वरि ! ॥ इति ते कथितंकान्ते ! योगसारंसमानतः ॥ नवक्तव्यंपशोरग्रे प्राणान्तेपि कदाच न ॥

तोड़लतन्त्रे १० उल्लासे ॥

तारादेवी नीलरूपा कमला कूर्म चंडिका ॥ धूमावती वराहः स्यात् छिन्नमस्ता नृसिंहिका ॥ भुवनेश्वरीवामनः स्यान्मातंगी राम मूर्तिका ॥ त्रिपुराजामदग्न्यः स्याद्बलभद्रस्तुभैरवी ॥ महालक्ष्मीर्भवेद्बुद्धोदुर्गास्याद् कल्किरूपिणी ॥ स्वयं भगवती काली कृष्ण मूर्तिः समुद्भवा ॥ इति ते कथितं देव्यवतारं दशमेवहि ॥ एतासां पूजनाद्देवि महादेव समोभवेत् ॥

गन्धर्व तन्त्रे ॥

न दद्याद्भास्करायार्घ्यं शंखतोयैर्महेश्वरि ॥
यावन्नदीयते चार्घो भास्कराय महेश्वरि ॥
तावन्न पूजयेद्विष्णुं शङ्करं वा सुरेश्वरीम् ॥

सूर्यः सोमो यमः कालो महाभूतानि पञ्चवै ॥
एते शुभाशुभस्येह कर्मणो नव साक्षिणः ॥
सर्वे देवा शरीरस्थाः मम मन्त्रस्य साक्षिणः ॥
पूर्व जन्मार्जितां विद्यां मम हस्ते प्रदापय ॥

जप फलं कुलार्णवे ॥

गृहे शतगुणं विद्याद् गोष्ठ लक्षगुणं भवेत् ॥
कोटिर्देवालये पुण्यमनन्तं शिवसन्निधौ ॥

उपचार शब्दार्थो ज्ञान मालायाम् ॥

भक्त्या चैतं कृता देवे साधकं देव सन्निधिम् ॥
चारयन्ति यतस्तस्मा दुच्यन्ते ह्युपचारकाः ॥
समीपे चारणाद्वापि फलानान्ते तथोदिताः ॥
अष्टत्रिंशत् षोड़शोऽर्क दश पञ्चोपचारकाः ॥
तान्विभज्य प्रवक्ष्यामि के के ते तैः कृतैश्चकिम् ॥
आसनं प्रथमं तेषामावाहनमुपस्थितिः ॥
स्नानं नीराजनं वस्त्र माचामंचोपवीतकम् ॥
पुनराचाम भूषे च दर्पणालोकनं ततः ॥
गन्ध पुष्पे धूप दीपौ नैवेद्यं च ततः क्रमात् ॥
पानीयं तोय माचामं हस्तवासस्ततः परम् ॥
ताम्बूलमनुलेपञ्च पुष्प दानं पुनः पुनः ॥
गीतं वाद्यं तथा नृत्यं स्तुतिं चैव प्रदक्षिणम् ॥
पुष्पाञ्जलि नमस्कारावष्ट त्रिंशत्समीरिता ॥
पुष्पाञ्जलि नमस्कारौ विष्णु प्रीत्यैभवन्त्यमी ॥

तन्त्रोक्तोपचाराः ॥

उपचारं प्रवक्ष्यामि शृणु पार्वति ! सादरम् ॥
विनोपचारैर्या पूजा सा पूजा न प्रसीदति ॥
अष्टा दशोपचारास्तु सर्वेषामुत्तमाः प्रिये ! ॥

षोडशीति प्रधाना च दशधातदनुस्मृता ॥
पञ्चधातदनुप्रोक्ता कर्तव्याभूति मिच्छता ॥

फेत्कारिणी तन्त्रे ॥ अष्टादशोपचाराः ॥

आसना वाहनञ्चार्घ्यं पाद्यमाचमनन्तथा ॥
स्नानं वासोपवीतञ्च भूषणानि च सर्वशः ॥
गन्धं पुष्पं तथा दीपं धूपोन्नंचापि तर्पणम् ॥
माल्यानुलेपनं चव नमस्कारो विसर्जनम् ॥
अष्टादशोपचारैस्तु मन्त्री पूजांसमाचरेत् ॥

षोड़शोपचाराः तन्त्रे ॥

आसनं स्वागतं पाद्यमर्घ्यमाचनीयकम् ॥
मधुपर्काचमनं स्नानं वसनं भरणानि च ॥
गन्धपुष्पे धूपदीपे नैवेद्यं वन्दनस्तथा ॥
प्रयोजयेदर्चनायामुपचारांश्च षोडशः ॥

दशोपचाराः ॥

पाद्यार्घ्याचमनीयञ्च मधुपर्काचमनस्तथा ॥
गन्धादयो नैवेद्यान्ता उपचाराः दशात्मकाः ॥

पञ्चोपचाराः ॥

गन्धं पुष्पं च धूपं च दीपं नैवेद्यमेव च ॥
प्रदद्यात्परमेशानि ! पूजा पंचोपचारिका ॥

पूजने वर्ज्य पदार्थाः ॥

सर्वं पर्युषितं वर्ज्यं पत्रं पुष्पं फलं जलम् ॥
अवर्ज्यं जान्हवी तोयमवर्ज्यं तुलसीदलम् ॥
अवर्ज्यं विल्वपत्रं स्यादवर्ज्यं जलजं तथा ॥
पुष्पैः पर्युषितै र्देवि नार्चयेत्स्वर्णजैरपि ॥
विल्वपत्रंचमार्घ्यं च तमालामलकीदलम् ॥
कल्हारं तुलसी पत्रं पद्मंच मणि पुष्पकम् ॥

एतत्पर्युषितं न स्यात् यच्चान्यत्कलिकात्मकम् ॥
तिष्ठेद्दिनत्रयं शुद्धं पद्ममामलकन्तथा ॥
दिनैकं करवीराणि येऽन्यानि च तपोधन ॥
पद्मानि सित रक्तानि कुसुमान्युत्पलानि च ॥
एषांपर्युषिता शंका कार्या पंचदिनार्द्धतः ॥

गणेश स्तुतिः सद्धर्म चिन्तामणौ ॥

प्रातः स्मरामि गणनाथ मनाथ बन्धुं सिन्दूरपूर्ण परिशोभित गण्ड युग्मम् ॥ उद्दण्ड विघ्न परि खण्डन चण्ड दण्डमाखण्डलादि सुरनायक वृन्द वन्द्यम् ॥१॥ प्रातर्नमामि चतुराननं वन्द्यमानमिच्छानुकूलमखिलं च वरं दधानम् ॥ तन्तुन्दिलं द्विरसनाधिप यज्ञ सूत्रं पुत्रं विलास चतुरं शिवयोः शिवाय ॥२॥ प्रातर्भजाम्यभयदं खलु भक्त शोक दावानलं गण विभुं वर कुंजरास्यम् ॥ अज्ञानकानन विनाशन हव्यवाहमुत्साह वर्धनमहं सुतमीश्वरस्य ॥३॥

श्लोकत्रयमिदं पुण्यं सदा साम्राज्यदायकम् ॥
प्रातरुत्थाय सततं यः पठेत्प्रयतः पुमान् ॥

देवी स्तुतिः सद्धर्म चिन्तामणौ ।

प्रातः स्मरामि शरदिन्दु करो ज्वलाभां सद्रत्नवन्मकर कुण्डल हारभूषाम् ॥ दिव्यायुधोर्जित सुनील सहस्रहस्तां रक्तोत्पलाभ चरणां भवतीं परेशाम् ॥ १ ॥ प्रातर्नमामि महिषासुर चण्ड मुण्ड शुम्भासुरं प्रमुख दैत्य विनाश दक्षाम् ॥ ब्रह्मेन्द्र रुद्र मुनि मोहन शीललीलां चण्डीं समस्त सुरमूर्तिमनेक रूपाम् ॥२॥ प्रातर्भजामि भजतामभिलाष दात्रीं धात्रीं समस्तजगतां दुरिताप हन्त्रीं ॥ संसार बंधन विमोचनहेतु भूतां मायां परां समधि गम्य परस्य विष्णोः ॥३॥

श्लोक त्रय मि ं देव्याश्चण्डिकायाः पठेन्नरः ॥
सर्वान्कामानवाप्नोति देवी लोके महीयते ॥

तथा च शारदायांभुवनेश्वरींप्रति शिववाक्यम् ॥ अद्याप्य शेष जगतां नवयौवनासि शैलाधिराज तनयाप्यति कोमलासि ॥ समयातन्त्रे ॥ कदाचित्कस्यमुक्तिः स्यात्कदाचिद्भुक्तिरेवच ॥ एतस्याः साधकस्याथ भुक्तिमुक्तिः करे स्थिता ॥ रुद्रयामले ॥ यत्रास्ति भोगो न च तत्र मोक्षो यत्रास्ति मोक्षः न च तत्र भोगः ॥ शिवापदाम्भोज युगार्चकानां भोगश्च मोक्षश्च करस्थ एव ॥ योऽन्येभ्यो दर्शनेभ्यश्च भुक्ति मुक्ति च कांक्षति ॥ स्वप्न लब्ध धनेनैव धनवान्सभवेद्यदि ॥ शुक्तो रजत विभ्रान्तिर्यथा जायेत पार्वति ! ॥ तथान्य दर्शनेभ्यश्च भुक्ति मुक्ति च कांक्षति ॥ शाक्तानन्दतरंगिण्यां षष्ठोल्लासे ॥

अथान्तर्यजनंवक्ष्ये येन देवमयोभवेत् ॥ सुखासने समासीनः प्राङ्मुखो वा उदङ्मुखः ॥ स्वकीय हृदये ध्यायेत् सुधासागर मुत्तमम् ॥ रत्न द्वीपञ्चतन्मध्ये सुवर्ण वालुकामयम् ॥ मन्दारपारिजाताद्यैः कल्पवृक्षैः सु पुष्पितैः ॥ सर्वतोलंकृतैर्दिव्यैर्नित्य पुष्प फलद्रुमैः ॥ नाना सुगन्ध कुसुम गन्धामोदितदिङ्मुखं ॥ उत्फुल्लकुसुमामोदप्रहृष्टभृङ्ग संकुलम् ॥ कूजत्कोकिल संगेन वाचालित दिगन्तरम् ॥ सर्वतोलंकृतं दिव्यं लसत्कांचन पङ्कजम् ॥ मौक्तिकैः कुसुमैः स्रग्भिर्दुकूलैः स्वर्णतोमरैः ॥ तन्मध्ये संस्मरेद्देविकल्पवृक्षं मनोहरम् ॥ चतुःशाखाचतुर्वेदंगुणत्रय समन्वितम् ॥ पीतं कृष्णं तथा श्वेतं रक्तं पुष्पं च सुन्दरि ॥ हरितं च विचित्रं च नाना पुष्प विराजितम् ॥ कोकिलैर्भ्रमरैर्देवि शोभितं बहु पक्षिभिः ॥ एवं कल्पद्रुमं ध्यात्वातदधोरत्न वेदिकाम् ॥ तत्रोपरिमहद्व्याप्तं चिन्तयेद्रक्तमण्डलम् ॥ उद्यदादित्य संकाशं रत्न सोपान मण्डितम् ॥ ध्वजावली समाकीर्णं चतुर्द्वार समन्वितम् ॥ नाना रत्नादि शोभाढ्यं रत्न प्राकार मंडितम् ॥ स्व स्व स्थान स्थितावस्थलोकपालैरधिष्ठितम् ॥ सिद्ध चारण गंधर्वैर्विद्याधर महोरगैः ॥ किन्नरैरप्सरोभिश्च क्रीडद्भिः परिदिङ् मुखम् ॥ नृत्य वादित्र निरतैरमरस्त्रीगणैर्युतम् ॥ किंकिणी जालसन्नद्धपताकाभिरलंकृतम् ॥ महामाणिक्य वैदूर्यरत्नचामर भूषितम् ॥ स्थूल मुक्ता फलोद्दा-

मलम्बमानैरलंकृतम् ॥ चन्दनागुरु कस्तूरीतथामृगमदविलेपितम् ॥तन्मध्ये संस्मरेद्देविमहामाणिक्य वेदिकाम् ॥ उद्यदर्केन्दुकिरणैश्चतुष्कोणप्रशोभितम् ॥ ध्यायेत्सिंहासनंतत्र ब्रह्म विष्णु शिवात्मकम् ॥ सिंहासने महेशानिप्रसूनतूलिकांन्यसेत् ॥ पीठ पूजां ततः कृत्वा संकल्पोक्त क्रमेणतु ॥ प्रेतपद्मासने तत्र चिन्तयेत्परमेश्वरीं ॥ आत्मनो भीष्ट देवता ध्यानमिहोच्यते ॥ श्रीरत्नपादुकेदत्वानीत्वा तां स्नान मन्दिरे ॥ सिंहासनोपविष्टायामुद्वर्तनं समाचरेत् ॥ कर्पूरागुरु कस्तूर्यातथा मृगमदेन च ॥ रोचना कुंकुमैर्मिश्रैर्नाना गंध समन्वितैः॥ देव्याउद्वर्तनंकृत्वा गन्ध तैलं विलेपयेत्॥ देव्या शतसहस्रैस्तु स्वर्ण कुम्भ सहस्रकैः॥ आनीय वारिणा स्नातां चिन्तयेत्परंदेवताम् ॥ दुकूलैर्मार्जितं गात्रं दुकूले परिधे तथा ॥ कंकत्या केशान्संस्कुयाद्विधिवद्बन्धनं तथा ॥ पट्ट गुच्छं केशपाशेनानारत्नोप शोभितम् ॥ ललाटे तिलकं दद्यात्सिंदूरं केश मध्यगे । नागेन्द्र दत्त रचितं शंखं दद्यान्मनोहरम् ॥ हस्तेकेयूरकं चैव कंकणं कटकं तथा ॥ पादाङ्गुलीयकं दद्यान्नाना रत्नोपशोभितम् ॥ पादयोर्नूपुरं दद्यान्नासाग्रे गजमौक्तिकम् ॥ निवेदयेद्यथा शक्तया पुष्प मालाञ्च भूषणम ॥ सर्वाङ्गे लेपनं कुर्याद्गन्ध चन्दनसिह्लकैः ॥ काञ्चनाञ्चित कञ्चूली शोभितं हृदयोपरि ॥ समाधौ चिन्तयेद्देवीं भूत शुद्धादिकंदिशेत् ॥ न्यास जालं विधायाथ समाधौ पूजयेत्सदा ॥ षोडशैरुपचारैस्तु हृदिस्थां पूजयेच्छिवाम् ॥ रत्न सिंहासनं दद्यात्स्वागतं कुशलंवदेत् ॥ पाद्यं च पादयोर्देवि शिरस्यार्घ्यं निवेदयेत् ॥ परामृतमाचमनीयं प्रदद्यान्मुख पंकजे ॥ मधुपर्कं मुखेदद्यात्त्रिधा आचमनं मुखे ॥ हेमपत्र गतं दिव्यं परमान्नं परिस्रुतम् ॥ कपिला घृत संयुक्तमन्नं व्यञ्जन संयुतम् ॥ सुधाम्बुधिं मांस शैलं मत्स्यराशिं फलानि च ॥ भक्तं भोज्यं तथा लेह्यं चर्व्यं चोष्यं तथैव च ॥ सकर्पूरं च ताम्बूलं मानसं परि कल्पयेत् ॥ आवरणास्ततोदेव्याः पूजनंमनसैवहि ॥ इत्थमन्तः समाराध्य मनसैवजपेन्मनुम् ॥ सहस्रादि जपं कृत्वा देव्यै सोदकमर्पयेत् ॥ ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च ईश्वरश्च सदाशिवः ॥ एतदेव महादेव्याः पर्यंकसमुदाहृतम् ॥ पयः फेन निभांशय्यां नाना पुष्पोपशोभितां ॥ पुष्प शय्यां च सं कुर्यात्तत्रदेवीं सुरेश्वरीम् ॥ चिन्तयेत्साधकोयोगीनानासुख विलासिनीम् ॥ नृत्य गीतैः स वाद्यैश्च तोषयेत्परमेश्वरीम् ॥

दुर्गा १६ उपचाराः मानसिक पूजने ॥

उद्यच्चन्दन कुंकुमारुणपयो धाराभिराप्लावितम् ॥
नानानर्घ मणि प्रवाल घटितां दत्तां गृहाणाम्बिके ! ॥

आमृष्टां सुर सुन्दरीभिरभितो हस्ताम्बुजैर्भक्तितः
मातः सुन्दरि ! भक्त कल्प लतिके ! श्रीपादुकामादरात् ॥१॥
देवेन्द्रादिभिरर्चितं सुरगणैरादाय सिंहासनम् ॥
चंचत्कांचन संचयाभिरचितं चारु प्रभाभास्वरम् ॥
एतच्चम्पक केतकी परिमलं तैलं महा निर्मलम् ॥
गन्धोद्वर्त्तनमादरेण तरुणी दत्तं गृहाणाम्बिके ! ॥२॥
पश्चाद्देवि ! गृहाण शम्भु गृहिणि ! श्री सुन्दरि ! प्रायशः ॥
गन्ध द्रव्य समूह निर्भर भवं धात्री फलं निर्मलम् ॥
तत्केशान्परिशोध्य कङ्कतिकया मन्दाकिनी स्रोतसि ॥
स्नात्वाप्रोज्वल गंधकं भवतु ते श्री सुन्दरि ! त्वन्मुखे ॥३॥
सुराधिपति कामिनी कर सरोज नाली धराम् ॥
स चन्दन सुकुंकुमागुरुतरेण विभ्राजिताम् ॥
महापरिमलोज्वलां सरस शुद्ध कस्तूरिकाम् ॥
गृहाण वरदायिनि ! त्रिपुर सुन्दरि ! श्रीपदे ॥४॥
गन्धर्वामर किन्नर प्रियतमा सन्तान हस्ताम्बुजे ॥
प्रस्तारैर्ध्रियमानमुत्तम तरं काश्मीरजापिंजरम् ॥
मातर्भास्वर भानु मण्डल लसत्कान्ती प्रदानोज्वलम् ॥
चैनं निर्मलमातनोतु वसनं श्री सुन्दरि ! त्वन्मुदे ॥५॥
स्वर्णाकल्पित कुण्डले श्रुतियुगे हस्ताम्बुजे मुद्रिका ॥
मध्येसारसना नितम्ब फलके मंजीरमंघ्रिद्वये ॥
हारो वक्षसि कङ्कणोक्वण रणत्कारौ कर द्वन्द्वके ॥
विन्यस्तं मुकुटं शिरस्यनुदिनं दत्तोन्मदं स्तूयताम् ॥६॥
ग्रीवायां धृत कान्ति कान्त पटलं ग्रैवेयकं सुन्दरम् ॥
सिन्दूरं विलसल्ललाटफलके सौंदर्य मुद्राधरम् ॥
राजत्कज्जल मुज्वलोत्पलदलश्री लोचने लोचने ॥

तद्दिव्यौषधिनिर्मितं रचयतु श्रीं शाम्भवि श्रीपदे ॥७॥
अमन्द तर मन्दरोन्मथित दुग्ध सिन्धूद्भवम् ॥
निशाकर करोपमं त्रिपुर सुन्दरि ! श्रीपदे ॥
गृहाण मुखमीक्षितुं मुकुर बिम्बमाविद्रुमै- ॥
विंनिर्मित मधुच्छदेरति कराम्बुज स्थायिनम् ॥८॥
कस्तूरी द्रव चन्द्रना गुरु सुधा धाराभिराप्लावितम् ॥
चंचच्चम्पक पाटलादि सुरभि द्रव्यैः सुगन्धी कृतम् ॥
देव श्री गज मस्तक स्थित महा रत्नादि कुम्भ व्रजै-
रम्भः शाम्भवि संभ्रमेण विमलं दत्तं गृहाणाम्बिके ! ॥९॥
कल्हारोत्पल नाग केशर सरोजाख्यावली मालती ॥
वल्ली कैरव केतकादि कुसुमैः रक्ताश्वमारादिभिः ॥
पुष्पैर्माल्य भरेण वै सुरभिना नाना रस स्रोतसा ॥
ताम्राम्भोजनिवासिनीं भगवतीं श्री चण्डिकां पूजये ॥१०॥
मांसी गुग्गुल चन्दनागुरु रजः कर्पूर शैलेयजैः ॥
माध्वी कैः सह कुंकुमैः सुरचितैः सर्पिर्भिरामिश्रितैः ॥
सौरभ्यस्थिति मन्दिरे मणिमये पात्रे भवेत्प्रीयते ॥
धूपोऽयं सुरकामिनी विरचितः श्रीचण्डिके ! त्वन्मुखे ॥११॥
घृत द्रव परिस्फुरद्रुचिर रत्न यष्ट्यान्वितो ॥
महा तिमिर नाशनः सुर नितम्बिनी निर्मितः ॥
सुवर्ण चषक स्थितः सघन सार वर्त्यान्वितः ॥
तव त्रिपुर सुन्दरि ! स्फुरत्ति देवि ! दीपोमुदे ॥१२॥
जाती सौरभ निर्भवं रुचिकरं शाल्योदनं निर्मलम् ॥
युक्तं हिंगुमरीच जीर सुरभि द्रव्यान्वितै र्व्यञ्जनैः ॥
पक्वान्नेन सपायसेन मधुना दध्याज्य संमिश्रितः ॥
नैवेद्यं सुरकामिनी विरचितं श्री चण्डिके ! त्वन्मुखे ॥१३॥

लवङ्ग कलिकोज्वलं बहुलनाग वल्ली दलं ॥
सजातीफल कोमलं सघनसार पूगी फलम् ॥
सुधा मधुरि माकुलं रुचिर रत्न पात्र स्थितं ॥
गृहाण मुख पङ्कजे स्फुरित गन्ध ताम्बूलकम् ॥१४॥
शरत्युभव चन्द्रमः स्फुरित चन्द्रिका सुन्दरम् ॥
दलत्सुरतरङ्गिणी ललित मौक्तिकाडम्बरम् ॥
गृहाण नव कांचन प्रभव दण्ड खण्डोज्वलम् ॥
महा त्रिपुर सुन्दरि ! प्रकटमातपत्रं महद् ॥१५॥
मातस्त्वन्मुद मातनोतु सुभग स्त्रीभिः सदान्दोलितम् ॥
शुभ्रं चामरमिन्दु कुन्द सदृशं प्रस्वेद दुःखापहम् ॥
सद्योगस्त्य वशिष्ठ नारद शुक व्यासादि वाल्मीकिभिः
स्वे चित्ते क्रियमाण एव कुरुतां शर्माणि वेद ध्वनिः ॥१६॥
स्वर्गाङ्गणे वेणु मृदङ्ग शंख भेरी निनादैरुपगीयमानः ॥
कोलाहलैराकुलिता तथास्ते विद्याधरी नृत्यकलासुखाय ॥
देवि भक्ति रस भावित वृत्ते प्रीयतां यदि कुतोपि लभेत्तां ॥
तत्र लौल्यमपि सत्फल मेकं जन्म कोटिभि रपीहनलभ्यम् ॥१७
एतैः षोडशभिः पदैरुपचारोपकल्पितैः ॥
यः परां देवतां स्तौति सतेषां फल माप्नुयात् ॥

मङ्गलाचरणम् ॥

हे रम्भं विधुशेखरं निजगुरोर्हृद्यं च रम्यंपदम् ॥
ध्यात्वा विघ्नभवाब्धि पीत गहनं स्मृत्वामहेशंपरम् ॥
विद्वद्वृन्द मनो विनोद सरणिलदम्यग्रनारायणः ॥
व्याकुर्वेऽबुधबोधनाय ललितां दुर्गार्चनाय स्तुतिम् ॥१॥

गुरुभ्यो नमः ॥

मायां भवानीं जगदीश्वरीं त्वाम् ॥

नत्वा सदा हेऽम्ब दयार्द्रचित्ते ॥
स्वतः प्रकाशार्चनदीपिकां वै ॥
दुर्गासृतिं लोक हिताय कुर्वे ॥२॥
प्रणम्य चंडिका पदारविन्द युग्म मादरात् ॥
करोति कोपि पूजन प्रयोग संग्रहं बुधः ॥३॥
अथ पूजा विधिं वक्ते सर्व सौभाग्यदायिनीम् ॥
ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय ध्यात्वा स्वे मस्तके गुरुम् ॥४॥

तत्र साधकः प्रातरुत्थाय शय्यायामेव वद्ध पद्मासनः । कुल* वृत्तं प्रणम्य स्व शिरसि श्वेत सहस्र दल कमल कर्णिका मध्य वर्त्ति चंद्र मंडलान्तर्गत स्वगुरुंध्यायेत् ॥ श्वेतं श्वेत विलेप माल्य वसनं वामेन रक्तोत्पलं विभ्रत्या प्रिययेतरेण तरसा श्लिष्टं प्रसन्नाननम् ॥ हस्ताभ्यामभयं वरं च दधतं शम्भुः स्वरूपं परम् ॥ हाला हेलति लोचनोत्पलयुगं ध्यायेच्छिरस्थंगुरुम् ॥ इति ध्यात्वा ॥ मानसोपचारैः सम्पूज्य ॥ ॐ लं पृथिव्यात्मकं गुरवे गंधं विलेपयामि नमः ॥ अंगुष्ठकनिष्ठाभ्यां ॥ ॐ हं आकाशात्मकं गुरवे पुष्पाणि समर्पयामि नमः ॥ अंगुष्ठ अनामिकाभ्यां ॥ ॐ यं वायव्यात्मने गुरवे धूपं आघ्रापयामि नमः ॥ अंगुष्ठ मध्यमाभ्यां ॥ ॐ रं वह्न्यात्मकं गुरवे दीपं दर्शयामि नमः ॥ अंगुष्ठ तर्जनीभ्यां ॥ ॐ वं अमृतात्मकं गुरवे नैवेद्यं निवेदयामि नमः ॥ अंगुष्ठ अनामिकाभ्यां ॥ ॐ सं सोमात्मकं गुरवे तांबूलं स०नमः सर्वाङ्गुलीभिः॥ अमुकानन्दनाथ श्रीपादुकायै परिपूजयामि नमः ॥ इति संपूज्य ॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हसखफ्रें ह्सौः हसक्षमल वरयूं सहसखफ्रें सहौसहक्ष मलवरयूं ह्सौः

---

*टि० कुलवृक्षाः ॥ अशोकः केशरो विल्वः कर्णिकारश्चुतः स्तथा । नमेरुश्च प्रियालश्च सिन्दुवार कदम्बकौ ॥ मरुवकश्चंपकश्चैव विल्वश्च द्वादशास्मृतः ॥ नमेरु रुद्राक्षः प्रियालोवृक्ष विशेषः ।

अमुकानंदनाथ अमुकीदेव्यं वा श्रीपादुकां पूजयामिनमः ॥ इति गुरु पादुका मंत्रं दशधा सप्तधा वा प्रजप्य जपं गुरोर्दक्षिण करे ॥ ॐ गुह्याति गुह्य गोप्तात्वं गृहाणास्मत् कृतंजपं ॥ सिद्धिर्भवतु मे देव ! त्वत्प्रसादान्महागुरो ! ॥ १ ॥ इति समर्प्य ॥ ऐं अखण्ड मण्डलाकारं व्याप्तं येनचराचरम् ॥ तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ॥ २ ॥ नमोस्तु गुरवे तस्मै इष्ट देव स्वरूपिणे ॥ यस्य वागमृतं हन्ति विषं संसार संज्ञकम् ॥३॥ इति प्रणम्य ॥ स्तुवीत ॥ नमस्ते नाथ ! भगवन् ! शिवाय गुरु रूपिणे ॥ विद्यावतार संसिद्ध्यै स्वीकृतानेकविग्रहः ॥४॥ नारायण स्वरूपाय परमार्थैक रूपिणे ॥ सर्वज्ञान तमोभेद भानवे चिद्घनायते ॥ स्वतन्त्राय दयाक्लृप्त विग्रहायशिवात्मने ॥ परतन्त्राय भक्तानां भव्यानां भव्य रूपिणे ॥ विवेकिनां विवेकाय विमर्शाय विमर्शिणाम् ॥ प्रकाशिनां प्रकाशाय ज्ञानिनां ज्ञान रूपिणे ॥ पुरस्तात्पार्श्वयोः पृष्ठ नमस्कुर्यामुपर्यधः ॥ सदामच्चित्तरूपेण विधेहि भवदासनम् ॥ त्वत्प्रसादहं देव ! कृत कृत्योस्मि सर्वतः ॥ मायामृत्यु महापाशाद्विमुक्तोस्मि शिवोस्मि च ॥ इति स्तुत्वा ॥ प्रातः प्रभृति सायांतं सायादि प्रातरं ततः ॥ यत्करोमि जगन्नाथ ! तदस्तु तव पूजनम् ॥ इति सर्वं गुरवे निवेद्य ॥ तदाज्ञां गृहीत्वा तत्पाद स्खलितामृतधारयाक्षालितनिर्मलमात्मानं विचिन्तयेत् ॥ अथ मूलाधारस्थ चतुर्दल कमल कर्णिकान्तर्गत ‡त्रिकोण मध्यस्थिताधोमुख स्वयम्भूलिंग वेष्टिनीं प्रसुप्त भुजगाकारां शंखावर्ताकारेण सार्द्ध त्रिवलयां तडित्कोटि प्रभां विस-

---

‡ टि० तंत्रान्तरे ॥ रहस्यं परमाश्चर्यं त्रिकोणानां च संस्मृणु ॥ वाम रेखा भवेद् ब्रह्मा विष्णुर्दक्षिण रेखिका ॥ अधो रेखा भवेद्रुद्रोमात्रा साक्षात्सरस्वती ॥

तन्तनीयसीं मूल विद्या प्रकृति भूतां कुंडलिनीं* इष्ट देवता स्वरूपां कूर्च बीजेन त्रिकोणाग्निना सचेतनां कृत्वा सुषुम्णावर्त्मना द्वादशांतं नीत्वा ब्रह्म रंध्रस्थ सहस्र दल कमलस्थेन परम सदा शिवेन संयोज्य तत्र चन्द्र मंडलाद्विगलितअमृत धारया संतर्प्य ॥ तत्रैव तत्प्रभायां कुलगुरुं ध्यायेत् ॥ कुलामृत रसोल्लोल हृदया घूर्ण लोचनान् ॥ कुलालिङ्गन संभिन्न चूर्णिताशेषतापसान् ॥ कुल शिष्यैः परिवृतान् पूर्णान्तः करणोद्यतान् ॥ वराभययुतान्सर्वान् दुर्गा तन्त्रार्थ वेदिनः ॥ इति ध्यात्वा ॥ ह्रीं श्रीं प्रह्लादानन्दनाथाय नमः ॥ ह्रीं श्रीं सकलानन्दनाथाय नमः ॥ ह्रीं श्रीं कुमारानन्द नाथाय नमः ॥ ह्रीं श्रीं वसिष्ठानन्दनाथायनमः ॥ ह्रीं श्रीं क्रोधानन्द नाथाय नमः ॥ ह्रीं श्रीं असुरानन्द नाथाय नमः ॥ ह्रीं श्रीं ध्यानानन्द नाथाय नमः ॥ ह्रीं श्रीं बोधानन्द नाथाय नमः ॥ ह्रीं श्रीं शुकानन्द नाथाय नमः ॥ इति ध्यात्वा ॥ ततः ऋष्यादि कर षडंग न्यास पूर्वकं हृदय कमले द्वादश दले कुण्डलिनी मानीय दुर्गा रूपेण वक्ष्यमाण प्रकारेण ध्यात्वामानसैरुपचारैः संपूज्य ॥ ॐ महादेव्यै विद्महे दुर्गायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥ इति गायत्रीमष्टोत्तर शतावृत्यष्टाविंशतिधा दशधा वा प्रजप्य ॥ मूल (नवार्ण) मन्त्रं शतवारं प्रजप्य ॥ गुह्यातिगुह्यगोप्त्रीत्वं गृहाणास्मत्कृतं जपं ॥ सिद्धिर्भवतु मे देवि ! त्वत्प्रसादान्महेश्वरि ! ॥ इति देव्याः वामकरे जपंसमर्प्य ॥ स्तुत्वा नत्वा देव्याज्ञांप्रार्थयेत् ॥ त्रैलोक्य चैतन्यमयी त्रिशक्ते हे विश्वमातर्भवदाज्ञयैव ॥ प्रातः समुत्थाय तव प्रियार्थं संसार यात्रा मनुवर्तयिष्ये ॥ इति प्रार्थ्य ॥ कुण्ड-

---

* अंकुशा कुण्डली यातु कोटि विद्युल्लता कृतिः ॥ कुण्डली अंकुशाकारा मध्यशून्यं सदा शिवः ॥ जवा पावक संकाशा वाम रेखा वरानने ॥ शरच्चन्द्र प्रतीकाशा दक्षरेखा च मूर्तिमान ॥

लिनीं पुनस्तेनैव पथा मूलाधारमानीय ॥ अहंदेवि नचान्योस्मि ब्रह्मैवाहं न शोक भाक् ॥ सच्चिदानन्द रूपोहमात्मानमिति चिंतयेत् ॥ गुरु देवतात्मनामैक्यं* भावयन् ॥ ब्रह्मैवास्मीति मत्वा ॥ भूमिं प्रार्थयेत् ॥ ॐ समुद्र मेखले देवि ! पर्वत स्तन मंडले ॥ विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे ॥ इति श्वासानुसारेण भूमौ पादं दत्वा बहिर्गत्वावश्यकं कर्म कृत्वा शुचि देवी गृहं गत्वा निर्माल्यमपसार्य प्रणम्याज्ञां गृहीत्वा स्नानार्थं तीर्थं गच्छेत् ॥ अथ स्नानम् ॥ नद्यादौ गत्वा नवार्णेन मृत्तिकयांगं विलिप्य मूल मुच्चरन् मलापकर्षणं कृत्वाचम्य जलपूर्ण ताम्र पात्रन्तिल अक्षत जवापुष्पाणि निक्षिपेत् ॥ तेन संकल्पयेत् ॥ ॐ अद्येत्यादि एतन्मन्त्र प्रतिबन्धकाशेष दुरितक्षय पूर्वकं श्री चण्डिका प्रीतये मन्त्र स्नानमहं करिष्ये ॥ इति संकल्प्य ॥ जले समूलत्रिकोण चक्रं विलिख्य ॥ ॐ गंगेच यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ॥ कावेरि नर्मदे सिन्धोजलेऽस्मिन्संनिधिं कुरु ॥ इति मंत्रेण सूर्य मण्डलादंकुश मुद्रया तीर्थान्यावाह्य ॥ अंगुलीभिः सप्त छिद्राणि संरुध्य ॥ मूलविद्ययात्रिर्निमज्य ॥ मूलान्त आत्म तत्वाय स्वाहा ॥ विद्या तत्वाय स्वाहा ॥ शिव तत्वाय स्वाहा ॥ इति त्रिराचम्य ॥ मूलेन कुम्भ मुद्रयात्रिर्मूर्द्ध्नि जलेनाभिषिंचेदिति स्नानम् ॥ अथ सन्ध्या विधिः ॥

---

* त्रैलोक्य चैतन्य मयादि देवि ! भवानि दुर्गे ! भवदाज्ञयैव ॥ प्रातः समुत्थाय तव प्रियार्थं संसार यात्रा मनुवर्तयिष्ये ॥ १ ॥ जानामि धर्म्मं न च मे प्रवृत्तिर्जानाम्यधर्मं न च मे निवृत्तिः ॥ केनापि देवेन हृदिस्थितेन यथा नियुक्तोस्मि तथा करोमि ॥ २ ॥

* अंकुश मुद्रा का लक्षण । ऋजुमध्या मध्यपर्वाक्रान्ता तर्जन्यधोमुखी ॥ विज्ञेयांङ्कुश मुद्रेयं कुञ्चितामध्य पर्वतः ॥

दक्ष मुष्टि गृहीतस्य वाम मुष्टेस्तु मध्यमाम् ॥ प्रसार्य तर्जन्या कुञ्चेत्सेयमंकुश मुद्रिका ॥

ततः श्वेत वाससी परिधाय ॥ ॐ मणि धरणि वज्रिणि महा प्रतिसरे रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा ॥ इति शिखां बध्वा ॥ सिंदूरेण तिलकं कृत्वाचम्य ॥ मूलेन प्राणायामत्रयं विधाय ॥ ऋष्यादि षडंग न्यासं विधाय वाम हस्ते जल मादाय दक्ष हस्तेन पिधाय ॥ लं हं यं रं वं इति पंच भौतिक बीजैरभिमन्त्र्य शिरसि मन्त्रेणांगुल्यान्तर्गत तदुदकविंदुभिर्मूलमुच्चरन् सप्तधा तत्व मुद्रयामूर्द्ध्नि प्रोक्षणं कृत्वा जल रेखां दक्षिणे कृत्वा नासा मुपनीय वाम नासयाकृष्य देहान्तर्वर्ति समस्त पापं तेनप्रक्षाल्य कृष्ण वर्णतज्जलं वामनासा पुटेनहस्त प्रविष्टं संचिन्त्य पुरः कल्पित वज्र पाषाणे त्रिः अस्त्राय फट् इति क्षिप्त्वा आचम्य मूलेन निःश्वसन् सूर्यायांजलित्रयं दत्वा ॥ ॐ महा देव्यै विद्महे दुर्गायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥ इति गायत्री मष्टोत्तर शतावृत्त्यष्टा विंशतिधा वाष्टधा वा प्रजपेदिति सन्ध्या विधिः ॥ अथ तर्पणम् ॥ जले यंत्रं विभाव्य तर्पणीय देवता इह याचित्वावाह्य ॥ ॐ ब्रह्मा भैरवस्तृप्यताम् ॥ ॐ विष्णुभैरवस्तृप्यताम् ॥ ॐ रुद्र भैरवस्तृप्यताम् ॥ ॐ हसक्ष मलवर यूं स्वधा देव्यै वौषट् आनन्द भैरवीतृप्यताम् ॥ एतदेव तर्पणम् ॥ अथ ऋषि तर्पणम् ॥ ॐ महादेवी काली तृप्यताम् ॥ ॐ महादेवी लक्ष्मी तृप्यताम् ॥ ॐ महादेवी सरस्वती तृप्यताम् ॥ ॐ महादेवानन्द नाथस्तृप्यताम् ॥ ॐ त्रिपुरांबा तृप्यताम् ॥ ॐ भैरवानन्द नाथस्तृप्यताम् ॥ ॐ ब्रह्मानन्द नाथस्तृप्यताम् ॥ ॐ पूर्णानन्दनाथस्तृप्यताम् ॥ ॐ वन्दिनाथानन्द नाथस्तृप्यताम् ॥ ॐ चलच्चित्तानन्द नाथस्तृप्यताम् ॥ ॐ चंचलानन्दनाथस्तृप्यताम् ॥ ॐ कुमारानन्दनाथस्तृप्यताम् ॥ ॐ क्रोधानन्दनाथस्तृप्यताम् ॥ ॐ वरदानन्दनाथस्तृप्यताम् ॥ ॐ स्मरदीपानन्दनाथस्तृप्यताम् ॥ ॐ

मायाम्बातृप्यताम् ॥ मायावत्यम्बा तृप्यताम् ॥ ॐ विमलानन्दनाथस्तृप्यताम् ॥ ॐ कुशलानन्दनाथस्तृप्यताम् ॥ ॐ गोरक्षानंदनाथस्तृप्यताम् ॥ ॐ भोज देवानन्द नाथस्तृप्यताम् ॥ ॐप्रजापत्यानन्दनाथस्तृप्यताम् ॥ ॐ मूलदेवानन्दनाथस्तृप्यताम् ॥ ॐ विघ्नदेवानन्दनाथस्तृप्यताम् ॥ ॐ हुताशनानन्दनाथस्तृप्यताम् ॥ ॐसमयानन्दनाथस्तृप्यताम् ॥ ॐ संतोषानन्दनाथस्तृप्यताम् ॥ अथ पितृतर्पणम् ॥ ॐ गुरु परमगुरुपरापरगुरु परमेष्ठि गुरुनामनाथ शब्दान्त स्वनाम्ना तर्पयेत् ॥ गंधादिभिरभ्यर्च्य ॥ मूलान्ते सांगां सपरिवारां सायुधां सशक्तिकां ब्रह्मा विष्णु रुद्र सहितां श्रीचण्डिकां तर्पयामि नमः ॥ दशधा त्रिधा वा तर्पयेत् ॥ एवं सन्ध्या तर्पणाशक्तावपि त्रिकालदेवीं ध्यात्वा यथाशक्ति मूलं वा गायत्रीं जपेत् ॥ ततः ॐ ह्रीं हंसः मार्तण्ड भैरवाय प्रकाश शक्तिसहिताय इदमर्घ्यं स्वाहेति त्रिः सूर्यार्घ्यं दत्वा सूर्यमण्डले देवीं विभाव्य मूलमुच्चार्य उद्यदादित्य मण्डल वर्तिन्यै शिव चैतन्य मय्यै ब्रह्मा विष्णु रुद्र सहितायै चण्डिकायै इदमर्घ्यं स्वाहेति मंत्रेण रक्त चन्दन जवापुष्प कुशजलाक्षत पूरिपूर्णेन ताम्रपात्रेण सूर्यमण्डलस्थायै देव्यैअर्घ्यं दत्वा गायत्रीं यथा शक्ति प्रजप्य गुह्येति मंत्रेण समर्प्य सूर्यमण्डले देवीं विसर्जयेदिति संध्याविधिः ॥

अथ पूजा विधिः ॥

यथा कामनया वस्त्र युग्मं परिधाय तिलकं चंदनादिना कृत्वा पूजागृह समीपमागत्य ॥ सूर्यः सोमोयमः कालोमहा भूतानि पंच च ॥ एते शुभाशुभस्येह कर्मणो नव साक्षिणः ॥ देवि ! त्वं प्राकृतं चित्तं पापाक्रांत मभून्मम ॥ तन्निः सारयचित्तान्मे पापं फट् फट् ते नमः ॥ इति मन्त्रेण पापोत्सादनं कृत्वा ॥ इति मंत्रेण जलमानीय आसनमभ्युद्दयोवज्रोदके हूँफट् स्वाहा ॥ इति मंत्रेण जलमानीय आसनमभ्युद्दयो-

इति मंत्रेण हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य ॥ ॐ ह्रीं स्वाहेत्याचम्य ॥ शिखाबंधनम् कृतं चैतेनैव मंत्रेण विधासामान्यार्घ्यं स्थापयेत् ॥ यथा स्ववामे त्रिकोण वृत्त चतुरस्र मंडलं कृत्वा ॥ ॐ ह्रीं आधार शक्तये नमः ॥ इति संपूज्याधारं संस्थाप्य ॥ ॐ क्रः अस्त्रायफट् ॥ इतिपात्रं प्रक्षाल्य आधारे निधाय ॥ ॐ क्रां हृदयाय नम इतिजलेन संपूर्य ॥ तीर्थान्यावाह्य ॥ ॐ गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ॥ कावेरि नर्मदे सिंधो जलेस्मिन्संनिधिं कुरु ॥ इति मंत्रेणांकुशमुद्रया सूर्यमंडलात्तीर्थान्यावाह्य ॥ ॐ मिति गंधादि निक्षिप्य ॥ वमिति धेनु मुद्रां दर्शयेदिति सामान्यार्घ्यः ॥ ततस्तेन जलेन पूजा गृह द्वारं प्रोक्ष्य द्वार देवताः पूजयेत् ॥ द्वारोर्ध्वे गं गणपतये नमः ॥ वामे क्षं क्षेत्रपालाय नमः ॥ दक्षे वां वटुकाय नमः ॥ अधः यां योगिनीभ्यो नमः ॥ एवं क्रमेणऊर्ध्वे गं गंगायै नमः ॥ वामे यं यमुनायै नमः ॥ दक्षे श्री लक्ष्म्यै नमः ॥ अधः ऐं सरस्वत्यैनमः ॥ एवं पूर्वादि द्वाराणि पूजयेत् ॥ द्वारश्रि इदमर्घ्यं परिकल्पयामि ॥ ततो ॥ द्वारपाचाम्बलोकस्य द्वारं रक्षतु यत्नतः ॥ निवार्य विघ्न संघातमित्याज्ञा पारमेश्वरी ॥ इति देवताज्ञां श्रावयित्वा वामांगं संकोचयन्देहलीं लंघयन्दक्ष पाद पुरः सरमंतः प्रविश्य ॥ ॐ अपः क्रामन्तु भूतानि पिशाचाः प्रेत गुह्यकाः ॥ ये चानिवसंत्यन्ये देवता भुवि संस्थिताः ॥ अपःसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः ॥ ये भूता विघ्न कर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥ ॐ सर्व विघ्नानुत्सारयोत्सारय हूं फट् स्वाहा ॥ एभिरभिमंत्रेण वामपार्ष्णिघातेनोद्ध्वोर्द्धतान त्रयेणानिमेषरहित दृष्ट्या च भौमांतरिक्ष दिव्यान्विघ्नानुत्सार्य ॥ अर्घ्य जलेन तं गृहं प्रोक्ष्य ॥ नैर्ऋत्यकोणे वास्तुपुरुषाय नमः ॥ ईशानकोणे दीपनाथाय नमः ॥ इति संपूज्य ॥ ॐ तीक्ष्ण दंष्ट्र महाकाय कल्पान्त

दहनोपम ॥ भैरवाय नमस्तुभ्यं मनुज्ञां दातुमर्हसि ॥ इति भैरवाज्ञां गृहीत्वा ॥ ॐ रक्ष रक्ष हुंफट् स्वाहेति भूमिं परिषिंच्य ॥ ॐ पवित्र हूँ हूँफट् स्वाहेति भूमिमभिमंत्र्य ॥ ॐ आसुरेखे वज्ररेखे हुँफट् स्वाहेति भूमौ त्रिकोणमंडलं कृत्वा ॐ ‡ह्रीं आधारशक्ति कमलासनाय नमः ॥ इति संपूज्य ॥ तत्र कंवलाद्यासनं संस्थाप्य ॥ आग्नेयादि कोणेषु प्रादक्षिण्येन गणेशाय नमः ॥ सरस्वत्यैनमः ॥ दुर्गायैनमः ॥ क्षेत्रपालाय नमः ॥ इत्यासनं संपूज्य हस्तंधृत्वा ॥ आसनमंत्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसनोपवेशने विनियोगः ॥ ॐ पृथ्विित्वया धृतालोका देवि त्वं विष्णुनाधृता ॥ त्वं च धारय मां देवि १पवित्रं कुरु चासनम् ॥ इति पठित्वाऽधोभागे विष्टरं दत्वा वीराद्यासनेनोदङ् मुखं उपविशेत् ॥ ततः पूजा द्रव्यं स्वीकृत्य ॥ दक्षे गुं गुरुभ्यो नमः ॥ वामे गं गणपतयेनमः ॥ मध्ये चंडिका देव्यै नमः ॥ इति नत्वा ॥ वामे अर्घ्यं संस्थाप्य ॥ किंचिज्जलंप्रोक्षणी पात्रे निधाय तेन जलेनात्मानं पूजोपकरणं प्रोक्षय ॥

---

‡ प्रथम त्रिकोण के ऊपर ॐ कूर्मासनायनमः ॥ ॐ ह्रीं आधार शक्ति कमलासनाय नमः ॥ ॐ पृथिव्यै नमः ॥ गंधाक्षत पुष्प से पूजन करके क्रम से तीन आसन बिछाना १ कुशासन २ कृष्णाजिन ३ कंवल फिर प्रत्येक के ऊपर विष्टर रख कर तीन नामों से पूजन करना ॥ ॐ अनन्तासनाय नमः ॥ ॐ विमलासनाय नमः ॥ ॐ पद्मासनाय नमः ॥

१ टि० स्थान शोधन माह गंधर्व तन्त्रे ॥ वीक्षणं धर्म बीजेन यक्ष भूमेः समीरितं ॥ प्रोक्षणं चास्त्रि मंत्रेण यागभूमेः समाचरेत् ॥ अज्ञातं दूषितं स्थानं मार्जनादौ च यद्भवेत् ॥ एव मादीनि सर्वाणि नस्यात्तल्लोकनात्प्रिये ॥ मधुकैटभयोर्मेद- संघातै दृढ़तांगतः ॥ मेदिनी सर्वदा शुद्धासुर पूजासु सर्वतः ॥ तस्य दोषस्य मोक्षाय कामबीजंक्षितौ लिखेत् ॥

पृथ्वी ध्यानम् ॥ पंच वर्ण रजश्चित्रा नाना गंध समन्विता ॥ पुष्प प्रकर संकीर्णा घंटा चामर भूषिता ॥ बालार्क सदृशीरम्या मनः संतोष कारिणी ॥ एवं भूमिं समाश्रित्य पूजयेत्परमेश्वरीम् ॥

स्व दक्ष भागे पुष्पादिकं ॥ स्त्र पृष्ठ भागे कर प्रक्षालनार्थपात्रं ॥ देवी पृष्ठ भागे पूजा द्रव्याणि संस्थाप्य ॥ ॐ पुष्प केतु राजार्हत शताय सम्यक् संवद्धाय ॥ ॐ पुष्पे पुष्पे महा पुष्पे सुपुष्पे पुष्प संभवे ॥ पुष्पं च यावकीर्णं हुँफट् स्वाहेति मंत्रेण पुष्प शुद्धिं विधाय ॥ ॐ ह्रीं हूँफट् इति मंत्रेण *नाराच मुद्रया सम दृष्ट्यावलोकनेन च गंधादि सर्व संभार शुद्धिं विधाय ॥ रमिति दीपशिखां स्पृष्ट्वा ॥ ॐ हुँ फट् स्वाहेति मंत्रेण काय वाक् चित्तशोधनं विधाय ॥ रक्ष रक्ष हुंफट् स्वाहेति हृदि हस्तं दत्वा आत्मरक्षां विधाय ॥ चंदनाक्तानि पुष्पाणि कराभ्यां मर्दयित्वा तानि वामहस्ते समादायाघ्राय ॥ ते सर्वे विलयं यान्तु ये मां हिंसति हिंसकाः ॥ मृत्यु रोग भय क्लेशाः पतन्तु रिपु मस्तके ॥ इति मंत्रेण ईशान्यांदिशि दूरतः क्षिप्त्वा ॥ नवार्णेन तालत्रयं दिग्बंधनं च कृत्वा ॥ काली कूर्चं वधूर्माया फडन्ता परमेश्वरि ॥ पंचाक्षरी चण्डिकायाकुल्लुका[1] परिकीर्तिता ॥ इति विशुद्धेश्वर तन्त्रे ॥ इति कुल्लुकांमूर्द्ध्नि विचिन्त्य आचमनं कुर्यात् मूलं

---

* नाराच मुद्रा लक्षण ॥ अंगुष्ठ तर्जन्यग्राभ्यां स्फोटो नाराच मुद्रिकेति ॥

[1] रुद्रयामले ॥ अज्ञात्वा कुल्लुकां देवि महामन्त्रं जपेत्तु यः ॥ तस्य नश्यन्ति चत्वारि आयुर्विद्या यशोबलम् ॥ वाराही तन्त्रे ॥ जपं समारभेन्मन्त्री कुल्लुकाद्या यथा विधिः ॥

नीलतंत्रे ॥ कुल्लुकांच न जानाति महामंत्रं जपेन्नरः ॥ पंचत्वं जायते तस्य अथवा वातुलो भवेत् ॥ कुल्लुकां च शिरेधृत्वा सर्व यज्ञ फलं लभेत् ॥ कुल्लुकां धारयेच्छीर्षे लिखित्वाभूर्जपत्रके ॥ राज द्वारे सभायां च विजयी भवति ध्रुवं ॥ नान्यो विचारः सर्वत्र विरूपाक्षस्य सम्मतः ॥ कुल्लुका वर्जितेपुंसामज्ञानोपस्थिति भवेत् ॥ मम पूजा सदा व्यर्थ्य मम यज्ञस्तथैव च ॥ दुर्गा मंत्रस्य तत्वाणि जानीयान्मंत्रमुत्तमम् ॥ न जानाति च योमूढः कुल्लुकां चंडिकां जपेत् ॥ यावज्जीवं तु जप्तव्यं न सिद्ध्यति कदाचन ॥

आत्म तत्वाय स्वाहा ॥१॥ मूलं विद्या तत्वाय स्वाहा ॥२॥ मूलं शिव तत्वाय स्वाहा ॥ ३ ॥ इत्याचम्य ॥ मूलेन इतिद्विरोष्ठावुन्मृज्य ॥ मूलेन इति करं प्रक्षाल्य जलेऽ सप्त छिद्राण्युपस्पृशेत् ॥ ॐ महाकाल्यै नमः आस्ये ॥ ॐ महा लक्ष्म्यैनमः ॥ ॐ महासरस्वत्यै नमः नसोः ॥ ॐ नन्दजायै नमः ॥ ॐ रक्तदन्तिकायै नमः नेत्रयोः ॥ ॐ शाकंभर्य्यै नमः ॥ ॐ दुर्गायैनमः श्रोत्रयोः ॥ ॐ भीमायै नमः नाभौ ॥ ॐ भ्रामर्यै नमः उरसि ॥ ॐ अष्टादश भुजायै नमः शिरसि ॥ ॐ अष्टभुजायै नमः ॥ ॐ दश भुजायै नमः भुजयोः ॥ एवं अङ्गानि स्पृष्ट्वा ॥ हुँ हं ह्रीं अस्त्राय फट् ॥ अनेन दिग्बन्धनं कृत्वा प्राणायामं कुर्यात् ॥ यथा मूला धारे मनः संयोज्य दक्षिणांगुष्ठेन दक्षिण नासा पुटं धृत्वा प्रणवं मूलाद्यबीजं वा षोडश वारं जपन् वाम नासया वायुमापूर्य कनिष्ठानामिकाभ्यां वाम नासापुटं धृत्वा चतुःषष्ठि (६४) वारं जपन् वायुं स्तंभयित्वा ॥ दक्षिण नासया द्वात्रिंशद्वारं ३२ जपन् रेचयेदित्येकः ॥ पुनस्तेनैव मानेन दक्षिण नासापुटं प्रपूर्य कुम्भयित्वा वामेन रेचयेदिति द्वितीयः ॥ पुनराद्यवत्तृतीयः मूलेन चेदेकेन पूरकं चतुर्भिः कुम्भकं द्वाभ्यां रेचकमित्येवं प्राणायामं विधाय ॥

* भूत शुद्धिं कुर्यात् ॥

यथा हूंकारेण मूलाधारात्कुण्डलिनीमुत्थाप्य जीवात्मना संयोज्य हंस इति मन्त्रेण परमात्मनिविलापयेत् ॥ ततः पादादि जानुपर्यन्तं स्थितां पृथ्वीं जान्वादि नाभि पर्यन्तं स्थितामप्सु

---

* भूत शुद्धौ ॥ सर्वासु बाह्यपूजासु अन्तः पूजा विधीयते ।
अन्तः पूजा महेशानि ! बाह्य कोटि फलं लभेत् ॥१॥
भूतशुद्धि लिपिन्यासौ विनायस्तु प्रपूजयेत् ॥
विपरीत फलं दद्यादभक्त्या पूजने यथा ॥ २॥

प्रविलाप्य ताः ॥ नाभ्यादि हृदयान्त स्थिते वन्हौ तं च हृदयादिभ्रूमध्यांत प्रकृतौ तां च ब्रह्मणि विलापयेत् ॥ ततः पुरुष निभं पापमनादि भवसंचितं ॥ ब्रह्महत्याःशिरः स्कन्धं स्वर्णस्तेय भुजद्वयम् ॥ सुरापान हृदायुक्तं गुरुतल्प कटिद्वयम् ॥ तत्संयोगिपद द्वंद्वमंगप्रत्यंग पातकम् ॥ उपपातक रोमाणां रक्तश्मश्रुविलोचनम् ॥ खड्गचर्म धरं पापमंगुष्ठ परिमाणकम् ॥ अधोमुखं कृष्णवर्णं वाम कुक्षौ विचिंतयेत् ॥ इति पाप पुरुषं विचिंत्य यमिति बीजेन षोडशवारमावृतेन वाम नासया वायुमापूर्यनाभौ संयोज्य तत्र यं संचिंत्य सपापं देहं विशोष्य रमिति चतुष्षष्ठि वारमावृतेनबीजेन कुम्भक प्रयोगेन मूलाधारे संयोज्य रं संचित्य सपापं देहं भस्मान्तं संदह्य पुनर्यमिति बीजेन द्वात्रिंशद्वार मावृतेन दक्षिण नासया पापपुरुष भस्म रेचयेत् ॥ ततो वमिति बीजजपात् ललाटे चन्द्रान्मातृका वर्णमयीममृत वृष्टिं निपात्य भस्माप्लाव्य न्यासक्रमेणावयवान् निष्पाद्य ॥ लमिति जपाद् दृढीकृत्य ॥ परमात्मनः प्रकृतिं तस्याः महत्तत्वं ततोहंकारं तस्मादाकाशं ततो वायुं तस्मात्तेजस्तस्माज्जलं तस्मात्पृथिवीं निर्गम्य स्व स्व स्थाने स्थापयित्वा ब्रह्मरंध्रस्थ परमात्मनः सकाशात् सोहमिति मंत्रेण जीवात्मानं प्रदीप कलिकाकारं कुण्डलिनी द्वार हृदय कमल मानीय कुण्डलिनीं मूलाधारे स्थापयित्वा स्वशरीरं निरस्त समस्त किल्विषं देवताराधन योग्यं विभावयेदितिभूतशुद्धिः ॥ एवंभूत शुद्धिं कृत्वा स्वशरीरे चण्डिकायाः प्राणान्प्रतिष्ठापयेत् ॥

---

‡ अथ यामलोक्त भूतशुद्धिः प्रारभ्यते ॥

ॐ सूर्यः सोमो यमः कालः संध्या भूतानि पंच च ॥ एते शुभाशुभ-

---

‡ जो भूतशुद्धि न कर सके वह ॐ ह्रौं का १०८ वार जप कर लें।

॥ अथ स्व प्राण प्रतिष्ठा प्रकारः ॥

ॐ अस्य स्व प्राणप्रतिष्ठामंत्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वराऋषयः ऋग्यजुःसामानि छन्दांसि प्राणशक्तिर्देवता आँबीजं ह्रींशक्तिः क्रों कीलकं स्वशरीरे चंडिका देवता प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः ॥ अथ ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ ब्रह्मविष्णुमहेश्वरऋषिभ्यो नमः शिरसि ॥ ॐ ऋग्यजुस्सामानि छन्दोभ्यो नमः मुखे ॥ ॐ प्राणशक्त्यैनमो हृदि । ॐ आँ बीजाय नमो गुह्ये ॥ ॐ ह्रीं शक्तये नमः पादयोः ॥ ॐ क्रों कीलकाय नमः सर्वांगे ॥ इति ऋष्यादि न्यासः ॥ अथ करन्यासः ॥ ॐ ङं कं खं घं गं नाभौ

स्येह कर्मणो मम (नव) साक्षिणः ॥१॥ भो देव ! प्राक्तनं चित्तं पापाक्रांतमभून्मम ॥ तन्निःसारय चित्तान्मे पापं तेस्तु नमो नमः ॥२॥ इति प्रार्थ्य स्वदक्षिणभागे ॐ गुं गुरुभ्यो नमः ॥ स्ववाम भागे ॐ गं गणपतये नमः ॥ इति नत्वा भूतशुद्धिं कुर्यात् ॥ तथा च कुम्भक प्राणायामे मूलाधारात् कुण्डलनीं परदेवतां विसतंतुनिभां समुत्थाप्य ब्रह्मरंध्रगतांस्मृत्वा हृदयस्थं जीवं प्रदीप कलिकाकारं गृहीत्वा सुषुम्णामार्गेण ब्रह्मरंध्रं गत्वा हंसः सोहँ इति मंत्रेण जीवं ब्रह्मणि संयोजयेत् ॥ ततः पादादि जानुपर्यन्तं चतुष्कोणं वज्रलांछितं स्वर्णवर्णं पृथ्वीमंडलं (ॐ लं) इति भूबीजाढ्यं स्मरेत् ॥ १ ॥ जान्वादि नाभिपर्यन्तं अर्द्धचन्द्राकारं पद्मद्वयाङ्कितं श्वेतवर्णं अपांस्थानं सोममंडलं "ॐ वं" इति वरुणबीजाढ्यं स्मरेत् ॥ २ ॥ नाभ्यादि हृदयपर्यन्तं त्रिकोणं स्वस्तिकांकितं रक्तवर्णमग्निमंडलम् ॥ "ॐ रँ" इति वन्हि बीजाढ्यं स्मरेत् ॥ ३ ॥ हृदयादि भ्रूमध्यपर्यन्तं वृत्तं षड्विन्दुलांछितं धूम्राभं वायुमंडलं "ॐ यँ" इति वायु बीजाढ्यं स्मरेत् ॥ ४ ॥ भ्रूमध्यादारभ्यब्रह्मरंध्रांन्तं वृत्तं स्वच्छमनोहरमाकाशमंडलं "ॐ हँ" इति आकाश बीजाढ्यं स्मरेत् ॥ ५ ॥ एवं भूतगणं स्मृत्वा ततः पूर्वोक्त मध्ये (मंडले) पादेन्द्रियं १ गगनं २ घ्राणं ३ गंधः ४ ब्रह्मा ५ निवृत्तिः ६ समानः ७ गंतव्यदेशः ८ च एवमष्टौपदाश्चिन्त्याः ॥ १ ॥ जलमध्ये (मंडले) हस्तेन्द्रिय १ ग्रहण २ ग्राह ३ रसना ४ रस ५ विष्णुः ६ प्रतिष्ठो ७ दानाः ८ ध्येयाः ॥ २ ॥ तेज (मंडले) मध्ये वायु १ विसर्ग २ विसर्जनीय ३ चक्षु ४ रूप ५ शिव ६ विद्या ७ व्याना

वाय्वग्निवार्भूम्यात्मने अंगुष्ठाभ्यान्नमः ॥ (हृदयाय नमः) ॐ ञं चं छं झं जं शब्द स्पर्श रूप रस गंधात्मने तर्जनीभ्यान्नमः ॥ (शिरसे स्वाहा) ॐ णं टं ठं ढं डं श्रोत्र त्वङ्नयन जिह्वा प्राणात्मने मध्यमाभ्यां नमः (शिखायैवषट्) ॥ ॐ नंतंथंधंदं वाक्पाणिपायूपस्थात्मने अनामिकाभ्यान्नमः ॥ (कवचाय हुँ) ॐ मंपंफंभंबं वक्तव्यादान गमन विसर्गानन्दात्मने कनिष्ठकाभ्यांनमः ॥ (नेत्र त्रयायवौषट्) ॐ शंयंरंवंलंहं षंक्षंसंलं बुद्धिमनोहंकारचित्तात्मने करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः (अस्त्रायफट्) इति षडंग न्यासः एवं हृदयादि कर षडंग न्यासान् कृत्वा ॥ नाभेरा-

---

८ ध्येयाः ॥ ३ ॥ वायुमंडले उपस्था १ नन्द २ स्त्री ३ स्पर्शन ४ स्पर्श ५ ईशान ६ शान्त्यु ७ पानाः ८ ध्येयाः ॥ ५ ॥ आकाशमंडले वाक् १ वक्तव्य २ वदन ३ श्रोत्र ४ शब्द ५ सदाशिव ६ शान्त्यतीताः ७ प्राणाः ८ इत्यष्टौ चिन्त्याः ॥ ५ ॥ एवं भूतानि संचिन्त्य पूर्वं पूर्वं कार्यस्योत्तरं कारणे विलापनं ब्रह्मपर्यन्तंकार्यम् ॥ तथा च—ॐ लँ हुँ फट् इत्यनेन पंचगुणां पृथ्वीमप्सु उपसंहरामि इति जले भुवं विलापयेत् ॥ १ ॥ ॐ वँ हुँ फट् ॥ इतिं चतुर्गणा अपोऽग्नौ उपसंहरामि इति जलमग्नौ विलापयेत् ॥ ॐ रँ हुँ फट् इति त्रिगुणां तेजो वायावुपसंहरामि इति वन्हिं वायौ विलापयेत् ॥ ३ ॥ ॐ यँ हुँ फट् इति द्विगुणं वायुमाकाश उपसंहरामि इति वायुमाकाशे विलापयेत ॥ ४ ॥ ॐ हँ हुँ फट् इत्येकगुणमाकाशमहंकार उपसंहरामि ॥ इत्याकाशमहंकारे विलापयेत ॥ ५ ॥ ॐ ॐ अहंकारं महत्तत्त्व उपसंहरामि ॥ इत्यहंकारं महत्तत्त्वे विलापयेत ॥ ६ ॥ ॐ महत्तत्वं प्रकृत्तावुपसंहरामि ॥ इतिमहत्तत्वं प्रकृतौ विलापयेत् ॥ ७ ॥ ॐ प्रकृतिमात्मन्युपसंहरामि ॥ इत्यनेन मायामात्मनि विलापयेत् ॥ ८ ॥ एवं शुद्धसच्चिचमकोनिकान्मयो भूत्वा पापपुरुषं चिन्तयेत् ॥तथा च॥ वासनामयं वामकुक्षिस्थितं कृष्णमंगुष्ठपरिमाणकं ॥ ब्रह्महत्या शिरोयुक्तं कनकस्तेयबाहुकं ॥ मदिरापान हृदयं गुरुतल्प कटीयुतं ॥ तत्संसर्गि पदद्वंद्वमुपपातक मस्तकं खड्गचर्मधरं दुष्टमधोवक्त्रं सुदुःसहमेवं पापपुरुषं चिन्तयित्वा पूरकप्राणायामे "ॐ यँ" इति वायु बीजेन द्वात्रिंशद्वारं (३२) षोडश (१६) वारं वा आवर्त्तितेन पापपुरुषं शोषयेत् ॥ १ ॥ ततः स्वशरीरयुतं पापं कुँभके "ॐ रँ" इति वन्हिबीजेन चतुष्षष्ठि (६४)

रभ्य पादान्तम् (आँ) इतिपाश बीजं स्मरेत् ॥ हृदयादारभ्य नाभ्यन्तम् (ह्रीं) इतिशक्ति बीजं न्यसेत् ॥२॥ मस्तकादारभ्य हृदयान्तम् (क्रों) इति सृणि बीजं स्मरेत् ॥ ३ ॥ ॐ यँ त्वगात्मने नमः ॥ ॐ रँ असृगात्मने नमः ॥ ॐ लँ मांसात्मने नमः ॥ ॐ वं मेदात्मने नमः ॥ ॐ शं अस्थ्यात्मने नमः ॥ ॐ यं मज्जात्मने नमः ॥ ॐ सं शुक्रात्मने नमः ॥ ॐ हौं ओजात्मने नमः ॥ ॐ हं प्राणात्मने नमः ॥ ॐ सं जीवात्मने नमः ॥ इति स्पृष्ट्वा हृदि विन्यसेत् ॥ ॐ यंरंलंवंशंषंसंलंहंक्षं इति मूर्द्धादि चरणावधि व्यापकं कुर्यात् ॥ ४ ॥ ततः ॐ मंडूकादि परतत्वांत पीठदेवताभ्यो नमः ॥ १ ॥ ॐ जयादि शक्तिभ्यो नमः ॥ २ ॥ इति नत्वा ॥ ॐ आँ ह्रीं क्रों पीठाय नमः ॥ इति पीठे प्राणशक्तिदेवीं ध्यायेत् ॥ ध्यानम् ॥ ॐ पाशंचापा सृकपाले सृणी-

---

द्वात्रिंशद् (३२) वारमावर्त्तितेन तदुत्थाग्निना दहेत् ॥ २ ॥ ततो रेचक प्राणायामे "ॐ यँ" इति वायुबीजेन षोड़श वारं अष्ट वारं वा जपित्वा दक्षिणनाड्या तद्भस्म स्वशरीराद्बहिः रेचयेत् ॥ ३ ॥ ततो देहोत्थं भस्म "ॐ वँ" इत्युच्चारितेन सुधाबीजेन तदुत्थामृतेन संप्लाव्य पश्चात् "ॐ लँ" इति भू बीजेन तद्भस्म घनीभूतं पिंडं कृत्वा कनकांडवत् भावयेत् ॥ ४ ॥ ततः "ॐ हँ" इति आकाश बीजं जपन् तत्पिंडं मुकुराकारं भावयित्वा तस्यमूर्द्धादि नखान्ता अवयवाः मनसा रचनीयाः ॥ ५ ॥ ततः पुनरपि सृष्टिमार्गेण ब्रह्मणः सकाशात् आकाशादीनि भूतान्युत्पादयेत् ॥ तथा च ब्रह्मणः प्रकृतिः १ प्रकृतेर्महत् २ महतोऽहंकारः ३ अहंकारादाकाशः ४ आकाशाद्वायुः ५ वायोरग्निः ६ अग्नेरापः ७ अद्भ्यः पृथ्वी ८ पृथिव्या ओषध्यः ९ ओषधीभ्योऽन्नम् १० अन्नाद्रेतः ११ रेतसः पुरुषः १२ इत्युत्पाद्यः ॥ ॐ हँसः सोहम् इति मंत्रेण ब्रह्मणैकं भूतं जीवं स्वहृदयांबुजे संस्थाप्य कुण्डलिनीं मूलाधारगतां स्मरेत् ॥ अथध्यानम् ॥ ॐ रक्ताम्भोधिस्थपोतोल्लसदरुणसरोजाधिरूढाकराब्जैः पाशं कोदंडमिक्षूद्भवमथचाप्यंकुशं पंचबाणान् ॥ बिभ्राणा सृक्कपालं त्रिनयनलसितापीनवक्षोरुहाढ्या ॥ देवी बालार्कवर्णा भवतुसुखकरी प्राणशक्तिः परानः ॥ १ ॥ इति भूतशुद्धिः ॥

पूष्कूलं हस्तैर्विभ्रतीं रक्तवर्णाम् ॥ रक्तोदन्वत्पोतरक्तांबुजस्थां देवीं ध्याये प्राणशक्तिं त्रिनेत्रां ॥ इतिध्यात्वा हृदि करं निधाय ॥ ॐ आं ह्रीं क्रों यंरंलंवंशंषंसं हौं हंसः ॥ ॐ ममशरीरे चण्डिका देवतायाः प्राणा इह स्थितः (प्राणाः) ॥ २ ॥ ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हौं हं सः ॥ ॐ मम शरीरे चण्डिका देवतायाः जीव इह स्थितः (जीवः) ॥ ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हौं हं सः ॥ ॐ मम शरीरे चण्डिका देवतायाः सर्वेन्द्रियाणि वाङ् मनश्चक्षुः श्रोत्र जिह्वा घ्राण पाद पायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरंतिष्ठन्तु स्वाहा ॥ ३ ॥ इति वार त्रयेण स्वशरीरे चण्डिका देवतायाः प्राणान् प्रतिष्ठाप्य ॥ ततः ॐ इति प्रणवेन १५ पञ्चदशावृत्तिं कृत्वा अनेन मम देहस्था चण्डिकायाः गर्भाधानादि पञ्चदश संस्कारान्संपादयामि ॥ एवं प्राणान्प्रतिष्ठाप्य ॥ देवी भूत्वा देवींजयेत् ॥ चण्डिकारूपमात्मानं भावयेदितिप्राणप्रतिष्ठा ॥

॥ अथ अन्तरमातृका* न्यासः ॥

अथान्तरमातृका न्यास मन्त्रस्य ब्रह्मऋषिः गायत्रीछन्दः मातृकासरस्वतीदेवता हलो बीजानि स्वराः शक्तयः क्षं कीलकं अखिलाप्तये न्यासे विनियोगः ॥ इति जलं भूमौ निक्षिप्य प्राणायामं कुर्यात् ॥ तथा च इड़या ॥ अ इ उ ऋ लृ ए ऐ ओ औ अं अः एभिःस्वरैः पूरयेत् ॥ पुनः कुचुटुतुपु इति पंचवर्गकेन कुंभयेत् ॥ पुनः यरलवशषसह एभिरष्टवर्णैः रेचयेत् ॥ इति प्राणायामं कृत्वा ऋष्यादि न्यासं कुर्यात् ॥ तथा च ॥ ॐ अं ब्रह्मणेऋषये नमः शिरसि ॥ ॐ इं गायत्रीछन्दसे नमः ईं

---

*—टि० भविष्ये ॥ ना देवी कीर्तयेद्देवीं नादेवी तां समर्चयेत् ।
न्यासात्तदात्मकोभूत्वा देवीभूत्वा तु तां यजेत् ॥ १ ॥ आग्नेये ॥
शक्त्यादिः शक्तिः पूजनात् ॥ शक्ति पूजनात् शक्त्यादि पूजनात् ॥

मुखे ॥ ॐ उँ सरस्वती देवतायै नमः ऊं हृदये ॥ ॐ एं हलभ्यो वीजेभ्यो नमः ऐं गुह्ये ॥ ॐ ओं स्वरेभ्यो शक्तिभ्यो नमः औं पादयोः ॥ ॐ अं क्षं कीलकाय नमः अः सर्वाङ्गे ॥ इति ऋष्यादि न्यासः ॥ ॐ अं कंखंगंघंङं आँ अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ इं चंछंजंझंञं ईं तर्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ उं टंठंडंढंणं ऊं मध्यमाभ्यां नमः ॥ ॐ एं तंथंदंधंनं ऐं अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ ओं पंफंबंभंमं औं कनिष्ठकाभ्यां नमः ॥ ॐ अं यंरंलंवंशंषं संहंलंक्षं अः करतल करपृष्ठाभ्यां नमः ॥ इति करन्यासः ॥ एवं हृदयादि ॥ ॐ अं कं ५ आं हृदयाय नमः ॥ ॐ इं चं ५ ईं शिरसे स्वाहा ॥ ॐ उं टं ५ ऊं शिखायैवषट् ॥ ॐ एं तं ५ ऐं कवचायहुँ ॥ ॐ ओं पं ५ औं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ अँ यँरँलँवँशँषँसँहँलँक्षँ अः अस्त्रायफट् ॥ इति हृदयादिन्यासः ॥ ततः कण्ठस्थ षोडष दल पद्मे (ॐ अं नमः एवं क्रमेण सर्वत्र) ॐ आंइँईंउँऊँऋँॠँलृँॡँएँऐंओंऔंअँअः इति षोडशस्वरान्न्यसेत् ॥ पुनः हृदिस्थ द्वादशदले ॐ कँ नमः एवँ खंगं घंङं चंछंजंझंञं टंठं नमः ॥ इतिद्वादशवर्णान् विन्यसेत् ॥ ततः नाभौ दशदले—ॐ डं नमः इति एवं ढंणंतथंदंधंनं पंफं नमः इति दशवर्णान्न्यसेत् ॥ तदधोलिंगे षड्दले—ॐ वं नमः एवं ॐ भंमंयंरंलं इति षड्वर्णान् विन्यसेत् ॥ आधारे (गुदे) चतुर्दले—ॐ वं नमः एवं शंषंसं इति चतुर्वर्णान्न्यसेत् ॥ पुनः ललाटे द्विदले—ॐ हं नमः ॐ क्षं नमः द्वौवर्णौ। न्यसेत् ॥ इति न्यासं कृत्वा ध्यायेत् । आधारे लिगनाभौ प्रकटित हृदये तालुमूलेललाटे द्वे पत्रे षोडशारे द्विदश दशदले द्वादशार्द्धचतुष्के ॥ वासान्तेवालमध्ये डफकरसहिते कंठदेशेस्वराणां हंक्षंतत्वार्थ युक्तं सकल दलगतं वर्णरूपं नमामि ॥ इत्यंतरमातृकान्यासः ॥

अथ वहिर्मातृका न्यासः ।।

जयार्थं सर्वदेवानां विन्यासे च लिपेर्विना ।। कृतेतद्धिफलं विद्यात्तदादौतु लिपिंन्यसेत् ।। ॐ अस्यश्री वहिर्मातृकान्यासमंत्रस्य ब्रह्माऋषिः गायत्रीछन्दः मातृका सरस्वती देवीदेवता हलोवीजानि स्वराः शक्तयः क्षं कीलकं अखिलाप्तये न्यासे विनियोगः ।। प्राणायामंकुर्याद् ।। तथा च इड़या अ इ उ ऋ लृ ए ऐ ओ औ अं अः एभिः स्वरैः पूरयेत् ।। पुनः कु चु टु तु पु एभिः पंचवर्गान् कुम्भयेत् ।। पुन अष्टभिः ।। य र ल व श ष स ह आदिना रेचयेत् ।। इति प्राणायामं कृत्वा ऋष्यादिन्यासं कुर्यात् ।। तथा च ॐ अंब्रह्मणे ऋषये नमः आं शिरसि ।। ॐ इं गायत्रीछन्दसे नमः ईं मुखे ।। ॐ उं सरस्वती देवतायै नमः ऊं हृदि ।। ॐ एं हल्भ्यो वीजेभ्यो नमः ऐं गुह्ये ।। ॐ ओं स्वरेभ्यो शक्तिभ्यो नमः औं पादयोः ।। ॐ अं क्षं कीलकाय नमः अः सर्वांगे ।। इति ऋष्यादिन्यासः ।। ॐ अं कं ५ आं अंगुष्ठाभ्यां नमः, हृदयाय० ।। ॐ इ चं ५ ईं तर्जनीभ्यां० शिरसे स्वाहा ।। ॐ उं टं ५ ऊं मध्यमाभ्यां० शिखायैवषट् ।। ॐ एं तं ५ ऐं अनामिका० कवचायहुँ ।। ॐ ओं पं ५ औं कनिष्ठकाभ्यां० नेत्र त्रयाय वौषट् ।। ॐ अं यंरंलंवंशंषंसंहंलंक्षं अः करतल करपृष्ठाभ्यां, अस्त्रायफट् ।। मृगवालं वरं विद्यामक्ष सूत्रं दधत् करैः ।। माला विद्या लसद्धस्तां वहन् ध्येयः शिवो गिरः ।। ततः वहिर्मातृकान्यासं कुर्यात् ।। ॐ अं नमः शिरसि ॐ आं नमः मुखे ।। ॐ इं नमः दक्षिण नेत्रे ।। ॐ ईं नमः वामनेत्रे ।। ॐ उं नमः दक्षिण कर्णे ।। ॐ ऊं नमः वामकर्णे ।। ॐ ऋं नमः दक्षिणनासापुटे ।। ॐ ॠं नमः वामनासापुटे ।। ॐ लृं नमः दक्षिणकपोले ।। ॐ लं नमः वाम कपोले ।। ॐ

एं नमः ऊर्ध्वोष्ठे ॥ ॐ ऐं नमः अधरोष्ठे ॥ ॐ ओं नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ ॥ ॐ औं नमः अधोदंतपंक्तौ ॥ ॐ अं नमः मूर्द्ध्नि ॥ ॐ अः नमः मुखवृत्ते ॥ ॐ कं नमः दक्षिण वाहूमूले ॥ ॐ खं नमः द० कूर्परे ॥ ॐ गं नमः द० मणिबंधे ॥ ॐ घं नमः द० हस्तांगुलिमूले ॥ ॐ ङं नमः द० हस्तांगुल्यग्रे ॥ ॐ चं नमः वाम बाहुमूले ॥ ॐ छं नमः वा० कूर्परे ॥ ॐ जं नमः वा० मणिबंधे ॥ ॐ झं नमः वा० हस्तांगुलिमूले ॥ ॐ ञं नमः वामहस्तांगुल्यग्रे ॥ ॐ टं नमः दक्षिण पादमूले ॥ ॐठं नमः द० जानुनि ॥ ॐ डं नमः द० गुल्फे ॥ ॐ ढं नमः द० पादांगुलिमूले ॥ ॐ णं नमः द० पादांगुल्यग्र ॥ ॐ तं नमः वामपादमूले ॥ॐ थं नमः वामजानुनि ॥ ॐ दं नमः वामगुल्फे ॥ ॐ धं नमः वामपादांगुलिमूले ॥ ॐ नं नमः वा० पादांगुल्यग्रे ॥ ॐ पं नमः दक्षिण पार्श्वे ॥ ॐ फं नमः वाम पार्श्वे ॥ ॐ बं नमः पृष्ठे ॥ ॐ भं नमः नाभौ ॥ ॐ मं नमः उदरे ॥ ॐ यं त्वगात्मने नमः हृदि ॥ ॐ रं असृगात्मने नमः दक्षांसे ॥ ॐ लं मांसात्मनेनमः ककुदि ॥ ॐ वं मेदात्मनेनमः वामांसे ॥ ॐ शं अस्थ्यात्मने नमः हृदयादि दक्षहस्तांतम् ॥ ॐ षं मज्जात्मनेनमः हृदयादि वामहस्तांतम् ॥ ॐ सं शुक्रात्मने नमः हृदयादि दक्षपादान्तम् ॥ ॐ हं आत्मने नमः हृदयादि वाम पादान्तम् ॥ ॐ लं परमात्मने नमः जठरे ॥ ॐ क्षं प्राणात्मने नमः मुखे ॥ इति विन्यस्य ॥ अथ ध्यानम् ॥

ॐ पंचाशल्लिपिभिर्विभक्तसुखदोः यत्संधिवक्षस्थलां भास्वन्मौलिनिवद्धचन्द्रशकलामापीनतुंगस्तनीम् ॥ मुद्रामक्ष गुणंसुदाढ्यं कलशंविद्यां च हस्तांबुजैर्विभ्राणांविशद प्रभां त्रिनयनांवाग्देवतामाश्रये ॥ १ ॥ इति वहिर्मातृकान्यासः ॥

*स्थित्यादौतुगृहस्थानां सृष्ट्यादौ ब्रह्मचारिणाम् ।। संहारादौयतीनां च मातृकान्यासमाचरेत् ।।

अथ स्थिति न्यासः ।। ऋदिश्छन्दस्तुपूर्ववत् ।।

ध्यानम् ।। सिंदूरकान्ति मसिताभरणां त्रिनेत्रां विद्याक्षसूत्र मृगपोतवरंदधानां ।। पार्श्वस्थितांभगवतीमपि कांचनांगीं ध्याये कराब्जधृत पुस्तक वर्णमालाम् ।। ॐ टं ठं डं नमः ललाटे ।। ॐ टं ठं डं नमः मुखवृत्ते ।। ॐ टं ठं डं नमः दक्ष नेत्रे ।। ॐ टं ठं डं नमः वाम नेत्रे ।। ॐ टं ठं डं नमः दक्षिण कर्णे ।। ॐ टं डं नमः वाम कर्णे ।। ॐ टं ठं डं नमः दक्ष नासायां ।। ॐ टं ठं डं नमः वाम नासायां ।। ॐ टं ठं डं नमः दक्षिण गंडे ।। ॐ टं ठं डं नमः वाम गण्डे ।। ॐ टं ठं डं नमः ऊर्ध्वोष्ठे ।। ॐ टं ठं डं नमः अधरोष्ठे ।। ॐ टं ठं डं नमः ऊर्ध्व दन्तपंक्तौ ।। ॐ टं ठं डं नमः अधोदन्त पंक्तौ ।। ॐ टं ठं डं नमः शिरसि ।। ॐ टं ठं डं नमः मुखे ।। ॐ टं ठं डं नमः जिह्वाग्रे ।। ॐ टं ठं डं नमः कण्ठ देशे ।। ॐ टं ठं डं नमः दक्ष बाहु मूले ।। ॐ टं ठं डं नमः दक्ष कूर्परे ।। ॐ टं ठं डं नमः दक्षिण मणि बंधे ।। ॐ टं ठं डं नमः द० ह० गु० मूले ।। ॐ टं ठं डं नमः द० ह० गुल्यग्रे ।। ॐ टं ठं डं नमः वाम बाहू मूले ।। ॐ टं ठं डं नमः वाम कूर्परे ।। ॐ टं ठं डं नमः वाम मणि बन्धे ।। ॐ टं ठं डं नमः वाम हस्तांगुल्यग्रे ।। ॐ टं ठं डं नमः दक्ष पाद मूले ।। ॐ टं ठं डं नमः दक्ष जानुनि ।। ॐ टं ठं डं नमः दक्ष गुल्फे ।। ॐ टं ठं डं नमः दक्ष पादांगुलि मूले ।। ॐ टं ठं डं नमः दक्ष पादांगुल्यग्रे ।।

---

* गृहस्थ मनुष्य पहले स्थिति न्यास करे । फिर सृष्टि बाद में संहार न्यास करें । ब्रह्मचारी ।। सृष्टि, स्थिति और संहार न्यास करे ।। यति संहार सृष्टि तथा स्थिति करे ।।

ॐ टं ठं डं नमः वाम पाद मूले ॥ ॐ टं ठं डं नमः वाम जानुनि ॥ ॐ टं ठं डं नमः वाम गुल्फे ॥ ॐ टं ठं डं नमः वाम पादांगुलि मूले ॥ ॐ टं ठं डं नमः वाम पा० गुल्यग्रे ॥ ॐ टं ठं डं नमः दक्ष पार्श्वे ॥ ॐ टं ठं डं नमः वाम पार्श्वे ॥ ॐ टं ठं डं नमः पृष्ठे ॥ ॐ टं ठं डं नमः उदरे ॥ ॐ टं ठं डं नमः हृदये ॥ ॐ टं ठं डं नमः दक्षांसे ॥ ॐ टं ठं डं नमः ककुदि ॥ ॐ टं ठं डं नमः वामांसे ॥ ॐ टं ठं डं नमः हृदयादि दक्ष हस्तान्तम् ॥ ॐ टं ठं डं नमः हृदयादि वाम हस्तान्तम् ॥ ॐ टं ठं डं नमः हृदयादि दक्ष पादान्तम् ॥ ॐ टं ठं डं नमः हृदयादि वाम पादान्तम् ॥ ॐ टं ठं डं नमः हृदयादि मस्तकान्तम् ॥ इति स्थिति क्रमः ॥

‡स्थिति न्यासः ॥

ऐं भं नमः नाभौ ॥ ऐं बं नमः पृष्ठे ॥ ऐं फं नमः वाम पार्श्वे ॥ ऐं पं नमः दक्षिण पार्श्वे ॥ ऐं नं नमः वाम पादाङ्गुल्यग्रे ॥ ऐं धं नमः वाम पादांगुलि मूले ॥ ऐं दं नमः वाम गुल्फे ॥ ऐं थं नमः वाम जानुनि ॥ ऐं तं नमः वाम पादमूले ॥ ऐं णं नमः दक्षिण पादांगुल्यग्रे ॥ ऐं ढं नमः दक्षिण पादांगुलि मूले ॥ ऐं डं नमः दक्षिण गुल्फे ॥ ऐं ठं नमः दक्षिण जानुनि ॥ ऐं टं नमः दक्षिण पाद मूले ॥ ऐं ञं नमः वाम हस्तांगुल्यग्रे ॥ ऐं झं नमः वाम हस्तांगुलि मूले ॥ ऐं जं नमः वाम मणि बंधे ॥ ऐं छं नमः वाम कूर्परे ॥ ऐं चं नमः वाम बाहु मूले ॥ ऐं ङं नमः दक्षिण हस्तांगुल्यग्रे ॥ ऐं घं नमः दक्षिण हस्तांगुलि-मूले ॥ ऐं गं नमः दक्षिण मणिवंधे ॥ ऐं खं नमः दक्षिण कूर्परे ॥ ऐं कं नमः दक्षिण बाहु मूले ॥ ऐं अः नमः मुखे ॥ ऐं अं नमः मूर्द्धि ॥ ऐं औं नमः अधोदन्त पंक्तौ ॥ ऐं ओं नमः ऊर्ध्व दन्त पंक्तौ ॥ ऐं ऐं नमः अधरोष्ठे ॥ ऐं एं नमः ऊर्ध्वोष्ठे ॥ ऐं लृं नमः वाम गंडे ॥ ऐं लं नमः दक्ष गंडे ॥ ऐं ॠं नमः वाम नासायां ॥ ऐं ऋं नमः दक्ष नासायां ॥ ऐं ऊं नमः वाम कर्णे ॥ ऐं उं नम; दक्ष कर्णे ॥ ऐं ईं नमः वाम नेत्रे ॥

---

‡टि० नाभावारभ्यतेयस्तु हृदये च समाप्यते ॥ स्थिति न्यासः स विज्ञेयः दृष्टादृष्ट फलप्रदः ॥

ऐं इं नमः दक्षिण नेत्रे ॥ ऐं आं नमः मुख वृत्ते ॥ ऐं अं नमः ललाटे ॥ ऐं लं परमात्मने नमः हृदयादि मस्तकान्तम् ॥ ऐं हं आत्मने नमः हृदयादि वाम पादान्तम् ॥ ऐं सं शुक्रात्मने नमः हृदयादि दक्ष पादान्तम् ॥ ऐं षं मज्जात्मने नमः हृदयादि वाम भुजान्तम् ॥ ऐं शं अस्थ्यात्मने नमः हृदयादि दक्ष भुजान्तं ॥ ऐं वं मेदात्मने नमः वामांसे ॥ ऐं लं मांसात्मने नमः ककुदि (गर्दन में) ऐं रं असृगात्मने नमः दक्षांसे ॥ ऐं यं त्वगात्मने नमः हृदि ॥ इति स्थिति न्यासः ॥ मंत्र तंत्र प्रकाशे ॥

॥ *अथ सृष्टिन्यास क्रमः ॥

तत्र तु विसर्गान्वितः प्रणवपुटितो वा माया लक्ष्मी बीजपुटितो वा वाग्भवाद्योवान्यस्तव्यः ॥ ध्यानम् ॥ पञ्चाशदर्णैरचिताङ्गभागां धृतेन्दु खण्डा कुमुदावदाताम् ॥ वराभये पुस्तकमक्षसूत्रं भजेगिरं संदधतीं त्रिनेत्राम् ॥ १ ॥ तत्र वाग्भवाद्यो यथा[1] ऐं अं नमः ललाटे ॥ ऐं आं नमः मुखवृत्ते ॥ ऐं इं नमः दक्ष नेत्रे ॥ ऐं ईं नमः वाम नेत्रे ॥ ऐं उं नमः दक्ष कर्णे ॥ ऐं ऊं नमः वाम कर्णे ॥ ऐं ऋं नमः दक्ष नासायां ॥ ऐं ॠं नमः वाम नासायां ॥ ऐं लृं नमः दक्ष गंडे ॥ ऐं लॄं नमः वाम गंडे ॥ ऐं एं नमः ऊर्ध्वोष्ठे ॥ ऐं ऐं नमः अधरोष्ठे ॥ ऐं ओं नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ ॥ ऐं औं नमः अधोदन्तपंक्तौ ॥ ऐं अं नमः मूर्द्ध्नि ॥ एं अः नमः मुखे ॥ ऐं कं नमः द० वा० मूले ॥

---

[1] मंत्र नंत्र प्रकाशे—

* टि०—संहृतेर्दोष संहारः सृष्टेश्च सुत पुत्रदः ॥
स्थितिस्तु शांति विन्यासस्तस्मात्कार्यस्त्रिधा च सः ॥
स्थिति न्यासो गृहस्थाना मुद्दिष्टः सर्व सिद्धिदः ॥
प्रथमाश्रमिणां न्यासं उत्त्पत्तिः समुदाहृतः ॥
यतीनां च वनस्थानां संहारः समुदाहृतः ॥
विरक्तस्य गृहस्थस्य संहारोपित्रिधीयते ॥
सपत्नीक वनस्थानां स्थिति न्यासो विधीयते ॥
विद्यार्थिना मथै तेषां सृष्टयन्तोपि विशिष्यते ॥

ऐं खं नमः द० कूर्परे ॥ ऐं गं नमः द० मणिबंधे ॥ ऐं घं नमः द० हस्तांगुलि मूले ॥ ऐं ङं नमः द० हस्तांगुल्यग्रे ॥ ऐं चं नमः वाम बाहु मूले ॥ ऐं छं नमः वाम कूर्परे ॥ ऐं जं नमः वाम मणिबंधे ॥ ऐं झं नमः वाम हस्तांगुलि मूले ॥ ऐं ञं नमः वाम हस्तांगुल्यग्रे ॥ ऐं टं नमः दक्षिणपाद मूले ॥ ऐं ठं नमः दक्षिण जानुनि ॥ ऐं डं नमः दक्षिण गुल्फे ॥ ऐं ढं नमः द० पा० गुलि मूले ॥ ऐं णं नमः द० पा० गुल्यग्रे ॥ ऐं तं नमः वाम पाद मूले ॥ ऐं थं वाम जानुनि ॥ ऐं दं नमः वाम गुल्फे ॥ ऐं धं नमः वा० पा० गु० मूले ॥ ऐं नं वाम पादांगुल्ग्रे ॥ ऐं पं नमः दक्षिण पार्श्वे ॥ ऐं फं नमः वाम पार्श्वे ॥ ऐं बं नमः पृष्ठे ॥ ऐं भं नमः नाभौ ॥ ऐं मं नमः उदरे ॥ ऐं यं त्वगात्मने नमः ॥ हृदि ॥ ऐं ं असृगात्मने नमः दक्षां से ॥ ऐं लं मांसात्मने नमः ककुदि ॥ ऐं वं मेदात्मने नमः वामांसे ॥ ऐं शं अस्थ्यात्मने नमः हृदयादि दक्ष भुजान्तम् ॥ ऐं षं मज्जात्मने नमः हृदयादि वाम भुजान्तम् ॥ ऐं सं शुक्रात्मने नमः हृदयादि दक्ष पादान्तम् ॥ ऐं हं आत्मने नमः हृदयादि वाम पादान्तम् ॥ ऐं लं परमात्मने नमः हृदयादि मस्तकान्तम् ॥ इति सृष्टिक्रम न्यासः ॥

अथ संहार क्रम न्यासः ॥

ध्यानम् ॥ अक्षस्रजं हरिणपोतमुदग्रटंकं विद्यांकरै रविरतं-दधतींत्रिनेत्रां ॥ अर्द्धेन्दुमौलिभरणामरविन्दवासां वर्णेश्वरीं च प्रणुमः स्तनभारखिन्नाम् ॥ पूर्वोक्त स्थानेषु विलोम मातृकान्यसेत् ॥ ॐ क्षं नमः ललाटे ॥ ॐ हं नमः मुखवृत्ते ॥ सं नमः दक्ष नेत्रे ॥ ॐ षं नमः वाम नेत्रे ॥ ॐ शं नमः दक्ष कर्णे ॥

वीर चूड़ामणि तन्त्रानुसारतः ॥ विद्याकामे योनि बीजाद्यः श्रीकामेरमाद्यः ॥ वश्ये कामाद्यः ॥ स्तंभने स्थिर मायाद्यः इत्यादि ॥

ॐ वं नमः वाम कर्णे ।। ॐ लं नमः दक्ष नासायां ।। ॐ रं नमः वाम नासायां ।। ॐ यं नमः दक्ष गंडे ।। ॐ मं नमः वाम गंडे ।। भं नमः ऊर्ध्वोष्ठे ।। ॐ वं नमः अधरोष्ठे ।। ॐ फं नमः ऊर्ध्व दन्तपंक्तौ ।। ॐ पं नमः अधोदन्तपंक्तौ ।। ॐ नं नमः मूर्द्ध्नि ।। ॐ धं नमः मुखवृत्ते ।। ॐ दं नमः दक्ष बाहु मूले ।। ॐ थं नमः दक्ष कूर्परे ।। ॐ तं नमः दक्ष मणि बन्धे ।। ॐ णं नमः दक्ष हस्तांगुलि मूले ।। ढं नमः दक्ष हस्तांगुल्यग्रे ।। ॐ डं नमः वाम बाहु मूले ।। ॐ ठं नमः वाम कूर्परे ।। ॐ टं नमः वाम मणि बन्धे ।। ॐ ञं नमः वाम हस्तांगुलि मूले ।। ॐ झं नमः वाम हस्तांगुल्यग्रे ।। ॐ जं नमः दक्ष पाद मूले ।। ॐ छं नमः दक्ष जानुनि ।। ॐ चं नमः दक्ष गुल्फे ।। ॐ ङं नमः दक्ष पादांगुलि मूले ।। ॐ घं नमः दक्ष पादांगुल्यग्रे ।। ॐ गं नमः वाम पाद मूले ।। ॐ खं नमः वाम जानुनि ।। ॐ कं नमः वाम गुल्फे ।। ॐ अः नमः वाम पादांगुलि मूले ।। ॐ अं नमः वाम पादांगुल्यग्रे ।। ॐ औं नमः दक्षिण पार्श्वे ।। ॐ ओं नमः वाम पार्श्वे ।। ॐ ऐं नमः पृष्ठे ।। ॐ एं नमः नाभौ ।। ॐ लॄं नमः उदरे ।। ॐ लृं त्वगात्मने नमः हृदि ।। ॐ ॠं असृगात्मने नमः दक्षांसे ।। ॐ ऋं मासात्मने नमः ककुदि ।। ॐ ऊं मेदात्मने नमः वामांसे ।। ॐ उं अस्थ्यात्मने नमः हृदयादि दक्ष हस्तान्तम् ।। ॐ ईं मज्जात्मने नमः हृदयादि वाम हस्तान्तम् ।। ॐ इं शुक्रात्मने नमः हृदयादि दक्ष पादान्तम् ।। ॐ आं आत्मने नमः हृदयादि वाम पादान्तम् ।। ॐ अँ परमात्मने नमः हृदयादि मस्तकान्तम् ।।

इति संहार क्रम न्यासः ।। अथ शक्तिकला न्यासः ।।

अस्य श्रीशक्तिकला मातृका न्यासस्य प्रजापति ऋषिः

गायत्री छन्दः श्री मातृका शारदा देवता हलोबीजानिस्वराः शक्तयः सप्तशती पाठाङ्गत्वेन मातृकान्यासे विनियोगः ॥ ॐ प्रजापति ऋषये नमः शिरसि ॥ ॐ गायत्री छन्दसे नमः मुखे ॥ ॐ श्री मातृका शारदा देवतायै नमः हृदि ॥ ॐ हलभ्योबीजेभ्यो नमः गुह्ये ॥ ॐ स्वरेभ्योशक्तिभ्यो नमः पादयोः ॥ ॐ विनियोगाय नमः सर्वांगे ॥

॥ कर न्यासः ॥

ॐ अं ॐ आं अंगुष्ठाभ्यां नमः (हृदयाय नमः) ॐ इं ॐ ईं तर्जनीभ्यां नमः (शिरसे स्वाहा) ॐ उं ॐ ऊं मध्यमाभ्यां नमः (शिखायैवषट्) ॐ एं ॐ ऐं अनामिकाभ्यां नमः (कवचायहुँ) ॐ ओं ॐ औं कनिष्ठकाभ्यां नमः (नेत्रत्रयाय वौषट्) ॐ अं ॐ अः करतल करपृष्ठाभ्यां नमः (अस्त्राय फट्)

॥ अथ ध्यानम् ॥

ॐ शंख चक्राब्जपरशुकपालेनाक्षमालिकाः ॥ पुस्तकासवकुम्भौच त्रिशूलंदधती करैः ॥ सितपीतासितश्वेत रक्त वर्णै स्त्रिलोचनैः ॥ पंचास्यैः संयुतां चन्द्र स कांतिशारदां भजे ॥१॥ ॐ ह्रीं अं निवृत्यै नमः ललाटे ॥ ॐ ह्रीं आं प्रतिष्ठायै नमः मुखवृत्ते ॥ ॐ ह्रीं इं विद्यायैनमः दक्षनेत्रे ॥ ॐ ह्रीं ईं शान्त्यै नमः वामनेत्रे ॥ ॐ ह्रीं उं इन्धिकायै नमः दक्ष कर्णे ॥ ॐ ह्रीं ऊं दीपिकायै नमः वामकर्णे ॥ ॐ ह्रीं ऋं रेचिकायै नमः दक्षनासापुटे ॥ ॐ ह्रीं ॠं मोचिकायै नमः वामनासापुटे ॥ ॐ ह्रीं लृं पराभिधायै नमः दक्षगण्डे ॥ ॐ ह्रीं लॄं सूक्ष्मायै नमः वामगण्डे ॥ ॐ ह्रीं एं सूक्ष्मामृतायै नमः ऊर्ध्वोष्ठे ॥ ॐ ह्रीं ऐं ज्ञानामृतायै नमः अधरोष्ठे ॥ ॐ ह्रीं ओं आप्यायन्यै नमः ऊर्ध्वदंतपक्तौ ॥ ॐ ह्रीं औं व्यापिन्यै

नमः अधोदन्तपंक्तौ ॥ ॐ ह्रीं अं व्योमरूपायै नमः शिरसि ॥ ॐ ह्रीं अः अनन्तायै नमः मुखे ॥ ॐ ह्रीं कं सृष्ट्यै नमः जिह्वाग्रे ॥ ॐ ह्रीं खं ऋद्धिकायै नमः कण्ठदेशे ॥ ॐ ह्रीं गं स्मृत्यै नमः दक्षबाहुमूले ॥ ॐ ह्रीं घं मेधायै नमः दक्षकूर्परे ॥ ॐ ह्रीं ङं कान्त्यै नमः दक्षमणिबन्धे ॥ ॐ ह्रीं चं लक्ष्म्यै नमः दक्षहस्तांगुलिमूले ॥ ॐ ह्रीं छं द्युत्यै नमः दक्षहस्तांगुल्यग्रे ॥ ॐ ह्रीं जं स्थिरायै नमः वाम बाहुमूले ॥ ॐ ह्रीं झं स्थित्यै नमः वामकूर्परे ॥ ॐ ह्रीं ञं सिद्ध्यै नमः वामहस्तांगुल्यग्रे ॥ ॐ ह्रीं टं जरायै नमः वामहस्तांगुलिमूले ॥ ॐ ह्रीं ठं पालिन्यै नमः वामहस्तांगुल्यग्रे ॥ ॐ ह्रीं डं क्षान्त्यै नमः दक्षपादमूले ॥ ॐ ह्रीं ढं ईश्वरिकायै नमः दक्षजानुनि ॥ ॐ ह्रीं णं रत्यै नमः दक्षपादगुल्फे ॥ ॐ ह्रीं तं कामिकायै नमः दक्षपादांगुलिमूले ॥ ॐ ह्रीं थं वरदायै नमः दक्षपादांगुल्यग्रे ॥ ॐ ह्रीं दं आल्हादिन्यै नमः वामपादमूले ॥ ॐ ह्रीं धं प्रीत्यै नमः वामजानुनि ॥ ॐ ह्रीं नं दीर्घायै नमः वामगुल्फे ॥ ॐ ह्रीं पं तीक्ष्णायै नमः वामपादांगुलिमूले ॥ ॐ ह्रीं फं रौद्र्यै नमः वामपादांगुल्यग्रे ॥ ॐ ह्रीं बं भयायै नमः दक्षपार्श्वे ॥ ॐ ह्रीं भं निद्रायै नमः वामपार्श्वे ॥ ॐ ह्रीं मं तन्द्रिकायै नमः पृष्ठे ॥ ॐ ह्रीं यं क्षुधायै नमः उदरे ॥ ॐ ह्रीं रं क्रोधिन्यै नमः हृदि ॥ ॐ ह्रीं लं क्रियायै नमः दक्षांसे ॥ ॐ ह्रीं वं उत्कार्यै नमः ककुदि ॥ ॐ ह्रीं शं समृत्युकायै नमः वामांसे ॥ ॐ ह्रीं षं पीतायै नमः हृदयादि दक्षहस्तान्तम् ॥ ॐ ह्रीं सं श्वेतायै नमः हृदयादि वामहस्तान्तम् ॥ ॐ ह्रीं हं अरुणायै नमः हृदयादि दक्ष पादान्तम् ॥ ॐ ह्रीं लं सितायै नमः हृदयादि वामपादान्तम् ॥ ॐ ह्रीं क्षं अनन्तायै नमः हृदयादिमस्तकान्तम् ॥

*शिव कला मातृका न्यासः ॥

ॐ अस्य श्रीशिवकला मातृकान्यास मंत्रस्य दक्षिणा मूर्ति ऋषिर्गायत्री छन्दः अर्द्धनारीश्वरो देवता हलो बीजानि स्वराः शक्तयः स्वाभीष्ट सिद्धये जपे विनियोगः ॥ ॐ दक्षिणामूर्ति ऋषये नमः शिरसि ॥ ॐ गायत्री छन्दसे नमः मुखे ॥ ॐ अर्द्धनारीश्वरो देवतायै नमो हृदि ॥ ॐ हल्भ्यो बीजेभ्यो नमो गुह्ये ॥ ॐ स्वरेभ्यो शक्तिभ्यो नमः पादयोः॥ ॐ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥ इति ऋष्यादि न्यासः ॥

अथ हृदयादि न्यासः ॥

ॐ ह्सां अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ हृदयाय नमः ॥ ॐ ह्सीं तर्जनीभ्यां नमः, शिरसे स्वाहा ॥ ॐ ह्सूं मध्यमाभ्यां नमः, शिखायै वषट् ॥ ॐ ह्सैं अनामिकाभ्यां नमः, कवचायहुं ॥ ॐ ह्सौं कनिष्ठकाभ्यां नमः, नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ ह्सः करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः, अस्त्रायफट् ॥ अथ ध्यानम् ॥

पाशांकुशवराक्षस्रक्पाणि शीतांशु शेखरम् ॥ त्र्यक्षंरक्त सुवर्णाभमर्द्धनारीश्वरं भजे ॥ ॐ ह्सौं अं श्रीकण्ठेशपूर्णोदरीभ्यां नमो ललाटे ॥ ॐ ह्सौं आं अनन्ताय विरजयाभ्यां नमः मुखवृत्ते ॥ ॐ ह्सौं इं सूक्ष्मेश शाल्मलीभ्यां नमः दक्ष नेत्रे ॥ ॐ ह्सौं ईं त्रिमूर्तीश लोलाक्षीभ्यां नमः वामनेत्रे ॥ ॐ ह्सौं उं

॥ न्यासे मुद्रा विधानम् ॥

ललाटे मध्यमानामिकाभ्यां ॥ मुख वृत्ते, प्रादक्षिण्येन ॥

॥ सर्वत्र दक्षिणादि क्रमः ॥

नेत्रयोः तर्जन्यनामिकाभ्यां ॥ कर्णयोरंगुष्ठेन ॥
मुद्रया यत्कृतं कर्म ॥ तदक्षय फलप्रदम् ॥

---

* टि०—कोई २ आचार्य देवीकला के स्थान पर शिवकला मातृका न्यास करते हैं। वह भी लिख दिया गया है।

अमरेश वर्तुलाक्षीभ्यां नमः दक्षकर्णे ॥ ॐ ह्सौं ऊं अर्घीश घोषणाभ्यां नमः वामकर्णे ॥ ॐ ह्सौं ऋं भारभूतेश दीर्घमुखीभ्यां नमः दक्ष नासा पुटे ॥ ॐ ह्सौं ॠं तिथीश गोमुखीभ्यां नमः वाम नासा पुटे ॥ ॐ ह्सौं लृं स्थाण्वीश दीर्घ जिह्वाभ्यां नमः दक्ष गंडे ॥ ॐ ह्सौं लॄं हरः श्रीकंठेश कुण्डोदरीभ्यां नमः वाम गंडे ॥ ॐ ह्सौं एं झिंटीश ऊर्ध्वकेशीभ्यां नमः ऊर्ध्वोष्ठे ॥ ॐ ह्सौं ऐं भौतिकेश विकृत मुखीभ्यां नमः अधरोष्ठे ॥ ॐ ह्सौं ओं सद्योजात ज्वालामुखीभ्यां नमः ऊर्ध्व दन्तपंक्तौ ॥ ॐ ह्सौं औं अनुग्रहेश उल्कामुखीभ्यां नमः अधो दन्त पंक्तौ ॥ ॐ ह्सौं अं अक्रूरेश श्रीमुखीभ्यां नमः शिरसि ॥ ॐ ह्सौं अः महासेनेश विद्यामुखीभ्यां नमः मुखे ॥ ॐ ह्सौं कं क्रोधीश महाकालीभ्यां नमः जिह्वाग्रे ॥ ॐ ह्सौं खं चण्डेश सरस्वतीभ्यां नमः कण्ठदेशे ॥ ॐ ह्सौं गं पञ्चान्तकेश सर्वसिद्धि गौरीभ्यां नमः दक्ष वाहु मूले ॥ ॐ ह्सौं घं शिवोत्तमेश त्रैलोक्येश विद्याभ्यां नमः दक्ष कूर्परे ॥ ॐ ह्सौं ङं एकरुद्रेश मन्त्र शक्तिभ्यां नमः दक्ष मणिबंधे ॥ ॐ ह्सौं चं कूर्मेश आत्म-

---

नसोः कनिष्ठां गुष्ठाभ्यां ॥ गंडयोः मध्यमया ॥ ओष्ठयोः मध्यमया ॥ दंत पंक्तयोः अनामया ॥ शिरसि मध्यमया ॥ मुखे अनामामध्यमाभ्यां ,॥

मुद्राव्युत्पत्तिः ॥

'रादाने' मुदंराति ददातीति मुद्रेतिनिर्वचनम् ॥ इदमेव मोदन्तेसर्वदेवता ॥ इत्यनेनसूचितम् तदुक्तम् ॥ अर्चनेजपकाले तु ॥ ध्यानेकाम्ये च कर्मणि ॥ तत्तन्मुद्राः प्रयोक्तव्या देवता सन्निधापिका ॥ इतः सर्वत्रकनिष्ठा नामामध्यमाभिः ॥ हृदयादि दक्षकरांगुल्यग्रपर्यन्तं करतलेन, अग्रेपि करतलेन, अनादेशे सर्वत्र अनामांगुष्ठाभ्यां न्यसेत् ॥

शक्ति षडङ्ग मुद्रा आगमे ॥

अंगुष्ठ वर्जं मंगुल्यश्चतस्रो हृदिमूर्द्धनि । शिखायां मुष्टि रेवस्यादंगुष्ठ कुव नासिका ॥ सर्वांगुल आनाभेः पाण्योः कवच बन्धनम् ॥ इति ॥

शक्तिभ्यां नमः दक्ष हस्तांगुलिमूले ॥ ॐ ह्सौं छं एकनेत्रेश भूतमातृभ्यां नमः दक्ष हस्तांगुल्यग्रे ॥ ॐ ह्सौं जं चतुराननेश लम्बोदरीभ्यां नमः वाम बाहु मूले ॥ ॐ ह्सौं झं अजेश द्राविणीभ्यां नमः वाम कूर्परे ॥ ॐ ह्सौं ञं सर्वेश नागरीभ्यां नमः वाम मणि बंधे ॥ ॐ ह्सौं टं सोमेश खेचरीभ्यां नमः वाम हस्तांगुलि मूले ॥ ॐ ह्सौं ठं लाङ्गलीश मंजरीभ्यां नमः वाम हस्तांगुल्यग्रे ॥ ॐ ह्सौं डं दारकेश रूपिणीभ्यां नमः दक्ष जानुनि ॥ ॐ ह्सौं ढं अर्द्धनारीश वीरिणीभ्यां नमः दक्षपाद मूले ॥ ॐ ह्सौं णं उमाकान्तेश काकोदरीभ्यां नमः दक्षपाद गुल्फे ॥ ॐ ह्सौं तं आषाढीश पूतनाभ्यां नमः दक्ष पादांगुलि मूले ॥ ॐ ह्सौं थं चंडीश भद्रकालीभ्यां नमः दक्ष पादांगुल्यग्रे ॥ ॐ ह्सौं दं अन्त्रीश योगिनीभ्यां नमः वाम पाद मूले ॥ ॐ ह्सौं धं मीनेश शङ्खिनीभ्यां नमः वाम जानौ ॥ ॐ ह्सौं नं मेषेश तर्जनीभ्यां नमः वाम गुल्फे ॥ ॐ ह्सौं पं लोहितेश कालरात्रीभ्यां नमः वाम पादांगुलि मूले ॥ ॐ ह्सौं फं शिखीश कुब्जिनीभ्यां नमः वाम पादांगुल्यग्रे ॥ ॐ ह्सौं बं छागलंडेश कपर्दिनीभ्यां नमः दक्ष पार्श्वे ॥ ॐ ह्सौं भं द्विरंडेश वज्रीभ्यां नमः वाम पार्श्वे ॥ ॐ ह्सौं मं महाकालेश जयाभ्यां नमः पृष्ठे ॥ ॐ ह्सौं यं त्वगात्मभ्यां वालीश सुमुखेश्वरीभ्यां नमः उदरे ॥ ॐ ह्सौं रं असृगात्मभ्यां भुजगेश रेवतीभ्यां नमः हृदि ॥ ॐ ह्सौं लं मांसात्मभ्यां पिनाकीश माधवीभ्यां नमः दक्षांसे ॥ ॐ ह्सौं वं मेदआत्मभ्यां खड्गीश वारुणीभ्यां नमः ककुदि ॥ ॐ ह्सौं शं अस्थ्यात्मभ्यां वकेश वायवीभ्यां नमः वामांसे ॥ ॐ ह्सौं षं मज्जात्मभ्यां श्वेतेश रक्षो विदारिणीभ्यां नमः हृदयादि दक्ष हस्तान्तम् ॥ ॐ ह्सौं

सं शुक्रात्मभ्यां भृग्वीश सहजयाभ्यां नमः हृदयादि वाम हस्तान्तम् ॥ ॐ ह्सौं हं प्राणात्मभ्यां नकुलीश लक्ष्मीभ्यां नमः हृदयादि दक्ष पादान्तम् ॥ ॐ ह्सौं लं शिवेश व्यापिनीभ्यां नमः हृदयादि वाम पादान्तम् ॥ ॐ ह्सौं क्षं क्रोधात्मभ्यां संवर्तकेश महामायाभ्यां नमः हृदयादि मस्तकान्तम् ॥

श्रीकण्ठादीञ्छम्भुभक्तः कुर्यान्न्यासादिकन्तथा मन्त्र महोदधौ २१ तरंगे ॥

अथ शक्ति षोढान्यास प्रकारः ॥

तत्र प्रथम शुद्ध मातृका न्यासः ॥

अं आँ इं ईं उं ऊं ऋं ॠं ऌं ॡं नमो हृदि ॥ एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं नमो दक्ष भुजे ॥ ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं नमो वाम भुजे ॥ णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं नमो दक्षपादे ॥ मं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं नमो वाम पादे ॥ इति शुद्धमातृका न्यासः प्रथमः ॥

अथ द्वितीय न्यासः ॥

श्रीं अं श्रीं अं श्रीं अं नमो ललाटे ॥ श्रीं आं श्रीं आं श्रीं आं नमो मुखवृत्ते ॥ श्रीं इं श्रीं इं श्रीं इं नमो दक्ष नेत्रे ॥ श्रीं ईं श्रीं ईं श्रीं ईं नमो वाम नेत्रे ॥ श्रीं उं श्रीं उं श्रीं उं नमो दक्ष कर्णे ॥ श्रीं ऊं श्रीं ऊं श्रीं ऊं नमो वाम कर्णे ॥ श्रीं ऋं श्रीं ऋं श्रीं ऋं नमो दक्षनासायाँ ॥ श्रीं ॠं श्रीं ॠं श्रीं ॠं नमो वामनासायां ॥ श्रीं ऌं श्रीं ऌं श्रीं ऌं नमो दक्ष कपोले ॥ श्रीं ॡं श्रीं ॡं श्रीं ॡं नमो वाम कपोले ॥ श्रीं एं श्रीं एं श्रीं एं नम ऊर्ध्वोष्ठे ॥ श्रीं ऐं श्रीं ऐं श्रीं ऐं नम अधरोष्ठे ॥ श्रीं ओं श्रीं ओं श्रीं ओं नम ऊर्ध्व दन्त पंक्तौ ॥ श्रीं औं श्रीं औं श्रीं औं नम अधः दन्त पंक्तौ ॥ श्रीं अं श्रीं अं श्रीं अं नमो मूर्द्ध्नि ॥ श्रीं अः श्रीं अः श्रीं अः नमो

मुखे ॥ श्रीं कं श्रीं कं श्रीं कं नमो दक्षिण बाहु मूले ॥ श्रीं खं श्रीं खं श्रीं खं नमो दक्षिण कूर्परे ॥ श्रीं गं श्रीं गं श्रीं गं नमो दक्षिण मणि बन्धे ॥ श्रीं घं श्रीं घं श्रीं घं नमो दक्षिण हस्तांगुलि मूले ॥ श्रीं ङं श्रीं ङं श्रीं ङं नमो दक्षिण हस्तांगुल्यग्रे ॥ श्रीं चं श्रीं चं श्रीं चं नमो वामबाहुमूले ॥ श्रीं छं श्रीं छं श्रीं छं नमो वाम कूर्परे ॥ श्रीं जं श्रीं जं श्रीं जं नमो वाम मणि बंधे ॥ श्रीं झं श्रीं झं श्रीं झं नमो वाम हस्तांगुलि मूले ॥ श्रीं ञं श्रीं ञं श्रीं ञं नमो वाम हस्तांगुल्यग्रे ॥ श्रीं टं श्रीं टं श्रीं टं नमो दक्षिण पाद मूले ॥ श्रीं ठं श्रीं ठं श्रीं ठं नमो दक्ष जानुनि ॥ श्रीं डं श्रीं डं श्रीं डं नमो दक्ष गुल्फे ॥ श्रीं ढं श्रीं ढं श्रीं ढं नमो दक्ष पादांगुलि मूले ॥ श्रीं णं श्रीं णं श्रीं णं नमो दक्ष पादांगुल्यग्रे ॥ श्रीं तं श्रीं तं श्रीं तं नमो वाम पाद मूले ॥ श्रीं थं श्रीं थं श्रीं थं नमो वाम जानुनि ॥ श्रीं दं श्रीं दं श्रीं दं नमो वाम गुल्फे ॥ श्रीं धं श्रीं धं श्रीं धं नमो वाम पादांगुलिमूले ॥ श्रीं नं श्रीं नं श्रीं नं नमो वाम पादांगुल्यग्रे ॥ श्रीं पं श्रीं पं श्रीं पं नमः दक्ष पार्श्वे ॥ श्रीं फं श्रीं फं श्रीं फं नमो वाम पार्श्वे ॥ श्रीं बं श्रीं बं श्रीं बं नमो पृष्ठे ॥ श्रीं भं श्रीं भं श्रीं भं नमो नाभौ ॥ श्रीं मं श्रीं मं श्रीं मं नमो उदरे ॥ श्रीं यं श्रीं यं श्रीं यं त्वगात्मने नमः हृदि ॥ श्रीं रं श्रीं रं श्रीं रं असृगात्मने नमः दक्षांसे ॥ श्रीं लं श्रीं लं श्रीं लं मांसात्मने नमः ककुदि ॥ श्रीं वं श्रीं वं श्रीं वं मेदात्मने नमः वामांसे ॥ श्रीं शं श्रीं शं श्रीं शं अस्थ्यात्मने नमः हृदयादि दक्ष हस्तान्तम् ॥ श्रीं षं श्रीं षं श्रीं षं मज्जात्मने नमः हृदयादि वाम हस्तान्तम् ॥ श्रीं सं श्रीं सं श्रीं सं शुक्रात्मने नमः हृदयादि दक्ष पादान्तम् ॥ श्रीं हं श्रीं हं श्रीं हं

आत्मने नमः हृदयादि वाम पादान्तम् ।। श्रीं लं श्रीं लं श्रीं लं परमात्मने नमः जठरे ।। श्रीं क्षं श्रीं क्षं श्रीं क्षं प्राणात्मने नमः हृदयादि मस्तकान्तम् ।। इति द्वितीय न्यासः ।।

अथ तृतीय न्यासः ।।

क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो ललाटे ।। क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो मुख वृत्ते ।। क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो दक्ष नेत्रे ।। क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो वामनेत्रे ।। क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो दक्ष कर्णे ।। क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो वाम कर्णे ।। क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो दक्ष नासायाम् ।। क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो वाम नासायां ।। क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो दक्षकपोले ।। क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो वाम कपोले ।। क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नम ऊर्ध्वोष्ठे ।। क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नम अधरोष्ठे ।। क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो ऊर्ध्व दंत पंक्तौ ।। क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नम अधो दन्त पंक्तौ ।। क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो मूर्द्ध्नि ।। क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो मुखे ।। क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो दक्षिण बाहुमूले ।। क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो दक्ष कूर्परे ।। क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो दक्ष मणि बंधे ।। क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो दक्ष हस्तांगुलि मूले ।। क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो दक्ष हस्तांगुल्यग्रे ।। क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो वाम बाहुमूले ।। क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो वाम कूर्परे ।। क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो वाम मणिबन्धे ।। क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो वाम हस्तांगुलि मूले ।। क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो वाम हस्तांगुल्यग्रे ।।

क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो दक्षिण पाद मूले ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो दक्ष जानुनि ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो दक्ष गुल्फे ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो दक्ष पादांगुलि मूले ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो दक्ष पादांगुल्यग्रे ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो वाम पाद मूले ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो वाम जानुनि ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो वाम पादांगुलि मूले ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो वाम पादांगुल्यग्रे ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो दक्ष पार्श्वे ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो वाम पार्श्वे ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो पृष्ठे ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो नाभौ ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो उदरे ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं त्वगात्मने नमः हृदि ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं असृगात्मने नमः दक्षांसे ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं मांसात्मने नमः ककुदि ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं मेदात्मने नमः वामांसे ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं अस्थ्यात्मने नमः हृदयादि दक्षहस्तान्तम् ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं मज्जात्मने नमः हृदयादि वाम हस्तान्तम् ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं शुक्रात्मने नमः हृदयादि दक्ष पादान्तम् ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं आत्मने नमः हृदयादि वाम पादान्तम् ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं परमात्मने नमः जठरे ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं हृदयादि मस्तकान्तम् ॥ इति तृतीय न्यासः ॥ अथ चतुर्थ न्यासः ॥

ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं नमः ललाटे ॥

सृष्टिन्यास के अनुसार स्थानों पर पंचम न्यासतथा मुद्रा भी वही ॥

पंचमः ॥

ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ह्रां ह्रां श्रं श्रं क्रूँ नमः ललाटे ॥ सृष्टि न्यास के अनुसार तथा मुद्रा भी वही ॥

षष्ठ अनुलोमः ॥

ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः ललाटे ॥ उन्हीं स्थान तथा मुद्रा से

विलोम न्यासः ॥

ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः हृदयादि मस्तकान्तम् ॥ ११६ पेज में छपे हुए द्वितीय न्यास के अन्त से चल कर ललाट में समाप्त होगा ।

तत्त्वन्यासः ॥

ऐं ह्रीं क्लीं आत्म तत्त्वाय नमः पादादि नाभिपर्यन्तम् ॥ चामुण्डायै विद्यातत्त्वाय नमः नाभ्यादि हृदय पर्यन्तम् ॥ विच्चे शिव तत्त्वाय नमः हृदयादि शिरः पर्यन्तम् ॥

अक्षर न्यासः ॥

ऐं नमः ब्रह्मरंध्रे ॥ ह्रीं नमः भ्रुवोर्मध्ये ॥ क्लीं नमः ललाटे ॥ चां नमः हृदि ॥ मुं नमोकुक्षौ ॥ डां नमः नाभौ ॥ यैं नमो लिंगे ॥ विं नमो गुह्ये ॥ च्चें नमोवक्त्रे ॥ इति

ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ॥

ततो नवधा सप्तधा पञ्चधा वा मूल मुच्चरन् व्यत्य हस्ताभ्यां व्यापक न्यासं विधाय ॥ ततो यथोक्त विधिना विन्दु त्रिकोण षट्कोण अष्ट दल चतुर्विंशति दल भूपरयुतं यंत्रंनिर्माय पीठे धृत्वा ॥ पीठ न्यासं कुर्यात् ॥ ॐ ह्रीं आधार शक्तये नमः ॥ ॐ प्रकृत्यै नमः ॥ ॐ कूर्माय नमः ॥ ॐ सुधांबुधये नमः ॥ ॐ मणिद्वीपाय नमः ॥ ॐ चिन्तामणि गृहाय नमः ॥ ॐ श्मशानाय नमः ॥ ॐ पारिजाताय नमः ॥ तन्मूले ॥ ॐ रत्नवेदिकायै नमः ॥ ॐ मणिपीठाय नमः ॥ एतावद्धृदि न्यसेत् ॥

चतुर्दिक्षु ॥ ॐ नाना मुनिभ्यो नमः ॥ ॐ नाना देवेभ्यो नमः ॥ ॐ शवेभ्यो नमः ॥ ॐ शवमुण्डेभ्यो नमः ॥ ॐ बहुमांसास्थि मोदमान शवेभ्यो नमः ॥ ॐ धर्म्माय नमः दक्षांसे ॥ ॐ ज्ञानाय नमः वामांसे ॥ ॐ वैराग्याय नमः वामोरौ ॥ ॐ ऐश्वर्याय नमः दक्षोरौ ॥ ॐ अधर्म्माय नमोमुखे ॥ ॐ अज्ञानाय नमो वाम पार्श्वे ॥ ॐ अवैराज्ञाय नमः नाभौ ॥ ॐ अनैश्वर्याय नमः दक्षिणपार्श्वे ॥ ततो हृदि ॥ ॐ आनन्द कन्दाय नमः ॥ ॐ संविन्नालाय नमः ॥ ॐ सर्व तत्त्वात्मक पद्माय नमः ॥ ॐ प्रकृति मय पत्रेभ्यो नमः ॥ ॐ विकार मय केसरेभ्यो नमः ॥ ॐ पञ्चाशद्बीजाढ्य कर्णिकायै नमः ॥ ॐ अं द्वादश कलात्मने सूर्य मंडलाय नमः ॥ ॐ सं षोडश कलात्मने सोममण्डलाय नमः ॥ ॐ मं दशकलात्मने वन्हि मण्डलाय नमः ॥ ॐ सं सत्वायनमः ॥ ॐ रं रजसे नमः ॥ ॐ तं तमसे नमः ॥ ॐ आं आत्मने नमः ॥ ॐ अं अन्तरात्मने नमः ॥ ॐ पं परमात्मने नमः ॥ ॐ ह्रीं ज्ञानात्मने नमः ॥ अष्टदिक्षु ॥ ॐ इं इच्छायै नमः ॥ ॐ ज्ञां ज्ञानायै नमः ॥ ॐ क्रिं क्रियायै नमः ॥ ॐ कां कामिन्यै नमः ॥ ॐ कां कामदायिन्यै नमः ॥ ॐ रं रत्यै नमः ॥ ॐ रं रति प्रियायै नमः ॥ ॐ आं आनन्दायै नमः ॥ मध्ये ॥ ॐ मं मनोन्मन्यै नमः ॥ ॐ पं परायै नमः ॥ ॐ पं परापरायै नमः ॥ ॐ ह्सौः ब्रह्मा विष्णु रुद्रमहाप्रेत पद्मासनाय नमः ॥ इति पीठ न्यासं कृत्वा तत्र दुर्गां ध्यायेत् ॥ ॐ शंखं चक्रं गदां बाणान् चापं परिघ शूलके ॥ भुशुण्डीं च शिरः खड्गं दधतीं दश वक्त्रकाम् ॥ १ ॥ तामसींश्यामलां नौमि महाकालीं दशांघ्रिकाम् ॥ मालाब्ज परशुं बाणान् गदां कुलिशमेवच ॥ २ ॥ पद्मं धनुः कुण्डिकां च दंडं शक्तिमसिं

तथा ॥ खेटकंजलजं घण्टां सुरापात्रं च शूलकम् ॥ ३ ॥ पाशं सुदर्शनं चैव दधतीं लोहित प्रभाम् ॥ पद्मेस्थितां महालक्ष्मीं भजे महिष मर्दिनीम् ॥४॥ घण्टां शूलं हलं शंखं मुसलारि धनुः शरान् ॥ दधतीमुज्वलां नौमि देवीं गौरी समुद्भवाम् ॥ ५ ॥ इति ध्यात्वा मानसैरुपचारैरभ्यर्च्य प्रणमेत् ॥

*विशेषार्घ्यं स्थापन विधिः ॥

आत्म श्री चक्रयोर्मध्ये विन्दु त्रिकोण चतुरस्रं कृत्वा ॥ शंखमुद्रया[1] स्तंभयेत् ॥ मध्ये ॥ ॐ जयध्वनि मातः स्वाहेति घण्टां संपूज्य वादयेत् ॥ ॐ आगमार्थंतुदेवानां गमनार्थंतु रक्षसाम् ॥ घण्टारवं प्रकुर्वीत देवता प्रीति कारकम् ॥

मध्ये नवार्ण इतिमंत्रं विलिख्य सामान्यार्घ्योदकेनाभ्युक्ष्य-ततः चतुरस्रकोणेषु ॐ पूर्ण गिरि पीठाय नमः पूर्वे ॥ ॐ उड्डीयान पीठाय नमः दक्षिणे ॥ ॐ कामरूप पीठाय नमः पश्चिमे ॥ ॐ जालंधर पीठाय नमः उत्तरे ॥ त्रिकोणं मूल खंडत्रयेण संपूज्य ॥ ॐ ह्रीं आधार शक्तये नमः इति संपूज्य, षट्कोणेषु षडङ्गानि संपूज्य ॥ तत्राधारे अर्घ्यपात्रं संस्थाप्य नम इति सामान्यार्घ्योदकेनाभ्युक्ष्य ॥ मं दशकलात्मने वन्हिमण्डलाय नमः ॥ ॐ यं धूम्रार्चिषे नमः ॥ ॐ रं ऊष्मायै नमः ॥ ॐ लं ज्वलिन्यै नमः ॥ ॐ वं ज्वालिन्यै नमः ॥ ॐ शं विस्फुलिंगिन्यै नमः ॥ ॐ षं सुश्रियै नमः ॥ ॐ सं स्वरूपायै नमः ॥ ॐ हं कपिलायै नमः ॥ ॐ लं हव्यवाहायै नमः इति संपूज्य ॥ ॐ फडिति पात्रं प्रक्षाल्य ॥ श्री दुर्गा विशेषार्घ्यपात्रं संस्थापयामि नमः

टिप्पणी—* अर्घ्यं पाद्याचमनीयमधुपर्काचमस्य च ।
पञ्चपात्राणिपुष्पादीन् स्थापयेत्स्वीय दक्षिणे ॥
मंत्र महोदधौ २१ त० ७५ श्लोक ॥

[1] —शंखमुद्रा का लक्षण १२४ सफे में है ।

इति पात्रं संस्थाप्य ॥ ॐ अं अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने अर्घ्य पात्राय नमः ॥ ॐ कं भं तपिन्यै नमः ॥ ॐ खं बं तापिन्यै नमः ॥ ॐ गं फं धूम्रायै नमः ॥ ॐ घं पं मरीच्यै नमः ॥ ॐ ङं नं ज्वालिन्यै नमः ॥ ॐ चं धं रुच्यै नमः ॥ ॐ छं दं सुषुम्णायै नमः ॥ ॐ जं थं भोगदायै नमः ॥ ॐ झं तं विश्वायै नमः ॥ ॐ ञं णं बोधिन्यै नमः ॥ ॐ टं ढं धारिण्यै नमः ॥ ॐ ठं डं क्षमायै नमः ॥ इति सम्पूज्य ॥ मूलेन विलोम मातृकां पठन् अर्घ्यपात्रं पूरयामीति जलेन (तीर्थोदकेन) कलशं पूरयित्वा ॥ तत्र रक्तचंदन पुष्पादि निक्षिप्य ॥ ॐ सं षोडश कलात्मने सोममण्डलाय नमः ॥ ॐ अं अमृतायै नमः ॥ ॐ आं मानदायै नमः ॥ ॐ इं पूषायै नमः ॥ ॐ ईं तुष्ट्यै नमः ॥ ॐ उं पुष्ट्यै नमः ॥ ॐ ऊं रत्यै नमः ॥ ॐ ऋं धृत्यै नमः ॥ ॐ ॠं शशिन्यै नमः ॥ ॐ ऌं चंडिकायै नमः ॥ ॐ ॡं कान्त्यै नमः ॥ ॐ एं ज्योत्स्नायैनमः ॥ ॐ ऐं श्रियै नमः ॥ ॐ ओं प्रीत्यै नमः ॥ ॐ औं अंगदायै नमः ॥ ॐ अं पूर्णायै नमः ॥ ॐ अः पूर्णामृतायै नमः ॥ इति सम्पूज्य ॥ कुशेन त्रिकोण वृत्त षट्कोणं लिखित्वा तन्मध्ये

धर्म्मसारे ॥ कलशं शंख घण्टे च पाद्यार्घ्याचमनीयकम् ।
संपूज्यप्रोद्यचात्मानं पूजासंभार मेवच ॥

पूजासागरे ॥ सुवासित जलैःपूर्णं सव्येकुम्भं प्रपूजयेत् ।
कलशस्येतिमन्त्रेण तीर्थान्यावाहयेत्ततः ॥
वामेऽम्बुपात्रं छत्रमादर्शंचामरे ।
कृताञ्जलिर्वामदक्षं गुरून्गणपतिं नमेत् ॥

१ शंखमुद्रा लक्षणम् ॥ वामाङ्गुष्ठन्तुसंगृह्य दक्षिणेन तु मुष्टिना ।
कृत्वोत्तानं तथा मुष्टिमङ्गुष्ठन्तु प्रसारयेत् ।
वामाङ्गुल्यस्तथाश्लिष्टाः संयुक्ताः सुप्रसारिताः ।
दक्षिणांगुष्ठकेलग्ना मुद्राशङ्खस्यभूतिदा ॥

त्रिकोण रेखायां अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं इति विलिख्य त्रिकोण रेखायां मध्ये हं लं चं इति विलिख्य मूलखण्डत्रयेण त्रिकोणं संपूज्य ।। षट्कोणेषु षडंगं च पूजयित्वा ।। ॐ गंगे च यमुनेचैव गोदावरि सरस्वति ।। कावेरिनर्मदेसिन्धो जलेऽस्मिन्संनिधिं कुरु ।। ॐ ब्रह्माण्डोदरतीर्थानि करैः स्पृष्टेन ते रवे ।। तेन सत्येन मे देव तीर्थं देहि दिवाकर ! ।। इति मन्त्रेण [१]अंकुश मुद्रया सूर्यमंडलात्तीर्थान्यावाह्य वौषट् इति पुष्पं वषट् इति गालिनी[२] मुद्रां प्रदर्श्य ।। श्री त्रिगुणात्मक दुर्गा देव्यै नमः ।। इति ध्यात्वा सम्पूज्य ।। तत्तन्मंत्रेण पूर्वादिक्रमेण रत्नानि प्रपूजयेत् ।। ॐ ग्लूं गगन रत्नेभ्यो नमः ।। ॐ स्लूं स्वर्ग रत्नेभ्यो नमः ।। ॐ म्लूं मर्त्य रत्नेभ्यो नमः ।। ॐ न्लूं नागरत्नेभ्यो नमः ।। ॐ प्लूं पाताल रत्नेभ्यो नमः ।। इति संपूज्य ।। ततः आनन्दभैरवानन्द भैरव्यौ ध्यायेत् ।। सूर्य कोटि प्रतीकाशं चन्द्र कोटि शुशीतलम् ।। अष्टादशभुजं देवं पञ्च वक्त्रं त्रिलोचनम् ।। अमृतार्णव मध्यस्थं ब्रह्म पद्मोपरिस्थितम् ।। वृषारूढं नीलकंठं सर्वाभरणभूषितम् ।। कपालखट्वाङ्गधरं घंटाडमरुवादिनम् ।। पाशांकुशधरं देवं गदामुसलधारिणम् ।। खङ्ग खेटक पट्टीश मुद्गरं शूल दंडकम् ।। विचित्र खेटकं मुंडं वरदाभयपाणिकम् ।। लोहितं देव देवेश भावयेत्साधकोत्तमः ।। वं इति[३] धेनु मुद्रयामृतीकृत्य ।। तज्जलेन स्वात्मानं पूजा सामग्रीं च प्रोक्षयेत् ।। इति विशेषार्घ्यविधिः ।।

---

१ अङ्कुश मुद्रा का लक्षण ६१ पृष्ठ में देखिये ।

टिप्पणी २ गालिनी मुद्रा यथा—कनिष्ठांगुष्ठकौयुक्तौ करयोरितरेतरम् ।
तर्जनी मध्यमा नामासंहतोभुग्न वर्जिताः ।।

भू शुद्धिः ६५ पृष्ठ की टिप्पणी में देखियेगा ॥

अथ क्षेत्र कीलनम् ॥ जप स्थाने गत्वा पृथ्वी ग्रहणं कुर्यात् ॥ तद्यथा गृहीतस्यास्य मंत्रस्य पुरश्चरण सिद्धये ॥ मयेयं गृह्यते भूमिमंत्रोऽयंसिद्धिमाप्नुयात् ॥ इति भूमिसंगृह्य ॥ अश्वत्थोदुंवर वृक्षाणामन्यतम वितस्तिमात्रान् दशकीलान् ॥ ॐ नमः सुदर्शनाय अस्त्राय फट् इति मंत्रेण अष्टोत्तरशतकृत्वाभिमंत्रितान ॥ ॐ ये चात्र विघ्नकर्तारो भुविदिव्यंतरिक्षगाः ॥ विघ्नभूताश्च ये चान्ये मम मंत्रस्य सिद्धिषु ॥१॥ मयैतत्कीलितं क्षेत्रं परित्यज्यविदूरतः ॥ अपसर्पन्तु ते सर्वे निर्विघ्नासिद्धिरस्तु मे ॥ २ ॥ इति मंत्रद्वयेन १० दिक्षु १० कीलान्निखनेत् ॥ ततस्तेषु ॥ ॐ नमः सुदर्शनाय अस्त्रायफट् ॥ इति मन्त्रेण प्रत्येकं कीलं संपूज्य दिक्पालेभ्यः क्षेत्रपाल गणपतिभ्यश्च माष भक्तबलिं दत्वा ॥ तद्वाह्ये भूत (*पंचमहाभूत) बलिंदद्यात् ॥ तत्रमन्त्राः ॥ ये रौद्राःरौद्रकर्माणो रौद्रस्थाननिवासिनः ॥ मातरोप्यु-

---

१—वामाङ्गुलीर्दक्षिणानामाङ्गुलीनां च सन्धिषु ।
प्रवेश्य मध्यमाभ्यान्तु तर्जन्यौद्वौ प्रयोजयेत् ॥
कनिष्ठे द्वेनामिकाभ्यांयुज्यात् सा धेनु मुद्रिका ।

* आचम्य प्राणानायम्य ॥ अद्येहेत्यादि मम (यजमानस्य) संकल्पोक्त फलावाप्तये श्री दुर्गा देव्याःपुरश्चरण सिद्धये चतुर्दिक्षुवटुकादि देवताभ्यो दधि माषान्नद्रव्यैः पंच महाभूत बलिदानं करिष्ये ॥

चक्रस्य पूर्वे भूमौ सिंदूरेण विन्दुत्रिकोणवृत्तचतुरस्रात्मक यन्त्रं विलिख्य ॥ वटुक बलिपात्राधार मंडलाय नमः, इति गंधपुष्पाभ्यां संपूज्य ॥ अन्नव्यंजनयुतमाधारं बलिं च निधाय ॥ ॐ वं वटुक बलिद्रव्याय नमः इति गंधपुष्पाभ्यां संपूज्य ॥ पूर्वे वं वटुकाय नमः इति संपूज्य ॥ बलिमुपनीय ॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं एह्येहि देवीपुत्र वटुकनाथ कपिलजटाभारभास्वर त्रिनेत्र ज्वालामुख सर्वविघ्नान्नाशय २ सर्वोपचारसहितं बलिं गृह्ण २ स्वाहा॥ इति वामांगुष्ठानामिकाभ्यांबलि मुत्सृजेत ॥ दत्तहस्तेन जलंत्यजेत् ॥ प्रार्थना ॥ ॐ करकलितकपालः कुण्डली दण्डपाणिस्तरुण

अरूपाश्च गणाधिपतयश्च ये ॥ १ ॥ भूचराः खेचराश्चैव तथा चैवांतरिक्षगाः ॥ ते सर्वेप्रीतिमनसाः प्रतिगृह्णन्त्विमंबलिम् ॥२॥ इति मन्त्रद्वयेनदशदिक्षुवाह्ये माषभक्तबलिं दद्यात् ॥ ततो वामकरांगुलिभिरर्घ्यजलेनोत्सृज्य पुष्पांजलिं गृहीत्वा ॥ ॐ भूतानि यानीह वसन्तिभूतले बलिं गृहीत्वा विधिवत्प्रयुक्तम् ॥ संतोषमासाद्य व्रजन्तु सर्वे क्षमन्तुतान्यत्रनमोस्तु तेभ्यः ॥ इति पुष्पांजलिंदत्त्वा प्रणम्य हस्तौपादौ प्रक्षाल्याचामेत् ॥ इति क्षेत्रकीलनम् ॥

विमिरनीलव्यालयज्ञोपवीती ॥ क्रतुसमयसपर्या विघ्नविच्छेद हेतुर्जयति बटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम् ॥ बलिदानेन संतुष्टोबटुकः सर्व सिद्धिदः ॥ शान्तिकरोतु मे नित्यं भूत वेताल सेवितः ॥ इति पुष्पाञ्जलिं दद्यात् ॥

चक्रस्य दक्षिणे पूर्ववत्यन्त्रं विलिख्य, योगिनी बलिपात्राधार मंडलाय नमः ॥ इति गंधपुष्पाभ्यां संपूज्य ॥ तदुपरि अन्नव्यंजनयुतमाधारं बलिं च निधाय ॥ ॐ यां योगिनी बलिद्रव्याय नमः इति गंधपुष्पाभ्यां संपूज्य ॥ दक्षिणे यां सर्व योगिनीभ्यो नमः इति संपूज्य बलिमुपनीय । ॐ सर्ववर्ण योगिनीभ्य इमं बलिं गृह्ण २ हुँ फट् स्वाहा इति वामांगुष्ठ मध्यमानामिकाभिः बलिमुत्सृजेत् ॥ दत्तहस्तेनजलं त्यजेत् ॥ प्रार्थना ॥ ॐ ऊर्ध्वं ब्रह्माण्डतो वा दिवि गगनतले भूतले निष्कले वा ॥ पाताले वा (स्थले) ऽनले वा सलिलपवनयोर्यत्र कुत्रस्थिता वा ॥ क्षेत्रेपीठोपपीठा दिशि च कृतपदा धूपदीपादिकेभ्यः प्रीता देव्या सदा नः शुभविधिबलिनः पांतु वीरेन्द्रवन्द्याः ॥ या काचिद्योगिनी रौद्रा सौम्याघोर परात्पराः ॥ खेचरी भूचरी व्योमवती प्रीतास्तु मे सदा ॥ यां योगिनीभ्यः स्वाहा सर्वाभ्यो योगिनीभ्यो फट् ॥ पुष्पाञ्जलिं दद्यात् ॥

चक्रस्य पश्चिमे पूर्ववत् यंत्रंविलिख्य ॥ क्षेत्रपालबलि पात्राधार मण्डलाय नमः, इति गंधपुष्पाभ्यां संपूज्य ॥ अन्नव्यंजनयुतमाधारं बलिं च निधाय ॥ ॐ क्षं क्षेत्रपाल बलिद्रव्याय नमः इति गंधपुष्पाभ्यां संपूज्य ॥ पश्चिमे क्षं क्षेत्रपालाय नम इति संपूज्य ॥ बलिमुपनीय ॥ क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः ॥ भो स्थान क्षेत्रपालाय इमं बलिं गृह्ण २ सर्वकामान् पूरय २ स्वाहा ॥ वामांगुष्ठ तर्जनीभ्यां बलिमुत्सृजेत् ॥ दत्तहस्तेन जलं

अथ यन्त्र पूजन प्रकारः ॥

मध्ये (प्रधानयंत्रे) चक्रस्थ प्रेतासनोपरि मूलेन मूर्तिं* विचिन्त्य ॥ आत्मानं कामकलारूपं विभाव्य करकच्छपिकया

त्यजेत् ॥ प्रार्थना ॥ योस्मिन् क्षेत्रेनिवासी च क्षेत्रपालः सकिंकरः ॥ प्रीतोयं बलिदानेन सर्वरक्षां करोतु मे ॥ पुष्पांजलिं दद्यात् ॥

चक्रस्य उत्तरे पूर्ववत् यन्त्रं विलिख्य, गं गणेशबलि पात्राधार मंडलाय नमः , इति गंधपुष्पाभ्यां संपूज्य तदुपरि अन्नव्यंजनयुतमाधारं बलिं च निधाय ॥ ॐ गं गणेश बलि द्रव्याय नमः , इति गन्धपुष्पाभ्यां संपूज्य ॥ उत्तरे गं गणेशाय नमः इति संपूज्य बलिमुपनीय ॥

गां गीं गूं गैं गौं गः गणपतये वरवरद सर्वजनं मे वशमानय सर्वोपचारसहितं बलिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ इति वामांगुष्ठ मध्यमाभ्यांबलिमुत्सृजेत् ॥ दक्ष हस्तेन जलन्त्यजेत् ॥ प्रार्थना ॥ सर्वदा सर्वकार्याणि निर्विघ्नं साधयेन्मम ॥ शान्तिं करोतु सततं विघ्नराजः सशक्तिकः ॥ पुष्पांजलिंदद्यात् ॥

स्ववामे चतुष्कोणयन्त्रं विलिख्य ह्रीं सर्वभूतविघ्नकृत्बलिपात्राधार मंडलाय नम इति गंध पुष्पाभ्यां संपूज्य तदुपरि अन्न व्यञ्जनयुतमाधारं बलिंचनिधाय ॥ सर्वभूतविघ्नकृत्बलिद्रव्याय नमः ॥ इतिगंधपुष्पाभ्यां-संपूज्य॥ बलिमुपनीय ॐ ह्रीं सर्वविघ्नकृद्भ्यः सर्व भूतेभ्य इमं बलिं गृह्ण२ हुँ फट् स्वाहा ॥ इति सर्वाङ्गुलिभिः बलिमुत्सृजेत् ॥ दक्षेन जलं त्यजेत् ॥ प्रार्थना ॥ भूता ये विघ्न कर्तारः दिविभूम्यन्तरिक्षगाः ॥ पातालस्थल-संस्थाश्च शिवयोगेन भाविताः ॥ क्रूराद्याः शत संख्याकाः पाखंडाद्या व्यवस्थिताः ॥ ध्रुवाद्याः सत्यसंख्याश्च इन्द्राद्याशा व्यवस्थिताः ॥ तृप्यन्तु प्रीतिमनसो भूता गृह्णन्त्विमंबलिं ॥ नगरेवाथसंग्रामे अटव्यांवैसरित्तटे ॥

---

* शाक्तानन्द त० ६ उल्लासे ॥ आत्मस्थां देवतांत्यक्त्वा वहिर्देवं विचिन्तयेत् ॥ करस्थं कौस्तुभं त्यक्त्वा भ्रमते काचतृष्णया ॥ प्रत्यक्षी कृत्य हृद्ये वहिस्थां पूजयेच्छिवां ॥ यस्य यस्य च देवस्य यथा भूषण वाहनम् ॥ तदेव पूजने तस्य चिंतयेत्परमेश्वरि ॥

यन्त्र पूजनविधिः ॥

पद्मपत्रे ततश्चक्रे देव्या अग्रदलादितः ॥ वामावर्तेन देवेशि क्रमेण परिपूजयेत् ॥ स्वकल्पोक्त क्रमेणैव पूजयेदङ्गदेवताः ॥

पुष्पादिकं गृहीत्वा ॥ मूलाधारात्कुण्डलिनीं* ब्रह्मरन्ध्रपथा शिरस्थां विभाव्य तत्रत्यामृत लोलीभूतां हृदयस्थाष्टदलरक्त-पंकजेमानीय देवीं ध्यायेत् ॥ खड्गं चक्रगदेषु चापपरिघानिति[१] ॥ अक्षस्रगिति[२] ॥ घंटाशूलमित्यादि[३] क्रमेणध्यात्वा ॥ यमिति (यं) बीजेन वामनासया कर पुष्पे समारोप्य ॥ मूलं ॥ देवेशि ! भक्तसुलभे ! परिवार समन्विते ॥ यावत्त्वांपूजयिष्यामि तावद्देवि ! इहावह ॥ इति मन्त्रं पठन्पुष्पं कृ समूर्तौ। यन्त्रेवा निधाय ॥

वापी कूपेषु वृक्षेषु श्मशाने च चतुष्पथे ॥ नानारूपधरा ये च बहुरूपधराश्च ये ॥ ते सर्वे चैव सन्तुष्टा बलिं गृह्णन्तु मे सदा ॥ इति पुष्पाञ्जलिं दद्यात् ॥

प्रधान बलिः ॥

देवताग्रे मध्ये भूमौ सिन्दूरेण विन्दु-त्रिकोण-वृत्त-चतुरस्रात्मक यन्त्रं विलिख्य । मूलं चण्डिका-बलिपात्राधार-मण्डलाय नमः ॥ इति गन्धपुष्पाभ्यां सम्पूज्य ॥ अन्नव्यञ्जनयुतमाधारं बलिं च निधाय ॥ ॐ मूलं दुर्गाबलिद्रव्याय नमः इति गन्ध पुष्पाभ्यां सम्पूज्य ॥ मूलं सांगायै सायुधायै सवाहनायै सपरिवारायै सशक्तिकाय ब्रह्मा-विष्णु-रुद्र-सहितायै त्रिगुणात्मिकाचण्डिकादेव्यै नमः इतिसम्पूज्य ॥ बलिमुपनीय ॥ मूलम् एह्येहि जगतां जननि ! इममामिषान्नबलिं गृह्ण २ सिद्धिं देहि २ शत्रुक्षयं कुरु २ ह्रीं ह्रीं हुँ फट् स्वाहा एष बलिः साङ्गायै सायुधायै सवा-

---

[१]—खड्गं चक्र गदेषु चाप परिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः । शंखं संदधतींकरैस्त्रिनयनां सर्वाङ्ग भूषावृताम् ॥ नीलाश्मद्युतिमास्यपाद दशकां सेवेमहाकालिकां, यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजोहन्तुं मधुं कैटभम् ॥१॥

[२]—अक्षस्रक् परशुं गदेषु कुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकां दंडंशक्तिमसिं च चर्म जलजं घंटां सुराभाजनं ॥ शूलं पाश सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां सेवेसैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम् ॥ २ ॥

[३]—घंटा शूल हलानि शङ्खमुसले चक्रं धनुः सायकं हस्ताब्जैर्दधतींघनान्तविलसच्छीतांशुतुल्य प्रभाम् ॥ गौरीदेह समुद्भवान्त्रिनयनामाधार भूतां महा पूर्वा मत्र सरस्वती मनुभजे शुम्भादि दैत्यार्दिनीम् ॥ ३ ॥

* आवाहनम् ॥

‡मूलं ॥ ॐ आत्मसंस्थामजांशुद्धां त्वामहं परमेश्वरि ! ॥ अरण्यामिव हव्यांशं मूर्तावावाहयाम्यहम् ॥ ॐ आवाहये महादेवि ! श्वेतपर्वतमस्तकात् ॥ सूर्य मंडल तोवापि हृदयाम्बुजगह्वरात् ॥ इस मन्त्र से भगवती की नवीन मृत्तिका की मूर्ति वा यन्त्र में आवाहन करना ॥

हनायै सपरिवारायै सशक्तिकायै ब्रह्मा-विष्णु-रुद्र सहितायै त्रिगुणात्मिका श्री दुर्गा देव्यै नमः ॥ इति वामाङ्गुष्ठानामिकाभ्यां बलिमुत्सृजेत् दक्ष हस्तेन जलन्त्यजेत् ॥ प्रार्थना ॥ ॐ शरणागतदीनार्तपरित्राण परायणे ! ॥ सर्वस्यार्ति·हरे देवि ! नारायणि ! नमोस्तु ते ॥ देवी के दक्षभाग में सिंह बलि और वाम भाग में महिष बलि करना ॥

सिंह बलिमंत्रोयम् शारदातंत्रे ॐ वज्र-नख-दंष्ट्रायुधायसिंहाय हुँफट् नमः ॥ दूसरा ॥ ॐ सौं वनस्पति-पुत्रायसिंहाय इमं बलिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ महिषबलि मंत्रः ॥ ॐ भूं महिषशृंगेभ्यो महिषेभ्यः इमं बलिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ महिष बलि मंत्रः ॥

पुष्पाञ्जलि के वेदोक्त मन्त्र ६४ पृष्ठ में हैं ॥

ॐ सर्वेभ्यो बलिदेवताभ्यो नमः ॥ इति सर्वमभ्यर्च्य ॥ *नाराच मुद्रां बद्ध्वा ॥ बलिदानेन संतुष्टाः क्षमध्वं बलिदेवताः ॥ यथासुखंवितरन्तु यथेष्टमुदितावराः ॥ वटुकाद्याः सुराः सर्वे सर्वसिद्धिविधायिनः ॥ शान्तिं पुष्टिं प्रयच्छन्तु त्वत्प्रसादान्महेश्वरि ॥ स्तुत्वा मुद्रांविसृज्य प्रोक्षणी जलेनात्मानं प्रोक्षयेदिति ॥

---

* नाराच मुद्रा लक्षणम् ॥

अंगुष्ठमग्रं यदि मध्यमाग्रंस्पृशेत्स्युरन्याङ्गुलयस्त्वलग्नाः ॥
तदाभवेद्भूतनिषूदनस्य नाराचनाम्नोऽस्त्रवरस्य मुद्रा ॥

* तत्रैव वाचस्पतौ ॥ कुर्यादावाहनं मूर्तौमृण्मय्यां सर्वदैव हि ॥
प्रतिमायांजले वन्हौनावाहनविसर्जने ॥

‡नवार्णमंत्रेण 'ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे' ॥

*ध्यायेत्कुण्डलिनीं शक्तिं बिसतन्तु-स्वरूपिणीम् ॥ प्रसुप्तभुजगाकारां सार्द्धत्रिवलयान्विताम् ॥ मुखेमुखं तु संयोज्य स्वयम्भू-लिङ्ग वेष्टिनीम् ॥ वह्नीन्द्वर्कतडित्पुञ्जप्रभां चैतन्यरूपिणीम् ॥ इति तन्त्रान्तरे ॥

आवाहन मुद्रा लक्षणम् ।।१।।

सम्यक् संपूजितैः पुष्पैः कराभ्यां कल्पितांजलिः ।।
आवाहनी समाख्याता मुद्रादेशिक—सत्तमैः ।।
अनामामूल—संलग्नांगुष्ठाग्राञ्जलिरीरिता ।।
देव्याह्वानकरी चैषा मुद्रावाहन—संज्ञका ।।

राम पूर्व तापनीये ।।

‡सोभयस्यास्य देवस्य विग्रहो यन्त्र—कल्पना ।
विना यन्त्रेण चेत्पूजा देवता न प्रसीदति ।।

संहितायां ।।

मन्त्रं मन्त्रमयं प्राहुर्देवता मन्त्ररूपिणी ।
यन्त्रेणापूजितो देवः सहसा न प्रसीदति ।।
सर्वेषामपि मन्त्राणां यन्त्रे पूजा प्रशस्यते ।।

स्थापनम् ।।

(मू०) ॐ तवेयं महिमामूर्तिस्तस्यां त्वं सर्वगः शुभे ।।
भक्तिस्नेहं समाकृष्य दीपवत्स्थापयाम्यहम् ।। २ ।।

।। इति संस्थाप्य ।। स्थापन मुद्रा लक्षणम् ।।

अधोमुखीकृतासैव स्थापनीति निगद्यते ।।
अनया स्थापन्या मुद्रया संस्थाप्य ।।

आसनम् ।।

(मू०) ॐ सर्वान्तर्यामिनिदेवि ! सर्वबीजमयं शुभम् ।।
स्वात्मस्थाप्यपरं शुद्धमासनं कल्पयाम्यहम् ।। ३ ।।

आसनं गृहाण नमः ।।

अस्मिन्वरासने देवि ! सुखासीनाऽक्षरात्मिके ! ।।
प्रतिष्ठिताभवशिवे ! त्वं प्रसीद परमेश्वरि ! ।।

उपविष्टाभव नमः ।। सन्निधाय ।।

(मू०) ॐ अनन्यातव देवेशि ! मूर्तिशक्तिरियंवरे ! ।।
सान्निध्यं कुरु तस्यां त्वं भक्तानुग्रह—तत्परे ! ।। ४ ।।

॥ इति सन्निधाय ॥ सन्निधान मुद्रा लक्षणम् ॥

आश्लिष्ठ—मुष्टियुगला प्रोन्नतांगुष्ठयुग्मका ॥
सन्निधाने समुद्दिष्टा मुद्रेयं तन्त्रवेदिभिः ॥

सन्निरोधनम् ॥

(मू०) ॐ आज्ञया तव देवेशि ! कृपाम्भोधे गुणाम्बुधे ॥
आत्मानन्दैकतृप्तां त्वां निरुणध्मि पितर्गुरो ॥ ५ ॥

इति संनिरुध्य ॥

सन्निरोधन मुद्रा लक्षणम् ॥

अंगुष्ठगर्भिणी सैव सन्निरोधे समीरिता ॥

सम्मुखीकरणम् ॥

(मू०) ॐ अज्ञानाद्दुर्मनस्त्वाद्वा वैकल्पात्साधनस्य च ॥
यदपूर्णं भवेत्कृत्यं तदप्यभिमुखी भव ॥ ६ ॥

इति सम्मुखी कृत्य ॥

सम्मुखी मुद्रा ॥

हृदि अञ्जली बंधनं प्रार्थनी मुद्रा ॥

सकलीकरणम् ॥

(मू०) दृशापीयूषवर्षिण्या पूरयन् यज्ञविष्टरम् ॥
मूर्तौ वा यज्ञसम्पूर्त्यै स्थिराभव महेश्वरि ! ॥ ७ ॥

यहाँ १४१ पृष्ठ में से षडङ्गन्यास करना चाहिये इसी को सकलीकरण कहते हैं॥
तथा ३२ पृष्ठ में लिखी प्राण प्रतिष्ठा भी

सकलीकरण मुद्रा ॥

देवांगेषु षडङ्गानां न्यासः स्यात्सकली कृतिः ॥

अथवान्या सकलीकरण मुद्रा ॥

हृदयादिशरीरान्ते कनिष्ठाद्यङ्गुलीषु च ॥
हृदादि मन्त्र-विन्यासः सकलीकरणं मतम् ॥

अवगुण्ठनम् ॥

(मू०) ॐ अव्यक्त वाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रप्रज्वलितद्युते ! ॥
स्वतेजः पुञ्जकेनाशु वेष्टिताभव सर्वतः ॥ ८ ॥

अवगुण्ठन मुद्रा ॥

सव्यहस्तकृतामुष्टिः दीर्घाधोमुखतर्जनी ॥
अवगुंठनमुद्रेयमभितो भ्रामिताभवेत् ॥

भगवति हुं इत्यवगुण्ठ्य ॥ छोटिकयादिग्बंधनं कुर्यात् (चुटकी बजाना)

अमृतीकरणम् ॥

अमृतीकरणं कुर्यात्तयादेशिक—सत्तमः ॥

धेनुमुद्रा अमृतीमुद्रा ॥

अन्योन्याभिमुखोश्लिष्टो कनिष्ठानामिका पुनः ॥
तथा तु तर्जनीमध्या धेनुमुद्रा प्रकीर्तिता ॥

ततो धनुमुद्रया अमृतीकृत्य ॥ परमीकरण—मुद्रया परमीकृत्य ॥ महामुद्रांविरचयन् ॥

महा मुद्रा लक्षणम् ॥

अन्योन्यग्रथिताङ्गुष्ठो प्रसारित कराङ्गुलिः ॥
महामुद्रेयमुदिता परमीकरणां बुधैः ॥

स्वागतमाचरेत् ॥

(मू०) ॐ यस्याःदर्शनमिच्छन्ति देवाः स्वाभीष्टसिद्धये ।
तस्यै ते परमेशायै स्वागतं स्वागतं च ते ॥ ११ ॥
तयाकुर्यादिति प्रोक्तं मन्त्रशास्त्रविशारदैः ॥

स्वागतं कुशलम् ॥

(मू०) ॐ कृतार्थोनुग्रहीतोस्मि सकलं जीवितं मम ॥
आगता देवि ! देवेशि ! सुस्वागतमिदं पुनः ॥ १२ ॥

सुस्वागतमासनमास्यताम् ॥ पाद्यम् ॥

श्यामाकविष्णुक्रान्ता कमलदूर्वायुतं पाद्यार्थं जलम् ॥

(मू०) ॐ यद्भक्तिलेशसंपर्कात्परमानन्दविग्रहम् ॥
तस्यै ते चरणाब्जायै पाद्यं शुद्धाय कल्पये ॥ १३ ॥

इति पाद्यम् ॥ आचमनम् ॥

लवंगजातिकंकोलं प्रक्षिप्याचमनीयके ॥

(मू०) ॐ वेदानामपि वेद्यायै देवानां देवतात्मने ॥
आचामनं कल्पयामीशि ! शुद्धानां शुद्धिहेतवे ॥ १४ ॥
आचमनं स्वधा, अर्घेवस्तूनि ॥
अर्घ्यपात्रे क्षिपेद्दूर्वाः तिलदर्भाग्रसर्षपान् ॥
यवपुष्पाक्षतान् गन्धं तेनार्घ्यमूर्द्ध्नि चाचरेत् ॥

अर्घ्यम् ॥

(मू०) ॐ तापत्रयहरं दिव्यं परमानन्दलक्षणम् ॥
तापत्रयविनिर्मुक्तं तवार्घं कल्पयाम्यहम् स्वाहा ॥१५॥
इत्यर्घम् शिरसि ॥ मधुपकम् ॥
पात्रेतु मधुपर्कस्य दध्याज्यं मधु च क्षिपेत् ॥
(मू०) ॐ सवकालुष्यहीनायै परिपूर्णसुखदायिनि !
मधुपर्कमिदं देवि ! कल्पयामि प्रसीद मे ॥ १६ ॥

इति मुखेदत्वा ॥

इति मधुपर्कम् ॥ आचमनम् ॥

(मू०) ॐ उच्छिष्टोप्यशुचिर्वापि यस्य स्मरणमात्रतः ॥
शुद्धिमाप्नोति तस्यै ते पुनराचमनीयकम् ॥ १७ ॥

सुगन्धित (इत्र) तैलं ॥

(मू०) ॐ स्नेहं गृहाण स्नेहेन लोकेश्वरि ! दयानिधे ! ॥
सर्वलोकेषु शुद्धात्मन् ! ददामि स्नेहमुत्तमम् ॥ १८ ॥

उद्वर्तनम् ॥

(मू०) ॐ हरिद्राद्यैस्तमुद्वर्त्य स्नापयेदुभयं पठन् ॥
नाना सुगन्धि द्रव्यं च चन्दनं रजनीयुतम् ॥
उद्वर्त्तनं मयादत्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ १९ ॥

भगवति चंडिके उद्वर्तनं समर्पयामि नमः

देव अंगुष्ठघर्षणे दोषः ॥ तन्त्रान्तरे

नांगुष्ठैर्मर्दयेद्देवंनाधः पुष्पैस्समर्चयेत् ॥
कुशाग्रैर्न क्षिपेत्तोयं वज्रपातसमं भवेत् ॥ २० ॥

*पञ्चामृत स्नानम् ॥ पञ्चामृत प्रमाण यामले ॥

दुग्धस्नानम् ॥

(मू०) ॐ कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम् ॥
पावनं यज्ञहेतुश्च-पयः स्नानार्थमर्पितम् ॥ २१ ॥

पुनः शुद्धोदकेन संस्नाप्य ॥ दधि स्नानम् ॥

(मू०) ॐ पयसस्तु समुत्पन्नं मधुराम्लं शशिप्रभम् ॥
दध्यानीतं मयादेवि ! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ २२ ॥

पुनः शुद्धोदकेन संस्नाप्य ॥ घृत स्नानम् ॥

(मू०) ॐ नवनीत समुत्पन्नं सर्वसंतोषकारकम् ॥
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ २३ ॥

पुनः शुद्धोदकेन संस्नाप्य ॥ मधु स्नानम् ॥

(मू०) ॐ तरुपुष्पसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु ॥
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ २४ ॥

पुनः शुद्धोदकेन संस्नाप्य ॥ शर्करास्नानम् ॥

(मू०) ॐ इक्षुसारसमुद्भूता शर्करा पुष्टिकारिका ॥
मलापहारिकादिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ २५ ॥

पुनः शुद्धोदकेन संस्नाप्य ॥ एकीकृत्य पंचामृतेन स्नानम् ॥

(मू०) ॐ पयोदधिघृतं चैव मधु च शर्करायुतम् ॥
पंचामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ २६ ॥

पुनः शुद्धोदकेन संस्नाप्य ॥ चन्दन (गन्ध) स्नानम् ॥

(मू०) ॐ मलयाचल संभूतं चन्दनागरु सम्भवम् ॥
चन्दनं देवि ! देवेशि ! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥२७॥

पुनः शुद्धोदकेन संस्नाप्य ॥ सांगस्नानम् ॥

(मू०) ॐ परमानन्दबोधाब्धे निमग्ननिजमूर्तये ॥
सांगोपांगमिदं स्नानं कल्पयाम्यहमीशि ! ते ॥ २८ ॥

घृतं क्षीरं तथा नीरं शर्करामधु संयुतम् ।
पञ्चामृतमिति ख्यातं प्रत्येकन्तु पलम्पलम् ॥

सर्वाङ्ग स्नानं समर्पयामि नमः ॥ अभिषेकम् ॥❀

(मू०) ॐ ततः सहस्रशंखेन शतेन शक्तितोपिवा ॥
गन्धयुक्तोदकैर्देवीमभिषिंचेन् मनुं स्मरन् ॥ २६ ॥

पुनराचमनीयम् ॥

स्नान वस्त्रोपवीतान्ते नैवेद्यान्तेपि तत्स्मृतम् ॥

वस्त्रम् ॥ ‡

(मू०) ॐ माया चित्रपटच्छन्ननिजगुह्योरुतेजसे ॥
निरावरणविज्ञान वासस्ते कल्पयाम्यहम् ॥ ३० ॥

उत्तरीय वस्त्रम् ॥

(मू०) ॐ यमाश्रित्य महामाया जगत्संमोहिनी सदा ॥
तस्यै ते परमेशायै कल्पयाम्युत्तरीयकम् ॥ ३१ ॥

यज्ञोपवीतम् ॥

(मू०) ॐ यस्याः शक्ति त्रयेणेदं संप्रोतमखिलं जगत् ॥
यज्ञसूत्राय तस्यै ते यज्ञसूत्रं प्रकल्पये ॥ ३२ ॥

आचमनम् ॥ आभूषणम् ॥

(मू०) ॐ स्वभाव-सुन्दराङ्गायैनानादेवाश्रयेतव ॥
भूषणानिविचित्राणिकल्पयाम्यमरार्चिते ॥ ३३ ॥

३४ पृष्ठ के अनुसार विशेष पूजन करना

लोकमोहनम् ॥

मूलमंत्रेण पुटितमेकैकं मातृकाक्षरम् ॥
विन्यसेद्देवतांगेषु योगोयं लोकमोहनम् ॥

❀टि०—शिवसूर्यौविहाय महाभिषेकं सर्वत्र शंखेनैव प्रकल्पयेत् । लक्ष्मी सूक्तेन, शक्रादिस्तुत्या, लक्ष्मी सूक्त २० पृ० में है । देवी सूक्तेन वा

‡ पीतं विष्णौ सितं शम्भौ रक्तं विघ्नार्क शक्तिषु ॥
सच्छिद्रंमलिनं जीर्णं त्यजेत्तैलादि दूषितम् ॥
तैलादिदूषिताद्रोगः सच्छिद्राद्धाच्यता भवेत् ॥
जीर्णाद्दरिद्रता कर्तुः मलिनात्कान्तिहीनता ॥

गन्धम् ॥

(मू०) ॐ परमानन्दसौभाग्यपरिपूर्णदिगन्तरे ॥
गृहाणपरमंगन्धंकृपयापरमेश्वरि ! ॥ ३४ ॥

गन्ध मुद्रा ॥

कनिष्ठांगुष्ठयोगेनगंधमुद्रांप्रदर्शयेत् ॥
नाना–परिमल–सौभाग्य–द्रव्याणि च समर्पयामि नमः ॥३६॥

अक्षतानः ॥

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठे ! कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः ॥
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वरि ! ॥ ३७ ॥

पुष्पाणि ॥

तुरीय वन संभूतं नानागुणमनोहरम् ॥
अमन्दसौरभंपुष्पं गृह्यतामिदमुत्तमम् ॥ ३८ ॥
तर्जन्यंगुष्ठयोगेन पुष्पमुद्रां प्रदर्शयेत् ॥

ऋतुकालोद्भवानि पुष्पाणि ॥

सेवन्तिका वकुल चम्पक पाटलाब्जैः ॥
पुन्नाग जाति करवीर रसालपुष्पैः ॥ ३९ ॥
बिल्व प्रवाल तुलसीदल मालतीभिः ॥
त्वां पूजयामि जगदीश्वरि ! मे प्रसीद ॥ ४० ॥
अन्येषां कुसुमानांच यावद्गन्ध त्रिपर्ययम् ॥
पुष्पञ्च पञ्चगव्यञ्च उपचारांस्तथापरान् ॥
घ्रात्वा निवेद्य देवेशि ! नरो नरकमाप्नुयात् ॥
अङ्गसंस्पृष्टमाघ्रातं त्याज्यं पर्युषितं बुधैः ॥
केशकीटोपविद्धानि शीर्णं पर्युषितानि च ॥
स्वयं पतित पुष्पाणि त्यजेदुपहतानि च ॥

देवी पूजने वर्ज्यं पुष्पाणि ॥

शक्तौ दूर्वार्कमन्दारोमालूरंतगरं रवौ ॥
निर्गन्धं केश कीटादि दूषितं चोग्रगंधकम् ॥ ४१ ॥

मलिनंतुच्छ संस्पृष्टमाघ्रातं स्वविकासितम् ॥
अशुद्धभाजनानीतं स्नात्वानीतं च याचितम् ॥ ४२ ॥
शुष्कं पर्युषितं कृष्णं भूमिगं नार्पयेत्सुमम् ॥
पत्रं पुष्पं फलं देवे न प्रदद्यादधोमुखम् ॥ ४३ ॥
पुष्पाञ्जलौ न तद्दोषस्तथा पर्युषितस्य च ॥
पुष्प पूजाविधायेत्थं कुर्यादावरणार्चनम् ॥
अङ्गादि दिक्प हेत्यन्तं ततो धूपादिकंचरेत् ॥ ४४ ॥

दुर्गा पूजन के विशेष पुष्प ३४ पृष्ठ में देखिये ॥

ततः पुष्पांजलिमादाय संविन्मयपरेदेवि ! परामृत रस प्रिये ! ॥ अनुज्ञां चंडिके ! देहि परिवारार्चनाय मे ॥ अनेन प्रार्थयित्वा पुष्पाञ्जलिं निवेद्याज्ञां गृहीत्वा देवी मे परिवार रूपेण पुरतां ध्यात्वा परिवार देवताः पूजयेत् ॥ अत्रसर्वत्रपूज्य-पूजकयोरंतरालेप्राची ॥ तदनुसारेण प्राच्यादिदिशश्च प्रकल्प्य ॥ आदौ वायव्यादीश पर्यन्तं गुरुपंक्ति प्रपूजयेत् ॥ तत्र ॥ ते रक्त माल्याम्बर गंधभूषिताः सालंकृताः पंकजविष्टरस्थाः ॥ सर्वे च सालंवन योगनिष्ठाः प्राप्ताखिलैश्वर्य गुणाष्टकार्थाः ॥इतिध्यात्वा॥ ॐ महादेव्यंबा श्री पादुकां पूजयामिनमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ महादेवानन्दनाथ श्री पादुकां पूजयामिनमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ त्रिपुराम्बा श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ भैरवानन्द नाथ श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ एतेदिव्यौघाः ॥ ॐ ब्रह्मानन्दनाथ श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ पूर्णदेवानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ चलचित्तानन्दनाथ श्रीपादुकांपूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ स्मरदीपानन्द नाथ श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ मायाम्बानन्दनाथ श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ मायावत्यम्बानाथ श्री

पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ।। एते सिद्धौघाः ।। ॐ विमलानन्दनाथ श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ।। ॐ कुशलानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामिनमः ।। ॐ भीमसेनानन्दनाथ श्रीपादुकांपूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ।। ॐ सुधाकरानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ।। ॐ मीनानन्दनाथ श्रीं पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ।। ॐ गोरक्षकानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ।। ॐ भोजदेवानन्दनाथ श्रीं पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ।। ॐ प्रजापत्यानन्दनाथ श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ।। ॐ मूलदेवानन्दनाथ श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामिनमः ।। ॐ रति देवानन्दनाथ श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामिनमः ।। ॐ विघ्नदेवानन्दनाथ श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ।। ॐ हुताशनानन्दनाथ श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ।। ॐ समयानन्दनाथ श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ।। ॐ संतोषानन्द नाथ श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ।। एते मानवौघाः ।। एतान्पुष्पादिभिः संतोष्य गुरुपात्रामृतेन तत्वमुद्रयात्रिः सकृद्वा संतर्प्य ।। मानवौघसमीपे ।। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हसखफ्रें हसक्षमलवरयूं हसखफ्रें-श्री अमुकानन्दनाथ श्री अमुकी देव्यंबा श्रीं पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ।। इति संकेत नाम्ना ।। स्वगुरुनाथ श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ।। ॐ परम गुरुनाथ श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ।। ॐ परापर गुरुनाथ श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ।। ॐ परमेष्ठिगुरुनाथ श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ।। इति गुरु चतुष्टय पूर्ववत्पूजयेत्तर्पयेच्च ।। ततः ।। पुष्पांजलिमादाय गुरुस्तुतिं कुर्यात् ।।

॥ गुरुस्तव ॥

शरच्चन्द्र समाभासं शरत्पंकज लोचनम् ॥ ईषद्धासां शारदीयं पूर्णेन्द सदृशाननम् ॥ दिवास्त्रगम्बरधरं दिव्य गंधानुलेपनम् ॥ सुरक्तशक्ति संयुक्तं वामभाग मनोहरम् ॥ वराभय कराम्भोजं सर्व लक्षण लक्षितम् ॥ सहस्त्रारे महापद्मे गुरु शिरसि चिन्तये ॥

गुप्तसाधन तन्त्रे १ पटले ॥

ॐ ब्रह्म स्थान सरोज मध्य विल सच्छीतांशु पीठे स्थितम् ॥ स्फूर्यत्सूर्य रुचिं वराभयकरंकर्पूर कुन्दो ज्वलम् ॥ श्वेतः स्रुग्वसनान्नुलेपन युतं विद्युद्रुचाकान्तया ॥ संश्लिष्टार्द्ध तनुंप्रसन्नवदनं वन्दे गुरुं सादरं ॥ १ ॥ मोहध्वान्त महावृतां ग्रहवतां चक्षूंषि चोन्मीलयन् ॥ यश्चक्रे रुचिराणि तानिदयया ज्ञानांजनाभ्यंजनैः ॥ व्याप्तं यन्महसा जगत्रयमिदं तत्व प्रबोधोदयं ॥ तं वन्दे शिवरूपिणं निज गुरुं सर्वार्थ सिद्धि प्रदम् ॥ २ ॥ मातंगी भुवनेश्वरी च वगला धूमावती भैरवी ॥ तारा छिन्नशिरोधरा भगवती श्यामा रमा सुन्दरी ॥ दातुं नः प्रभवन्ति वांछित फलं यस्य प्रसादं विना ॥ तं वन्दे शिवरूपिणं निज गुरुं सर्वार्थ सिद्धि प्रदम् ॥ ३ ॥ काशी द्वारवती प्रयाग मथुरायोध्या गयावंतिका ॥ माया (हरिद्वार) पुष्कर कांचिकोत्कलगिरी श्री शैलविंध्यादयः ॥ नैते तारयितुं भवन्ति कुशलाः यस्य प्रसादं विना ॥ तं वन्दे शिवरूपिणं निज गुरुं सर्वार्थसिद्धि प्रदम् ॥ ४ ॥ रेवा सिन्धु सरस्वती त्रिपथगा सूर्यात्मजा कौशिकी ॥ गंगासागर संगमाद्रितनया लोहित्य शोणादयः ॥ नालं प्रोक्तफल प्रदान समये यस्य प्रसादं विना ॥ तं वन्दे शिवरूपिणं निज गुरुं सर्वार्थ सिद्धि प्रदम् ॥ ५ ॥ सत्कीर्तिर्विमला यशः सुकविता पाण्डित्यमारोग्यता ॥ वादे वाक् पटुता

कुले चतुरता गांभीर्यमक्षोभिता ॥ प्रागल्भं प्रभुता गुणे निपुणता यस्य प्रसादाद्भवेत् ॥ तं वन्देशिव रूपिणं निज गुरुं सर्वार्थ सिद्धि प्रदम् ॥ ६ ॥ लोकेशो हरिरंबिकास्मर हरो माता पिताभ्यागता ॥ आचार्यः कुल पूजितो पतिवरो वृद्धस्तथाभिक्षुकः ॥ नैते यस्यतुलां व्रजन्तिकलया कारुण्य वारां निधेः ॥ तं वन्दे शिवरूपिणं निज गुरुं सर्वार्थ सिद्धि प्रदम् ॥ ७ ॥ ध्यानंदैवत पूजनं गुरु तपोदानाग्निहोत्रादयः ॥ पाठोहोम निषेवनं पितृ मखाद्यभ्यागतार्चा बलिम् ॥ एते व्यर्थफला भवन्ति नियतं यस्य प्रसादं विना ॥ तं वन्दे शिवरूपिणं निज गुरुं सर्वार्थसिद्धि प्रदम् ॥ ८ ॥ पूर्वाशाभि मुखीकृताञ्जलि पुटः श्लोकाष्टकं यः पठेत् ॥ पौरश्चर्यविधि विनापि लभते मंत्रस्यसिद्धिं पराम् ॥ नो विघ्नैः परिभूयते प्रतिदिनं प्राप्नोति पूजा फलम् ॥ देहान्ते परमंपदं हि विशते यद्योगिनां दुर्लभम् ॥ ९ ॥ वामकेश्वर तन्त्रे पार्वतीश्वर संवादे गुरूस्तवराज सम्पूर्णः ॥

भगवति ! दुर्गे ! देवि ! ॥ मूलं अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले ! ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं गुरु पंक्ति प्रपूजनम् ॥ अनेन पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥ ततो अग्रेपि ॥

शरत चन्द्र के समान श्वेत कमल के से नेत्र थोड़ा मुसकराते हुए शरत के पूर्ण चन्द्रमा के सदृश मुख दिव्य पुष्प वस्त्र और चन्दन को धारण करे हुए सुन्दर रक्त वर्ण वाम भाग में मनोहर शक्ति को बैठाये हुए वर, अभय को धारण करे सर्व लक्षणों से युक्त ऐसे गुरु को अपने शिर के सहस्र दल कमल में ध्यान करे ॥ १ ॥ सहस्र दल कमल में स्थित चन्द्र पीठ में बैठे हुए जाज्वल्यमान -सूर्य के समान प्रकाशमान वर अभय को धारण करे हुए कपूर, कुन्द के अनुसार प्रभा श्वेत फूलों की माला श्वेत वस्त्र और चन्दन लगाये बिजली के समान क्रांति वाली अर्द्धाङ्गिनी के साथ गुरु की आदर पूर्वक बंदना करता हूँ ॥ २ ॥ मोह रूप अंधकार से ग्रसे हुए मनुष्यों के नेत्रों को खोलकर

अपनी दया से ज्ञान के सुरमें से दया करके जिसने रुचिर बना दिया तथा जिसका तेज तीनों जगत में व्याप्त है तत्व का ज्ञान प्रकट करने वाले सब सिद्धि देने वाले शिव स्वरूप अपने गुरू की वन्दना करता हूँ ॥ ३ ॥ मातंगी, भुवनेश्वरी, बगला, धूमावती, भैरवी, तारा छिन्नमस्ता, भगवती, काली, लक्ष्मी, त्रिपुर सुन्दरी यह सब जिस गुरू के बिना प्रसन्न हुए वांछित सिद्धि नहीं दे सकतीं ऐसे शिव स्वरूप सब सिद्धि देने वाले अपने गुरू की वन्दना करता हूँ ॥ ४ ॥ काशी, द्वारकापुरी, प्रयाग, मथुरा, अयोध्या, गया, अवंतिका (उज्जैन) माया (हरिद्वार) पुष्कर (विष्णु कांची, शिव कांची) उत्कल (उड़ीसा) श्री शैल, विन्ध्याचल यह सब भी शिव समान गुरू की बिना कृपा के तारने को समर्थ नहीं ऐसे सर्व सिद्धि देने वाले निज गुरु की वन्दना करता हूँ ॥ ५ ॥ नर्मदा, सिन्धु, सरस्वती, गंगा, यमुना, कौशिकी, गंगासागर, अद्रितनयालोहित्य, शोणभद्रादि यह सब भी जिसके बिना सिद्धि दान करने के विषय समर्थ नहीं ऐसे शिव स्वरूप सब सिद्धि देने वाले निज गुरू की बन्दना करता हूँ ॥ ६ ॥ ध्यान, देव पूजन, तीव्र तप, अग्निहोत्र, पाठ, हवनादिक, श्राद्ध, अभ्यागतों का विविध पूजन यह सब भी जिसके बिना निष्फल होंय ऐसे शिव स्वरूप सब सिद्धि देने वाले निज गुरू की बन्दना करता हूँ ॥ ७ ॥ इन्द्रादिक, विष्णु, देवी, महादेव, माता, पिता, अभ्यागत, आचार्य, कुल गुरू, पति श्रेष्ठ, विद्यावृद्ध, तपोवृद्ध, भिक्षुक यह सब जिस करुणा के समुद्र की तुलना करने पर जिसकी एक कला के बराबर भी नहीं हो सकते ऐसे सब प्रकार की सिद्धि देने वाले निज गुरू की बन्दना करता हूँ ॥ ८ ॥ सुन्दर कीर्ति, विमल यश, अच्छी कविता, पंडिताई, आरोग्यता, शास्त्रार्थ में वाक् पटुता, कुल में चतुरता, गंभीरता, सहनशक्ति, प्रगल्भता, गुण में निपुणता यह सब गुण जिसके प्रसाद से प्राप्त होते हैं जो सब सिद्धि के देने वाले हैं ऐसे शिव स्वरूप निज गुरू की बन्दना करता हूँ ॥ ९ ॥ पूरब की ओर मुख करके हाथ जोड़ता हुआ इन आठ श्लोकों को जो पढ़ता है वह बिना पुरश्चरण किये हुए मंत्र की सिद्धि को प्राप्त होता है तथा कोई विघ्न न होते हुए पूजा के फल को प्राप्त करता है और अन्त में योगियों को भी दुर्लभ है जो परमपद उसको प्राप्त होता है ॥ १० ॥

वामकेश्वर तन्त्र में कहा गया पार्वती शिव के संवाद में गुरूस्तव घनश्याम गोस्वामी कृत भाषा टीका में संपूर्ण हुआ ॥

यन्त्र पूजनम् ॥

त्रिकोणाद्बहिः अग्नीशासुर वायव्य मध्यदिक्ष्वंग पूजनम् ॥ ॐ ऐं हृदयाय नमो हृच्छक्ति श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः आग्नेये ॥ ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा शिरः शक्ति श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ईशान्ये ॥ ॐ क्लीं शिखायै वषट् शिखाशक्ति श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः नैर्ऋत्याम् ॥ ॐ चामुण्डायै कवचायहुँ कवचशक्ति श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः वायव्याम् ॥ ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय वौषट् नेत्रशक्ति श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः पूर्वे ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फट् अस्त्र शक्ति श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः सर्वदिक्षु ॥ इत्यादि क्रमेण अंगदेवताः पूजयेत्तर्पयेच्च ॥ ततो श्री पात्रामृतेन तत्वमुद्रया त्रिःसकृद्वा तर्पयेत् ॥ ततः पुष्पाञ्जलि मादाय भगवति ! चण्डिके ! देवि ! मू० अभीष्ट सिद्धिं मेदेहि शरणागत वत्सले ! ॥ भक्त्या समर्पयेतुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ इति समर्प्य ॥ ततस्त्रिकोणयन्त्रे ॥ ॐ सरस्वती ब्रह्मभ्यां नमः सरस्वती ब्रह्म श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः पूर्वे ॥ ॐ लक्ष्मी हृषीकेशाभ्यान्नमो लक्ष्मी हृषीकेश श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः नैर्ऋते ॥ ॐ गौरी रुद्राभ्यान्नमः गौरीरुद्र श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः वायव्ये ॥ ॐ सिं सिंहाय नमः सिंह श्री पादुकां पूजयामिनमस्तर्पयामि नमः ॥देव्याः दक्षिणे॥ ॐ मं महिषाय नमः महिष श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः देव्या उत्तरे ॥ ॐ कां कालायनमः काल श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामिनमः दक्षिणे ॥ ॐ मृं मृत्यवेनमः मृत्यु श्री पादुकां पूजयामि नमस्तपयामि नम उत्तरे ॥ ततो श्री पात्रामृतेन तत्वमुद्रया त्रिसकृद्वा तर्पयेत् ॥

पुष्पाञ्जलिमादाय ।। भगवति ! चण्डिके ! देवि मू० अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ! ।। भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम् ।। ततः षट्कोणेषु नन्दजादिशक्तीः पूजयेत् ।। ॐ नं नन्दजायै नमः नन्दजा शक्ति श्री पादुकाँ पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः पूर्वे ।। ॐ रं रक्तदन्तिकायै नमः रक्तदन्तिका शक्ति श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः आग्नेयाम् ।। ॐ शां शाकम्भर्यै नमः शाकम्भरी शक्ति श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः नैर्ऋत्याम् ।। ॐ दुं दुर्गायैनमः दुर्गाशक्ति श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः पश्चिमे ।। ॐ भीं भीमायै नमः भीमा शक्ति श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः वायव्याम् ।। ॐ भ्रां भ्रामर्यै नमः भ्रामरीशक्ति श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ईशान्ये ।। करयोः पुष्पांजलिमादाय ।। भगवति ! चण्डिके ! मू० अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले ! ।। भक्त्या समर्पयेतुभ्यं तृतीयावरणार्चनम् ।। इति यन्त्रे क्षिपेत् ।। ततोष्टपत्रेषु ।। ब्राह्मयादि शक्ति ध्यानम् ।। ॐ ब्राह्मी हंस समारूढ़ां स्वर्णवर्णां चतुर्भुजाम् ।। चतुर्वक्त्रां त्रिनेत्राञ्च ब्रह्म कूर्चं च पङ्कजम् ।। दण्डपद्माक्ष सूत्रञ्च दधतीं चारुहासिनीम् ।। जटाजूट धरान्देवीं भावयेत्साधकोत्तमः ।। १ ।। ॐ आं ब्राह्मी श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः पूर्वे ।। ॐ नारायणीं महादीप्तां श्यामां गरुड़वाहिनीम् ।। नानालंकार संयुक्तां चारुकेशीं चतुर्भुजाम् ।। घण्टां शंखं कपालं च चक्रं संदधतींपराम् ।। मधुमत्तामदोल्लोल दृष्टि सर्वाङ्ग सुन्दरीम् ।। २ ।। ॐ ईं नारायणी श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः

---

१ यन्त्र में महिषायनमः देवी के दक्षिण भाग में तथा सिंह वाम भाग में गलती से छपा है सो पूजन में ठीक कर लीजियेगा ।।

ईशान्यां ॥ ॐ माहेश्वरी वृषारूढां शुक्लांत्रिनयनान्विताम् ॥ कपालं डमरूं चैव वरदाभय शूलकम् ॥ टङ्कं च दधतीं देवी नाना भरणभूषिताम् ॥ ३ ॥ ॐ ऊँ माहेश्वरी श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः उत्तरे ॥ ॐ चामुण्डां चण्डाट्टहासां प्रकटित दशनां भीमवक्त्रां त्रिनेत्राम् ॥ नीलाम्भोज प्रभाभां प्रमुदित वपुषांनारमुण्डालिमालाम् ॥ खड्गं शूलं कपालं नरशिर घटितं खेटकं धारयन्तीम् ॥ प्रेतारूढां प्रमत्तांमधुमदमुदितां भाव्येच्चण्ड रूपाम् ॥ ४ ॥ ॐ ॠं चामुण्डा श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः वायव्ये ॥ ॐ कौमारीं कुङ्कुमाभां च त्रिनेत्रां शिखिसंस्थिताम् ॥ चतुर्भुजां शक्तिपाशमंकुशाभय धारिणीम् ॥ नानालङ्कार संयुक्तां प्रमत्तां परिचिन्तये ॥ ५ ॥ ॐ लं कौमारी श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः पश्चिमे ॥ ॐ अपराजितां च पीताभामक्षसूत्र वरप्रदाम् ॥ कमलंमातुलुङ्गं च दधतीं परिचिन्तये ॥ ६ ॥ ॐ ऐं अपराजिता श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः नैर्ऋत्ये ॥ ॐ वाराहीं धूम्रवर्णाभां वराह वदनांशुभाम् ॥ खेटकं खड्ग मुसलं हलं वेदभुजैर्धृताम् ॥ ७ ॥ ॐ औं वाराही श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः दक्षिणे ॥ ॐ नारसिंही नृसिंहस्य बिभ्रतीं सदृशंवपुः ॥ ८ ॥ ॐ अः नारसिंही श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ आग्नेये ॥ इति संपूज्य ॥ पूर्ववद्योगिनी पात्रामृतेन (विशेषार्घ्यजलेन) त्रिःसकृद्वातर्पयेत् ॥ ततः पुष्पांजलि मादाय भगवति चण्डिके !

जयाख्या विजया पश्चादजिता चापराजिता ॥
नित्या विलासिनी चापि दोग्ध्य्घोरा च मंगला ॥ ५८ ॥
पीठ शक्तय एतास्युः चण्डिका योगपीठतः ॥
आत्मनेहृदयांतोयं मायादिः पीठ मन्त्रकः ॥ ५६ ॥
मन्त्र महोदधिः १ तरंगे ॥

दुर्गार्चन सृतौ,

प्रणवं सर्वत्रादौ

सप्तशती पूजन यन्त्रम्

मन्त्री महोदधि १८ तरङ्ग

श्लोक १४८ तः १५७ प०

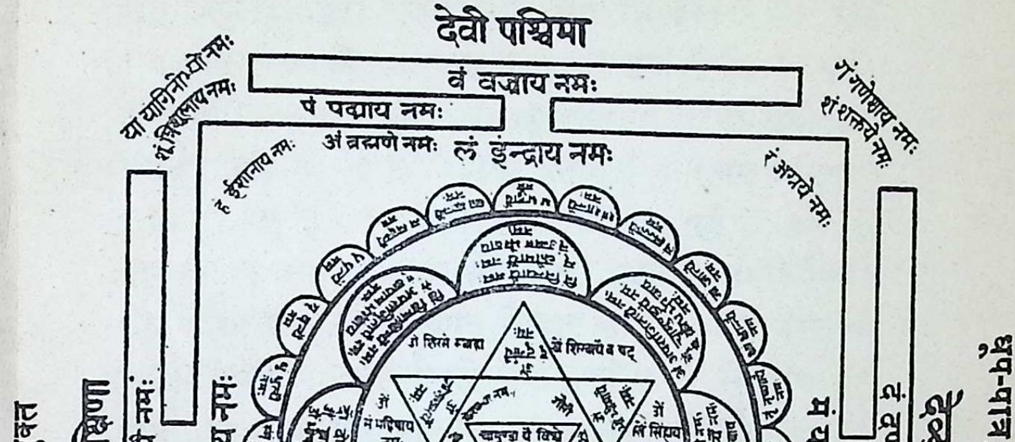
देवी पश्चिमा
वं वज्राय नमः
पं पद्माय नमः
ओं ब्रह्मणे नमः
लं इन्द्राय नमः
यां योगिनीभ्यो नमः
शं त्रिशूलाय नमः
ईं ईशानाय नमः
गं गणेशाय नमः
शं शक्तये नमः
रं अग्नये नमः
मं यमाय नमः
दं दण्डाय नमः
देव्युत्तरा
धूप-पात्र, तैल-दीपक रक्तवर्तियुक्त
सं सोमाय नमः
गं गदायै नमः
देवी दक्षिणा
घृतदीपक श्वेतवर्तियुक्त
वं वरुणाय नमः
ह्रीं अनन्ताय नमः
क्षं निर्ऋतये नमः
चं चक्राय नमः
पां पाशाय नमः
क्षं क्षेत्रपालाय नमः
खं खड्गाय नमः
वं वटुकाय नमः
अं अंकुशाय नमः
यं वायवे नमः
देवी पूर्वा

साधक आसन

नोट—शुद्धाशुद्धि-वाम भाग में ओं मं महिषाय नमः बनाना।

दक्ष भाग में ओं सिं सिंहाय नमः बनाना।

देवि ! मू० अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ! ।। भक्त्या समर्पयेतुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम् ।। इति समर्प्य ।। ततोऽष्ट भैरवान् ध्यायेत्।। दधताञ्जन पुञ्ज नीलवर्णान् रुरु वेताल शूल दण्डान्।। लघु दुन्दुभिः संयुतां त्रिनेत्रां करि हस्तो परि हस्त दण्ड खंडै गजाकृति निवर्तितो गरीयान् ।। भृकुटी संघट्टितैर्ललाट पट्टैः ललितालि कुलाभ कुण्डलग्नान्मुदितान्तः करणान्सुयौवनाड्यान् ।। इति ध्यात्वा ।। ॐ ह्रीं असितांग भैरवाय नम असिताङ्ग भरव श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः पूर्वे ।। ॐ ह्रीं रुरु भैरवाय नमः रुरु भैरव श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ईशान्ये ।। ॐ ह्रीं चण्ड भैरवाय नमः चण्ड भैरव श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः उत्तरे ।। ॐ ह्रीं क्रोध भैरवाय नमः क्रोध भैरव श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः वायव्ये ।। ॐ ह्रीं उन्मत्त भैरवाय नम उन्मत्त भैरव श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः पश्चिमे ।। ॐ ह्रीं कपाल भैरवाय नमः कपाल भैरव श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः नैर्ऋत्ये ।। ॐ ह्रीं भीषण भैरवाय नमः भीषण भैरव श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः दक्षिणे ।। ॐ ह्रीं संहार भैरवाय नमः संहार भैरव श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामिनम आग्नेये।। इति संपूज्य।। पूर्व वद्योगिनी पात्रामृतेन त्रिः सकृद्वातर्पयेत् ।। ततः पुष्पाञ्जलिमादाय।।भगवति चण्डिके ! देवि ! मू० अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ! ।। भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम् ।। इति समर्प्य ।। ततो चतुर्विंशति दले पूर्वादि आग्नेयान्त दलेषु ।। ॐ विं विष्णुमायायै नमः विष्णु माया श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ।। ॐ चें चेतनायै नमः चेतना श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ।। ॐ बुं

बुद्ध्यै नमः बुद्धि श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ निं निद्रायै नमः निद्रा श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॐ क्षुं क्षुधायै नमः क्षुधा श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ छां छायायै नमः छाया श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ शं शक्त्यै नमः शक्ति श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ तृं तृष्णायै नमः तृष्णा श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ क्षां क्षान्त्यै नमः क्षान्ति श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ जां जात्यै नमः जाति श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ लं लज्जायै नमः लज्जा श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ शां शान्त्यै नमः शान्ति श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ श्रं श्रद्धायै नमः श्रद्धा श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ कां कान्त्यै नमः कान्ति श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ लं लक्ष्म्यै नमः लक्ष्मी श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ धृं धृत्यै नमः धृति श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ वृं वृत्त्यै नमः वृत्ति श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ श्रुं श्रुत्यै नमः श्रुति श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ स्मृं स्मृत्यै नमः स्मृति श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ तुं तुष्ट्यै नमः तुष्टि श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ पुं पुष्ट्यै नमः पुष्टि श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ दं दयायै नमः दया श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ मां मात्रेनमः ॥ मातृ श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः॥ ॐ भ्रां भ्रान्त्यै नमः भ्रान्ति श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ इति सम्पूज्य ॥

पूर्ववद्योगिनी पात्रामृतेन त्रिः सकृद्वा तर्पयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय ॥ भगवति चण्डिके ! देवि ! मू० अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ! भक्त्या समर्पयेतुभ्यं षष्ठ आवरणार्चनम् ॥ इति समर्प्य ॥ ततः भूपुरमध्ये प्रसिद्ध पूर्वादिदिक्षुत आरभ्य ॐ[‡] लं इन्द्राय नमः इन्द्र श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः पूर्वे ॥ ॐ रं अग्नये नमः अग्नि श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः आग्नेये ॥ ॐ मं यमाय नमः यम श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः दक्षिणे ॥ ॐ क्षं निर्ऋतये नमः निर्ऋति श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः निर्ऋतौ ॥ ॐ वं वरुणाय नमः वरुण श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः पश्चिमे ॥ ॐ यं वायवे नमः वायु श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः वायव्ये ॥ ॐ सं सोमाय नमः सोम श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः उत्तरे ॥ ॐ हं ईशानाय नमः ईशान श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ईशान्ये ॥ ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः अनन्त श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः निर्ऋति वरुणयोर्मध्ये ॥ ॐ अं ब्रह्मणे नमः ब्रह्म

[‡] ॐ लं इन्द्राय सुराधिपतये सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय सशक्तिकाय देवीपार्षदाय नमः ॥ १ ॥ ॐ रं अग्नयेतेजोधिपतये० ॥ २ ॥ ॐ मं यमाय प्रेताधिपतये० ॥ ३ ॥ ॐ क्षं निर्ऋतये रक्षोधिपतये० ॥ ४ ॥ ॐ वं वरुणाय जलाधिपतये० ॥ ५ ॥ ॐ सं सोमाय नक्षत्राधिपतये० ॥ ६ ॥ ॐ यं वायवे प्राणाधिपतये० ॥ ७ ॥ ॐ हं ईशानाय भूताधिपतये० । ८ ॥ ॐ ह्रीं अनन्ताय नागाधिपतये० ॥ ९ ॥ ॐ अं ब्रह्मणेलोकाधिपतये० ॥ १० ॥

[‡] लोकपाल मुद्रा लोकपालपूजने ॥
पाणि मूले सु संलग्ने शाखाः सर्वाः प्रसारिताः ॥
लोकेशानामियं मुद्रा तेषामर्चासु दर्शयेत् ॥

श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः पूर्व ईशानयोर्मध्ये ॥ इति सम्पूज्य ॥ पूर्व वद्योगिनी पात्रामृतेन तर्पयेत् ॥ ततः पुष्पांजलि मादाय ॥ भगवति चण्डिके ! देवि ! मू० अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले ! भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनम् ॥ इति समर्प्य ॥ पीत शुक्ल सिताकाशविद्युद्रक्त सितासिताः ॥ कोकनद पाटलाभावज्राद्याः परिकीर्तिताः ॥ इति ध्यात्वा भूपुर बाह्ये ॥ ‡ ॐ वं वज्राय नमः वज्र श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः पूर्वे ॥ ॐ शं शक्तये नमः शक्ति श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः आग्नेये ॥ ॐ दं दण्डाय नमः दण्ड श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः दक्षिणे ॥ ॐ खं खड्गाय नमः खड्ग श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः नैर्ऋत्यां ॥ ॐ पां पाशाय नमः पाश श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः पश्चिमे ॥ ॐ अं अंकुशाय नम अंकुश (ध्वजा) श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः वायवे ॥ ॐ गं गदायै नमः गदा श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ईशान्ये ॥ ॐ चं चक्राय नमः चक्र श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः अधः (निर्ऋति वरुणयोर्मध्ये) ॥ ॐ पं पद्मायनमः पद्म श्रीपादुकां पूजयामि यमस्तर्पयामि नमः ऊर्ध्वे (पूर्वईशानयोर्मध्ये) ॥ इति सम्पूज्य ॥ पूर्व वद्योगिनी

---

‡ ॐ वं वज्राय वज्रलाञ्छित मौलये सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय सशक्तिकाय देवीपार्षदायनमः ॥ इसी प्रकार॥ ॐ शं शक्तये शक्तिलाञ्छित मौ० ॥ ॐ दं दण्डाय दण्डलाञ्छित० ॥ ॐ खं खड्गाय खड्गलाञ्छित मौ० ॥ पां पाशाय पाशलाञ्छित० ॥ ॐ अं अङ्कुशाय अंकुश ला० ॥ ॐ गं गदायै गदालां० ॥ ॐ शूं शूलाय शूललां० ॥ ॐ चं चक्राय चक्रलां० ॥ ॐ पं० पद्माय पद्मलां० ॥

पात्रामृतेनतर्पयेत् ॥ ततः पुष्पाञ्जलिमादाय भगवति चण्डिके ! देवि ! मू० अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ! ॥ भक्त्या-समर्पयेतुभ्यं अष्टमावरणार्चनम् ॥ इति समर्प्य ॥ ततो देव्याः दक्षिण भागे ॥ ॐ ब्रं ब्रह्मणेनमः ब्रह्मा श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ विं विष्णवेनमः विष्णु श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ रुं रुद्राय नमः रुद्र श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ततो महालक्ष्मी देव्यस्त्राणि पूजयेत् ॥ तद्यथा ॥ ॐ अं अक्षमालायै नम अक्षमाला श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥१॥ ॐ पं पद्माय नमः पद्म श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥२॥ ॐ सां सायकाय नमः सायक श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥३॥ ॐ खं खड्गाय नमः खड्ग श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥४॥ ॐ वं वज्राय नमः वज्र श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥५॥ ॐ गं गदायै नमः गदा श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः॥६॥ ॐ चं चक्राय नमः चक्र श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः॥७॥ ॐ सुं सुराभाजनाय नमः सुरा भाजन श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥८॥ ॐ शं शंखाय नमः शंख श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥९॥ ॐ शं शक्तये नमः शक्ति श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥१०॥ ॐ पं परशवे नमः परशु श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥११॥ ॐ धं धनुषे नमः धनुः श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥१२॥ ॐ चं चर्माय नमः चर्म श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥१३॥ ॐ दं दण्डाय नमः दण्ड श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥१४॥ ॐ कुं कुण्डिकायै नमः कुण्डिका श्री पादुकां पूजयामि

नमस्तर्पयामि नमः ॥१५॥ ॐ घं घण्टाय नमः घण्टा श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः॥ १६॥ ॐ पां पाशाय नमः पाश श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥१७॥ ॐ शूं शूलाय नमः शूल श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॥१८॥ चक्रस्य "वहिः कोणेषु" वायव्यां, ॐ वं वटुकाय नमः वटुक श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ईशान्ये, ॐ यां योगिनीभ्यो नमः योगिनी श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ निर्ऋतौ, ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः क्षेत्रपाल श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः॥ आग्नेये, ॐ गं गणेशाय नमः गणेश श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ मध्ये, ॐ दुं दुर्गायैनम दुर्गा श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ईशान्यां, विं विष्णवे नमः विष्णु श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ आग्नेयां, ॐ शिं शिवाय नमः शिव श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः॥ वायव्यां, ॐ सूं सूर्याय नमः सूर्य श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः॥ नैर्ऋत्यां, ॐ गं गणेशाय नमः गणेश श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ इति सम्पूज्य पूर्व वद्योगिनी पात्रामृतेन तर्पयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय भगवति चण्डिके ! देवि ! मू० अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ! ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं नवमावरणार्चनम् ॥ इति समर्प्य ॥

इन आयुधों का ध्यान करना वा मुद्रा दिखाना ॥

अनन्तर, अक्षमाला, परशु, गदा, इषु (बाण), कुलिश (वज्र), पद्म, धनुष्, कुण्डिका, दंड, शक्ति, असि, चर्म, घंटा, सुराभाजन, त्रिशूल, पाश, सुदर्शन, हल, शंख, मुसल, चक्र, परिघ, भुशुण्डी, शिरः ॥

मुद्रापद व्युत्पत्तिमाह तन्त्रे ॥
मोदनात्सर्व देवानां द्रावणात्पाप सन्ततेः ॥
तस्मान्मुद्रेति विख्याता मुनिभिस्तन्त्रवेदिभिः ॥
अथ मुद्राः प्रवक्ष्यामि सर्व तन्त्रेषु कल्पिताः ॥
याभिर्विरचिताभिश्च मोदन्ते मन्त्र देवताः ॥

अक्षमाला मुद्रा ॥ १ ॥

अङ्गुष्ठ तर्जन्यग्रेषु ग्रथयित्वाङ्गुलित्रयम् ॥
प्रसारयेदक्षमाला मुद्रेयं परिकीर्तिता ॥१॥

परशु मुद्रा ॥ २ ॥

करे करं तु करयोस्तिर्यक्संयोज्य चांगुलीः ॥
संहताः प्रसृताः कुर्यान्मुद्रेयं परशोर्मता ॥२॥

गदा मुद्रा ॥ ३ ॥

वाममुष्ट्यन्तरेऽङ्गुष्ठे दक्षिणे सरलाङ्गुलीः ॥
वामाङ्गुष्ठः स्पृशेदग्रे योजितः सरलोदरः ॥
अन्योन्याभिमुखौ हस्तौ कृत्वातु ग्रथिताङ्गुलीः ॥
अङ्गुल्यौ मध्यमे भूयः सुलग्ने सुप्रसारिते ॥
गदामुद्रेय मुदिता देव्याः सन्तोष वर्द्धिनी ॥३॥
(भुक्ति मुक्ति प्रदायिनी)

इषु (वाण) मुद्रा ॥ ४ ॥ ज्ञानार्णवे

यथाहस्तगता वाणास्तथा हस्तंकुरुप्रिये ! ॥ वाणमुद्रेयमाख्यातारिपुवर्गनिकृन्तनी ॥ ४ ॥ वामकेश्वरे ॥ दक्षमुष्टिस्तु तर्जन्या दीर्घया वाणमुद्रिका ॥ ४ ॥

कुलिश (वज्र) मुद्रा ॥ ५ ॥

दक्षिण हस्तं मुष्टिं वध्वा क्षेपणाकारं कुर्यात् ॥
(प्रक्षिपेत्) ॥

पद्म मुद्रा ॥ ६ ॥

करौ तु संमुखीकृत्य संहतावुन्नताङ्गुलीः ॥ तलान्तमिलिताङ्गुष्ठौ कुर्यादेषाब्ज मुद्रिका ॥ ६ ॥

धनुर्मुद्रा ॥ ७ ॥

वामस्यमध्यमाग्रन्तु तर्जन्यग्रेणयोजयेत् ॥
अनामिकां कनिष्ठाञ्च तस्यांगुष्ठेन पीड़येत् ॥
दर्शयेद्वामके स्कन्धे धनुर्मुद्रेयमीरिता ॥७॥

अथवा

वाहुमूलंस्पृशेत्तेन वाह्वग्रेणैव साधकः ॥
धनुर्मुद्रा यशः कीर्तिं वल वीर्य विवर्द्धिनी ॥७॥

कुण्डिका मुद्रा ॥ ८ ॥

करद्वयं यदा शुभ्रु कुण्डाकारंभवेत्तदा ॥
कुण्डिकेति महामुद्रा कथिता पूर्वसूरिभिः ॥८॥

दंड मुद्रा ॥ ९ ॥

मुष्टिं कुर्याद्दक्ष हस्तस्य दर्शयेद्दंड मुद्रिका ॥९॥

शक्ति मुद्रा ॥ १० ॥

मुष्टिंकृत्वा कराभ्यां च वामस्योपरिदक्षिणम् ॥ कृत्वाशिरसिसंयोज्या शक्ति (दुर्गा) मुद्रेयमीरिता ॥ १० ॥

मुद्रा विधान वामकेश्वर तन्त्रतः ॥

असि, खड्ग, मुद्रा ॥ ११ ॥

कनिष्ठा नामिके वद्ध्वा स्वांगुष्ठे नैव दक्षतः ॥
श्लिष्ठांगुली तु प्रसृत्ये संहष्टे खड्गमुद्रिका ॥११॥

चर्म, (ढाल) मुद्रा ॥ १२ ॥

वामहस्तं यथा तिर्यक् कृत्वा चैव प्रसार्य च ।
आकुंचितांगुलीः कुर्याच्चर्म्म मुद्रेयमीरिता ॥१२॥

जलज, शंख मुद्रा ।। १३ ।।

वामांगुल्यस्तथा श्लिष्टाः संयुक्तास्युः प्रसारिताः ।।
दक्षिणांगुष्ठ संस्पृष्टाज्ञे यैषा शंख मुद्रिका ।।१३।।

हल मुद्रा ।।१४।।

अधोमुखा वाम मुष्ठि कशा वै दक्षिणे करे ।।
हलमुद्रेति विख्याता कामदा सर्व कर्मसु ।।१४।।

घंटा मुद्रा ।।१५।।

वाममुष्टिं भ्रामयेदिति घंटा मुद्रा ।।१५।।

सुराभाजन (कुम्भ मुद्रा) ।।१६।।

मुष्ठयो रूर्ध्वी कृताङ्गुष्ठे तर्जन्यग्रेषु विन्यसेत् ।।
सर्वरक्षाकरीह्येषा कुम्भमुद्राप्रकीर्त्तिता ।। १६ ।।

शूल मुद्रा ।।१७।।

अंगुष्ठेन कनिष्ठान्तु बद्ध्वा श्लिष्टां गुलित्रयम् ।।
प्रसारयेत्त्रिशूलाख्या मुद्रैषा परिकीर्तिता ।। १७ ।।

पाश मुद्रा ।।१८।।

वाम मुष्टिस्थ तर्जन्यादक्षमुष्टिस्थतर्जनीम् ।। संयोज्याङ्गुष्ठकाग्राभ्यां तर्जन्यग्रेस्वकेक्षिपेत् ।। एषा वा पाशमुद्रेतिविद्विद्भिः परिकीर्तिता ।। १८ ।।

चक्र मुद्रा ।।१८।।

हस्तौतु संमुखौ कृत्वा सुलग्नौ सुप्रसारितौ ।।
कनिष्ठाङ्गुष्ठकौ लग्नौ मुद्रैषा चक्र संज्ञिता ।।१८।।

मुसल मुद्रा ।।१९।।

मुष्टिंकृत्वातुहस्ताभ्यां वामस्योपरिदक्षिणम् ।।
कुर्यान्मुसलमुद्रेयं सर्व विघ्न विनाशिनी ।। १९ ।।

शिरः मुद्रा ।।२०।।

अन्तराङ्गुष्ठ मुष्टिन्तु कृत्वा वाम करस्य च ।।
मध्यमाग्रे दक्षिणस्य तथा लम्ब्य प्रयत्नतः ।।

मध्यमेनाथ तर्जन्यामङ्गुष्ठाग्रेण योजयेत् ॥
दक्षिणं योजयेत्पाणिं वाममुष्टौ तु साधकः ॥
दर्शयेद्दक्षिणे भागे मुण्ड मुद्रेयमुच्यते ॥ २० ॥

भुशुण्डी मुद्रा (गोफन गिलोल इति लोके)

भुशुण्डी—अस्त्र—विशेषः—महाभारते अस्य प्रयोगो बभूव इदंहि चर्म निर्मित भवति मध्ये गोलाकारो भवति उभयतः चर्म निर्मित रज्जूर्भवति मध्ये प्रस्तरादिकं निधाय हस्तेन भ्रामयित्वा शत्रूपरि निक्षिप्यते ॥

परिघ मुद्रा ॥

परिघा = सं० पु० परिहन्यतेऽनेति परिहन्-अप् ततोघादेशश्च परीघ ॥ ३ ॥ २ ॥ ३ ४ ॥ लौहमय लगुड लोहांगी, गँड़ासा धनुर्वेद में लिखा है यह अस्त्र सुगोल और लंबाई में ३॥ हाथ का होता था ।

गन्धम् ॥

पुनःकलशस्थ जलं नैवेद्यादि देव्यै निवेद्य पुनः संपूज्य ॥ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ब्रह्मा विष्णु रुद्रान्त्रिः सम्पूज्य॥ मूलं परमानन्द सौरभ्य परिपूर्ण दिगन्तर ॥ गृहाण परमंगंधं कृपया परमेश्वरि ! साङ्गायै सायुधायै सवाहनायै सपरिवारायै सशक्तिकायै ब्रह्म विष्णु रुद्रसहितायै चण्डिकायै गन्धं विलेपयामि नमः ॥ कनिष्ठिकया गंधं दत्वा ॥ कनिष्ठांगुष्ठयोगेन गन्धमुद्रां प्रदर्शयेत् ॥ ततः पुष्पाण्यादाय ॥ मू० ॐ तुरीय वन संभूतं नाना गुण मनोहरम् ॥ अमन्द सौरभं पुष्पं गृहाण इदमुत्तमम् ॥ ॐ सांगायै० ब्रह्मा विष्णु रुद्र सहितायै चण्डिकायै पुष्पाणि वौषट् ॥ इति तर्जन्यंगुष्ठाभ्यां वारत्रयं पुष्पादि दत्वा॥ अधोमुख तर्जन्यंगुष्ठ योगेन पुष्पमुद्रां प्रदर्शयेत् ॥

धूपम् ॥

धूपपात्रं फडिति प्रोक्ष्य नमः इति पुष्पं दत्वा वाम तर्जन्या-

स्पृशन् मूल मुच्चार्य अभिमन्त्र्य ॥ ॐ जयध्वनि मंत्र मातः स्वाहा इति मन्त्रेण घण्टां संपूज्य वामतर्जन्या संस्पृश्य ॥ मू० ॐ वनस्पति रसोपेतो गन्धाढ्यः सुमनोहरः ॥ आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम्॥मूलं सांगायै सायुधायै सवाहनायै सपरिवारायै सशक्तिकायै ब्रह्मा विष्णु रुद्र सहितायै भगवति चण्डिके! ※धूपमाघ्रापयामि नमः ॥ वाम हस्तेन घंटांवादयन् दक्षतर्जन्यगुंष्ठ योगेन धूप मुद्रां प्रदर्शयन् देवतागुणान्कीर्तयन् नाभि देशतो धूपयेत् ॥ शंखोदकं त्यजेत् ॥

दीपम् ॥

पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ एवं दीपदानम् ॥ वाम मध्यमयास्पर्शो मूलश्लोकस्य कीर्तनम्॥ मू० ॐ सुप्रकाशो महादीपः सर्वतस्तिमिरापहः ॥ सबाह्याभ्यन्तरं ज्योतिर्दीपोयं प्रति गृह्यताम् ॥ ॐ सांगायै० सायुधायै सवा० सश० सपरि० ब्र० वि० रु० स० दुर्गायै दीपं दर्शयामि नमः ॥ मध्यमांगुष्ठयोगेन दीपमुद्रां प्रदर्श्यदीपं नेत्र देशतः दर्शयेत् ॥ भूयः पक्षेतु वर्तीनां विषमा वर्तिका मताः ॥ सितवर्ति युतो दक्षे वामांगे रक्त वर्तिका ॥ सितवर्ति युतो तैल दीपोऽपि दक्षे रक्तवर्ति युतो घृत दीपोपिवामे अन्यत्सर्वं धूपवत् नैवेद्यं समर्पयेत् ॥

※ देव्याः प्रीतिकरी धूपम् ॥

चन्दना गुरु कस्तूरी श्वेत सर्षप चन्द्रकैः ॥ मध्वाज्य गुग्गुलान्वग्र यष्टी मधुसितायुतैः ॥ सदेवदारु निर्यासैः धूपं देव्या सुतोषदम् ॥ चन्द्रकम्—कर्पूरम् ॥ मधु—क्षौद्रम् (शहत) आज्यं—गव्यं (गायका घी) अग्न्यग्रं—काश्मीरजं केशरम् (केशर) ॥ यष्टी—मधु (मुलैटी) सितामिश्री ॥ देवदारु निर्यासः—लोहवान ॥ सब समान भाग ॥ वा यथा रुचि न्यूनाधिक ॥

नैवेद्यम् ॥ †

स्वर्णादि पात्रे नैवेद्यं धृत्वार्पणं कुर्यात् ॥
नैवेद्यं "फट्" मन्त्र जलेन संप्रोक्षयेत् ॥

ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे इति मंत्र जलेन सदर्भ शंख-(विशेषार्घ) स्थ जलेन सप्तधा प्रोक्ष्य ततश्चक्र❋ मुद्रयाभिरक्ष्य वायु (यं) बीजेन द्वादश वाराभि मंत्रित जलेन हविः प्रोक्ष्य ॥ तदुत्थ वायुना तद्दोषं संशोष्य ॥ दक्षिण करतलेऽग्नि (रं) बीजं विचिन्त्य तत्पृष्ठे वाम करतलं कृत्वा नैवेद्यं प्रदर्श्य तदुत्थाग्निना तद्दोषं दग्ध्वा वाम करतलेऽमृत (वं) बीजं विचिन्त्य तत्पृष्ठ लग्नं दक्षिण करतलं कृत्वा नैवेद्यं प्रदर्श्य तदुत्थामृत धारया प्लावितं विभाव्य मूल मन्त्रित जलेन संप्रोक्ष्य तदखिलममृतात्मकं ध्यात्वा तत्स्पृष्ट्वा मूल मन्त्रमष्टधा जप्त्वा धेनु❋ मुद्रां-प्रदर्श्य जल गन्ध ‡ पुष्पैरभ्यर्च्य देवतायै पुष्पांजलिं समर्प्य तन्मुखात्तेजो गतमिति ध्यात्वा वामाङ्गुष्ठेन मुख्य नैवेद्य पात्रं स्पृष्ट्वा दक्षिण करेण जलं गृहीत्वा ॥ मूल मन्त्र स्वाहान्तम् द्वादशधा पठित्वा ॐ सत्पात्र सिद्धं सुहविर्विधानेकभक्षणम्

---

† आह्वानाद्युपचारेषु प्रत्येकं पुष्पपाथसी ॥
दत्वा प्रक्षाल्य च करमुपचारान्तरञ्चरेत् ॥
स्नाने धूपे च नैवेद्ये दीपे वस्त्रे च भूषणे ॥
घण्टानादं प्रकुर्वीत तथा नीराजनेपि च ॥ १ ॥
विधानपारिजात धृतवाक्यम् ॥

❋ चक्र मुद्रा—हस्तौ तु सम्मुखौ कृत्वा संलग्नौ सुप्रसारितौ ॥ कनिष्ठांगुष्ठकौ लग्नौ मुद्रैषा चक्र संज्ञिता ॥

❋ २६ पेज में धेनुमुद्रा । ‡ सत्यन्त्वर्तेन परिषिञ्चामीति प्रातः ऋतंत्स्वा सत्येन परिषिञ्चामीति सायम् ॥

निवेदयामि देवेशि ! सानुगायै गृहाणतत् ॥ जवनि कां कृत्वा पद्यद्वयं पठेत् ॥ ॐ ब्रह्मेशाद्यैः परित उरुभिः सूपविष्टैः समेतैर्लक्ष्म्यासिंजद्वलय करया सादरं वीज्यमानः ॥ नर्मच्छेली प्रहसन् मुखैर्व्याप्नु वन्पंक्ति मध्यम्, भुक्त्वा पात्रे कनक घटिते षड्रसं चण्डिके च ॥ १ ॥ शाली भक्तं सुभक्तं शिशिर करशितं पायसापूप सूपं, लेह्यं पेयं च चोष्यंसितममृतफलंद्वारिकाद्यं सुखाद्यम् ॥ आज्यं प्राज्यं सभोज्यं नयनरुचिकरंराजिकैला मरीचं, स्वादीयः शाकराजी परिकरममृताहार जोषं जुषस्व ॥ २ ॥ मू० सां० सा० सवा० सप० सश० ब्र० वि० रु० सहितायै दुर्गायै नैवेद्यं समर्पयामि नमः इति सपुष्पाभ्यां ॥ हस्ताभ्यामंगुष्ठानामिकाभ्यां नैवेद्य पात्रं त्रिःप्रोद्धरन् ॥ निवेदयामि भवतीदं जुषाणेदं हविः शिवे ॥ ॐ अमृतोपस्तरण मसि स्वाहेति देविकरे जलं समपयेत् ॥ वामकरेण विकचोत्पल सदृशीं ग्रासमुद्रां प्रदर्श्य दक्षिण करेण समन्त्राः प्राणायस्वाहा अंगुष्ठानामिका कनिष्ठाभिः॥ ॐ अपानायस्वाहा अंगुष्ठ तर्जनी मध्यमाभिः ॥ ॐ उदानायस्वाहा अंगुष्ठ मध्यमानामिकाभिः ॥ ॐ व्यानायस्वाहा अंगुष्ठतर्जनी मध्यमानामिकाभिः ॥ ॐ समानायस्वाहा अंगुष्ठादिसर्वांगुलिभिः ॥ ततो आपोशानं दद्यात् ॥

अमृतोपिधान मसिस्वाहा ॥

मूलं—ॐ समस्त देव देवेशि ! सर्व तृप्तिकरं परम् ॥
अखंडानन्द सम्पूर्णं गृहाणजल मुत्तमम् ॥

इत्यापोशानं (आचमनम्) दत्वा गतसारं नैवेद्यं नैर्ऋत्यां दिशि संस्थाप्य तदुच्छिष्टभागं उच्छिष्टचाण्डालिन्यै समर्प्य ॥ कर्पूरादि नाना सुगंधमिश्रित ताम्बूलमानीय ॥ फट् मन्त्रेण संप्रोक्ष्य ॥ ॐ वनिस्पति देवताय ताम्बूलाय नम इति संपूज्य॥

मूलं—ॐ नारिकेरंसकर्पूरं पूगभागैरलं कृतम् ॥
नागवल्ली दलोपेतं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥

सांगायै सायुधायै सवाहनायै सपरिवारायै सशक्तिकायै ब्रह्मा वि० रु० सहितायै दुर्गायै एतत्तेताम्बूलं समर्पयामि नमः ॥ मूलेन दर्पणं, छत्रं, चामरं, नृत्यं, गीतादिकं समर्प्य सुप्रसन्नां चण्डिकादेवीं विभाव्य ॥ यथा ॥

बुद्धिः सवासनाक्लृप्तदर्पणंमंगलानिच ॥
मनोवृत्ति र्विचित्राते नृत्य रूपेण कल्पिता ॥ १ ॥
अनयोगीतरूपेणशब्दवाद्यप्रभेदतः ॥
छत्राणि नवपद्मानि कल्पितानि मया शिवे ! ॥ २ ॥
सुषुम्णा ध्वजरूपेण प्राणाद्याचामरा मता ॥
अहङ्कारो गजत्वेन वेगः क्लृप्तोरथात्मना ॥ ३ ॥
इन्द्रियाण्यश्वरूपाणि शब्दादी रथवर्त्मना ॥
मनः प्रग्रहरूपेण बुद्धिः सारथि रूपतः ॥४॥
सर्वमन्यत्तथा क्लृप्तं तवोपकरणात्मना ॥

मूलेन पुष्पाञ्जलिंदत्वा त्रिःसन्तर्प्य संपूज्य नीराजनम् कुर्यात् ॥

नीराजनम् ॥

रं इति प्रज्वाल्य श्रीं ह्रीं ग्लूं स्लूं म्लूं प्लूं न्लूं ह्रीं श्रीं इति गंध पुष्पाभ्यामारार्त्रिकं सम्पूज्य चक्रमुद्रां प्रदर्श्यास्त्रेण प्रोक्ष्य घंटा वादन पूर्वकं मूलेन आरार्त्रिक मंत्रेण वा नीराजयेत् ॥ नीराजन स्तोत्रं ६१, ६२, ६३ पृष्ठे लिखितम् ॥ प्रदक्षिणा संख्या ६५ पृष्ठे उक्तम् ॥ नीराजन विधिः ॥ देवी पुराण उक्तो यथा ॥

तिथितत्वेपि

यवपिष्ट प्रदीपाद्यैश्चूताश्वत्थादि पल्लवैः ॥ औषधीभिश्च मेध्याभिः सर्व बीजैर्यवादिभिः ॥१॥ नवम्यां पर्व कालेतु यात्रा

कालेविशेषतः।। यः कुर्याच्छ्रद्धया वीर ! देव्या नीराजनं नरः।। ।।२।। शंखभेर्यादि निनदैर्जयशब्दश्चपुष्कलैः ।। यावतोदिवसान् वीर ! देव्या नीराजनंकृतम्।।३।। तावत्कल्पसहस्राणि दुर्गालोके महीयते यस्तु कुर्यात्प्रदीपेन सूर्यलोके महीयते ।।४।।

कालोत्तर तन्त्रे पञ्चनीराजनानि यथा ।।

यश्च नीराजनंकुर्यात्प्रथमंदीपमालया।। द्वितीयं सोदकाब्जेन तृती धौतवाससा ।।५।। चूताश्वत्थादि पत्रैश्च चतुर्थं परिकीर्तितम् ।। पञ्चमं प्रणिपातेन साष्टाङ्गेन यथा विधिः ।।६।।

पद्मोत्तर खंडे ।।

तस्य वर्तिकादि प्रमाणं यथा ।। कुंकुमागुरु कर्पूर घृत चन्दन निर्मिताः ।। १ ।। वर्तिकाः सप्त वा पञ्च कृत्वावन्दापनीयकम् ।। यः कुर्यात्सप्तदीपेन शंख घंटादिवाद्यकैः ।। २ ।। देव्याः पञ्चप्रदीपेन बहुशोभक्ति तत्परः ।।

हरिभक्ति विलासे ।।

ततश्च मूलमन्त्रेण दत्वा पुष्पाञ्जलित्रयम् ।।
महानीराजनं कुर्यान्महावाद्य जयस्वनैः ।। १ ।।
प्रज्वालयेत्तदर्थं च कर्पूरेण घृतेन वा ।।
आरार्त्रिकं शुभे पात्रे विषमानेक वर्तिकाम् ।। २ ।।

नीराजने नियमाः ।।

आदौ चतुष्पादतले च देव्याः ।। द्वौ नाभिदेशेमुखमंडलैकम् ।। सर्वेषु चांगेषु च सप्तवारानारार्त्रिकं भक्त जनस्तु कुर्यात् ।। १ ।। ४ बार पैरों में नाभिदेश में २ बार मुखमंडल पर १ बार।। सब अंगों में ७ बार इस प्रकार आरती करना चाहिये ।।

बहुवर्ति समायुक्तं ज्वलन्तं चण्डिकोपरि ।।
कुर्यादारार्त्रिकं यस्तु कल्पकोटि वसेद्दिवि ।। १ ।।

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं यत्कृतं चण्डिकास्तवम् ॥
सर्वं सम्पूर्णतामेति कृते नीराजने शिवे ! ॥ २ ॥

विष्णु धर्म्मोत्तरे ॥

धूपं चारार्त्रिकं पश्येत्कराभ्यां च प्रवन्दते ॥
कुलकोटि समुद्धृत्य यातिदेव्याः परम्पदम् ॥ ३ ॥

अथ काम्यप्रयोगेषु शुभाशुभ ज्ञानार्थं शिवाबलि विधानमाह ॥

ततः सायंसमये देवतां संपूज्य आमिषान्न यथोपपन्न द्रव्य जल सहित पक्वान्नं पूजा सामग्रीश्च श्मशानादि निर्जने नीत्वा उदङ्मुखोभूत्वा प्राणानायम्य षडङ्ग न्यासं कृत्वार्घं संस्थाप्य अर्घोदकं गृहीत्वा ॥ अद्येहेत्यादि अमुक गोत्रोमुकराशि अमुक-शर्माहं श्रीमच्चण्डिकाप्रीतये शिवायाः पूजनं बलिदानं च करिष्ये ॥ इति संकल्पः ॥ मुक्त चिकुर उत्थाय कालि कालि शिवाआहूय इष्ट देवतात्वेन भावयेत् ॥ ॐ शिवायै नम इति गंधाक्षतैः सम्पूज्य ॥ विन्दु त्रिकोण वृत्त चतुरस्र मण्डले बलि पात्रं निधाय अंगुष्ठानामिकाभ्यां धृत्वा ॥ ॐ गृह्ण देवि ! महा भागे शिवे ! कालाग्निरूपिणि ! ॥ शुभाशुभ फलं व्यक्तं ब्रूहि गृह्ण बलिं त्विदम् ॥ इत्युत्सृजेत् ॥ तद्देशात्किंचिदुपसृत्य तासु भोक्त्रीषु तिष्ठन्तीषु पुष्प चन्दनसहित पुष्पाञ्जलिमादायोत्थाय स्वेष्टदेवताधिया प्रणम्य स्तोत्रं पठेत् ॥ ॐ शिवारूप धरे देवि ! कालि ! कालि ! नमोऽस्तुते ॥ उल्कामुखि ! ज्वलज्जिह्वे घोर दंष्ट्रे करालिनि! ॥ श्मशानवासिनि प्रेतेशवमांसप्रियेऽनघे !॥ श्मशान चारिणि शिवे फेरोजंबुक रूपणि ॥२॥ नमोस्तुते महा-माये ! जगत्तारिणि ! कालिके ! मातंगी कुक्कुटे रौद्रि कालि ! कालि ! नमोस्तुते ॥३॥ सर्वसिद्धिप्रदे भीमे भयंकरि ! भया-पहे ! ॥ प्रसन्ना भवदेवेशि ! मम भक्तस्यकालिके ! ॥४॥ संसार-

तारिणि ! जये ! जय सर्वशुभंकरि ॥ विस्रस्तचिकुरे चंडे चामुंडे ! मुण्डमालिनि ! ॥ ५ ॥ संसारकारिणि ! शिवे सव सिद्धिं प्रयच्छमे ॥ दुर्गे ! किराति शवरि प्रेतासनगतेऽनघे ॥६॥ अनुग्रहं कुरुसदा कृपया मां विलोकय ॥ राज्यं प्रयच्छविकटे वित्तमायुः स्त्रियंशिवम् ॥७॥ शिवाबलि विधानेन प्रसन्नाभव फेरवे ॥ नमस्तेस्तु नमस्तेस्तु नमस्तेस्तु नमोनमः ॥८॥ इति ॥ ततस्तुत्वा तदुच्छिष्टं यथा काक खराश्च प्रभृतयो दुष्ट जनाभुंजीरन् तथारात्रावेवभूमौ निखन्य गृहमागत्य पुनर्देवतायै चंदन पुष्पादीनि निवेद्य विहितान्नजलं च द्वात्रिंशद्वारमभिमंत्र्य देवतायै निवेद्य भोजनपानादिकंसुखेनकुर्यादिति शिवाबलि समाप्तं ॥

जप योगिनी मालामाह यामले ॥

विधि यज्ञाज्जपो यज्ञो विशिष्टोदशभिर्गुणैः ॥ उपांशुः स्याच्छत गुणः सहस्रो मानसः स्मृतः ॥ मुक्ताफलामलमणिस्फीतवैदूर्य सम्भवाम् ॥ पुत्रजीवक पद्माक्ष रुद्राक्ष स्फटिकोद्भवाम् ॥ प्रवाल पद्मरागादि रक्तचन्दन निर्मिताम् ॥ कुंकुमागुरु कर्पूर मृगनाभि विभाविताम् ॥ अक्षमालां समाहृत्य चण्डिकाकृत विग्रहः ॥ अथमुक्ताफलमयी साम्राज्य फलदायिनी ॥ यथा मुक्ताफलमयी तथा स्फटिक निर्मिता ॥ रुद्राक्ष मालिका मोक्षे भवेत्सर्व समृद्धिदा ॥ प्रवाल मालिकावश्ये सर्वकार्यार्थ साधिका । माणिक्यमाला विमला साम्राज्य फलदायिनी ॥ पुत्रजीवक मालातु लक्ष्मी विद्या प्रदायिनी ॥ पद्माक्ष मालया लक्ष्मीर्जायते च महद्यशः ॥ रक्तचन्दन माला तु भोगदा वश्यदा भवेत् ॥ अक्षमालापदेनाकारादिक्षकारान्त मातृकामालोच्यते ॥ अक्षमालां समाश्रित्य मातृका वर्णरूपिणीमिति ॥

इदानीं नवलक्ष जपात्मकं पुरश्चरण माह ज्ञानार्णवे ॥

लक्षमेकं जपेद्देवि महापापैः प्रमुच्यते ॥ लक्षद्वयेन पापानि सप्त जन्म कृतान्यपि ॥१॥ नाशयेच्चण्डिकादेवी साधकस्य न संशयः ॥ जप्त्वा लक्षत्रयं मन्त्री यन्त्रितो मन्त्र विग्रहः ॥२॥ पातकं नाशयेदाशु यदि जन्म सहस्रकम् ॥ जप्त्वा विद्यां चतुर्लक्षं महावागीश्वरो भवेत् ॥३॥ पञ्च लक्षाद्दरिद्रोऽपि साक्षाद्वैश्रवणो भवेत् ॥ जप्त्वा षड् लक्षमेतस्या महाविद्या धनेश्वरः ॥४॥ जप्त्वैव सप्त लक्षाणि खेचरी मेलको भवेत् ॥ अष्ट लक्ष प्रमाणञ्च जप्त्वा विद्यां महेश्वरि ॥५॥ अणिमाद्यष्ट सिद्धीशो जायते देव पूजितः ॥ नव लक्ष प्रमाणं तु जप्त्वा वै नव चण्डिकाम् ॥६॥ विधिवज्जायते मन्त्री रुद्रमूर्तिरिवापरः ॥ कर्ता, हर्ता, स्वयं गौरि लोकेऽप्रतिहत प्रभः ॥७॥ प्रसन्नो मुदितो धीरः स्वच्छन्दगतिरीरितः ॥

दुर्गा शब्दार्थः ॥

दुर्गेत्वं भववारिणि प्रणमतां सर्वार्ति संहारिणि ॥
दुर्गेहं भववारिणि प्रपतितः सीदामि सर्वात्मना ॥
मातस्त्वं भववारिणि प्रतिरुधो नेत्राणि कालोऽस्तिके ॥
मातर्मे भववारिणि प्रकुरुते शार्दूल विक्रीडितम् ॥

दुर्गा दैत्ये महाविघ्ने भववन्धे कुकर्मणि ॥ शोके दुःखे च नरके यमदण्डे च जन्मनि ॥१॥ महाभये च रोगे च शब्दोऽयं हन्तृवाचकः ॥२॥ एतान्हन्त्येव या देवी सादुर्गा परिकीर्तिता ॥ अपिच ॥ दैत्य नाशार्थ वचनो दकारः परिकीर्तितः ॥ उकारो विघ्ननाशस्य वाचको वेदसम्मतः ॥२॥ रेफो रोगघ्न वचनो गश्च पापघ्नवाचकः ॥ भयशत्रुघ्नवचनश्चाकारः परिकीर्तितः ॥३॥ स्मृत्युक्तिश्च श्रवणाद्यस्या अंतेनश्यन्ति निश्चित ॥म् ततो दुर्गा हरेः शक्तिर्हरिणा परिकीर्तिता ॥४॥ दुर्गेति दैत्यशमनो प्याकारो नाश वाचकः ॥ दुर्गं नाशयति या नित्यं

सा दुर्गा प्रकीर्तिता ॥५॥ विपत्ति वाचको दुर्गश्चाकारो नाशवाचकः ॥ तंननाश पुरा तेन बुधैर्दुर्गा प्रकीर्तिता ॥६॥ अस्याः स्वरूपं नन्दं प्रति श्रीकृष्ण वाक्यम् ॥ आद्यानारायणी शक्तिः सृष्टिस्थित्यन्त कारिणी ॥ करोमि च यया सृष्टिंयया ब्रह्मादि देवताः ॥७॥ यया जयति विश्वं च यया सृष्टिः प्रजायते ॥ यया विना जगन्नास्ति मयादत्ताशिवाय सा ॥८॥ दया निद्रा च क्षुत्तृप्तिस्तृष्णा श्रद्धा क्षमा धृतिः ॥ तुष्टिः पुष्टिस्तथाशान्तिर्लज्जाधि देवता हि सा ॥९॥ वैकुण्ठे सा महासाध्वी गोलोके राधिका सती ॥ मर्त्येलक्ष्मीश्च क्षीरोदे दक्षकन्या सती च या ॥१०॥ सा दुर्गामेनका कन्या दैन्यदुर्गति नाशिनी ॥ स्वर्गे लक्ष्मीश्च दुर्गा सा शक्रादीनां गृहे गहे ॥११॥ सा वाणी सा चसावित्री विप्राधिष्ठातृ देवता ॥ वह्नौ सा दाहिका शक्तिः प्रभाशक्तिश्च भास्करे ॥१२॥ शोभा शक्तिः पूर्णचन्द्रे जले शक्तिश्चशीतला ॥ शस्यप्रभृति शक्तिश्च धारणा च धरासु सा ॥१३॥ ब्राह्मण्य शक्तिर्विप्रेषु देव शक्तिः सुरेषु सा ॥ तपस्विनां तपस्या सा गृहिणां गृह वेदिता ॥१४॥ मुक्ति शक्तिश्च मुक्तानां माया सांसारिकस्य सा ॥ मद्भक्तानां भक्ति शक्तिर्मयि भक्ति प्रदा सदा ॥१५॥ नृपाणां राजलक्ष्मीश्च वणिजां लभ्यरूपिणी ॥ पारे संसार सिन्धूनां त्रयी दुस्तरतारिणी ॥१६॥ सत्सुसद्बुद्धिरूपाच मेधाशक्तिः स्वरूपिणी ॥ व्याख्या शक्तिः श्रुतौ शास्त्रेदातृशक्तिश्चदातृषु ॥१७॥ क्षत्रादीनां विप्रभक्तिः पतिभक्तिः सतीषु च ॥ एवं रूपा च याशक्तिर्मया दत्ता शिवाय सा ॥१८॥ अपिच, शङ्करं प्रति पार्वती वाक्यम् ॥ वैकुण्ठेहं महालक्ष्मीर्गोलोकेराधिका स्वयम् ॥ शिवाहं शिव लोकेऽपि ब्रह्मलोके सरस्वती ॥१९॥ अहंनिहत्यदैत्यांश्च दक्ष कन्या सती पुरा ॥

त्वन्निन्दया तनुं त्यक्त्वा सा चाहं शैलकन्यका ॥२०॥ रक्तबीजस्य युद्धे च काली च मूर्तिभेदतः ॥ सावित्री देवमाता हं सीता जनक कन्यका ॥२१॥ रुक्मिणी द्वारवत्यां च भारते भीष्मकन्यका ॥ सुदाम्नोशापतो दैवात् वृषभानु सुताधुना ॥२२॥ धर्मपत्नी च कृष्णस्य पुण्ये वृन्दावने वने ॥ कृष्णां प्रति पार्वती वाक्यम् ॥ परिपूर्णतमाहं च तव वक्षस्थले स्थिता ॥ तवाज्ञया महालक्ष्मीरहं वैकुण्ठ वासिनी ॥२३॥ सरस्वती च तत्रैव वामपार्श्वे हरेरपि ॥ तवाहं मनसाजाता सिन्धुकन्या तवाज्ञया ॥२४॥ सावित्री वेदमाताहं कलया विधि सन्निधौ ॥ तेजःसु सर्व देवानां पुरासत्ये तवाज्ञया ॥२५॥ अधिष्ठानं कृतं तत्र धृतं दिव्यं शरीरकम् ॥ शुम्भादयश्च दैत्याश्च निहताश्चावलीया ॥२६॥ दुर्गं निहत्य दुर्गाहं त्रिपुरा त्रिपुरे वधे ॥ निहत्य रक्तबीजं च रक्तबीज विनाशिनी ॥२७॥ तवाज्ञया दक्ष कन्या सती सत्यस्वरूपिणी ॥ योगेनत्यक्त्वादे च शैलजाहं तवाज्ञया ॥२८॥ त्वयादत्ताशंकराय गोलोके रासमण्डले ॥ विष्णुभक्ति रहं तेन विष्णुमाया च वैष्णवी ॥२९॥ नारायणस्य मायाहं तेन नारायणी स्मृता ॥ तवाज्ञया पंचधाहं पञ्च प्रकृतिरूपिणी ॥३०॥ कला कलांशयाहं च देवपत्न्योर्गृहेगृहे ॥ प्रथमं पूजिता मा च कृष्णेन परमात्माना ॥ मधुकैटभ भीतेन ब्रह्मणा सा द्वितीयतः ॥३१॥ त्रिपुर प्रेषितेनैव तृतीये त्रिपुरारिणा भ्रष्ट श्रिया महेन्द्रेण शापाद् दुर्वाससः पुरा ॥३८॥ चतुर्थे पूजिता देवी भक्त्या भगवती सती ॥ ततो मुनीन्द्रैः सिद्धेन्द्रैर्देवैश्च मनु मानवैः ॥३९॥ पूजिता सर्व विश्वेषु बभूव सर्वतः सदा ॥ तेजःसु सर्व देवानामाविर्भूता पुरा मुने ॥४०॥ सव देवाददुस्तस्यै शस्त्राणि भूषणानि च दुर्गादयश्च दैत्याश्च निहता दुर्गया मया ॥४१॥ दत्तं स्वराज्यं

देवेभ्यो वरञ्च यदभीप्सितम् कालान्तरे पूजिता सा सुरथेन महात्मना ॥४२॥ राज्ञमेधस शिष्येण मृण्मय्यां च सरित्तटे मेषादिभिश्च महिषैः कृष्ण सारैश्च गण्डकैः ॥४३॥ छागैर्मीनैश्च कूष्माण्डैर्भक्तिभिः पूजिता मुने वेदोक्तानि च दत्वैवमुपचाराणि षोडश ॥४४॥ धृत्वा च कवचं ध्यात्वासंपूज्यैवं विधानतः राजाकृत्वापरीहारं वं प्राप यथेप्सितम् ॥४५॥ मुक्तिं संप्राप्य वैश्यश्च संपूज्य च सरित्तटे पुष्करे दुस्तं तप्त्वातपो दुर्गाप्रसादतः ॥ वैश्योजगाम गोलोकं श्रीकृष्णेनानुमोदितः ॥४७॥ राजापिस्वराज्यं गत्वा विविधान्भोगान् षष्ठिवर्ष सहस्रकं निष्कण्टकं बुभुजे ततः परं भार्या पुत्रे सन्न्यस्य पुष्करे तपस्तप्त्वा सावर्णिर्नाम मनुर्बभूव ॥ इति ब्रह्मवैवर्ते ॥ शरत्काले चार्की दुर्गापूजा क्रियते सात्रिधा ॥ सात्विकी राजसी तामसी चेतिविश्रुतिः ॥ सात्विकी निरामिषैर्नैवेद्यैर्जपयज्ञाद्यैश्च ॥ माहात्म्यं भगवत्यास्तु पुराणादिषुकीर्तितम् ॥ पाठस्तस्यजपः प्रोक्तः पठेद्देवीमनास्तथा ॥ देवी सूक्त जपश्चैव यज्ञोवह्निषु तर्पणम् ॥ राजसी बलिदानैश्च नैवेद्यैः सामिषैस्तथा ॥ सुरामांसाद्युपाहारैर्जपयज्ञैर्विना तु या ॥ विना मंत्रैस्तामसी स्यात्किरातानां तु सम्मता ॥

पाठक्रमो यथा अर्गलं कीलकं चादौ पठित्वा कवचं पठेत् ॥ जपेत्सप्तशतींपश्चात्क्रम एषः शिवोदितः ॥१॥ अर्गलंदुरितं हन्ति कीलकं फलदं तथा ॥ कवचं रक्षयेन्नित्यं चण्डिका त्रितयं तथा ॥२॥ आदौ च प्रणवं जप्त्वा स्तोत्रं वा संहितां पठेत् ॥ अन्ते च प्रणवं दद्यादित्युवाचादिपूरुषः ॥३॥ भक्तिना ब्राह्मणातिरिक्त जनेन स्वहस्त लिखितमल्पफलदायकमतो न पठेत् ॥ कर्मासक्तमना न पठेत् प्रयत्नः पठेत् भाधारेधृत्वा पठेन-

करतल ग्रहणेन पठेत् फलाभावात् ।

भविष्ये ॥

अग्नि होत्रादि कर्म्माणि वेदयज्ञाः सदक्षिणाः ॥ चण्डिकार्चनस्यैते लक्षांशेनापि नो समाः ॥१॥ स दाता समुनिर्यष्टा स तपस्वी स तीर्थगः ॥ यः सदा पूजयेद्दुर्गां नाना पुष्पोपलेपनैः ॥२॥ यः सदा पूजयेद्देवीं प्रणमेद्वापि भक्तितः ॥ सयोगी सर्द्धिमांश्चैव तस्यमुक्तिः करे स्थिता ॥३॥ अग्निहोत्रपरे विप्रे वेद वेदाङ्ग पारगे ॥ सुवर्णानां सुवर्णस्यशते दत्ते तु यत्फलम् ॥४॥ तत्फलम् लभते राजन् पूजयित्वातु चण्डिकाम् ॥ मालयाबिल्व पत्राणां नवम्यां गुग्गुलेन च ॥५॥ मालाद्वयेन सम्पूज्य दुर्गां देवीं नराधिप ! ॥ बिल्ववृक्षस्य पत्राणां राजसूय फलं लभेत् ॥६॥

योगरत्नावल्यां पाठक्रमः ॥

कवचं बीजमादिष्टमर्गला शक्तिरुच्यते ॥
कीलकं कीलकं प्राहुः सप्तशत्या महामनोः ॥१॥

यामल वचनाद्यथा ॥

सर्व मन्त्रेषु बीजशक्ति कीलकानां प्रथममन्त्रमुच्चारणम् ॥ तथा सप्तशती पाठेऽपि कवचार्गलाकीलकानां प्रथमं पाठःकर्त्तव्यस्ततो रात्रिसूक्तपाठः ॥ तदुक्तं मरीचकल्पे ॥ रात्रिसूक्तं पठेदादौमध्ये सप्तशतीस्तवम् ॥ प्रान्तेतु पठनीयम्वै देवी सूक्तमितिक्रमः ॥ इतिरात्रिसूक्त पाठोत्तरमृष्यादि न्यास पूर्वकमष्टोत्तरशतं सहस्रंवा नवार्ण मंत्रजपः कर्तव्यस्तदुक्तम् ॥ नवार्ण मंत्रपुटितं ततश्चण्डीस्तवं पठेदिति नवार्णमंत्रजपोत्तरं रात्रिसूक्त पाठमाह कश्चित्तदसत् पुटितं मूलमंत्रेणेतिवचनात्पुटितमध्येन्यमंत्र प्रवेशस्य विरुद्धत्वात् शतमादौ शतंचान्ते जपेन्मत्रं

नवार्णकम् ॥ चण्डीसप्तशतीं मध्येसंपुटोयमुदाहृतः ॥ इति डामरतंत्रविरोधाच्च ततः सप्तशती पाठः पुनर्नवार्ण मंत्र जपः ततो देवी सूक्तपाठस्ततो रहस्यत्रयपाठ इति क्रमेणपाठः कर्तव्यः ॥

सप्तशती पाठारम्भे शापोद्धारादिकं कर्तव्यं तत्प्रकार उक्तः केरलैस्तथा च ॥ अन्त्या १३ द्या १, र्के १२, द्वि २, रुद्र ११ त्रि ३, दिग १० ब्ध्यं ४, के ६ ष्वि ५, म ८ र्तवः ६, अश्वो ७ श्व ७ इति सर्गाणां शापोद्धारे मनोः क्रम इत्युक्ते स्त्रयोदश प्रथमौ, द्वादश द्वितीयौ, एकादश तृतीयौ, दशमचतुर्थौ, नवम पञ्चमौ, अष्टम षष्ठावध्यायौ पठित्वा सप्तममध्यायं द्विः पठेदिति शापोद्धार प्रकारः ॥ अङ्गहीनो यथा देही सर्व कर्मसु न क्षमः ॥ अङ्गषट्क विहीनातु तथा सप्तशतीस्तुतिः ॥ तस्मादेतत्पठित्वैव जपेत्सप्तशतीं पराम् ॥ अन्यथा शापमाप्नोति हानिश्चैव पदे-पदे ॥ इतिकात्यायनीतन्त्रोक्तेः ॥ कवचादि षडङ्ग रहित केवल सप्तशतीं पाठ करणमेव शापः ॥ कवचादि साहित्येन तत्करणं मोक्षदमित्याहुः ॥ रहस्य तन्त्रस्थ गुरु कीलकपटले तु सप्तशत्याख्यमन्त्रस्य यावज्जीव महं जपं कुर्वस्ततो न प्रमादं प्राप्नुयामिति निश्चयम् ॥ कृत्वा प्रारभ्य कुर्वीत ह्यकुर्वाणो विनश्यतीत्युक्तेर्यावज्जीवमहं सप्तशती पाठं प्रमादेन सदसदपि न त्यक्ते ॥ इति दृढ़ संकल्पेन तदारम्भ उद्धारस्तदभावेन तदारम्भः शाप इति स्थितम् ॥

उत्कीलनम् ।

उत्कीलने चरित्राणां मध्याद्यन्तमिति क्रमः इति दुर्गाप्रदीपस्थ केरलोक्तेः ॥ आदौ मध्यम चरित्रं पठित्वा ततः प्रथम चरित्रं ततस्तृतीयचरित्रं पठेदितिगुरुकीलकपटलेतु ॥

शिव उवाच ।

पुरा सनत्कुमाराय दत्तमेतन्मयानघ १ ॥ संवर्ताय ददौ

तच्च सचान्यस्मै ददौ च तत् ।। सर्वत्र चण्डीपाठस्य प्राचुर्येण महीतले ब्रह्मकाण्डः कर्मकाण्डस्तंत्रकाण्डच सर्वथा ।। अभूत्प्रतिहतोनेन शीघ्रसिद्धि प्रदायिनी ।। तदा तेषां च सार्थक्यं कर्तुकामेन भूतले ।। दानप्रतिग्रहत्वेन मंत्रोयं कीलितोमया ।। दानप्रति ग्रहाख्यं यत्कीलकं समुदाहृतम् ।। तदारभ्य च मंत्रीयंकीलकेनाभिकीलितः ।। नसर्वेषांभवेत्सिद्ध्यै ये कीलकपराङ्मुखाः ।। ये नराः कीलनेनेदं जपन्ति परया मुदा ।। तेषांदेवी प्रसन्नास्यात्ततः सर्वाः समृद्धयः ।। त्वत्प्रसूतस्त्वदाज्ञप्तस्त्वद्दासस्त्वत्परायणः ।। त्वन्नामचिन्तनपरस्त्वदर्थेऽहं नियोजितः ।। ममार्जितमिदं सर्वं तच्च स्वं परमेश्वरि ! ।। राष्ट्रं बलं कोषगृहं सैन्यमन्यच्च साधनम् ।। त्वदधीनं करिष्यामि यत्रार्थे त्वं नियोक्ष्यसि ।। तत्रदेवि ! सदा वर्ते त्वदाज्ञामेव पालयन् ।। इति संचिन्त्य मनसा स्वार्जितानि धनानिच ।। कृष्णायां वा चतुर्दश्यामष्टम्यां वा समाहितः ।। समर्पयेन्महादेव्यै स्वार्जितं सकलं धनम् ।। राष्ट्रं गृहं कोषबलं नवं च यदुपार्जितम् ।। अस्मिन्मासि मयादेवि ! तुभ्यमेतत्समर्पितम् ।। इति ध्यात्वा ततो देव्याः प्रसादात्प्रतिगृह्य च ।। विभज्य पञ्चधा सर्वं त्र्यंशान् स्वार्थं प्रकल्पयेत् ।। देवपित्रतिथीनां च क्रियार्थं त्वेकमादिशेत् ।। एकांशं गुरुवेद्यात्तेन देवी प्रसीदति ।। तस्य राज्यं स्वकं सैन्यं कोषः साधु विवर्द्धत ।। इति दानप्रतिग्रह नामक महोत्कीलनं विहितम् ।। केचित्तु कीलने एव शापोद्धारामित्याहुः ।।

डामर तन्त्रोक्त नवार्ण मन्त्रार्थः ।।

एतन्मन्त्रमहिमातिशयोर्थश्च ।। डामर तन्त्रोक्तो निरूप्यते ।। निर्धूतनिखिलध्वान्ते नित्यमुक्तेपरात्परे ।। अखण्डब्रह्मविद्यायै

चित्सदानन्दरूपिणीं ॥ अनुसंदध्महे नित्यं वयं त्वां हृदयाम्बुजे ॥ इत्थं विशदयत्येषा चाकल्याणी नवाक्षरी ॥ अस्या महिमलेशोपि गदितुं केन शक्यते ॥ बहूनां जन्मनामन्ते प्राप्यते भाग्यगौरवात् ॥ इत्यादि ॥ अत्र प्रथम श्लोके सम्बुद्ध्यन्तत्रयन्तश्चतुर्थ्यन्तं ततः पुनः संबुद्ध्यन्तत्रयमिति सप्तभिः पदैः क्रमेण मंत्रे सप्तधा पदच्छेदः ॥ पदानांतत्तद्विभक्त्यन्ततातत्तदार्थाश्चोति कथितम् ॥ तदुत्तर मर्द्धेनाकांक्षित पदानामध्याहर उक्तः ॥ इतरत्स्पष्टम् ॥ सच्चिदानन्दात्मक ब्रह्मरूपित्वादेवशक्तेरपि त्रिरूपत्वं तत्रचिद्रूपा महासरस्वती वाग्भवबीजेनसंबोध्यते ॥ ज्ञानेनैवाज्ञाननाशान्निर्धूत निखिलध्वान्त पदेन तद्विवरणं युक्तमेव नित्यत्वं त्रिकालाबाध्यत्वम् ॥ अतएव मुक्तत्वं कल्पित वियदादि प्रपञ्चनिरासाधिष्ठानत्वम् ॥ एतेन सद्रूपात्मकमहालक्ष्मीरूपस्य भुवनेश्वरी मंत्रेण संबोधनमिति व्याख्यानम् पर उत्कृष्टः ॥ सर्वानुभव संवेद्य आनन्द एव तस्यैव पुरुषार्थत्वात् ॥ आत्मनः कामाय सर्वं प्रियं भवतीति श्रुत्या तदितरेषामपि तदर्थत्वेनानन्दस्यैव सर्वशेषतया परत्वात् ॥ स च मानुषानन्दमारभ्योत्तरोत्तरं शतगुणाधिक्येन श्रुतौ बहुविधोवर्णितः ॥ तेषु परमातिशायी स एको ब्रह्मण आनन्द इति परमावधित्वेनाम्नात एव परात्परः तेनानन्द प्रधान महा काली स्वरूपस्य काम बीजेन सम्बोधनंयुक्तम् ॥ चामुण्डाशब्दो हि मोक्षकारिणीभूत निर्विकल्पवृत्ति विशेषपरः ॥ तादर्थ्येचतुर्थी चमूं सेनां वियदादिसमूहरूपां डाति लडयोरक्यान्लाति आदत्ते आत्मसात्करणेनापूरयतीति व्युत्पत्तेः॥ पृषोदरादित्वात्सर्वं सुस्थमित्याहुर्बह्वः परन्तु अखण्ड ब्रह्मविद्येत्येव चामुण्डा पदस्यार्थमाहुः ॥ विच्चेइतितुवित् च इ इति पद त्रयात्मकं बीजत्रये-

योक्तानां चित्सदानन्दादीनां वाचकं संबुद्ध्यन्तंबीजत्रयस्य क्रमेण विशेषणम् ॥ अस्य स्त्री ईतस्य ह्रस्वे कृते सति हे आनन्द ब्रह्म महिषि इत्यर्थः ॥ वित्पदं ज्ञान परम्प्रसिद्धमेवचकारोपि नपुंसकः—सन्नसत्पर इति योज्यम् ॥ अनुसन्दामहे इतिशेषः ॥ तथाच महासरस्वत्यादिरूपे चिदादिरूपे चंडिके त्वां ब्रह्मविद्या प्राप्त्यर्थं वयं सर्वदा ध्यायामः ॥ इति मंत्रार्थः फलितः तस्यार्थं संग्रहः महासरस्वति चिते महालक्ष्मि सदात्मिके महाकान्यानन्दरूपं त्वं तत्वज्ञान सिद्धये अनुसंदध्महे देवि ! वयं त्वां हृदयाम्बुजे इति अयंचार्थः प्राचीनैर्वर्णित एवात्र सम्यक् परिष्कृत्योक्तः ॥ इति नवार्णमंत्रस्यार्थः ॥

मेरु तन्त्रोक्त अथास्य विधानमुच्यते ॥

अथातः सं प्रवक्ष्यामि चामुण्डायाः महामनुम् ॥ नव वर्णात्मकं यस्य सेवनाद्भुक्तिमुक्तयः ॥१॥ सुरथो यत्प्रसादेन राज्यं प्राप्याभवन्मनुः ॥ संसार बन्धनिर्नाशि ज्ञातमाप्तं समाधिना ॥२॥ मार्कण्डेयपुराणोक्तं चरित्रत्रितयं तव ॥ जपाद्यस्य-फलं दद्यात्वं मनुं वच्मिसांप्रतम् ॥३॥ वाक्लज्जाकामबीजान्ते चामुण्डायै पदं वदेत् ॥ विच्चे नवार्ण मंत्रोयं शक्तिमन्त्रोत्तमोत्तमः ॥४॥ अस्मिन्नवाक्षरे मन्त्रे महालक्ष्मीर्व्यवस्थिता ॥ तस्मात्सुसिद्धः सर्वेषां सर्वदिक्षु प्रदीपकः इति एतावतात्र सिद्धादि विचाराभावोज्ञापितः ॥

अथ पल्लवादि नियमः ॥

मन्त्राणां पल्लवो वासो मन्त्राणां प्रणवः शिरः ॥ शिरः पल्लवः संयुक्तो मन्त्रः काम दुघो भवेदित्युक्तेरस्य पल्लवादि विधिरुच्यते ॥ तत्र प्रणवः प्रसिद्धः ॥ पल्लवश्च ॥ नमोन्तः शान्तिके पुष्टौ प्रणिपातेच कीर्तितः वश्याकर्षणमोहेषु स्वाहान्तः

सिद्धिदायकः ॥ वौषट् पल्लव संयुक्तो मन्त्रः पुष्ट्यादिसाधकः ॥ हुँकारपल्लवोपेतोमारणे ब्राह्मणं विना ॥ यन्त्र भञ्जन कार्येषु सुघोरभयनाशने ॥ वषडन्तः प्रकल्प्यस्तु ग्रहबाधा विनाशकः ॥ उच्चाटने तु संप्रोक्तो मन्त्रः फट्पल्लवान्वितः ॥ एतेपल्लवास्तत्तत्कर्मणि चण्डीपाठेपि श्लोकान्तादौ स्तोत्रान्तादौ वा योज्याः॥ नन्वत्र केवल मंत्रेणैवेष्टसिद्धिरस्तु किमृष्यादिपल्लवान्त संयोग विशेषजृम्भितविस्तरेणेतिचेन्नैवम् ॥ देवर्षिछन्दोहीनो यः सतु सुप्तो भुजङ्गमः ॥ अशक्तः शक्तिरहितो निष्फलो वीजवर्जितः ॥ अतत्वस्तत्व वियुतो विनियोगोऽप्रभुर्मनुः ॥ न्यासहीनो भवेन्मूकोमृतःस्याच्छिरसा विना ॥ अपल्लवस्तु नग्नः स्यात्सुप्तः स्यादासनं विना ॥ गुरुम्बिना वृथा मन्त्रः अन्यजापेतु शून्यकः ॥ निर्वीर्यो दुष्टदत्तः स्यात्सान्यवीजस्तु कीर्तितः ॥ (दुष्टाय दत्तो दुष्टदत्त इत्यर्थः) इति वचनैरस्य देवर्ष्यादि पल्लवान्ताद्यङ्ग वैधुर्योद्घाटितानिष्टफलानुवन्धि भुजङ्गमादि दोषदूषितत्वाववोधाद् ॥ परेतु ॥ आर्षं छन्दश्च दैवत्यं विनियोगस्तथैव च ॥ वेदितव्यः प्रयत्नेन ब्राह्मणेन विपश्चितेति ॥ याज्ञवल्क्योक्तेवैंदिकेमंत्रे यथा ऋष्यादिविनियोगान्त चतुष्केतरपल्लवादि विचारोनास्ति तथास्मिन्नवार्णेऽपीत्याहुः ॥ इति पल्लवादि विचारः ॥

गन्धर्व तन्त्रे ॥

स्वस्थान माश्रिता देवाः सर्वाभीष्ट फलप्रदाः ॥
स्वस्थान वर्जिता देवाः शोकदुःख फल (भय) प्रदाः ॥

दुर्गार्चनसृतौ तन्त्रोक्तयन्त्र पूजनादि विधिः सम्पूर्णः ॥

ॐ नमश्चण्डिकायै ॥ तपस्यन्तं महात्मानं मार्कण्डेयं महामुनिम् ॥ व्यास शिष्यो महातेजा जैमिनिः परिपृच्छत ॥ जैमिनिरुवाच ॥ महर्षे ! कथयोत्पत्तिं चण्डिकायाः सुविस्तरम् ॥ ययासर्व मिदं व्याप्तं त्रैलोक्यं स चराचरम् ॥

अथ दुर्गा पाठारम्भः ॥

आदावाचामेत् ॥ ॐ ऐं आत्मतत्वं शोधयामि नमः स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं विद्यातत्वं शोधयामि नमः स्वाहा ॥ ॐ क्लीं शिवतत्वं शोधयामि नमः स्वाहा ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सर्वतत्वं शोधयामि नमः स्वाहा ॥ ततः मूल मंत्रेण प्राणायामं कुर्यात् ॥ ततः श्रीगणेश गुर्वादीन्नत्वा [1]संकल्पं कुर्यात् ॥ देशकाल संकीर्त-

---

[1] ॐ तत्सदद्य ब्रह्मणो द्वितीय प्रहरार्द्धे श्री श्वेतवाराहकल्पे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे ह्यार्यावर्तैक देशान्तरगते कलियुगे कलिप्रथमचरणे पुण्यक्षेत्रेऽमुक सम्वत्सरे अमुक ऋतौ अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुक करणे अमुकामुकराशिस्थ रव्यादिग्रहस्थित बेलायाममुक गोत्रोत्पन्नामुकशर्म्मा (यजमानस्य) जन्मलग्नात् वर्षलग्नाद्गोचरादमुकामुक४।८।१२स्थान स्थितसूर्यादिक्रूरग्रह तज्जनितारिष्ट निवृत्ति पूर्वकं-दशान्तरदशा चोपदशा। दिनदशाजनितारिष्ट ज्वर पीड़ा, दाहपीड़ा, नेत्रकर्णोदरादिपीड़ा, निवृत्तिपूर्वकं अल्पायुनिवृत्ति पूर्वकश्चाधिदैविकाधिभौतिकाध्यात्मिकजनित क्लेश कायिक वाचिक मानसिक त्रिविधाघौघ निवृत्ति पूर्वकं शरीरारोग्यार्थंपरमैश्वर्यादिप्राप्त्यर्थंच ॥ मार्कण्डेय उवाज ॥ ॐसावर्णिः सूर्यतनयो योमनुःकथ्यतेष्टमः ॥ निशामय तदुत्पत्तिं विस्तराद्गदतोममेत्यारभ्य सावर्णिर्भवितामनुरित्यन्तपरकस्य मार्कण्डेय पुराणान्तर्गतस्य देवी माहात्म्य प्रकाशकस्य महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती देवताकस्य दशांगयुक्तस्यापमृत्युवारणायाष्टोत्तरशताद्यावन्ते त्र्यम्बकमन्त्र युक्तस्य शापोत्कीलनमन्त्र युक्तस्य चादौ रात्रिसूक्तस्यान्ते देवी सूक्तस्यामुक मन्त्रेण प्रतिमन्त्र सम्पुटितस्य यथा संख्यकावृत्ति पाठमहंकरिष्ये ॥ यजमानपक्षे 'ब्राह्मण द्वारा कारयिष्ये ।'

नान्ते ॥ अस्माकंसर्वेषांसकुटुंबानां क्षेमस्थैर्यायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्ध्यर्थंसमस्तमंगलावाप्त्यर्थं अमुक गोत्रस्य अमुकनाम्नोमम (यजमानस्य) श्रीजगदम्बा प्रसादसिद्धिद्वारा सर्वापन्निवृत्तिपूर्वक सर्वाभीष्ट फलावाप्ति धर्म्मार्थ काम मोक्ष चतुर्विध पुरुषार्थ सिद्ध्यर्थं राजद्वारतः व्यापारतश्च लाभार्थं विजयार्थं श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती देवता प्रीत्यर्थं कवचार्गला कीलक पठन एकादशन्यास पूर्वक नवार्ण मन्त्राष्टोत्तरशत जप रात्रिसूक्त पठन पूर्वकं देवीसूक्त पठन नवार्ण मन्त्राष्टोत्तर शत जप रहस्य त्रय पठनान्तं मध्ये मार्कण्डेय उवाच इत्यारम्य सावर्णिर्भवितामनुरित्यन्तं (अमुक मंत्र संपुटितं) श्री चण्डी सप्तशत्याः शत पाठं (नवपाठं) करिष्ये ॥ (ब्राह्मण द्वारा कारयिष्ये) ॥ नित्य संकल्पः ॥ पूर्व संकल्पित कामना सिद्धये शत चण्डी (नवचण्डी) संख्या पूर्तये पूर्व संकल्पित रीताद्य पाठाख्यं कर्म करिष्ये ॥ यजमानपक्षे ॥ करिष्यामि ॥ इति ॥

पुस्तक पूजनम् ॥

ॐ नमः पिशाचि नि करंकिनि त्रिशूल खड्ग हस्ते सिंहारूढे एह्येहि आगच्छ आगच्छ इमां पूजां गृह्ण २ स्वाहा श्री सप्तसती स्वरूपिण्यै ह्रीं चंडिकायै

नमः ॥ यथोपचारैः पुस्तकपूजनं विधाय ॥ अथ शापोद्धारः ॥ ७ बार आदि अन्त में ॥

ॐ ह्रीं क्लीं क्रां क्रीं चण्डिकादेव्यै शापनाशानुग्रहं कुरु २ स्वाहा ॥ उत्कीलनम् ॥ आदि अन्त में २१ बार जपना ॥ ॐ श्रीं क्लीं ह्रीं सप्तशती चण्डिका उत्कीलनं कुरु २ स्वाहा ॥ मृतसंजीवनी विद्या ॥ ७ बार आदि में जपना ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं वं वं ऐं ऐं मृत संजीवनी विद्या मृतमुत्थापयोत्थापय क्रीं ह्रीं ह्रीं वं स्वाहा ॥

अथवा, मरीच कल्पोक्त—शप्तशतो शापविमोचनम् । प्रणवं पूर्व मुद्धृत्य रमा बीजं ततः परम् ॥ रमा कामं ततः क्रोधं तारं वाग्भव संयुतम् ॥१ क्षोभं मोहं ततः पश्चात्कीलयेति त्रिधा द्विठम् ॥ शापमोचनं कृत्वा चण्डी पाठेनियोजयेत् ॥२॥ ॐ श्रीं श्रीं क्लीं हूँ ॐ ऐं क्षोभय मोहय उत्कीलय ३ ठं ठं ॥ पूर्वेमष्टोत्तरशतं जप्त्वा पश्चान्न्यास पूर्वकं सप्तशती पाठाद्यथायोग्यकामनासिद्धिर्भविष्यतीतिनान्यथा ॥ अन्य प्रकारः ॥

अथ चण्डिका शाप विमोचनम् ॥

ॐ अस्य श्रीचण्डिकायाः ब्रह्मवर्शिष्ठ विश्वामित्र शाप विमोचन मंत्रस्य वशिष्ठ नारद संवाद साम

वेदाधिपति ब्रह्मा ऋषयः सर्व्वैश्वर्य कारिणी श्रीदुर्गा देवताचरितत्रयँ बीजं ह्रीं शक्तिः त्रिगुणात्म स्वरूपिणी चण्डिकाशापविमुक्तौ मम संकल्पित कार्य्य सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥ ॐ (ह्रीं) रीं रेतः स्वरूपिण्यै मधुकैटभमर्दिन्यै ब्रह्मवशिष्ठ विश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव ॥१॥ ॐ श्रींबुद्धि स्वरूपिण्यै महिषासुर सैन्यनाशिन्यै ब्रह्मवशिष्ठ विश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव॥२॥ॐ रँ रक्त स्वरूपिण्यै महिषासुर मर्दिन्यै ब्रह्मवशिष्ठ विश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव ॥३॥ ॐ क्षुं क्षुधा स्वरूपिण्यै देव वन्दितायै ब्रह्म वशिष्ठ विश्वामित्र शापाद्विमुक्ता भव ॥४॥ ॐ छां छाया स्वरूपिण्यै दूत संवादिन्यै ब्रह्मवशिष्ठविश्वामित्र

अथ सर्व मन्त्रोत्कीलनविधिः तन्त्रान्तरे ॥ मूलं नवार्णं वा ॥ ओं ह्रीं ग्लौं द्क्रौं दमलवर पीडं मलवर फ्रीं ओं क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः उत्कीलय२ स्वाहा ॥ ओं ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे मूलम्७वार जयन्ती मंगला कालीभद्रकाली कपालिनी ॥ दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोस्तु ते ॥ १ ॥ ओं ह्रीं ह्रौं ह्रीं ह्रः ऐं दमलवर फ्रीं उमलवर फ्रीं ओं ह्रौं उत्कीलय २ स्वाहा मूलम१स्वाहा ॥ इत्युत्कीलनम ॥ ओं विशुद्ध ज्ञान देहाय त्रिवेदी दिव्यचक्षुषे ॥ श्रेयः प्राप्तिनिमित्ताय नमः सोमाघे धारिणे त्रैलोक्यं वशी कुरु२दमसलवर फ्रीं ओं मूलम१इति प्रथम श्लोकं समापयेत् ॥ इत्यर्गलामोक्षः ॥ अथ मूलेन षडंग कवच पाठः ११ न्यासः इत्युत्कीलम् । अथ शापमोचन मन्त्रः ॥ ओं श्रीं ह्रीं क्लीं क्रां क्रीं चण्डिकादेव्यै शापनाशानुग्रहं कुरु२ स्वाहा ॥ आदावन्ते७वारं पठेत् ॥ ओं श्रीं क्लीं ह्रीं सप्तशती चण्डिका उत्कीलनं कुरुकुरु स्वाहा ॥ आदावन्ते २१वारं पठेत् ॥

शा० ॥५॥ ॐ शं शक्ति स्वरूपिण्यै धूम्रलोचन घातिन्यै ब्रह्मवशिष्ठ विश्वामित्र शा० ॥६॥ ॐ तृं तृषा स्वरूपिण्यै चंडमुंड वध कारिण्यै ब्रह्मवशिष्ठ वि० शा० ॥७॥ ॐ क्षां क्षांति स्वरूपिण्यै रक्तबीज वध कारिण्यै ब्रह्मवशिष्ठ विश्वामित्र शा० ॥८॥ ॐ जां जातिस्वरूपिण्यैनिशुंभवधकारिण्यैब्रह्मवशिष्ठविश्वामित्रशा०॥९॥ॐलंलज्जास्वरूपिण्यैशुंभवधकारिण्यै ब्रह्मवशिष्ठविश्वामित्र शा० ॥१०॥ ॐ शां शान्तिस्वरूपिण्यै देवस्तुतन्यै ब्रह्मवशिष्ठविश्वामित्र शा० ॥११॥ ॐ श्रं श्रद्धा स्वरूपिण्यै सकल फलदात्र्यै ब्रह्मवशिष्ठविश्वामित्र शा० ॥१२॥ ॐ कां कान्ति स्वरूपिण्यै राज वरप्रदानायै ब्रह्मवशिष्ठ विश्वामित्र शा० ॥१३॥ ॐ मां मातृ स्वरूपिण्यै अनर्गमहिम्न सहितायै ब्रह्मवशिष्ठ विश्वामि० ॥१४॥ ॐ ह्रीं श्रीं हूं दुं दुर्गायै सं सर्वैश्वर्य्य कारिण्यै ब्रह्मवशिष्ठ विश्वामित्र शापा० ॥ १५ ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः शिवायै अभेद्य कवच स्वरूपिण्यै ब्रह्मवशिष्ठ० ॥१६॥ ॐ क्रीं काल्यै कालि ह्रीं फट् स्वाहायै ऋग्वेद स्वरूपिण्यै ब्रह्मवशिष्ठ० ॥१७॥ ॐ ऐँ ह्रीं क्लीं महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती स्वरूपिणी त्रिगुणात्मिकायै दुर्गादेव्यै नमः ॥१८॥ इत्येवंहि महामंत्रा

न्पठित्वा परमेश्वरी ॥ चण्डी पाठं दिवारात्रौ कुर्य्या देव न सँशयः ॥१६॥ एवं मंत्रं न जानाति चण्डी पाठं करोति यः ॥ आत्मानं चैव दातारं क्षयं कुर्य्यान्न संशयः ॥२०॥

इतिश्री रुद्रयामले महातंत्रे दुर्गा कल्पे चण्डिकाशाप विमोचनम् सम्पूर्णम् ॥

पुरश्चरणे दश प्रकाराः शारदायां ११ पटले ॥

जपो होमस्तर्पणञ्च स्वाभिषेकोऽघर्मर्षणम् ॥ सूर्याद्यं जल (पानं) दानंस्यात्प्रणामं देवपूजनम् ॥ ब्राह्मणानां भोजनञ्च पूर्वं पूर्वं दशांशतः ॥ इदं सर्वं मन्त्रपुरश्चरणे ज्ञेयम् ॥

वाल्मीकीय रामायणे बालकाण्डे ॥ १२ सर्गे

विधि हीनस्य यज्ञस्य सद्यः कर्त्ता विनश्यति ॥

तद्यथा विधि पूर्वन्तु क्रतुरेषः समापयेत् ॥ १८।१६

कुलार्णव पंचदशोल्लासे ॥

संसार दुःख भूमेश्च यदीच्छेद् सिद्धिमात्मनः ॥ पंचोक्तोपासनेनैव मन्त्र जापी व्रजेत्सुखम् ॥ पूजा त्रैकालिकी नित्यंजपस्तर्पणमेव च ॥ होमो ब्राह्मण भुक्तिश्च पुरश्चरण मुच्यते ॥ यद् यदङ्ग विहीयेत तत्संख्या द्विगुणोजपः ॥ ज्ञानाज्ञान कृतं सर्वं प्रणश्यति जपात् प्रिये ! ॥

पराम्न भक्षणात्सिद्धि हानिः तत्रैव ॥

यस्यान्न पानमश्नाति कुरुते धर्म्म संचयम् ॥ अन्नदातुः फलंचार्द्धं कर्तुश्चार्द्धं न संशयः ॥ तस्मात्सर्वं प्रयत्नेन परान्नं वर्जयेत्सुधीः ॥ पुरश्चरण काले च काम्य कर्मस्वपीश्वरि ! ॥ जिह्वादग्धा परान्नेन करौ दग्धौ प्रतिग्रहात् ॥ मनोदग्धं परस्त्रीभिः कार्य सिद्धिः कथंभवेत् ॥

नीलतंत्रे ॥ भक्षणे दूषिता जिह्वा मिथ्याया भाषणेनवै ॥ कलहैर्दूषिता जिह्वानानादोषेणदूषिता ॥ तत्कथंपामरोलोकाजिह्वया प्रजपेन्मनुं ॥ संशोधनमनाचम्यनजपेत्पामरः क्वचित् ॥ आदौमायां ततः कूर्चंपुनर्मायां च सुन्दरि । मुखं संशोधयेद्देवियदीच्छेत्सिद्धि मुत्तमाम् ॥

न्यासो ध्यानावाहनेच नाम [illegible] चाप्यनु ॥

[illegible] हृदयं चैव कवच [illegible] —कीलकम् ॥

श्री गणेशाय नमः ॥

॥ अथ कवच प्रारम्भः ॥

ॐ अस्य श्री चण्डी कवचस्य ब्रह्मा *ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः चामुण्डा देवता अङ्ग न्यासोक्त मातरोबीजं दिग्बन्ध देवतास्तत्वं श्री जगदम्बा प्रीत्यर्थे सप्तशतो पाठाङ्गत्वे जपे विनियोगः ॥

ॐ नमश्चण्डिकायै ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥

ॐ यद्गुह्यं परमं लोके सर्वरक्षाकरं नृणाम् ।
यन्नकस्यचिदाख्यातं तन्मे ब्रूहि पितामह ! ॥१॥
ब्रह्मोवाच॥ अस्ति गुह्यतमं विप्र ! सर्वभूतोपकारकम्॥
देव्यास्तु कवचं पुण्यं तच्छृणुष्व महामुने ! ॥२॥
प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी ॥ तृतीयं

श्री देवीजी के लिये नमस्कार ॥ मार्कण्डेय ऋषि बोले ॥ हे ब्रह्माजी संसार में जो अत्यन्त छिपा हुआ रहस्य है जिससे मनुष्यों की सब प्रकार रक्षा होती है । जिसको किसी से भी आपने न कहा हो उसको मुझ से कहिये ॥ १ ॥ ब्रह्माजी ने कहा हे विप्र ! अत्यन्त छिपा हुआ सर्व प्राणीमात्र का उपकार करने वाला पुण्य को देने वाला देवी का कवच है, हे महामुनि ! तुम मुझसें सुनो ॥२॥ अब क्रम से कवच की अधिष्ठात्री नव

दशाङ्गमेतद्विज्ञेयमिति गुह्यं सनातनम् ॥
दशांगानि च जप्त्वा तु पश्चात्सप्तशतां पठेत् ॥
हरगौरीतन्त्रे

*ऋषि की व्युत्पत्तिः ॥
ऋषन्ति जानन्ति सर्वमिति ऋषयः मन्त्रद्रष्टारः ॥ सत्य वचना वा ॥ ऋषिगतौ ॥

चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम् ॥३॥ पञ्चमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च ॥ सप्तमं कालरात्रीति महागौराति चाष्टमम् ॥४॥ नवमं सिद्धिदात्री च नवदुर्गाः प्रकीर्तिताः ॥ उक्तान्येतानि नामानि ब्रह्मणैव महात्मना ॥५॥ अग्निना दह्यमानस्तु शत्रुमध्ये गतो रणे ॥ विषमे दुर्गमे चैव

मूर्तियों के नाम ध्यान के लिये लिखते हैं। पहिली शैलपुत्री, (हिमालय की बेटी शैलराज हिमालय ने तप करके प्रार्थना की तब भगवती ने पुत्री रूप हो शैलराज के यहां जन्म लेकर दोनों को प्रसन्न किया इसी से शैलपुत्री नाम हुआ) दूसरी ब्रह्मचारिणी, (सच्चिदानन्द प्राप्त करने के लिये) तीसरी चन्द्रघण्टा वा (चन्द्रमा के समान निर्मल) चौथी कूष्माण्डा (कुत्सित संताप रूपी दुःखों से युक्त अण्डे के समान, आधिभौतिक, आधिदैविक आध्यात्मिक त्रिविध दुःखों से युक्त मांस पेशी वाले अंडे कूष्मांड "पेठा" रूपी संसार को खाने वाली) ॥३॥ पांचमी स्कन्दमाता (स्वामिकार्तिक को जो पालन करने के लिये नियुक्त हुई) छठवीं कात्यायनी (कात्यायन ऋषि की कन्या) सातवीं कालरात्री (सब प्राणी मात्र को मारनेवाला काल उसको भी मारने माली) आठवीं महागौरी (शिवजी ने क्रीड़ा में काली नाम से पुकारा तब भगवती का रंग श्याम होगया बाद में तप करने से फिर गार वर्ण हुआ) वही महागौरी हुई ॥४॥ नवमी सिद्धिदात्री हैं सब कार्य मात्र की सिद्धि करनेवाली यह नव दुर्गा अर्थात् नव देवियों के नाम सर्वज्ञ ब्रह्माजी ने कहे हैं ॥५॥ अब आगे श्लोकों से पाठ का फल कहते हैं ॥ जो मनुष्य जलती हुई

भयार्त्ताः शरणं गताः ॥६॥ न तेषां जायते किञ्चिदशुभं रणसंकटे ॥ नापदं तस्य पश्यामि शोकदुःखभयं न हि ॥७॥ यैस्तुभक्त्या स्मृता नूनं तेषां वृद्धिः प्रजायते ॥ ये त्वां स्मरन्ति देवेशि ! रक्षसे तान्न संशयः ॥८॥ प्रेतसंस्था तु चामुण्डा वाराही महिषासना ॥ ऐन्द्री गजसमारूढा वैष्णवी गरुडासना ॥९॥ माहेश्वरी वृषारूढा कौमारी शिखिवाहना ॥ लक्ष्मीःपद्मासना देवी पद्महस्ता हरिप्रिया

अग्नि के बीच में लड़ाई में (दुश्मनों से घिर गया हो), किसी बड़ी विपत्ति में, भय (र) से दुःखी हो भगवती की शरण में जाने से ॥ ६ ॥ उनका लड़ाई के संकट में बाल भी बांका ('कुछ बुराई') नहीं होता ॥ सर्वदा मंगल ही होता है सब दुःखों को दूर करने वाली देवी उसकी आपत्ति को दूर करती है ॥७॥ जो मनुष्य निश्चय भक्ति से सदा स्मरण करते हैं उनको धर्म-अर्थ (धन) काम (कामना) मोक्ष (बार बार जन्म से रहित होते हैं) मिलते हैं। अर्थात् उन नामों में से एक भी याद करके स्मरण करने से सब दुःख दूर होते हैं। और वृद्धि ही होती है अब आगे देवियों का वर्णन ब्रह्मा जी इस प्रकार करते हैं। कि जो भक्त तुम्हारा स्मरण करते हैं उनकी तुम हमेशा रक्षा करती हो इसमें सन्देह नहीं ॥८॥ चामुण्डा प्रेत पर बैठी है वाराही भैंसे पर ऐन्द्री हाथी पर वैष्णवी गरुड़ पर ॥९॥ माहेश्वरी बैल पर कौमारी मोर पर लक्ष्मी कमल पर और कमल का फूल हाथ में

॥१०॥ श्वेतरूपधरादेवीईश्वरी वृषवाहना ॥ ब्राह्मी हंससमारूढा सर्वाभरण भूषिता ॥१०॥ इत्येता मातरः सर्वाः सर्वयोगसमन्विताः ॥ नानाभरणशोभाढ्या नानारत्नोपशोभिताः ॥१२॥ दृश्यन्ते रथमारूढा देव्यः क्रोधसमाकुलाः ॥ शङ्खं चक्रं गदां शक्तिं हलं च मुसलायुधम् ॥१३॥ खेटकं तोमरं चैव परशुं पाशमेव च ॥ कुन्तायुधं त्रिशूलं च शार्ङ्गमायुधमुत्तमम् ॥१४॥ दैत्यानांदेहनाशाय भक्तानामभयाय च ॥ धारयन्त्यायुधानीत्थं देवानां

लिये हुए विष्णु की प्रिया (स्त्री) हैं ॥१०॥ ईश्वरी देवी सफ़ेद रूप धारण किये बैल पर सवार हैं तथा ब्राह्मी हंस पर और सब प्रकार के गहने पहने शोभायमान हैं ॥ ११ ॥ इस तरह ये सब देवियाँ सब योगों से युक्त अनेक प्रकार गहनों की शोभा से शोभित तथा नाना प्रकार के रत्नों से शोभायमान हैं ॥ १२ ॥ सब (नव) देवियाँ (भक्त की रक्षा के लिये) क्रोध से युक्त रथ में बैठी हुई दीखती हैं। अब इनके हथियारों को ब्रह्मा जी बताते हैं। शंख चक्र, गदा, शक्ती हल, मूसल, ॥१३॥ खेटक, तोमर, परशु, पास, कुन्त, त्रिशूल, शार्ङ्ग दूसरे के शस्त्रों को आकाश में नष्ट करने वाले हथियार को खेटक कहते हैं। जिसके चलाने से शत्रु मरता है उस शस्त्र को तोमर कहते हैं, और शत्रुओं को जो काटता है उसको परशु कहते हैं, परशु, फरसा, पाश, (फंदा, फांसी,) कुन्त, (भाला) त्रिशूल सींग का बना हुआ शस्त्र शार्ङ्ग धनुष है ॥१४॥ ये देवियाँ राक्षसों के शरीर नष्ट

च हिताय वै ॥१५॥ नमस्तेऽस्तु महारौद्रे महाघोरपराक्रमे ॥ महाबले महोत्साहे महाभय विनाशिनि ॥१६॥ त्राहि मां देवि दुष्प्रेक्ष्ये शत्रूणां भयवर्द्धिनि । प्राच्यां रक्षतु मामैन्द्री आग्नेय्यामग्निदेवता ॥१७॥ दक्षिणेऽवतु वाराही नैर्ऋत्यां खड्गधारिणी ॥ प्रतीच्यां वारुणी रक्षेद्वायव्यां मृगवाहिनी ॥१८॥ उदीच्यां पातु कौमारी ईशान्यां शूलधारिणी । ऊर्ध्वं ब्रह्माणि मे रक्षेदधस्ताद्वैष्णवी तथा ॥१९॥ एवं

करने और भक्तों के निर्भय के लिये और देवताओं के हितके लिए इस प्रकार शस्त्र धारण करतीं हैं ॥१५॥ कवच पढ़ने से पूर्व देवीजी का ध्यान करना चाहिये अतः ध्यान लिखे जाते हैं। हे महारौद्रे हे महाघोरपराक्रमे ! तुमको नमस्कार है हे महाबले ! (मायाशक्ति रूप जिसका बल हो) हे महोत्साहे ! (संसार की रक्षा करने में जिसका उत्साह हो) हे महाभयविनाशिनि ! (मृत्यु के समान जो बड़ा डर (भय) जिसके ज्ञान देने से नाश हो) ॥१६॥ हे देवि ! हे दुःख से दर्शन देने वाली हे शत्रुओं के भय को बढ़ाने वाली मेरी रक्षा करो मेरा पालन करो ॥

दिग्रक्षा

पूर्व में ऐन्द्री मेरी रक्षा करे अग्नि कोण में अग्नि देवता रक्षा करे ॥१७॥ दक्षिण में वाराही रक्षा करे नैर्ऋति में खड्गधारिणी पश्चिम में वारुणी वायव्य में मृगवाहिनी ॥ १८ ॥ उत्तर में कौमारी ईशान्य में शूलधारिणी ऊपर आकाश में ब्रह्माणी और नीचे वैष्णवी ॥१९॥ इस प्रकार दशदिशाओं में

दशदिशो रक्षेच्चामुण्डा शववाहना।। जया मे चाग्रतः पातु विजया पातु पृष्ठतः ।।२०।। अजितावामपार्श्वे तु दक्षिणे चापराजिता ।। शिखामुद्योतिनी रक्षेदुमामूर्द्ध्नि व्यवस्थिता ।।२१।। मालाधरी ललाटे च भ्रुवौ रक्षेद्यशस्विनी। त्रिनेत्रा च भ्रुवोर्मध्ये यमघण्टा च नासिके ।।२२।। शङ्खिनी चक्षुषोर्मध्ये श्रोत्रयोर्द्वारवासिनी ।। कपोलौ कालिका रक्षेत्कर्णमूले तु शाङ्करी ।।२३।। नासिकायां सुगन्धा च उत्तरोष्ठे च चर्चिका ।। अधरेचामृतकला जिह्वायां च सरस्वती ।। २४ ।। दन्तान्रक्षतु कौमारी कण्ठदेशे तु

(प्रेत) मुर्दे के ऊपर बैठी हुई चामुण्डा रक्षा करे ।।

शरीर की रक्षा

जयादेवी मेरे आगे विजया पीछे ।। अजिता बाईं तरफ और दाईं तरफ अपराजिता बैठे ।।२०।। चोटी की उद्योतिनी रक्षा करे उमा सिर की रक्षा करे ।।२१।। मालाधरी माथे की रक्षा करे दोनों भ्रू (भौंह) की यशस्विनी रक्षा करे ।। भौंह के बीच में त्रिनेत्रा रक्षा करे नासिका की यमघण्टा रक्षा करे ।।२२।। आँखों के बीच में शंखिनी रक्षा करे कानों के बीच में द्वारवासिनी रक्षा करे ।।

गालों की कालिका रक्षा करे, कान, की जड़ में शांकरी, रक्षा करे ।।२३।। नासिका की सुगन्धा रक्षा करे ऊपर के ओष्ठ की चर्चिका रक्षा करे ।। और अधर की अमृत कला रक्षा करे और जिह्वा की सरस्वती रक्षा करे ।।२४।। दाँतों की कौमरी

चण्डिका ॥ घण्टिकां चित्रघण्टा च महामाया च तालुके ॥२५॥ कामाक्षी चिबुकं रक्षेद्वाचं मे सर्वमंगला॥ ग्रीवायां भद्रकाली च पृष्ठवंशे धनुर्धरी ॥२६॥ नीलग्रीवा वहिःकण्ठे नलिकां नलकूबरी । स्कन्धयोः खड्गिनी रक्षेद्बाहू मे वज्रधारिणी ॥२७॥ हस्तयोर्दण्डिनी रक्षेदम्बिका चाङ्गुलीषु च । नखाञ्छूलेश्वरी रक्षेत्कुक्षौ रक्षेत्कुलेश्वरी ॥२८॥ स्तनौ रक्षेन्महादेवी मनःशोक विनाशिनी ॥ हृदये ललिता देवी उदरे शूलधारिणी ॥२९॥ नाभौ च कामिनी रक्षेद्गुह्यं गुह्येश्वरी तथा । पूतना कामिका मेढ्रं

रक्षा करे गले के बीच में चण्डिका रक्षा करे चित्र घण्टा गले की रक्षा करे महामाया तालू की रक्षा करे ॥ २५ ॥ कामाक्षी ठोड़ी की रक्षा करे वाणी की सर्व मङ्गला रक्षा करे ॥ गर्दन की भद्रकाली रक्षा करे पीठ (मेरुदंड) की धनुर्धरी ॥ २६ ॥ नीलग्रीवा कण्ठ से वाहर की रक्षा करे। कण्ठ की नली की नलकूवरी रक्षा करे । खड्ग धारिणी दोनों कन्धों की रक्षा करे दोनों बाहुओं की वज्र धारिणी रक्षा करे ॥२७॥ दण्डिनी हाथों की रक्षा करे अम्बिका अङ्गुलियों की रक्षा करे ॥ नखों की शूलेश्वरी रक्षा करे (कूख) कुक्षि की कुलेश्वरी रक्षा करे ॥२८॥ स्तनकी महादेवी रक्षा करे मन की शोकविनाशिनी रक्षा करे ॥ हृदय की ललिता देवी रक्षा करे उदर की शूलधारिणी रक्षा करे ॥२९॥ नाभि की कामिनी रक्षा करे गुह्येश्वरी गुह्य (गुप्त) स्थान की रक्षा करे ॥ पूतना कामिका लिंग की रक्षा करे गुदा

गुदे महिषवाहिनी ॥३०॥ कट्यां भगवती रक्षेज्जानुनी विन्ध्यवासिनी । जङ्घे महाबला रक्षेत्सर्वकामप्रदायिनी ॥ ३१ ॥ गुल्फयोर्नारसिंही चपादपृष्ठे तु तैजसी । पादाङ्गुलीषु श्रीरक्षेत्पादाधःस्तलवासिनी ॥ ३२ ॥ नखान्दंष्ट्रा कराली च केशांश्चैवोर्ध्वकेशिनी ॥ रोमकूपेषु कौबेरी त्वचं वागीश्वरी तथा ॥३३॥ रक्तमज्जा वसामांसान्यस्थिमेदांसि पार्वती ॥ अन्त्राणि कालिरात्रिश्च पित्तं च मुकटेश्वरी॥३४॥ पद्मावती पद्मकोशे कफे चूडामणिस्तथा ॥ ज्वालामुखी नसाजालमभेद्या सर्वसन्धिषु ॥ ३५ ॥ शुक्रं ब्रह्माणि मे रक्षेच्छायां छत्रेश्वरी

की महिष वाहिनी रक्षा करे ॥३०॥ कमर का भगवती रक्षा करे जांघ की विंध्यवासिनी रक्षा करे ॥ जंघा की महाबला सब काम देने वाली रक्षा करे ॥३१॥ गुल्फ (पिंडली) की नारसिंही रक्षा करे पैर के ऊपर की तैजसी रक्षा करे ॥ पैर की अंगुलियों की श्रीधरी रक्षा करे पैर के नीचे की तलवासिनी रक्षा करे ॥३२॥ नखों की द्रंष्ट्राकराली रक्षा करे बालों की ऊर्ध्व केशिनी रक्षा करे ॥ रोम छिद्रों की कौवेरी रक्षा करे चमड़े की' वागीश्वरी रक्षा करे ॥३३॥ रक्त, मज्जा, वसा, (चर्वी) माँस, अस्थि, मेद की पार्वती रक्षा करे ॥ आँतों की कालरात्री रक्षा करे पित्त की मुकुटेश्वरी रक्षा करे ॥३४॥ पद्मकोश की पद्मावती रक्षा करे कफ की चूड़ामणि रक्षा करे ॥ नस जाल की ज्वालामुखी करे सब संधियों की अभेद्या रक्षा करे ॥३५॥ ब्रह्माणी मेरे वीर्य (शुक्र) की रक्षा करे

तथा ॥ अहङ्कारं मनो बुद्धिं रक्षेन्मे धर्मधारिणी ॥ ३६ ॥ प्राणापानौ तथा व्यानमुदानञ्च समानकम् ॥ वज्रहस्ता च मे रक्षेत्प्राणं कल्याणशोभना ॥ ३७ ॥ रसेरूपे च गन्धे च शब्देस्पर्शे च योगिनी ॥ सत्त्वं रजस्तमश्चैव रक्षेन्नारायणी सदा ॥ ३८ ॥ आयू रक्षतु वाराही धर्मं रक्षतु वैष्णवी ॥ यशः कीर्तिं च लक्ष्मीं च धनं विद्यां च चक्रिणी ॥३९॥ गोत्रमिन्द्राणि मे रक्षेत्पशून्मे रक्ष चण्डिके ॥ पुत्रान्रक्षेन्महालक्ष्मीर्भार्यां रक्षतु भैरवी ॥४०॥ पन्थानं सुपथा रक्षेन्मार्गं क्षेमकरी तथा !

छाया की छत्रेश्वरी रक्षा करे ॥ हे धर्म धारिणी मेरें अहंकार, मन, बुद्धि की रक्षा करो ॥३६॥ तथा प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान इनकी वज्रहस्ता रक्षा करे और प्राण कल्याण की शोभना रक्षा करे ॥३७॥ रस, रूप, गंध शब्द और स्पर्श को योगिनी रक्षा करे ॥ सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण की नारायणी रक्षा करे ॥ ॥३८॥ आयु की वाराही तथा धर्म की वैष्णवी रक्षा करे ॥ यश, लक्ष्मी, कीर्ति, धन और विद्या की सदा चक्रिणी रक्षा करे ॥३९॥ इन्द्राणि मेरे गोत्र की रक्षा कर हे चण्डिके मेरे पशुओं की रक्षा कर ॥ महालक्ष्मी पुत्रों की रक्षा करे भार्या की भैरवी रक्षा करे ॥ ४० ॥ रास्ते की सुपथा रक्षा करे दुर्गम मार्ग में क्षेमकरी रक्षा करे राजद्वार (कचैरी) में महालक्ष्मी रक्षा करे सब तरफ से भयों में बैठी हुई विजया रक्षा करे ॥४१॥ यदि कवच में कोई स्थान रह गया हो तो उसकी पाप-

राजद्वारे महालक्ष्मीर्विजया सर्वतःस्थिता ॥ ४१ ॥
रक्षाहीनं तु यत्स्थानं वर्जितं कवचेन तु ॥ तत्सर्वं
रक्ष मे देवि जयंती पापनाशिनी ॥४२॥ पदमेकं
नगच्छेत्तु यदीच्छेच्छुभमात्मनः ॥ कवचेनावृतो
नित्यं यत्र यत्रैव गच्छति ॥४३॥ तत्र तत्रार्थलाभश्च
विजयः सर्वकामिकः । यं यं चिन्तयते कामं तं तं
प्राप्नोति निश्चितम् ॥ परमैश्वर्यमतुलं प्राप्स्यते भूतले
पुमान् ॥४४॥ निर्भयो जायते मर्त्यः संग्रामेष्वपराजितः ॥
त्रैलोक्येतु भवेत्पूज्यः कवचेनावृतःपुमान्
॥४५॥ इदं तु देव्याः कवचं देवानामपि दुर्लभम् ॥
यः पठेत्प्रयतो नित्यंत्रिसन्ध्यं श्रद्धयान्वितः॥४६॥
दैवीकला भवेत्तस्य त्रैलोक्येष्वपराजितः॥ जीवेद्वर्ष-

नाशिनी जयन्ती रक्षा करे ॥४२॥ यदि आत्मा का कल्याण चाहता होतो कवच के बिना एक कदम भी न चले ॥ कवच पढ़ने से यह फल मिलता है । कवच से रक्षा करके नित्य जहां जहां भी जाता है ॥४३॥ वहां २ ही अर्थ, लाभ, विजय और सर्व कामनाओं में सिद्धि मिलती है । जिस २ काम की चिन्ता करता है उस २ को निश्चित पाता है । पृथ्वी पर परम अतुल ऐश्वर्य को पाता है ॥४४॥ पुरुष भय-रहित होता है संग्राम में अपराजित होता है ॥ कवच से रक्षा किया पुरुष त्रैलोक्य में पूज्य होता है ॥४५॥ देवताओं को भी दुर्लभ इस देवी के कवच को जो कोई नित्य श्रद्धा सहित तीन बार पढ़ता है ॥४६॥

शतंसाग्रमपमृत्युविवर्जितः ॥४७॥ नश्यन्तिव्याधयः सर्वे लूताविस्फोटकादयः ॥ स्थावरंजगमंचैव कृत्रिमं चापियद्विषम् ॥४८॥ अभिचाराणि सर्वाणि मन्त्रयन्त्राणिभूतले ॥ भूचराः खेचराश्चैव कुलजाश्चोपदेशिकाः ॥ ४६ ॥ सहजाः कुलजामाला डाकिनी शाकिनी तथा ॥ अन्तरिक्ष चराघोरा डाकिन्यश्चमहावलाः ॥ ५० ॥ ग्रहभूतपिशाचाश्च यक्षगन्धर्वराक्षसाः ॥ ब्रह्मराक्षसवेतालाः कूष्माण्डा भैरवादयः ॥५१॥ नश्यन्ति दर्शनात्तस्य कवचे हृदि

उसकी दैवकला (देवसंपत्ती) होती है। तीनों लोकों में अपराजित होता है। कवच से रक्षा किया हुआ पुरुष अपमृत्यु से रहित १०० वर्ष तक जीता है ॥४७॥ लूता (मकड़ी) जिन कीडों के द्वारा शरीर की खाल फटती है। विस्फोटक, (शीतला) के फफोले, कोढ़ आदि सब रोग नष्ट होते हैं ॥ कवच से पेड़ (कनेर, भांग, कुचला आदि) तथा अफीम का विष सर्प आदि का विष और अतिरिक्त सब तरह के साधारण विष प्रयोग मन्त्र यन्त्र नष्ट होते हैं ॥४८॥ पृथ्वी पर के आकाश के जल के देवता और उपदेश से सिद्ध होने वाले देवता ॥४६॥ साथ में उत्पन्न होने वाले देवता कुल में पैदा हुए गंडमाला (कंठमाला) तथा डाकिनी शाकिनी ये नीच देवता कवच धारण करने से नष्ट होते हैं। आकाश में चलने वाले, डराने वाले, बल वाली डाकिनियां ॥५०॥ और ग्रह भूत, पिशाच, यक्ष, गन्धर्व, राक्षस, ब्रह्म राक्षस, वेताल, कूष्मांड भैरवादि कवच को हृदय में रखने से नष्ट हो जाते हैं ॥५१॥ तथा राजा के पास से मान की उन्नति

संस्थिते ॥ मानोन्नतिर्भवेद्राज्यन्तेजोवृद्धिकरं परम् ॥५२॥ यशसा वर्द्धते सोऽपिकीर्तिमण्डित भूतले ॥ जपेत्सप्तशतीं चण्डीं कृत्वा तु कवचंपुरा ॥ ५३ ॥ यावद्भूमण्डलं धत्ते सशैलवनकाननम् ॥ तावत्तिष्ठति मेदिन्यां सन्ततिः पुत्र पौत्रकी ॥५४॥ देहान्ते परमं स्थानं यत्सुररपि दुर्लभम् ॥ प्राप्नोति पुरुषो नित्यं महामायाप्रसादतः ॥५५॥ लभते परमं रूपं शिवेन सह मोदते ओं ॥ ५६ ॥ इति श्री वाराहपुराणे हरिहरब्रह्मविरचितं देव्याः कवचं समाप्तम् ॥ १ ॥

होती है (यह कवच) तेज की वृद्धि करने वाला है ॥५२॥ उत्कृष्ट तेज बढ़ाने वाला है जो कवच को पढ़ता है वह कीर्त्ति मण्डित भूतल पर यश से बढ़ता है। पहले कवच कर के सप्तशतीचण्डी को जपने से ॥५३॥ जब तक पृथ्वी पर पहाड़ सहित वन हैं ॥ तब तक (मनुष्य) पुत्र पौत्र सहित पृथ्वी पर सुखसे बसता है ॥५४॥ और कवच के पढ़ने से मरने पर देवताओं से भी दुर्लभ स्थान को ॥ महा माया के प्रसाद से मनुष्य पाता है ॥ ५५ ॥ और परम रूप प्राप्त होकर-शिव के साथ आनन्द पाता है ॥५६॥ पाठ में ऐसा बोलना :—ओं देव्याः कवचं श्री जगदम्बार्पणमस्तु ॥

इति श्री घनश्याम गोस्वामी कृत दुर्गा कवच भाषा समाप्तः ॥

तन्त्रान्तर से ॥

अर्गला के सिद्ध प्रयोगों का विधान क्रम से लिखा जाता है। "जयन्ती मंगला काली" इस श्लोक के सम्पुट से महामारी (प्लेग) शान्ति होती है तथा सब प्रकार के उपद्रव भी। "मधुकैटभ विद्रावि

अथ अर्गला स्तोत्रम् ॥

ओं अस्य श्री अर्गला स्तोत्र मन्त्रस्य विष्णु-ऋषि अनुष्टुप् छन्दः श्री महालक्ष्मीर्देवता श्री जगदम्बाप्रीतये सप्तशती पाठांगे जपेविनियोगः॥

ओं नमश्चण्डिकायै ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥

ॐजयन्तीमङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी ॥
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोस्तुते

चण्डिका के लिये नमस्कार ॥ मार्कण्डेय ऋषि बोले ॥

जय वाली, मोक्ष वाली सब दुष्टों को खाने वाली, भक्तों के देने के लिये कल्याण इकट्ठा करने वाली, खोपड़ी लेकर घूमने वाली, दुःख से प्राप्त होने वाली, क्षमा करने वाली, चित

वि० इस श्लोक के सम्पुट से राजचोर आदि का भय निश्चय नष्ट होगा। महिषासुर निर्नाश० मन्त्र से रिपुवर्ग का नाश। वन्दिताङ्घ्रियुगे० इस से राज सन्मान होगा। रक्तबीज बधे० शत्रु से भीति विनाश होगा। अचिन्त्य रूप चरिते० इस से रोग समूल नष्ट होगा। नतेभ्यः सर्वदाभक्त्या० इससे सर्वापत्ति का नाश। स्तुवद्भ्यो भक्ति पूर्वं० इसके जप वा सम्पुट से व्याधि नाश। चण्डिके सततं० ॥ सर्व सौभाग्य प्राप्त होगा। देवि सौभाग्य मारोग्यं० सर्व सुख प्राप्ति। केवल जप से सर्वार्थ सिद्धि। विधेहि द्विषतां नाशं०। सम्पुट वा जप से शत्रु का नाश। विधेहि देवि कल्याणं० से सर्वापत्ति का नाश तथा कुटुम्ब और पशुओं की रक्षा। विद्यावन्तं० इससे यश लक्ष्मी जय की वृद्धि होगी। प्रचण्ड-दैत्य दर्पघ्नि० विवाद तथा व्यवहार में जय होगी। चतुर्भुजे चतु० धर्म्म अर्थ काममोक्षादि प्राप्त होंगे। कृष्णेन संस्तु० पुरुषार्थ वृद्धि होगी। सुरासुर शिरो रत्न० से सर्वज्ञता प्राप्त होगी। इन्द्राणी पति सद्भाव० से चित्त की मलीनेता नष्ट होगी। देवि प्रचण्ड, से जलोदर नाश होगा। देवि भक्तजनोद्दाम, से अनावृष्टि दूर होगी ॥ पत्नीं मनोरमां० से स्त्री प्राप्त होगी तथा सुख भी प्राप्त होगा ॥

॥१॥ जय त्वं देवि चामुण्डे जयभूतार्तिहारिणि ॥
जय सर्वगते देवि कालरात्रि नमोस्तुते ॥ २ ॥
मधुकैटभविद्राविविधातृवरदे नमः ॥ रूपं देहि जयं
देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥३॥ महिषासुरनिर्नाश
भक्तानां सुखदे नमः ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो
देहि द्विषो जहि ॥४॥ रक्तबीजवधे देवि चण्डमुण्ड-
विनाशिनि ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो

(चैतन्य) शिव रूप वाली सब प्रपञ्चों को धारण करने वाली, देवों का पोषण करने वाली, पितृ पोषण करने वाली, ऐसे गुणों वाली देवी तुमको नमस्कार हो ॥१॥ हे चामुण्डे देवि ! हे मनुष्यों के क्लेश को नाश करने वाली तुम्हारी जय हो हे सर्वगते ! हे देवि ! हे कालरात्रि ! आपकी जय हो आपको नमस्कार है ॥२॥ हे मधुकैटभ को मारने वाली, ब्रह्मा को वर देने वाली, तुम को नमस्कार हो, रूप को दो, जय को दो, यश को दो, तथा काम, क्रोध, शत्रुओं को नष्ट करो ॥ ३ ॥ हे महिषासुर को मारने वाली, भक्तों को वर देने वाली तुमको नमस्कार हो रूप को दो, जय को दो, यश को तथा काम, क्रोध शत्रुओं को नष्ट करो ॥४॥ हे रक्त बीज को मारने वाली हे चण्ड मुण्ड नाशिनी तुमको नमस्कार हो, रूप को दो, जय दो, यशको दो तथा काम, क्रोध, शत्रुओं को नष्टकरो ॥५॥ हे शुम्भ निशुम्भ तथा धूम्राक्ष को मर्दन करने वाली तुमको नमस्कार हो, रूप दो, जय दो, यश दो तथा काम क्रोध शत्रुओं को

जहि।।६।। वंदिताघ्रियुगेदेवि सर्वसौभाग्यदायिनि ।।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ।। ७ ।।
अचिन्त्यरूपचरिते सर्वशत्रुविनाशिनि ।। रूपं
देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ।। ८ ।।
नतेभ्यः सर्वदा भक्त्या चण्डिके दुरितापहे ।। रूपं
देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ।। ९ ।।
स्तुवद्भ्योभक्तिपूर्वं त्वां चण्डिके व्याधिनाशिनि ।।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ।।१०।।
चण्डिकेसततं ये त्वामर्चयन्तीह भक्तितः ।। रूपं
देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ।।११।। देहि

नष्ट करो ।।६।। हे ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र आदिकों से चरण पुजाने वाली, देवताओं को शत्रु बाधा रहित राज्य देने वाली देवी तुमको नमस्कार हो, रूप, जय, यश को दो तथा काम, क्रोध, शत्रुओं को नष्ट करो ।।७।। बृहत् चरित्र रूप से युक्त सब शत्रुओं को नष्ट करने वाली तुमको नमस्कार हो रूप को दो, जय को दो, यश को दो तथा काम, क्रोध, शत्रुओं को नष्ट करो ।।८।। हे चण्डिके हे परब्रह्म रूपिणि सर्वदा भक्ति से नत हुये मुझे रूप दो जय दो यश दो और काम, क्रोध शत्रुओं को नष्ट करो ।।९।। हे व्याधियों को नष्ट करने वाली भक्ति पूर्वक तेरी स्तुति करने से हे परब्रह्म महिषि रूप दो जय दो यश दो और काम क्रोध शत्रुओं को नष्ट करो ।। १० ।। हे चण्डिके जो तुमको निरन्तर भक्ति से पूजते हैं। उनको रूप दो जय दो यश दो और काम क्रोध शत्रुओं का नष्ट करो ।।

सौभाग्यमारोग्यं देहि मे परमं सुखम् ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥१२॥ विधेहि द्विषतां नाशं विधेहि बलमुच्चकैः ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १३ ॥ विधेहिदेवि कल्याणंविधेहिपरमांश्रियम् । रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १४ ॥ सुरासुरशिरोरत्ननिघृष्टचरणेऽम्बिके ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १५ ॥ विद्यावन्तंयशस्वन्तं लक्ष्मीवन्तंजनं कुरु ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥१६॥ प्रचण्डदैत्यदर्पघ्नि चण्डिके

११॥ हे प्रकाश रूपे अच्छे सौभाग्य को दो रोग रहित करो ब्रह्मानन्द को दो रूप को दो जय दो यश दो और काम क्रोध शत्रुओं को नष्ट करो ॥१२॥ द्वेष करने वालों को नष्ट करके मुझे अत्यन्त बलवान् करो रूप दो जय दो यश दो और काम क्रोध शत्रुओं को नष्ट करो ॥१३॥ हे देवि! कल्याण विपुल धनसंपत्ति को करो रूप दो जय दो यश दो और काम क्रोध शत्रुओं को नष्ट करो ॥ १४ ॥ हे देवि राक्षसों के मुकुट मणियों से घिसे हुए चरण वाली रूप को दो जय दो यश दो तथा काम क्रोध शत्रुओं को नष्ट करो ॥१५॥ पढ़े, लिखे, धनी यशवान, मुझको और सब मनुष्यों को बनाओ रूप दो जय दो यश दो काम क्रोध तथा शत्रुआं को नष्ट करो ॥१६॥ हे प्रबल दैत्य के घमण्ड को तोड़ने वाली चण्डिके मुझ प्रणत को रूप

प्रणताय मे ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥१७॥ चतुर्भुजेचतुर्वक्त्रसंस्तुते परमेश्वरि ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥१८॥ कृष्णेनसंस्तुतेदेविशश्वद्भक्त्या सदाम्बिके ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १९ ॥ हिमाचलसुतानाथसंस्तुते परमेश्वरि ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥२०॥ इन्द्राणीपतिसद्भावपूजिते परमेश्वरि ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥२१॥देवि प्रचण्डदोर्दण्डदैत्यदर्पविनाशिनि ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो

दो जय दो यश दो तथा काम क्रोध शत्रुओं को नष्ट करो ॥१७॥ हे चार भुजी हे ब्रह्मा से स्तुति की गई परमेश्वरि ! रूप को दो जय दो यश दो तथा काम क्रोध शत्रुओं को नष्ट करो ॥१८॥ सदा श्रीकृष्णजी महाराज से स्तुति की गई हे अम्बिके ! देवी रूप दो जय दो यश दो और काम क्रोध शत्रुओं को नष्ट करो ॥१९॥ शिवजी से पूजित हे परमेश्वरि ! तुम मुझको रूप दो, जय दो, यश दो और काम क्रोध शत्रुओं को नष्ट करो ॥२०॥ इन्द्र की स्त्री से पता प्राप्त करने के लिए पूजित हे परमेश्वरि ! रूप दो जय को दो यश दो और काम क्रोध शत्रुओं को नष्ट करो ॥२१॥ हे बड़ी-बड़ी भुजा वाले दैत्यों का घमण्ड तोड़ने वाली देवि ! रूप दो जय को दो यश दो और काम क्रोध शत्रुओं को नष्ट करो ॥२२॥ हे पूर्ण रूप से भक्ति करने

जहि ।२२। देवि भक्तजनोद्दामदत्तानन्दोदयेऽम्बिके ॥
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥२३॥
पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम् ॥
तरिणीं दुर्गसंसारसागरस्यकुलोद्भवाम् ॥ २४ ॥
इदंस्तोत्रं पठित्वातु महास्तोत्रं पठेन्नरः ॥ स तु सप्तशतीसंख्यावरमाप्नोति सम्पदं ॐ ॥ २५ ॥ इति मार्कण्डेयपुराणे अर्गलास्तोत्रं समाप्तम् ॥

वाले भक्तों को मोक्ष देने वाली अम्बिके ! देवि ! रूप दो जय को दो यश दो और काम क्रोध शत्रुओं को नष्ट करो ॥२३॥ मन को रमण करने वाली मनकी इच्छानुसार रहने वाली कठिनता से तरने लायक संसार सागर को तराने वाली कुलोत्पन्न पत्नी को दो रूप दो जय दो यश दो और काम क्रोध शत्रुओं को नष्ट करो ॥२४॥ इस स्तोत्र को पढ़कर जो मनुष्य महा स्तोत्र पढ़ता है, तो वह सप्तशती के पाठ के फल के समान फल पाता है संपत्ति भी पाता है ॥२५॥

अथ कीलकम् ॥

ॐ अस्य श्री कीलक मन्त्रस्य शिव ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः श्री महासरस्वती देवता श्री जगदम्बा प्रीयर्त्थं सप्तशती पाठांगे जपे विनियोगः

ॐ नमश्चण्डिकायै ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥

ॐ विशुद्धज्ञानदेहाय त्रिवेदीदिव्यचक्षुषे ॥ श्रेयः प्राप्ति निमित्ताय नमः सोमार्द्धधारिणे ॥१॥ सर्वमेतद्विजानीयान्मन्त्राणामपि कीलकम् ॥ सोऽपि क्षेममवाप्नोति सततं जाप्यतत्परः ॥२॥ सिध्यन्त्युच्चाटनादीनि वस्तूनि सकलान्यपि ॥ एतेन स्तुवतां देवी स्तोत्रमात्रेणसिध्यति ॥ ३ ॥ न मन्त्रो नौषधं तत्र न किञ्चिदपि विद्यते ॥ विना जाप्येन सिध्येत

श्री देवीजी के लिये नमस्कार ॥ मार्कण्डेय ऋषि वोले ॥

श्री अर्द्ध चन्द्र धारी निर्मलज्ञान रूप देह वाले वेद त्रय रूप दिव्य तीन नेत्र वाले कल्याण की प्राप्ती के लिये शिवजी को नमस्कार है ॥१॥ मन्त्रों का शाप उत्कीलन आदि इन सबको जानकर, सदा जप करने वाला सप्तशती के पाठ विना भी कल्याण को पाता है ॥२॥ इस प्रकार सप्तशती का पाठ व जप करने वाले को उच्चाटन आदि सव वस्तु सिद्ध होती हैं इस स्तोत्र मात्र से स्तुति करने पर भगवती सिद्ध होती है ॥३॥ इस पुरुष को कोई भी मन्त्र और औषधि कार्य सिद्धि के लिये

सर्वमुच्चाटनादिकम् ॥४॥ समग्राण्यपि सिध्यन्ति लोकशङ्कामिमां हरः ॥ कृत्वा निमन्त्रयामास सर्वमेवमिदं शुभम् ॥५॥ स्तोत्रं वै चण्डिकायास्तु तच्च गुप्तञ्चकार सः ॥ समाप्नोति सुपुण्येन तां यथावन्नियन्त्रणाम् ॥६॥ सोऽपिक्षेम मवाप्नोति सर्वमेवन संशयः ॥ कृष्णायां वा चतुर्दश्यामष्टम्यां वा समाहितः ॥ ७ ॥ ददातिप्रतिगृहणाति नान्यथैषाप्रसिध्यति । इत्थंरूपेण कीलेन महादेवेन

उपयुक्त है। जपके बिना ही इस स्तोत्र (उत्कीलन) से चाटन आदि सिद्ध होते हैं ॥ ४ ॥ सब उच्चाटन मोहन आदि इससे सिद्ध होते हैं वा नहीं यह शंका करके पहले शिवजी ने इस कल्याणकारी शुभ उत्कीलन को सब ऋषियों से बुलाकर कहा ॥ ५ ॥ इसके बाद चण्डिका जी के स्तोत्र को गुप्त कर दिया। इस स्तोत्र के पाठ करने से जो पुण्य मिलता है उसकी समाप्ति नहीं है इसलिये पहले की उस संकोच शीलता को छोड़ दो और मन्त्रों का जप करने वाला भी सब ही कल्याणों को पाता है इसमें संशय नहीं है ॥ ७ ॥ कृष्णचतुर्दशी अथवा शुक्लाष्टमी समाहित एकाग्र होकर सब वस्तु भेट में देता है पीछे संसार यात्रार्थ प्रसादरूप ग्रहण करता है।* उससे देवीजी

---

*नोट देखो १७१ पृष्ठ में उत्कीलन तथा शापोद्धार।

कवच से शरीर की रक्षा होती है। अर्गला लोहे की व काष्ठ की होती है जिसके लगाने से किवाड़ नहीं खुलते यही फल इसके पाठ से होता है अर्थात् कोई प्रकारकी बाधा घरमें नहीं आसकती। और कीलन से उत्कीलन होता है अतः इनका पाठ अवश्य करना चाहिये।

कीलितम् ॥८॥ यो निष्कीलां विधायैनां नित्यं जपति संस्फुटम् । ससिद्धः सगणः सोऽपि गन्धर्वो जायते नरः ॥६॥ न चैवाप्यटतस्तस्य भयं क्वापीह जायते ॥ नापमृत्युवशं यातिमृतो मोक्षमवाप्नुयात् ॥१०॥ज्ञात्वा प्रारभ्य कुर्वीत न कुर्वाणो विनश्यति । ततो ज्ञात्वैव सम्पन्नमिदं प्रारभ्यते बुधैः ॥११॥ सौभाग्यादि च यत्किञ्चिद् दृश्यते ललनाजने ॥ तत्सर्वं त्वत्प्रसादेन तेन जाप्यमिदं शुभम् ॥१२॥ शनैस्तु जप्यमानेऽस्मिन् स्तोत्रे सम्पत्तिरुच्चकैः ॥ भवत्येव समग्रापि ततः प्रारभ्यमेव तत् ॥ १३ ॥ ऐश्वर्यं

प्रसन्न होतो हैं । दूसरी तरह नहीं । इस प्रकार महादेवजी ने सिद्धी रोकने को यही कीलन किया है ॥ ८ ॥ जो इसको निष्कीलन करके नित्य जपता है वह सिद्ध होता है वा गण होता है । अथवा गन्धर्व हो जाता है ॥ ६ ॥ उस जप करने वाले को कहीं भी घूमने से भय नहीं लगता। न अल्पायु होता तथा मरने पर मोक्ष होजाती है ॥१०॥ विधि जान करके प्रारम्भ करे विधि को विना जाने प्रारम्भ करने से नष्ट होजाता है। इसलिये इस संपूर्ण स्तोत्र को जान करके ही विद्वान् करते हैं ॥ ११ ॥ सौभाग्यादिक जो स्त्रियों में दिखाई देते हैं । वह सब इसके प्रसाद से हैं इसलिये यह जप करने योग्य है ॥ १२॥ इस स्तोत्र को धीरे २ जपने से संपत्ति होती है । जोर से पाठ करने से सम्पूर्ण संपत्ति प्राप्ति होती है इसलिये जोर से

यत्प्रसादेन सौभाग्यारोग्यसम्पदः।। शत्रुहानिः परोमोक्षः स्तूयते सा न किं जनैः ॐ ।। १४ ।। इति भगवत्याः कीलक स्तोत्रं समाप्तं शुभम्भूयात् ।।३।।

प्रारम्भ करते हैं जिसके प्रसाद से सौभाग्यादिक संपत्ति मिलती हैं। शत्रु नष्ट होते हैं मोक्ष प्राप्त होती है। फिर भी मन्दभागी जन इसकी स्तुति क्यों नहीं करते ?

इति श्री पं० घनश्याम गोस्वामी कृत कीलक भाषा समाप्त ।।

अथ नवार्ण विधिः

श्रीगणपतिर्जयति ।। ॐ अस्य श्रीनवार्णमन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्राऋषयः गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः नन्दा शाकम्भरी भीमाः शक्तयः रक्तदन्तिका दुर्गा भ्रामर्यो बीजानि अग्निवायुसूर्यास्तत्वानि ऋग्यजुःसामवेदाःध्यानानि श्रीमहाकालीमहालक्ष्मी महासरस्वतीप्रीत्यर्थं जपेविनियोगः ।

ऋष्यादिन्यासः ।।

ॐ ब्रह्मविष्णुरुद्र ऋषिभ्यो नमः शिरसि ।। ओं गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दोभ्यो नमो मुखे ।। ओं महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती देवताभ्यो नमः हृदि ।। ओं नन्दाशाकम्भरी भीमाः शक्तिभ्यो नमो

दक्षिणस्तने ॥ ओं रक्तदन्तिका दुर्गाभ्रामरी बीजेभ्योनमोवामस्तने ॥ ओं अग्निवायुसूर्यतत्वेभ्यो नमो नाभौ ॥ इति ऋष्यादि न्यासः ॥ अथवा तन्त्रान्तरे॥ (ऐंबीजम् ह्रींशक्तिः क्लीं कीलकम् ॥ ओं ऐं बीजाय नमो गुह्ये ॥ ओं ह्रींशक्त्ये नमः पादयोः ॥ ओं क्लीं कीलकाय नमो नाभौ ॥ इति पाठान्तरम्) ॥ मूलेन करौ संशोध्य ॥ मन्त्र महोदधौ १८ तरंगे १११ श्लोकतः ॥ नवार्ण एकादश न्यास प्रकारः तत्रादौ शुद्ध मातृका न्यासः प्रथमः ॥ पृष्ठ १०४ के अनुसार करना ॥

कृतेनयेन देवस्य सारूप्यं याति मानवः ॥

इस प्रथम न्यास के करने से मनुष्य देवी रूप को प्राप्त होता है।

सारस्वत न्यासः ॥ २ ॥

अस्मिन्सारस्वते न्यासेकृते जाड्यं विनश्यति ॥

दूसरे सारस्वत न्यास के करने से मूर्खता नाश होती है।

ओं ऐं ह्रीं क्लीं नमः कनिष्ठयोः ॥ ओं ऐं ह्रीं क्लीं नमः अनामिकयोः ॥ ओं ऐं ह्रीं क्लीं नमः मध्यमयोः ॥ ओं ऐं ह्रीं क्लीं नमः तर्जन्योः ॥ ओं ऐं ह्रीं क्लीं नमः अंगुष्ठयोः ॥ ओं ऐं ह्रीं क्लीं नमः करतलयोः ॥ ओं ऐं ह्रीं क्लीं नमः करपृष्ठयोः ॥ ओं ऐं ह्रीं क्लीं नमः मणिबन्धयोः ॥ ओं ऐं ह्रीं क्लीं नमः कर्पूरयोः ॥

ओं ऐं ह्रीं क्लीं नमः हृदये ॥ ओं ऐं ह्रीं क्लीं नमः शिरसि ॥ ओं ऐं ह्रीं क्लीं नमः शिखायाम् ॥ ओं ऐं ह्रीं क्लीं नमः कवचे ॥ ओं ऐं ह्रीं क्लीं नमः नेत्रयोः ॥ ओं ऐं ह्रीं क्लीं नमः अस्त्रायफट् ॥ ओं ऐं ह्रीं क्लीं नमः पूर्वस्याम् ॥ ओं ऐं ह्रीं क्लीं नमः आग्नेय्यां ॥ ओं ऐं ह्रीं क्लीं नमः याम्याम् ॥ ओं ऐं ह्रीं क्लीं नमः नैर्ऋत्ये ॥ ओं ऐं ह्री क्लीं नमः पश्चिमायां ॥ ओं ऐं ह्रीं क्लीं नमः वायव्याम् ॥ ओं ऐं ह्रीं क्लीं नमः उत्तरे ॥ ओं ऐं ह्रीं क्लीं नम ऐशान्यां ॥ ओं ऐं ह्रीं क्लीं नम ऊर्ध्वा ॥ ओं ऐं ह्रीं क्लीं नमः अधः ॥ इति द्वितीय सारस्वत न्यासः ॥

अथ तृतीय मातृका गण न्यासः ॥

तृतीयेऽस्मिन्कृते न्यासे त्रैलोक्यविजयी भवेत् ॥

इस तीसरे न्यास के करने से मनुष्य त्रिलोकी को जीतता है ॥

ॐ ह्रीं ब्राह्मी पूर्वतः मां पातु ॥ ॐ ह्रीं माहेश्वरी आग्नेय्यां मां पातु ॥ ॐ ह्रीं कौमारी दक्षिणस्याम् मां पातु ॥ ॐ ह्रीं वैष्णवी नैर्ऋत्याम् मां पातु ॥ ॐ ह्रीं वाराही पश्चिमायाम् मां पातु ॥ ॐ ह्रीं नारसिंही वायव्याम् मां पातु ॥ ॐ ह्रीं इन्द्राणी उत्तरस्यां मां पातु ॥ ॐ ह्रीं चामुण्डा ईशान्याम् मां पातु ॥ ॐ ह्रीं व्योमेश्वरी ऊर्ध्वं मां पातु ॥

ॐ ह्रों सप्तेश्वरी पाताले मां पातु ॥ इति तृतीय न्यासः ॥

अथ चतुर्थः षड्देवी न्यासः ॥

तुर्यं न्यासं नरः कुर्याज्जरा मृत्युं व्यपोहति ॥

चौथे न्यास के करने से मनुष्य वृद्धावस्था तथा मृत्यु को दूर करता है ॥

ॐ कमलाङ्कुशमण्डिता तन्दजा पूर्वाङ्गं मे पातु ॥ ॐ खड्गपात्र करा रक्तदन्तिका दक्षिणाङ्गं मे पातु ॥ ॐ पुष्पपल्लव संयुताशाकम्भरी पृष्ठांङ्गं मे पातु ॥ ॐ धनुर्बाणकरा दुर्गार्तिहारिणी दुर्गा वामांगं मे पातु ॥ ॐ शिरः पात्रकरा भीमा मस्तकाच्चरणान्तं मे पातु ॥ चित्रकान्ति भृङ्गभ्रामरी चरणाभ्यां शिरः पर्यन्तं मे पातु ॥ इति चतुर्थ न्यासः ॥

अथ ब्रह्माख्य नामक पंचम न्यासः ॥

कृतेऽस्मिन्पञ्चमे न्यासे सर्वान्कामानवाप्नुयात् ॥

इस पञ्चम न्यास के करने से मनुष्य सब कामना को प्राप्त होता है ॥

ॐ ब्रह्मा सनातनः पादादि नाभि पर्यन्तं मां पातु ॥ ॐ जनार्दनः नाभेर्विशुद्धि पर्यन्तं नित्यं मां पातु ॥ ॐ रुद्रस्त्रिलोचनः विशुद्धेर्ब्रह्मरंध्रान्तं मां पातु ॥ ॐ हं सः पादद्वयं मे पातु ॥ ॐ वैनतेयः कर द्वयं मे पातु॥ ॐ वृषभश्चक्षुषी मे पातु॥ॐ गजाननः सर्वाङ्गानि मे पातु॥ ॐ सर्वानन्दमयो हरिः परापरौ देह भागौ मे पातु ॥ इति पञ्चमो ब्रह्मादि न्यासः ॥

अथ महालक्ष्म्यादि षष्ठन्यासः ॥

इस छठे न्यास के करने से मनुष्य सद्गति को प्राप्त होता है ॥

ॐ अष्टादशभुजायुक्तमहालक्ष्मीर्मध्ये मे पातु ॥ ॐ अष्टभुजायुक्त सरस्वती ऊर्ध्वं मे पातु ॥ ॐ दशभुजा मण्डिता महाकाली अधः मे पातु ॥ ॐ सिंहः हस्तद्वयंमेपातु ॥ ॐ परहंसोद्वियुग्मम् मे पातु ॥ ॐ दिव्यमहिषारूढोयमः पदद्वयंमेपातु ॥ ॐ महेशश्चण्डिकासहितः सर्वाङ्गानिमेपातु । इतिषष्ठन्यासः।

अथ सप्तम बीजमन्त्र न्यासः ॥

विन्यसेत् सप्तमेन्यासे कृते रोगक्षयो भवेत् ॥

इस सप्तम न्यास के करने से मनुष्य का रोग नाश होगा ॥

ॐ ऐं नमः शिखायाम् ॥ ॐ ह्रीं नमः दक्षनेत्रे ॥ ॐ क्लीं नमः वामनेत्रे ॥ ॐ चां नमः दक्षकर्णे ॥ ॐ मुं नमः वामकर्णे ॥ ॐ डां नमः दक्षनासापुटे ॥ ॐ यैं नमः वाम नासापुटे ॥ ॐ विं नमः मुखे ॥ ॐ च्चें नमः गुदे ॥ इति बीजन्यासः सप्तमः ॥

अथाष्टम विलोम बीजन्यासः ॥

कृतेस्मिन्नष्टमे न्यासे सर्वं दुःखं विनश्यति ॥

इस अष्टम न्यास के करने से सब दुःख नाश होगा ॥

ॐ च्चैं नमः गुदे ॥ ॐ विं नमः मुखे ॥ ॐ यैं नमः वाम नासापुटे ॥ ॐ डां नमः दक्ष-

नासापुटे ॥ ॐ मुं नमः वाम कर्णे ॥ ॐ चां नमः दक्ष कर्णे ॥ ॐ क्लीं नमः वाम नेत्रे ॥ ॐ ह्रीं नमः दक्ष नेत्रे ॥ ॐ ऐं नमः शिखायाम् ॥ इति अष्टम न्यासः ॥

कुर्वीत नवमं न्यासं मन्त्र व्याप्ति स्वरूपकम् ॥

इस नवम न्यास करने से देवत्व प्राप्त होता है ॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः मस्तकाच्चरणपर्यन्तं पूर्वाङ्गे ॥ ॐ मूलं ९ नमः मस्तकाच्चरणा वधि दक्षिणाङ्गे ॥ ॐ मूलं ९ नमः मस्तकाच्चरणा वधि पृष्टे ॥ ॐ मूलं ९ नमः मस्तकाच्चरणावधि वामाङ्गे ॥ ॐ मूलं ९ नमः मस्तकात्पादान्तम् ॥ ॐ मूलं ९ नमः पादादि शिरोन्तम् इति नवमोन्यासः ॥

अथ दशम षडङ्ग न्यासः

कृतेस्मिन्दशमे न्यासे त्रैलोक्यं वशगं भवेत् ॥

इस दशम न्यास करने से तीन लोक वश होते हैं ॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायैविच्चे नमः हृदयाय नमः ॥ ॐ मूलं ९ नमः शिरसे स्वाहा ॥ ॐ मूलं ९ नमः शिखायैवषट् ॥ ॐ मूलं ९ नमः कवचाय हुम् ॥ ॐ मूलं ९ नमः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ मूलं ९ नमः अस्त्राय फट् ॥दशमषडंग न्यासः॥

अथ एकादशन्यासः ॥

ॐ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी
तथा ॥ शंखिनी चापिनी बाण भुशुण्डी परिघायुधा
॥१॥ सौम्या सौम्यतराशेषसौम्येभ्यस्त्वतिसुन्दरी ॥
परापराणां परमात्वमेव परमेश्वरी ॥ २ ॥ यच्च
किञ्चित्क्वचिद्वस्तु सदसद्वाखिलात्मिके ॥ तस्य
सर्वस्य या शक्तिः सात्वं किं स्तूयसे मया ॥३॥ यया
त्वयाजगत्स्रष्टा जगत्पातात्तियो जगत् ॥ सोपि निद्रावशं
नीतः कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः ॥ ४ ॥ विष्णुः
शरीर ग्रहणमहमीशान एव च ॥ कारितास्ते यतोऽतस्त्वां
कः स्तोतुं शक्तिमान्भवेत् ॥५॥

आद्यं ऐं बीजं कृष्णतरंध्यात्वा सर्वांगे विन्यसामि ॥

पहले ऐं बीज को श्याम रंग का सब शरीर में ध्यान करना ॥

ॐ शूलेनपाहिनोदेवि पाहि खड्गेन चाम्बिके ॥
घंटा स्वनेन नः पाहि चापज्यानिः स्वनेन च ॥१॥
प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे ॥
भ्रामेणनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि ! ॥२॥
सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्तिते ॥
यानिचात्यर्थ घोराणितैरक्षास्मांस्तथा भुवम् ॥३॥
खड्ग शूल गदादीनि यानि चास्त्राणि तेम्बिके ॥
करपल्लव संगीनि तैरस्मान्रक्षसर्वतः ॥४॥

द्वितीयं ह्रीं बीजं सूर्य सदृशं ध्यात्वा सर्व (पृष्ठ) तोन्यसेत् ॥

दूसरे ह्रीं को सूर्य समान सब शरीर में ध्यान करना ॥

ॐ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्ति समन्विते ॥ भयेभ्यस्त्राहिनो देवि दुर्गे ! देवि नमोस्तुते ॥१॥ एतत्तेवदनं सौम्यं लोचनत्रय भूषितम् ॥ पातुनः सर्व भूतेभ्यःकात्यायनि ! नमोस्तुते ॥२॥ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषासुरसूदनम्॥ त्रिशूलंपातुनोभीतेर्भद्रकाली नमोस्तुते ॥३॥ हिनस्तिदैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्ययाजगत् ॥ सा घण्टा पातुनो देवि! पापेभ्यो नः सुतानिव॥४॥ असुरासृग्वसा पंकचर्चितस्ते करोज्वलः॥ शुभाय खड्गो भवतु चण्डिके ! त्वां नतावयम् ॥५॥

तृतीयं क्लीं बीजं स्फटिकाभं ध्यात्वासर्वांगे विन्यसेत् ॥

तीसरे क्लीं को चन्द्रमा समान सब शरीर में ध्यान करना ॥

मूलषडंगन्यासः

ॐ ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ क्लीं मध्यमाभ्यां नमः ॥ ॐ चामुण्डायै अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ विच्चेकनिष्ठकाभ्यां नमः॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ एवं हृदयादि ॥ ॐ ऐं हृदयाय नमः॥ ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा ॥ ॐ क्लीं शिखायै वषट् ॥ ॐ चामुण्डायै कवचाय हुं ॥ ॐ विच्चे नेत्रत्रयायवौषट्॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडायैविच्चे अस्त्रायफट् ॥

अथाक्षर न्यासः तन्त्रान्तरे

ॐ ऐं नमः शिरसि॥ ॐ ह्रीं नमः नेत्रयोः ॥ ॐ क्लीं नमः ललाटे ॥ चां नमः भ्रुवोः ॥ ॐ मुं नमः कर्णयोः ॥ ॐ डां नमः गण्डयोः ॥ ॐ यैं नमः मुखे (वदने) ॥ ॐ विं नमः दन्तपंक्त्योः ॥ ॐ च्चें नमः जिह्वायां ॥ ॐ ऐं नमः स्कन्धयोः ॥ ॐ ह्रीं नमः गले ॥ ॐ क्लीं नमः भुजयोः ॥ ॐ चां नमः हृदि ॥ ॐ मुं नमः पार्श्वयोः ॥ ॐ डां नमः पृष्ठे ॥ ॐ यैं नमः नाभौ ॥ ॐ विं नमः लिंगे ॥ ॐ च्चें नमः कट्योः ॥ मू० ॐ ९ नमः गुह्ये ॥ मू० ॐ ९ नमः करयोः ॥ मू० ॐ९ नमः पादयोः ॥ मू० ॐ ९ नमः सर्वांगे ॥

अथ दिङ्न्यासः

ॐ ऐं प्राच्यैनमः ॥ ॐ ऐं आग्नेय्यै नमः ॥ ओं ह्रीं दक्षिणायै नमः ॥ ओं ह्रीं नैर्ऋत्यै नमः ॥ ओं क्लीं प्रतीच्यै नमः ॥ ओं क्लीं वायव्यै नमः ॥ ओं चामुण्डायै उदीच्यै नमः ॥ ओं चामुण्डायै ईशान्यै नमः ॥ ओं ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ऊर्ध्वायै नमः ॥ ओं ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे भम्यै नम, ॥ मानसोपचारै संपूज्य ॥ तन्त्रान्तरोक्त अक्षमाला प्रकारः ।समानेनाक्षसूत्रस्य विधानमभिधीयते ॥ .यथा लाभं यथा बुद्धि अक्षाण्यानीय यत्नतः ॥ अन्योन्य समरूपाणि नाति स्थूलकृशानि च ॥

अथ ध्यानम् ॥

शंखं चक्रं गदां बाणान्पाशं परिघ शूलके ॥
भुशुण्डीं च शिरः खड्गं दधतीं दशवक्त्रकाम् ॥१
तामसीं सिद्धिदां नौमि महाकालीं दशांघ्रिकाम् ॥
मालां च परशुं बाणान् गदां कुलिश मेवच ॥ २
पद्मं धनुः कुण्डिकां च दंडं शक्तिमसिं तथा ॥
खेटकं जलजं घंटां सुरापात्रं च शूलकम् ॥३॥
पाशं सुदर्शनं चैव दधतीं लोहित प्रभाम् ॥
पद्मस्थितांमहालक्ष्मीं भजे महिषमर्दिनीम् ॥४॥
घण्टां शूलं हलं शंखं मुसलासि धनुः शरान् ॥
दधतीमुज्वलां नौमिदेवीं गौरी समुद्भवाम् ॥५॥

इन श्लोकों का अर्थ आगे १। २। ५ अध्याय में देखना

इति ध्यात्वा मालां सम्पूज्य प्रार्थयेत् ॥

ॐ मां माले महामाये सर्वशक्ति स्वरूपिणि !
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मां सिद्धिदा भव ॥

जन्तुभिर्न विशीर्णानि न जीर्णानि नवानि च ॥ गव्यैस्तु पञ्चभिस्तानि सम्प्रक्षाल्य पृथक् पृथक् ॥ अश्वत्थपत्रनवकैः पद्माकारेण कल्पयेत् ॥ सूत्रं मणींश्च गन्धाद्भिः क्षालितांस्तत्र निक्षिपेत् ॥ ❀ तारंशक्तिं मातृकां च सूत्रेचैवमणिष्वथ ॥ विन्यस्य पूजयेदाज्यैर्जुहुयाच्चैव शक्तितः ॥ मणिमेकैकमादाय सूत्रे तत्र तु योजयेत् ॥ एवं कृताक्षमालायां जपेन्मातृकया ततः ॥ गुरुं सम्पूज्य तद्धस्तात् गृह्णीयात्सर्व सिद्धये ॥ शैवागमेतु ॥ गोपुच्छ'सदृशी कार्या एकास्त्रा वा समेरुका ॥ प्रोतव्या सितवर्णाद्यैस्तत्कर्मप्रसिद्धये ॥ जपमालांविधायैवंततःसंस्कारमारभेत् ॥ क्षालयेत्पञ्च-

इति मालां प्रार्थ्य ॥ ह्रीं सिद्ध्यै नम इति मालांनत्वा ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ॥ १०८ नवार्ण मन्त्रं जप्त्वा षडंगन्यासंकृत्वा रात्रि सूक्तं पठेत् ॥

नवार्ण के प्रयोग का फल १६५ पृष्ठ में देखिये ॥

गव्यैस्तां सद्यो[1]जातेन तज्जलैः । चन्दनागुरुगन्धाद्यैर्वाम[2]देवेनघर्षयेत् ॥ धूपयेत्तामघोरेण[3]लिंपेत्तत्पुरुषेण[4]तु ॥ मन्त्रयेत्पञ्चमे[5]नैव प्रत्येकं तु शतं-शतम् ॥ मेरुञ्च पञ्चमेनैव तथा मन्त्रेण मन्त्रयेत् ॥

१ ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वैनमो नमः ॥ भवे भवेनाति भवे भवस्व मांभवोद्भवाय नमः ।

२ ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कल विकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूत दमनाय नमो मनोन्मनाय नमः ॥

३ ॐ अघोरेभ्योथघोरेभ्यो घोर घोरतरेभ्यः सर्वेभ्यः सर्व शर्वेभ्यो नमस्तेऽअस्तु रुद्रेभ्यः ॥

४ ॐ तत्पुरुषायविद्महे महादेवाय धीमहि ॥ तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥

५ ॐ ईशानः सर्व विद्यानामीश्वरः सर्वभूतानाम् ॥
ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोधिपतिर्ब्रह्माशिवो मे अस्तु सदा शिवोम् ॥

ॐ ह्रीं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं नव अश्वत्थपत्रस्थापित मालां संविन्यस्य देवता प्राणप्रतिष्ठांकुर्यात् ।। प्राणप्रतिष्ठा २३ पृष्ठ में देखना ॥

जप करने के लिये माला विधान १६४ पृष्ठ में देखिये ।

माला प्रार्थना ॥

ॐ मां माले महामाये सर्वशक्ति स्वरूपिणि ॥
चतुर्वर्गस्त्वयिन्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव ॥
ॐ अविघ्नं कुरु माले त्वं गृह्णामिदक्षिणे करे ॥
जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये ॥

ॐ अक्षमालाधिपतये सुसिद्धिं देहि २ सर्वमन्त्रार्थ साधिनि साधय २ सर्वसिद्धिं परिकल्पय २ मे स्वाहा ॥

इतिप्रार्थ्यं ॥

ऐं ह्रीं अक्षमालिकायै नमः ॥ इति मंत्रेणमालांपूजयेत् ॥

विसर्जनम् ॥

ॐ त्वं माले सर्व देवानां प्रीतिदा शुभदा भव ॥ शिवं कुरुष्व मे भद्रे यशोवीर्यं च सर्वदा इति मांला शिरसि निधाय प्राणानायम्य न्यासं कृत्वा विसर्जयेत् ॥

मालायां जप प्रकारः शैवागमे ॥

मध्यमायां न्यसेन्मालां ज्येष्ठेनावर्तयेत्क्रमात् ॥ भुक्ति मुक्ति प्रदासेयं मातृकागणनक्रमः ॥ अंगुष्ठानामिकाभ्यान्तु कुर्यादुत्तम कर्मणि ॥ तर्जन्यंगुष्ठ योगाद्धि विद्वेषोच्चाटनेजपः ॥ कनिष्ठाङ्गुष्ठकाभ्यांतु जपेन्मारण कर्मणि ॥ जपान्यकाले तां मालां पूजयित्वा च गोपयेत् ॥ जीर्णे सूत्रेपुनः सूत्रं ग्रन्थयित्वा शतंजपेत् ॥ जपेन्निषिद्धसंस्पर्शेक्षालयित्वा यथोचितम् । कासे क्षुते च जृम्भायामेकमावर्तकं त्यजेत् ॥ प्रमादात्तर्जनी स्पर्शो भवेदावर्तकं त्यजेत् ॥ यदासंत्रुट्यते मालाग्रन्थयित्वाथ पूर्ववत् ॥ प्रतिष्ठितायां तस्यां तु मन्त्रं जप्यादन्यधीः ॥ एवं प्रतिष्ठितायांतु अन्येनैवजपेन्मनुम् ॥ अन्यत्रापि ॥ येन प्रतिष्ठिता माला तमेवतु मनुं जपेत् ॥ अन्य मन्त्रज वा विद्वानकार्याकर्हिचिद्बुधैः । तर्जन्या न स्पृशेत्सूत्रं कम्पयेन्नो विधूनयेत् ॥ नस्पृशेद्वामहस्तेन करभ्रष्टांनकारयेत् ॥ अक्षाणां चालनेङ्गुष्ठ नान्यमक्षं न संस्पृशेत् ॥ जपकाले सदा विद्वान् मेरुंनैव विलंघयेत् ॥ परिवर्तन काले च शब्दं नैवकारयेत् ॥ एवं सर्व परिज्ञाय मालायां जपमारभेत ॥ नित्यं जप करे कुर्यान्नतु काम्यं कदाचन ॥ काम्यमपि करे कुर्यान्मालाभावे च सुन्दरि ! ॥

अथ शक्ति करमाला यामले ॥

अनामायास्त्रयं पर्व कनिष्ठायास्त्रिपर्विका ॥ मध्यमायास्त्रयंपर्वं तर्जनी मूलपर्वणि ॥ प्रादक्षिण्य क्रमेणैव जपेद्दशसुपर्वसु ॥ शक्तिमाला समाख्याता सर्वमन्त्र प्रदीपिका ॥ पर्वद्वयं तु तर्जन्या मेरुं तद्विद्धि पार्वति ! ॥ तर्जन्यग्रे तथा मध्ये यो जपेत्तत्र मानवः ॥ चत्वारितस्य नश्यन्ति आयुर्विद्यायशोबलम् ॥

इनसे जप की माला की संख्या निषेध ॥

नाक्षतैर्हस्तपर्वैर्वा न धान्यैर्न च पुष्पकैः ॥ न चन्दनैर्मृत्तिकया जप संख्यां न कारयेत् ॥ लाक्षां कुसीदं (लालचन्दन) सिन्दूरं गोमयञ्च करीषकम् ॥ विलोड्य गुटिकां कृत्वा जप संख्यान्तु कारयेत् ॥ शाक्तानन्द तरंगिण्यां ६ उल्ला से ॥

मणिमध्ये नागपाशं ब्रह्मग्रन्थि मथार्पयेत् ॥ हुँ मन्त्रेण ततोमेरुं प्रणवेन च बन्धयेत् । अन्यत्रापि जप प्रकारः ॥

अंगुल्यग्रेण यज्जप्तं यज्जप्तं मेरुलंघने ॥ अक्षमालां गुरोर्लब्धांतदभावे स्वनिर्मितान् ॥ गोपयेत्सर्वकर्मान्तं यदीच्छेत्सिद्धि मुत्तमाम् ॥ स्वमन्त्रमक्षसूत्रं च गुरोरपिनदर्शयेत् ॥ जपकालेचगोप्तव्यमक्षसूत्रं च षण्मुख ! ॥ परदृष्टिगतं सूत्रं सर्वथानिष्फलं भवेत ॥ तस्मात्सर्व प्रयत्नेन गोपनीयं सदा बुधैः ॥ असंख्यातेन (तं च) यज्जप्तं तज्जप्तं निष्फलं भवेत् ॥ अन्यत्र विशेषः ॥ मन्त्रतन्त्रप्रकाशे ॥ अंगुलिभिरंगुलिपर्वभिरपि जपं उक्तः ॥ अंगुलि जप संख्याप्तं फलमेकगुणं स्मृतम् ॥ रेखास्वष्टगुणं विद्यादक्षैश्चशतसंगुणम् ॥ *गणनाविधि मुल्लंघ्य यो जपेत्तं जपंयतः ॥ गृह्णन्ति राक्षसानूनं गणयेत्सर्वथा बुधः ॥

मुण्डमाला तन्त्रे ॥

मुखे मुखन्तु संयोज्य पुच्छे पुच्छं तु योजयेत् ॥ तत्स्वजातीयमेकाक्षं मेरुत्वेनाग्रतोन्यसेत्॥ सार्द्ध द्वया वर्तनेन ग्रन्थिं कुर्यादधो दृढं ॥ ब्रह्मग्रन्थिं ततो दद्यान्नागपाशमथापि वा ॥ गो पुच्छ सदृशी कुर्यादथ सर्पाकृतिर्भवेत् ॥ ग्रन्थिहीनं न कर्तव्यं मेरुपृष्ठेन दूष्यति ॥ अप्रतिष्ठितमालाभिर्मन्त्रं जपति यो नरः ॥ सर्वंतद्विफलं विद्यात्क्रुद्धा भवति चंडिका॥ न धारयेत्करे कण्ठे मूर्न्द्धि च जपमालिकाम् ॥ भूत शुद्धौ ॥ अथ जप विधिः ॥ यस्य यस्य च मन्त्रस्य उद्दिष्टो याच देवता ॥ चिन्तयित्वा तदाकारं मनसा जपमाचरेत् ॥ शनैः शनैरविस्पष्टं न द्रुतं न विलम्बितम ॥ क्रमेणोच्चारयेद्वर्णानाद्यन्त क्रम योगतः ॥ अति ह्रस्वो व्याधि हेतुरति दीर्घो वसु क्षयः ॥ अक्षराक्षर संयुक्तं जपेन्मौक्तिक हारवत् ॥ कुलार्णवे ॥ तन्निष्ठस्तद् गत प्राणस्तच्चिन्तस्तत्परायणः ॥ तत्पदार्थानुसन्धानं कुर्वन्मन्त्र जपेत्प्रिये !

टि० *जो जप किया जाय उसकी गिनती अवश्य करनी चाहिये। और जो बिना गिनती के जप किया जाता है उसका फल राक्षस ले लेते हैं।

॥ अथ रात्रिसूक्तम् ॥

ॐ विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थितिसंहारकारिणीम् ॥
निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः ॥१॥

ब्रह्मोवाच ॥

त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वंहि वषट्कारः स्वरात्मिका ॥ सुधात्वमक्षरेनित्येत्रिधामात्रात्मिका स्थिता ॥ २ ॥ अर्धं मात्रास्थितानित्यायानुच्चार्या विशेषतः ॥ त्वमेव सा त्वं सावित्रो त्वं देविजननी परा ॥३॥ त्वयैतद्धार्यते विश्वं त्वयैतत्सृज्यते जगत् ॥ त्वयैतत्पाल्यते देवि त्वमत्स्यन्तेचसर्वदा ॥४॥ विसृष्टौ सृष्टिरूपात्वं स्थितिरूपाचपालने ॥ तथा संहृतिरूपान्ते जगतोऽस्य जगन्मये ॥५॥ महाविद्या महामाया महामेधा

आसनानि तन्त्रे ॥

कौशेयं वाथ चैलं वा चार्मं तौलमथापि वा ॥ वेत्रजं तालपत्रं वा काम्बलं दार्भमासनम् ॥ वंशाश्म दारु धरणी तृण पल्लवनिर्मितम् ॥ वर्जयेदासनं मन्त्री दारिद्र्य व्याधिदुःखदम् ॥ धर्मार्थं काम मोक्षाप्तेश्चैलाजिन कुशोत्तरम् ॥ यतीनामासनं श्लक्ष्णं कूर्माकारं तु कारयेत् ॥ अन्येषां तु चतुः पादं चतुरस्रं तु कारयेत ॥ गोशकृन्मृण्मयंभिन्नं तथा पालाश पिप्पलम् ॥ लौहविद्धं सदैवार्कं वर्जयेदासनं बुधः ॥ स्वस्तिक पद्म वीरादिष्वेकासन समास्थितः ॥ जपार्चनादिक कुर्यादन्यथानिष्फलं भवेत् ॥ दानमाचमनं होमं भोजनं देवतार्चनम् ॥ प्रौढपादो नकुर्वीत स्वाध्यायं चैव तर्पणम् ॥ प्रौढपाद लक्षणम् ॥ आसनारूढ पादस्तु जानुनोर्वाथजंघयोः कृतावसिक्थ को यस्तु प्रौढ पादःऽस उच्यते ॥

महास्मृतिः ॥ महामोहा च भवती महादेवी महासुरी ॥६॥ प्रकृतिस्त्वं चसर्वस्य गुणत्रयबिभाविनी॥कालरात्रिर्महारात्रिर्मोहरात्रिश्चदारुणा ॥७॥ त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वंह्रीस्त्वंबुद्धिर्बोधलक्षणा ॥लज्जापुष्टिस्तथा तुष्टिस्त्वंशान्तिः क्षान्तिरेव च ॥ ८ ॥ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा ॥ शंखिनी चापनी बाण भुशुण्डीपरिघायुधा ॥ सौम्यासौम्यतराशेषसौम्येभ्यस्त्वतिसुन्दरी ॥ परापराणां परमात्वमेव परमेश्वरी ॥१०॥ यच्च किंचित्क्वचिद्वस्तु सदसद्वाखिलात्मिके ॥ तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे तदा ॥११॥ यया त्वया जगत्स्रष्टा जगत्पात्य (ता) त्ति यो जगत् ॥ सोऽपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः ॥१२॥ विष्णुः शरीर ग्रहणमहमीशान एव च ॥ कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान्भवेत् ॥ १३ ॥ सा त्वमित्थं प्रभावैः स्वैरुदारैर्देवि संस्तुता ॥ मोहयैतौ दुराधर्षावसुरौ मधुकैटभौ ॥१४॥ प्रबोधं च जगत्स्वामी नीयतामच्युतो लघु ॥ बोधश्च क्रियतामस्य हन्तुमेतौ महासुरौ ॥१५॥ इति रात्रिसूक्तम् ॥

रात्रिसूक्त का अर्थ १ अध्याय के ७० श्लोक से देखना ॥

ॐ अस्य श्रीप्रथममध्यमोत्तमचरित्राणांब्रह्मविष्णुमहे

श्वरा ऋषयः श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दांसि नन्दाशाकम्भरीभीमाः शक्तयः रक्तदन्तिकादुर्गाभ्रामर्यो बीजानि अग्निर्वायुस्सूर्यास्तत्वानि ऋग्यजुसामवेदाः ध्यानानि मम (यजमानस्य) सकलकामनासिद्धये श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवीनाम्प्रीत्यर्थे पाठे (हवने) विनियोगः ॥ तत्रादौ न्यासः ॥

ॐखड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा शंखिनी चापिनी बाण भुशुण्डी परिघायुधा ॥ अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ (हृदयाय नमः) ॥ ॐ शूलेन पाहिनो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके ॥ घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्या निः स्वनेन च ॥ तर्जनीभ्यां नमः ॥ (शिरसे स्वाहा) ॥ॐप्राच्यां रक्षप्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे ॥ भ्रामणेनात्मशूलस्यउत्तरस्यां तथेश्वरि ॥ मध्यमाभ्यां नमः ॥ (शिखायैवषट्) ॥ ॐसौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते ॥ यानि चात्यन्त घोराणि तै रक्षास्मांस्तथाभुवम् ॥ अनामिकाभ्यां नमः॥(कवचायहुम्)॥ॐ खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेम्बिके ॥ करपल्लवसंगीनि तैरस्मान्रक्षसर्वतः ॥ कनिष्ठकाभ्यां नमः ॥ (नेत्रत्रयायवौषट्) ॥ॐ सर्वस्वरूपे सर्वेशेसर्वशक्ति

समन्विते ॥ भयेभ्यस्त्राहिनो देवि दुर्गेदेवि नमोस्तु ते ॥ करतल करपृष्ठाभ्यां नमः ॥ अस्त्रायफट्

चण्डी पंचाक्षर न्यासः

ॐ ह्रीं हृदयायनमः ॥ ॐ चं शिरसे स्वाहा ॥ ॐ डिं शिखायै वषट् ॥ ॐ कां कवचाय हुम् ॥ ॐ यैं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ ह्रीं चण्डिकायै अस्त्रायफट् ॥

अथ चक्रन्यासः ॥

ॐ शम्भुतेजो ज्वल ज्वाला मालिनि पावके ह्रां नन्दायै अंगुष्ठाभ्यां नमः (हृदयायनमः) ॥ ॐ शम्भुतेजो ज्वल ज्वालामालिनि पावके ह्रीं रक्तदन्तिकायै तर्जनीभ्यां नमः (शिरसेस्वाहा) ॥ ॐ शम्भुतेजो ज्वल ज्वाला मालिनि पावके ह्रूं शाकम्भर्यै मध्यमाभ्यां नमः (शिखायैवषट्) ॥ ॐ शम्भुतेजो ज्वल ज्वालामालिनि पावके ह्रैं दुर्गायै अनामिकाभ्यां नमः (कवचायहुम्) ॥ ॐ शम्भुतेजो ज्वल ज्वाला मालिनि पावके ह्रौं भीमायै कनिष्ठकाभ्यां नमः (नेत्रत्रयायवौषट्) ॥ ॐ शम्भुतेजो ज्वलज्वाला मालिनि पावके ह्रः भ्रामर्यै करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः ॥ (अस्त्रायफट्) एवं हृदयादि ॥

अथ ध्यानम् ॥

*ॐ विद्युद्दाम समप्रभां मृगपति स्कन्धस्थितांभीषणाम् ॥ कन्याभिः करवाल खेट विलसद्धस्ताभिरासेविताम् ॥ हस्तैश्चक्रगदासिखेट विशिखांश्चापं गुणं तर्जनीम् ॥ बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे ॥१॥

इस (जप) ध्यान का अर्थ चित्र के अनुकूल है

इतिध्यात्वामानसोपचारैः सम्पूज्य गुरुदेवतात्मैक्यं विभाव्य पाठं (जपं) कुर्यात् ॥

गुरू देवता आत्मा का एक रूप ध्यान करता हुआ अर्थात् गुरु को ब्रह्म रंध्र में देवता को हृदय में कंठ से मंत्र का मध्यम स्वर से उच्चारण करता हुआ पाठ करे ।

१—अथ वक्ष्यमाण काम्यप्रयोगोपयोगी संपुट व्यवस्था ॥ यथा पार्वति प्रश्नः ॥ देव्युवाच ॥ संपुटं कतिधा स्वामिन् वेत्तुमिच्छामि तत्वतः । कथस्वसुरेशान ! यद्यहं तव वल्लभा ॥ १ ॥ ईश्वरोवाच ॥ संपुटं द्विविधं ज्ञेयमुदयास्तकरं प्रिये ! शृणूदयं त्वमंत्रादौपश्चादस्तं वदामिते ॥ २ ॥ मंत्रमादौपुनः श्लोकमंतेमंत्रं पुनः पुठेन् ॥ पुनर्मंत्रंपुनः श्लोकं क्रमोऽयमुदये शुभः ॥ ३ ॥ उदयोत्कर्ष लाभाय संपुटोयमुदाहृतः ॥ अत्र सर्वत्र श्लोकमंत्रोपलक्षकमिति ॥ अस्तं चिकित्सा शास्त्रेषु शराबाभ्यां कृतं भवेत् ॥ तत्तेहं संप्रवदाम्यत्र एकाग्रकृतमानसः ॥ ४ ॥ मंत्रमादौ पुनः श्लोकमंते मंत्र विपर्ययं ॥ मारणोच्चाटनेबंधेसंपुटोयमुदाहृतः ॥ प्रकारोयमनादृत्य कुर्वन्त्यात्म प्रकल्पितं ॥ रौरवादिषु पच्यन्ते यावदाभूतसंप्लवः ॥ इति मरीचिकल्पे ॥

---

* पाठान्तरम् शारदायां २१ पटले ४१ ॥

हेमाचल तटे रम्ये कल्पवृक्षोपशोभिते ॥ दिव्योद्यानं चिन्तयेच्च विशालं हेमभूतलम् ॥ कृशानुरूपवप्रेण करालेन समावृतम् ॥ तन्मध्ये

प्रथम अध्यायः

ओं अत्राद्य वर्तमान काले चंडी सप्तशती आद्य चरित्रस्य ब्रह्माऋषिः महाकाली देवता गायत्रीछन्दः

चण्डी पाठ के षट् संवाद हैं। जैसेः—

मेधाश्च कथयामास सुरथाय समाधये ।। सा कथा कथिता पश्चान्मार्कण्डेयेन भागुरेः ।। भामेरकथयामासुः पक्षिणो जैमिनिं प्रति ।। अनेनैव विधानेन कथाः षड् विधिका मताः ।।

दुर्गा महात्म्य प्रथम महर्षि मेधा ने राजा सुरथ और समाधिवैश्य को सुनाई ।। तदनन्तर वही कथा मृकण्डु के पुत्र चिरंजीव महर्षि मार्कण्डेय ने मुनिवर भागुरि (क्रौष्टिक) को सुनाई ।। इस प्रकार वही कथा सर्व तत्वों के जानने वाले द्रोणपुत्र पक्षिगण ने महर्षि जैमिनि से कही। इसी तरह चण्डी भगवती की कथा (षट् संवाद) छै प्रकार से संसार में विख्यात हुई ।। और वही कथा संबाद महर्षि वेदव्यासजी ने मार्कण्डेय पुराण में यथावत् क्रम से वर्णन कर लोकोपकार के लिये संसार में प्रचारित करी ।।

चिन्तयेद्दिव्यं विचित्रमणि मण्डपम् ।। तस्मिन्सिंहासनेम्भोज कर्णिकायां विचिन्तयेत् ।। दंष्ट्राकरालाट्टहासं कृष्ण वर्णं भयानकम् ।। अतितीव्रमुखं सिंहं ज्वलदग्निशिखोपमम् ।। तस्यो परिष्टात्तां देवीं कोटिबालार्क सन्निभाम् ।। चक्रासिबाणशूलाख्यान् दधतीन्दक्षिणभुंजः ।। शंखचक्रधनुर्वाण तर्जनीर्वाम बाहुभिः ।। चन्द्रखण्डसमायुक्तामतिभीमत्रिलोचनाम् ।। ऊर्ध्वं ज्वलत्केशपाशामशेषाहरणोन्मुखीम् ।। अङ्गाद्यावृत्ति संयुक्तामस्त्रशस्त्रपरीवृताम् ।। इन्द्रादि लोक पालैश्च सेवितां विन्ध्यवासिनीम् ।।

देवी के वाहन सिंह के शरीर में देवताओं का बास

ग्रीवायां मधुसूदनोस्य शिरसि श्री नीलकंठः स्थितः ।। श्रीदेवी गिरिजा ललाट फलके वक्षःस्थले शारदा ।। षड्वक्त्रो मणि वन्ध सन्धिषु

नन्दजा शक्तिः रक्तदन्तिका वीजं अग्निस्तत्त्वं ऋग्वेद स्वरूपं श्रीमहाकालीप्रसादात् आत्मनोऽभीष्टफल प्राप्ति हेतवे धर्म्मार्थ काम मोक्षार्थे प्रथम चरित्र पाठे (हवने) विनियोगः ॥

॥ सप्तशती पाठ प्रसंग ॥

पूर्व काल में व्यासजी के शिष्य जैमिनि मुनि साङ्ग वेद-शास्त्र पार गामी हुए ॥ वे महाभारत के किसी किसी स्थान में संदिग्ध हुए परन्तु वेदव्यासी से संदेह निवारण करने का समय नहीं प्राप्त हुआ ॥ तब महर्षि मार्कण्डेय के समीप जिज्ञासुरूप में संशय दूर करने गये ॥ जैमिनि बोले--हे भगवन् साक्षात् नारायण क्या मनुष्य योनि में जन्मे हैं ? क्या पांचौ पांडवों की एक मात्र स्त्री द्रौपदी है ? क्या वलराम तीर्थ यात्रा

तथा नागास्तु पार्श्वस्थिताः ॥ कर्णोयस्य तु चाश्चिनौ स भगवान्सिंहो ममास्त्विष्टदः ॥१॥ यन्नेत्रे शशि भास्करौ वसु कुलं दन्तेषु यस्यस्थितं ॥ जिह्वायां वरुणस्य हुँकृतिरिमं श्रीचर्चिका चण्डिका ॥ गण्डौ यक्ष यमौ तथोष्ठ युगुलं संध्याद्वयं पृष्ठके ॥ वक्षोयस्य विराजते सभगवासिंहोममास्त्विष्टदः ॥२॥ ग्रीवा संधिषु सप्तविंशति मितान्यृक्षाणि साध्या हृदि ॥ प्रौढानिर्घृणता तमोस्य तु महा क्रौर्यैः समापूतनाः ॥ प्राणेयस्य तु मातरः पितृ कुलं यस्यास्त्य पानात्मकं ॥ रूपे श्रीकमला कचेषु विमलास्तेस्यूरवे रश्मयः ॥३॥ मेरुः स्याद्वृषणेऽधयस्तु जनने स्वेदस्थिता निम्नगा ॥ लाङ्गूले सहदैवतैर्विलसिता वेदाबलं वीर्यकम् ॥ श्री विष्णोःसकला सुरा अपि यथास्थानं स्थिता यस्यतु ॥ श्री सिंहोऽखिल देवता मयवपुर्देवी प्रियः पातुमाम् ॥४॥ यो वालग्रह पूतनादिभयहृद्यः पुत्र लक्ष्मी प्रदो यः स्वप्नज्वर रोग राजभयहृद्योऽमंगलेमंगलः ॥ सर्वत्रोत्तम वर्णनेषु कविभिर्यस्योपमादीयते ॥ देव्यावाहनमेषरोगभय हृत्सिंहोममास्त्विष्टदः ॥ ५ ॥

इति देवी पुराणोक्त देवी वाहन सिंह ध्यानम् ॥

अथ माहात्म्य न्यासः ॥

ओं मधुकटैभ बध माहात्म्याय नमः ब्रह्मरन्ध्रे ॥ ओं महिषासुर सैन्य बध माहात्म्याय नमः सीमन्ते ॥ ओं महिषासुर बध साहात्म्याय नमः भ्रूमध्ये ॥ ओं शक्रादि माहात्म्याय नमः नेत्रयोः ॥ ओं देव्या दूत संवाद माहात्म्याय नमः मुखे ॥ ओं धूम्रलोचन बध माहात्म्याय नमः कर्णयो ! ॥ ओं चण्ड मुण्ड बध माहात्म्याय नमः हृदि ॥ ओं रक्त बीज बध माहात्म्याय नमः नाभौ ॥ ओं निशुम्भ बध माहात्म्याय नमः लिङ्गे ॥ ओं शुम्भ बध माहात्म्याय नमः मूलाधारे ॥ ओं स्तुति माहात्म्याय नमः जान्वोः ॥ ओं फल माहात्म्याय नमः गुल्फयोः ॥ ओं वरदान माहात्म्याय नमः पादयोः ॥

प्रसङ्ग में ब्रह्महत्या का प्रायश्चित्त करने गये ? क्या कृष्ण भगवान् ने द्रौपदी के पाँच पुत्रों को अनाथ की तरह बिना विवाह हुए ही मरवा दिया ? मेरा यही सन्देह है आप उत्तर दे समाधान करें। जैमिनि मुनि के प्रश्नोपरान्त मार्कण्डेय मुनि ने कहा—यह समय इन सब कथा के कहने का नहीं है अतएव तुम इन सब प्रश्नों को सम्पूर्ण शास्त्रों के धुरन्धर ज्ञाता जातिस्मर और पितृशाप ग्रस्त विन्ध्याचल वासी पिङ्गाख्य, विराध, सुपुत्र और सुमुख नामक मुनि के पुत्र चार पक्षियों से जिज्ञासा करो । जिसके द्वारा तुम्हारे

अनन्तर

ह्रीं माया बीज से सप्त बार व्यापक न्यास करना ॥

अथ महाकाली ध्यानम् ॥

ओं भीमां भीमोग्रदंष्ट्राञ्जनगिरि विलसत्तुल्यकान्तिं दशास्यां त्रिंशल्लोलाक्षिमालां दश लुलितभुजां पंक्ति पादांस्तथैव ॥ शूलं वाणं गदां वै धनुरथदधतीं शंख चक्रे भुशुडीं वन्दे कालीं कराग्रैः परिघमसि युतंतामसीं शार्षकञ्च ॥ इति ध्यात्वा ॥

समस्त सन्देह का नाश हो जायगा। यह सुन जैमिनि विंध्याचल गये और पाषाण शिला के खण्ड पर बैठ यथोचित कुशल क्षेमोपरान्त जिज्ञासु रूप में प्रश्न कहने लगे ॥ इसके बाद चारों पक्षियों ने क्रमपूर्वक सब प्रश्नों का उत्तर मार्कण्डेय क्रौष्टिक (भागुरि) उपक्रम द्वारा दिया ॥ इसी तरह क्रमपूर्वक चौदह मन्वन्तरों के प्रसंग में सुरथ राजा जैसे देवी के प्रसाद से अष्टममन्वन्तराधिपति हुए (यही सुरथ स्वारोचिष नामक दूसरेमनु के अधिकार काल में द्वितीयमनुपुत्र चैत्रनामक क्षत्री राजा के वंश में इन्हीं मेधस ऋषि के उपदेश से भगवती की उपासना द्वारा वर प्राप्त किया था) यह सूर्य की सवर्णा नाम की स्त्री के गर्भ से उत्पन्न होकर भविष्य में अष्टम मनुके नाम से विख्यात हुए ॥ सूर्य की छाया नाम की स्त्री के गर्भ से वैवस्वत नामक सप्तम मनुका जन्म हुआ सब मनुवंशी राजा सूर्य के वंश में हुए थे कहने का अभिप्राय यह है कि सुरथ राजाके प्रति देवी का प्रसन्न होना विस्तृत प्रसङ्ग जहाँ मार्कण्डेय ने

अथ प्रथमाध्याय प्रारम्भः ॥

ॐ नमश्चंडिकायै ॥ ॐ ऐं मार्कण्डेय* उवाच ॥१॥ सावर्णिः सूर्यतनयो यो मंनुः कथ्यतेऽष्टमः । निशामय तदुत्पत्तिं विस्तराद्गदतो मम ॥२॥ महा-

कौष्टिक से कहा था वही सब स्थल मार्कण्डेय उवाच यहाँ से पक्षिगण ने जैमिनि से यथावत आरम्भ किया ॥

प्रथम चरित्र के ब्रह्मा ऋषि हैं, महा काली देवता है, गायत्री छन्द, रक्तदन्तिका वीज, अग्नितत्व, ऋग्वेद की मूर्ति के समान स्वरूप है, इसका प्रयोग महाकाली के प्रीत्यर्थ है। इतना जानना आवश्यक है परन्तु विनियोग वोलकर जल छोड़ना

चण्डी देवी को नमस्कार ॥ श्री मार्कण्डेय ऋषि बोले, ॥१॥ सूर्य भगवान् के पुत्र सावर्णि जो आठवें मनु कहे जाते हैं, उनकी उत्पत्ति की कथा मैं विस्तार पूर्वक कहता हूँ, हे भागुरि तुम सुनो! ॥२॥ सूर्य के वही पुत्र (धैर्य की छाया से उत्पन्न) महाभाग-

---

*सम्पुट पाठ दो प्रकार का है उदय और अस्त; वृद्धि के लिये उदय और अभिचार के लिये अस्त ॥ उदय संपुट का लक्षण ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ॐ ऐं मार्कण्डेय उवाच ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे सावर्णिः सूर्य तनयो योमनुः कथ्यतेऽष्टमः ॥ निशामय तदुत्पत्तिं विस्ताराद्गदतोमम ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः ॥ अस्त संपुट के पाठ का उदाहरण ॥ हुँफट् ॐ ऐं मार्कण्डेय उवाच फट्हुँ ॥ हुँफट् सावर्णिः सूर्यतनयो योमनुः कथ्यतेष्टमः ॥ निशामय तदुत्पत्तिं विस्तराद्गदतो मम फटहुम् ॥

१ २ १ ३ २ १ २ १

नव दिन में १ पाठ की विधि पाठो यं व र का र कः ॥ पहले दिन में १ पाठ, दूसरे दिन में २, तीसरे में १, चौथे में ३, पाँच में १, छठे २, सातवें २, आठवें १

मायानुभावेन यथा मन्वन्तराधिपः ॥ स बभूव महाभागः सावर्णिस्तनयो रवेः ॥३॥ स्वारोचिषेऽन्तरे पूर्वं चैत्रवंशसमुद्भवः ॥ सुरथो नाम राजाभूत्समस्ते क्षितिमण्डले ॥४॥ तस्य पालयतः सम्यक् प्रजाः पुत्रानिवौरसान् ॥ बभूवुः शत्रवो भूपाः कोलाविध्वंसिनस्तदा ॥ ५ ॥ तस्य तैरभवद्युद्धमतिप्रबल-

चाहिये। वाद में ध्यान बोलना जो चित्र दिया है उसको अपने हृदय ही में स्थित ध्यान करते हुए पाठ करना ॥ खड्ग, चक्र, गदा, बाण, चाप (धनुष) परिघ, त्रिशूल, भुशुण्डी, शिर, शंख इन मुद्राओं को दिखाना पृष्ठ १५२-५५ संख्या में लिखी हैं, मुद्रा न बन सकें तो ध्यान मात्रकर लेना, महाकाली इन दश आयुधों को अपने दश हाथों में धारण करे हुए दश शिरों में तीन २ आँख १० पैर तथा सब अंगों में शोभायमान आभूषण पहरे हुए नील मणि के समान शरीर का रंग भगवान विष्णु योगनिद्रा में शयन कर रहे हैं भगवान् की नाभि से कमल

सावर्णि जिस प्रकार जगदम्बा की दया से मन्वन्तराधिप हुए सो भी मैं कहता हूँ ॥३॥ पूर्वकाल में स्वरोचिष-मन्वन्तर के चैत्र वंश में पैदा हुए राजा सुरथ सब पृथ्वी के चक्रवर्ती राजा हुए ॥४॥ सुरथ राजा अपनी प्रजा का निज पुत्र के समान पालन करते थे ॥ उसी काल में कोलाविध्वंसी (सूअर को न मारने वाले) अथवा कोला नाम की नगरी दक्षिण में प्रसिद्ध है वहाँ के वहुत से राजा उस (सुरथ) के शत्रु हो गये ॥५॥ फिर भी अति दुष्ट मनुष्यों को सजा देने वाले सुरथ

दण्डिनः ॥ न्यूनैरपि स तैर्युद्धे कोलाविध्वंसिभिर्जितः ॥६॥ ततः स्वपुरमायातो निजदेशाधिपोऽभवत् ॥ आक्रान्तः स महाभागस्तैस्तदा प्रबलारिभिः ॥७॥ अमात्यैर्बलिभिर्दुष्टैर्दुर्बलस्य दुरात्मभिः ॥ कोशो बलं चापहृतं तत्रापि स्वपुरे ततः ॥ ८ ॥ ततो मृगयाव्याजेन हृतस्वाम्यः स भूपतिः ॥ एकाकी हयमारुह्य जगाम गहनं वनम् ॥ ९ ॥ स तत्राश्रम-

---

उत्पन्न है तिस पर ब्रह्माजी बैठे हैं इसी बीच मे मधु कैटभ दो राक्षस ब्रह्माजी को खाने के लिये आते हैं। तब ब्रह्माजी ने भयभीत हो महामाया की स्तुति करी थी ऐसी उपरोक्त लक्षण वाली महाकाली का स्मरण करता हूँ ॥

राजा के संग कोलाविध्वंसियों का अत्यन्त युद्ध हुआ ॥ सेना, कोष, (खज़ाना) और युद्ध की कई बातों में कमी होने पर भी कोलाविध्वंसी लोगों ने सुरथ राजा को हराया ॥६॥ तब वह राजा मन मलीन हो, अपने ही शहर में लौट कर अपने, शहर का राजा होकर रहने लगा ॥ तदनन्तर उन बलवान् शत्रुओं के द्वारा वह महाभाग राजा सुरथ फिर घेरा गया ॥७॥ और अपने शहर में भी दुष्ट, दुराचारी, अमात्यगण (मन्त्रियों) ने प्रबल राजा का कोष (खज़ाना), पल्टन और युद्ध की सामग्री हरण कर ली ॥८॥ तब तेज-हीन होकर वह राजा सुरथ घोड़े पर बैठ शिकार खेलने के बहाने बिना किसी को साथ लिये अकेला घोर वन में गया ॥९॥ राजा सुरथ ने वहाँ ब्राह्मणों में श्रेष्ठ

मद्राक्षीद्द्विजवर्यस्य मेधसः ॥ प्रशान्तश्वापदाकीर्णं मुनिशिष्योपशोभितम् ॥ १० ॥ तस्थौ कञ्चित्स कालं च मुनिना तेन सत्कृतः ॥ इतश्चेतश्च विचरँस्तस्मिन्मुनिवराश्रमे ॥ १२ ॥ सोऽचिन्तयत्तदा-तत्र ममत्वाकृष्टचेतनः ॥ मत्पूर्वैः पालितं पूर्वं मया हीनं पुरं हि तत् ॥ १२ ॥ मद्भृत्यैस्तैरसद्वृत्तैर्धर्मतः पाल्यतेनवा ॥ न जाने सप्रधानो मे शूरहस्ती सदामदः ॥१३॥ ममवैरिवशं यातः कान्भोगानु-

मेधा ऋषि का हिंसा-रहित शान्त श्वापद जन्तुओं से भरा और मुनि* बालकों से शोभायमान आश्रम देखा ॥१०॥ उस आश्रम में मुनियों द्वारा सत्कार प्राप्त हो इधर-उधर टहलता हुआ राजा सुरथ कुछ काल तक वहाँ ठहरा ॥११॥ देश, राज्य तथा कोषादि की ममता से मलीन चित्त हो राजा इस प्रकार सोचने लगा ॥ मेरे पूर्वजों की रक्षा करी हुई वह राजधानी मुझ से नष्ट हो ॥१२॥ उन दुराचारी मेरे मंत्रियों से धर्मानुसार पालन की जाती है क्या ? और नहीं जानता कि हमेशा मद से मत्त रहने वाला मेरा प्रधान हाथी ॥१३॥ मेरे दुश्मनों के वशीभूत हो किस

सप्तश्लोकी दुर्गा प्रारंभ्यते ॥

शिव उवाच ॥ देवि त्वं भक्तसुलभे सर्वकार्यविधायिनि ॥ कलौ हि कार्यसिद्ध्यर्थमुपायं ब्रूहियत्नतः ॥ देव्युवाच ॥ शृणुदेव ! प्रवक्ष्यामि कलौ सर्वेष्टसाधनम् । मयातवैवस्नेहेनाप्यम्बास्तुतिप्रकाश्यते ॥ ॐ अस्यश्रीदुर्गा सप्तश्लोकी स्तोत्रमंत्रस्य नारायणऋषिः अनुष्टुप्छन्दः श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वत्यो देवताः दुर्गाप्रीत्यर्थं सप्तश्लोकी दुर्गा

---

*मन्तारो वेदशास्त्रार्थतत्त्वावगन्तारो मुनयः ।

पलप्स्यते ।। ये ममानुगता नित्यं प्रसादधनभोजनैः
।।१४।। अनुवृत्तिं ध्रुवं तेऽद्य कुर्वन्त्यन्यमहीभृताम् ।।
असम्यग्व्ययशीलैस्तैः कुर्वद्भिः सततं व्ययम् ।।१५।।
सञ्चितः सोऽतिदुःखेन क्षयं कोशो गमिष्यति ।।
एतच्चान्यच्च सततं चिन्तयामास पार्थिवः ।।१६।।
तत्र विप्राश्रमाभ्याशे वैश्यमेकं ददर्श सः ।। स पृष्ट-
स्तेन कस्त्वं भो हेतुश्चागमनेऽत्र कः ।। १७ ।।
सशोक इव कस्मात्त्वं दुर्मना इव लक्ष्यसे ।। इत्या-

प्रकार सुख पाता है और नित्य-प्रति खुशी से धन और भोजन मुझसे लेकर जो मेरे अधीन रहा करते थे, ।।१४।। वे सब अब अवश्य ही दूसरे नृपति की चाकरी करते होंगे ।। सदा बिना विचार से व्यय करने वाले सब दुष्ट मन्त्री आदि ।।१५।। कष्ट से संग्रह किया गया मेरे पूर्वजों का धन अवश्य ही नित्य व्यय करके नाश करते होंगे ।। इस प्रकार तथा और-और भाँति से राजा सोच में मग्न हो गया ।।१६।। इसके बाद उस मेधा ऋषि के आश्रम के सन्निकट सुरथ राजा ने एक वैश्य को आते देखकर उससे पूछा, "तुम कौन हो ? तथा यहाँ आने का कारण क्या है ?" ।।१७।। और तुम शोक से दुःखित मनुष्यों की तरह उदास क्यों हो ?

पाठे विनियोगः ।। ॐ ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा ।। बलादाकृष्यमोहाय महामायाप्रयच्छति ।। १ ।। दुर्गेस्मृताहरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृतामतिमतीव शुभां ददासि ।। दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणायसदार्द्र चित्ता ।। २ ।। सर्वमंगलमंगल्ये -शिवे सवार्थसाधिके ।। शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तु ते ।।३।। शरणागतदीनार्त परित्राणपरायणे ।। सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमो-

कर्ण्य वचस्तस्य भूपतेः प्रणयोदितम् ॥१८॥ प्रत्युवाच स तं वैश्यः प्रश्रयावनतो नृपम् ॥१९॥ वैश्य उवाच ॥२०॥ समाधिर्नाम वैश्योऽहमुत्पन्नो धनिनां कुले ॥ २१ ॥ पुत्रदारैर्निरस्तश्च धनलोभादसाधुभिः ॥ विहीनश्च धनैर्दारैः पुत्रैरादाय मेधनम् ॥२२॥ वनमभ्यागतो दुःखी निरस्तश्चाप्तबन्धुभिः ॥ सोऽहं न वेद्मि पुत्राणांकुशलाकुशलात्मिकाम् ॥ २३॥ प्रवृत्तिं स्वजनानाञ्चदाराणाञ्चात्र संस्थितः ॥

राजा की स्नेह में सनी हुई बातों को सुन ॥१८॥ उस नम्रतायुक्त समाधि वैश्य ने राजा से इस तरह कहा ॥१९॥ वैश्य बोला ॥२०॥ हे राजन् मैं समाधि नामक बनियाँ हूं, मेरा जन्म धनवानों के घर में हुआ ॥२१॥ मेरे असाधु पुत्र, स्त्री और कुटुम्बियों ने धन के लोभ से मुझे घर से निकाल दिया ॥ मेरे पुत्र, स्त्री और कुटुम्बियों ने मिलकर सब रुपया छीन कर मुझे निकाला है ॥२२॥ अब मैं स्वजन हीन तथा दुःखी हो इस बन में आया हूँ ॥ इस समय इस बन में मुझे अपने पुत्र, स्त्री तथा बन्धुलोगों के अच्छे बुरे हालात नहीं मालूम होते ॥२३॥ यहाँ बैठा हुआ अपने स्वजन आदिकों की स्थिति तथा उनके स्थान में अब

स्तु ते ॥ ४ ॥ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते ॥ भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गेदेवि नमोस्तु ते ॥ ५ ॥ रोगानशेषानपहंसि तुष्टारुष्टा तु कामान्सकलानभीष्टान् ॥ त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिताह्याश्रयतां प्रयान्ति ॥ ६ ॥ सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि ! ॥ एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम् ॥ ७ ॥ इति श्री सप्तलोकी दुर्गा समाप्ता ॥

किं नु तेषां गृहे क्षेममक्षेमं किं नु साम्प्रतम् ॥२४॥ कथं ते किं नु सद्वृत्ताः दुर्वृत्ताः किं नु मे सुताः ॥ २५ ॥ राजोवाच ॥ २६ ॥ यैर्निरस्तो भवांल्लुब्धैः पुत्रदारादिभिर्धनैः ॥ २७ ॥ तेषु किं भवतः स्नेह मनुबध्नाति मानसम् ॥२८॥ वैश्य उवाच ॥२९॥ एवमेतद्यथा प्राह भवानस्मद्गतं वचः ॥३०॥ किं करोमि न बध्नाति मम निष्ठुरतां मनः ॥ यैः सन्त्यज्य पितृस्नेहंधनलुब्धैर्निराकृतः ॥

मङ्गल है व अमङ्गल ॥२४॥ मेरे लड़के सदाचारी हैं या दुराचारी, सो मैं कुछ नहीं जानता हूं ॥२५॥ राजा ने कहा ॥२६॥ "जिन पुत्र स्त्री तथा बन्धुओं ने लोभ के वश तुम्हारा धन सम्पति छीन ली ॥२७॥ उन्हीं मनुष्यों के प्रति तुम्हारा मन किस प्रकार स्नेह में गोता खाता है ?" ॥२८॥ वैश्य ने कहा ॥२९॥ आपने मेरे विषय में जो कुछ भी कहा है ॥३०॥ सब सत्य है परन्तु मैं क्या करूँ, मेरे मन में किसी प्रकार भी कठोरता नहीं होती ॥ जिन मेरे पुत्रादिकों ने द्रव्य के वशीभूत हो पितृ-स्नेह त्याग मुझको

अथ चण्डिका दल प्रारम्भः ॥

ॐ नमश्चण्डिकाय ॥ अथातः सम्प्रवक्ष्यामि चण्डिका दल मुत्तमम् ॥ मन्त्रं विना तु जप्त्वा वै तत्सर्वं निष्फलं भवेत् ॥१॥ ॐ नमो भगवति जयजय चामुण्डे चण्डि चण्डेश्वरि चण्डायुधे ॥ चण्डरूपधारिणि ताण्डव प्रिये ॥ कुण्डलीभूतदिङ् नागमण्डलीकतगण्डस्थले समस्तजगदण्ड संहार कारिणि परे अनन्तानन्तरूपे ॥ शिवे नरशिरोमालालंकृत वक्षस्थले महाकपाल मालोज्ज्वलन्मणि मुकुट चूडावतंस चन्द्रखण्डे महाभीषणे देवि ॥ महामाये षोडशकलापरिवृतोल्लासिते महादेवासुर समरनिहत रुधिरार्द्रीकृता

३१॥ पतिस्वजनहार्दं च हार्दितेष्वेव मे मनः ॥ किमेतन्नाभिजानामि जानन्नपि महामते ॥ ३२ ॥ यत्प्रेमप्रवणं चित्तं विगुणेष्वपि बन्धुषु ॥ तेषां कृते मे निःश्वासो दौर्मनस्यं च जायते ॥३३॥ करोमि किं यन्न मनस्तेष्वप्रीतिषु निष्ठुरम् ॥३४॥ मार्कण्डेय उवाच ॥३५॥ ततस्तौ सहितौ विप्र तं मुनिं समु-

घर से निकाल ,दिया है ॥३१॥ उन सबके ऊपर मेरा मन आसक्त है, हे महामति राजन् ! ऐसा क्यों है यह मैं जानता हुआ भी नहीं समझता हूँ ॥३२॥ इसलिये कि विपरीत पुत्रादिकों के लिये भी मेरा मन प्रेम में मग्न है और उन्हीं के कारण ये मेरे ऊर्ध्वश्वास चल रहे हैं, और मेरी यह चिन्ता मुझको ही दुःख देती है ॥३३॥ इन मेरे कुटुम्बियों के प्रीति रहित होने से भी मेरे मन में कठोरता नहीं होती है, तो मैं क्या करूँ ? तब ॥३४॥ मार्कण्डेयजी ने कहा ॥३५॥ अनन्तर इसके राजा सुरथ

लम्विततनु कमलोद्भासित करे ॥ सम्पूर्ण रुधिर शोभित महाकपोल वक्त्रहासिनि दृढ़तरनिवद्धयमानाधर शोभित महाकपोले॥ चन्द्रभासिनि॥ दृढ़तराबद्ध महानाद सहिते हेमकाञ्ची दामोज्वलीकृत महामण्डिते ॥ महाशम्भुरूपे महाव्याघ्र चर्माम्बरधरे ॥ महासर्प यज्ञोपवीतिनि ॥ महाश्मशान भस्मोद्धूलित सर्वगात्रे ॥ कालि ॥ कंकालि महाकालि कौलाग्नि रुद्रकालि ॥ काल-संकर्षिणि ॥ कालरात्रि नमोदुष्टभक्षिणि ॥ नानाभूतप्रेत पिशाचगण सहस्र सञ्चिरिणी नाना व्याधि प्रशमनि ॥ सर्व दुष्ट प्रमथिनि सर्व दारिद्रय नाशिनि युगे युगे खादित मांसखण्डे ॥ गायत्री विक्षिप्त कला कलायमान कंकालधारिणि मधु मांस रुधिर सन्तत विलासिनि सकल सुरासुर गन्धर्व विद्याधर किन्नर किम्पुरुषादिभिः स्तूयमाने सर्व मन्त्राधिभूताधिकारिणि सर्वशक्ति प्रधाने ॥ सकललोक पावनि ॥ सकल दुरित

पस्थितौ ॥ ३६ ॥ समाधिर्नाम वैश्योऽसौ स च पार्थिवसत्तमः ॥ कृत्वा तु तौ यथान्यायं यथार्हं तेन संविदम् ॥ ३७ ॥ उपविष्टौ कथाः काश्चिच्चक्रतुर्वैश्यपार्थिवौ ॥ ३८॥ राजोवाच ॥ ३९॥ भगवंस्त्वामहं प्रष्टुमिच्छाम्येकं वदस्व तत् ॥४०॥ दुःखाय यन्मे मनसः स्वचित्तायत्ततां विना ॥

और समाधि नाम वैश्य दोनों मिलकर उस आश्रम के स्वामी मेधा नाम मुनि के समीप गये ।।३६।। और शास्त्रोचित अभिवादन पूर्वक उनके पास बैठकर वह राजा और वैश्य परस्पर दोनों प्रीति पूर्वक ।।३७।। मेधा ऋषि से अनेक प्रकार की कथा प्रसंग करने लगे ॥ ३८ ॥ राजा बोला ॥ ३९ ॥ हे भगवन् ! जिस बात के न जानने से मेरे चित्त में अत्यन्त क्लेश होता है ॥ ५० ॥ वही बात जानना चाहता हूँ, आप कृपा

प्रक्षालिनि॥सकललोकजननि॥ब्राह्मि॥माहेश्वरि॥कौमारि॥वैष्णवि॥वाराहि नारसिंहीन्द्राणि॥चामुण्डे॥महालक्ष्मीस्वरूपे॥महाविद्ये॥योगिनि॥योगीश्वरी चण्डिके॥महामाये॥ विश्वरूपिणि॥ सर्वाभरणभूषिते ॥ अतलवितलसुतल महातल रसातल पातालादि चतुर्दशभुवनैकनाथे ॥ ॐ नमः पितामहाय ॥ ॐ नमोनारायणाय ॥ॐ नमःशिवाय ॥इतिसकललोकैकजायमाने ॥ ब्रह्म विष्णुमहेश्वरि॥दण्ड-कमण्डलु-धारिणि॥शंखचक्रगदापद्म-धारिणि॥परशु-शूल-पिनाक-कण्टक-धारिणि सरस्वतिपद्मालये॥ सावित्रि ॥ सकल जगत्स्वरूपिणि महाक्रूरे॥प्रसन्नरूपधारिणि॥सर्वमंगलप्रिये॥महिषासुरमर्दिनि कात्यायनि दुर्गे॥निद्रारूपिणि ॥ शर चापशूलकपाल करवाल खड्ग डमरुकाङ्कुश गदा परशु तोमर भिन्दिपाल भुशुण्डी मुसल मुद्गर परिघायुध दोर्दण्डिनि सहस्र चन्द्रार्क वह्नि नयने ॥ इन्द्राग्नि यम नैरृति वरुण वायु कुवेर ईशान प्रधानशक्ति भूते ॥ सप्तद्वीप समुद्रोपर्युपरि महाभ्यासेश्वरि महा चराचर प्रपञ्चतनूदरे ॥ महाप्रधाने महाकैलासपर्वतोद्यान वन

ममत्वं गतराज्यस्य *राज्याङ्गेष्वखिलेष्वपि
॥ ४१ ॥ जानतोऽपि यथाज्ञस्यकिमेतन्मुनि-
सत्तम ॥ अयंच निःकृतः पुत्रैर्दारैर्भृत्यैस्तथोज्झितः
॥४२॥स्वजनेन च सन्त्यक्तस्तेषु हार्दी तथाप्यति ॥
एवमेष तथाहं च द्वावप्यत्यन्त-दुःखितौ ॥ ४३ ॥
दृष्टदोषेऽपि विषये ममत्वाकृष्टमानसौ ॥ तत्केनैतन्म
हाभाग यन्मोहो ज्ञानिनोरपि ॥४४॥ ममास्य च

करके उसको समझा दीजिये ॥ और मैं यह जानता हूं कि यह सब चक्कर है, तो भी मूर्खता वश मुझे राज्य सम्पूर्ण राज्य के अङ्गों पर* ममता है ॥४१॥ हे मुनिसत्तम ! ऐसा क्यों है ? तथा इस वैश्य को भी पुत्रादिकों ने तिरस्कार कर, स्त्री सेवक और स्वजनों ने निकाल दिया है ॥४२॥ फिर भी यह उन्हीं पर मोह करता है ॥४३॥ इस प्रकार मैं और यह वैश्य दोनों का साफ़ साफ़ दूषित विषय में स्नेह युक्त मन होगया है ॥४४॥ हे महाभाग ! हम दोनों ही जान कर माया में ज्ञान शून्य लोगों की तरह

क्षेत्र नदी तीर देवताद्यायतनालंकृते । मेदिनीनाथे ॥ वसिष्ठ-वामदेवादि मुनिगणस्पर्शचरणारविन्दे ॥ द्विचत्वारिंशद्वर्णे सहिते ॥ पर्यायस्थाने वेदवेदाङ्गानेकशास्त्रभूते ॥ शब्द ब्रह्ममये ॥ मातृकादेवि शिरःसं रक्ष रक्ष ॥ मम शत्रून्हुँकारेण नाशय नाशय ॥ भूत प्रेत पिशाचानुच्चाटयोच्चाटय ॥ वशीकुरु वशीकुरु ॥ क्षोभय क्षोभय ॥ संक्रामय २ ॥ विदारय-विदारय ॥ द्रावय-द्रावय ॥ सकल चौरान्मूद्र्ध्नि स्फोटय स्फोटय सकल शत्रून् शीघ्रं मारय मारय हुँफट् स्वाहा ॥ इतिरुद्रयामले तन्त्रे सप्तशती दलम् सम्पूर्णम् ॥

---

*सप्ताङ्ग कामकन्दकीये ॥ स्वाम्यमात्यश्च राष्ट्रं च दुर्गंकोषोवलं सुहृत् ॥ परस्परोपकारीदं सप्ताङ्ग राज्यमुच्यते ॥

भवत्येषा विवेकान्धस्य मूढता ॥४५॥ ऋषिरुवाच ॥४६॥ज्ञानमस्ति समस्तस्य जन्तोर्विषयगोचरे ॥ ॥४७॥ विषयश्च महाभाग याति चैवं पृथक् पृथक् ॥ दिवान्धाः प्राणिनः केचिद्रात्रावन्धास्तथा परे ॥४८ केचिद्दिवा तथा रात्रौ प्राणिनस्तुल्यदृष्टयः ॥ ज्ञानिनो मनुजाः सत्यं किंतु ते नहि केवलम् ॥४९॥ यतो हि ज्ञानिनः सर्वे पशुपक्षिमृगादयः ॥ ज्ञानं च

क्यों मूर्खता से परिपूर्ण होगये हैं ॥४५॥ ऋषि ने कहा ॥४६॥ सब जन्तुओं को विषय के समझने लायक ज्ञान है ॥४७॥ हे महाभाग! इसी प्रकार से विषय भी अलग-अलग होता है ॥ कोई मनुष्य दिन में नहीं देखते, कोई रात्रि में नहीं देखते ॥४८॥ और कोई मनुष्य रात्रि दिन में समान ही देखते हैं। आदमी सब विवेकी हैं इसमें कुछ सन्देह नहीं, फिर भी मनुष्य ही केवल ज्ञानी नहीं क्योंकि पशु-पक्षी और मृग भी ज्ञानवान हैं ॥४९॥ जो ज्ञानवान हैं वा जो ज्ञान इन मृग पक्षियों को है वही ज्ञान* मनुष्यों को भी है। और मनुष्यों को भी जो

अथ सप्तशती हृदय प्रारम्भः ॥

इसमें नवार्ण के अनुसार न्यास ध्यान करना ॥

ॐ अस्य श्रीचण्डिका हृदयमाला मन्त्रस्य त्रिगुणात्मक ऋषिः विराट् छन्दः श्रीमहाचण्डी देवता ऐं बीजं ॥ ह्रीं शक्तिः ॥ क्लीं कीलकम् अभीष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोगः ॥ ब्रह्मोवाच ॥ अथातः सम्प्रवक्ष्यामि विस्तरेण यथा तथम् ॥ चण्डिका हृदयं गुह्यं शृणुष्वेकाग्रमानसः ॥ ॐ

---

*आहार निद्राभय मैथुनश्च सामान्य मेतत्पशुभिर्नराणां ॥ ज्ञानं नराणामधिको विशेष ज्ञानेन हीनापशुभिः समाना ॥

तन्मनुष्याणां यत्तेषां मृगपक्षिणाम् ॥५०॥ मनुष्याणां च यत्तेषां तुल्यमन्यत्तथोभयोः ॥ ज्ञानेऽपि सति पश्यैतान्पतङ्गाञ्छावचञ्चुषु ॥५१॥ कणमोक्षादृतान्मोहात्पीड्यमानानपि क्षुधा ॥ मानुषा मनु-

विवेक है सो इन दोनों (मृग पक्षियों) को भी बराबर है ॥५०॥ इस प्रकार विवेक होने पर भी कितना फरक हो जाता है, सो देखिये, ये सब पक्षी भूख से दुःखी रहते हुए भी अपने बच्चों की चोंच में अन्न देकर किस तरह खुश होते हैं ॥५१॥ हे मनुज व्याघ्र ! आदमी (लोग) अपने पुत्रों पर मतलब से उनका

हां हीं हुँ ऐं क्लीं श्रीं ॐ नमो भगवति जय जय ज्वालामालिनि ॥ चामुण्डे चण्डिके ॥ त्रिदशमणिमुकुटकोटिनिघृष्टचरणारविन्दे ॥ गायत्रि सावित्रि सरस्वति महासन्ध्ये महाबाण कृताभरणे ॥ भैरवरूपधारिणि प्रकट सुदंष्ट्रोप्रवदने ॥ घोरे घोरासने नयनोज्वलज्वाल सहस्र परिवृते ॥ महाट्टहास धवलीकृत दिगन्तरे ॥ दिवाकर सहस्र परिवृते ॥ कामरूप धारिणि ॥ महामणि द्योतित शशि प्रभा भासित सकल दिगन्तरे ॥ सर्व्वायुध परिपूर्णे ॥ कपालहस्ते ॥ गजगामिन्यौत्तरिण्ये ॥ भूत वेताल परिवृते प्रकम्पित चराचरे ॥ मधुकैटभ महिषासुर धूम्रलोचन ॥ चण्ड मुण्ड रक्तबीज निशुम्भ शुम्भादि दैत्य निष्कण्टके ॥ कालरात्रि महामाये ॥ शिवेनित्ये ॥ त्रिभुवन धराधरे ॥ वामे ज्येष्ठे वरदे रौद्रि अम्बिके ॥ कालि कलविकरिणि ॥ बल-प्रमथिनि ॥ सर्वंभूतदमनि ॥ मनोन्मय्यधारिणि ॥ ब्राह्मि माहेश्वरि कौमारि वैष्णवि ॥ वाराहि नारसिंहीन्द्राणि चामुण्डे ॥ माहेन्द्रि शिवदूति महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वतीति त्रिस्थिते ॥ नादमध्येस्थिते॥ महोग्र विषोरग फणाफणि मुकुट रत्नज्वालाबलि ॥ महाहिहार भूषित पाद बाहुकण्ठोत्तमाङ्गे ॥ मालाकुले ॥ नवरत्न निधिकोशे शब्द स्पर्श रूप रस गन्धाकाश वाक्पाणि पाद पायूपस्थ श्रोत्र त्वक् चक्षुर्जिह्वाघ्राण मध्यस्थिते ॥ चक्षुष्मति महाविषोपविघ्ने ॥ महाज्वालानले ॥ महाभैरवस्तुते सर्वसिद्धप्रदे ॥ निर्मले निष्कले नाभ्याधारादि संस्थिते ॥ परं ज्योतिः

जव्याघ्र साभिलाषाः सुतान्प्रति ॥५२॥ लोभात्प्रत्युपकारायनन्वेतान् किंनपश्यसि ॥ तथापिममतावर्ते मोहगर्तेनिपातिताः ॥ ५३ ॥ महामायाप्रभावेण संसारस्थिति-कारिणा ॥ तन्नात्रविस्मयः कार्यो

पालन पोषण ॥५२॥ बदला लेने की इच्छा से करते हैं (अर्थात् जब हम वृद्धावस्था में प्राप्त होंगे तब यह हमारा भी इसी प्रकार से भरण पोषण करेंगे ?) सो (मनुष्य) नहीं जानते ॥५३॥ इस तरह बदला लेने की इच्छा न होने पर भी जगदम्बा के प्रसाद से अब आदमी मोह जाल तथा मोहान्ध कूप में गिर कर संसार को कायम रखने वाले हैं ॥ इस विषय में अचम्भा मानने की

स्वरूपे ॥ सोम सूर्याग्नि मण्डल परिवृतं ॥ ऊर्ध्वे विशुद्धान्तक प्रभे ॥ विनिर्गत ब्रह्म विष्णु रुद्र दैवते ॥ परे अपरे ॥ प्रभा भासित चराचरे ॥ पञ्चविंशति तत्वावबोधिनि ॥ महाशून्यागमे ॥ पतिबन्धु संस्थिते ॥ भुक्ति मुक्ति प्रदे ॥ निर्गुणे ॥ ऋग्यजुःसामाथर्वणि पठिते ॥ एह्येहि भगवति स्थूल सूक्ष्मे परे हुङ्कार निरूपते ॥ परमकारुणिके ॥ महाज्वाला मणे मरिषोपरि गन्धर्व विद्याधरार्च्चिते ॥ भुजङ्ग महिमे ॥ जम्भिणि ॥ वशीकरिणि ॥ जृम्भे ॥ मोहे ॥ क्षोभे ॥ बीज पंचक मध्यस्थितं ॥ महायोगिनि ॥ महाज्वर क्षेत्रनायिके ॥ यक्ष राक्षस महाज्वर क्षेत्र विषोपविघ्ने ॥ गन्धर्व विद्याधराराधिते ॥ ॐकार श्रीङ्कार हस्ते ॥ आं क्रीं अग्निपात्रे ॥ द्रां शोषय शोषय ॥ प्लुं स्रावय स्रावय ॥ क्लीं ब्रीं सुकुमारय सुकुमारय ॥ प्लुं नाशय नाशय ॥ सीं उन्मादय उन्मादय ॥ ग्लौं मोहय मोहय ॥ ह्रीं आं ह्रीं आवेशय आवेशय ॥ श्रीं प्रवेशय प्रवेशय ॥ स्त्रीं आकर्षय २ हुँ हुँ हुँ फट् अतीतानागत वर्तमनान्दिशं विदिशं ॥ ऐं ह्रीं श्रीं श्रावय श्रावय ॥ सर्वं प्रवेशय प्रवेशय ॥ त्रैलोक्यं वशवर्ति ॥ ऐंकारं वशीकुरुष्व ॥ ऐं ह्रीं क्लीं द्रावय द्रावय ॥ सर्वं प्रवेशय प्रवेशय ऐङ्कारचितां वशंकुरु वशंकुरु ॥ ऐं ह्रीं श्रीं हां हीं हूं हैं हौं हः । ह्रीं श्रीं क्लां क्लीं स्त्रूं स्त्रैं क्लौं स्त्रः मम सर्वकार्याणि साधय साधय हुँफट् स्वाहा ॥

योगनिद्राजगत्पतेः ॥ ५४ ॥ महामाया हरेश्चैषा तया संमोह्यते जगत् ॥ ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा ॥५५॥ बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति ॥ तया विसृज्यते विश्वं जगदेतच्चराचरम् ॥ ५६ ॥ सैषाप्रसन्नावरदानृणांभवति मुक्तये ॥ साविद्यापरमामुक्तेर्हेतुभूता सनातनी ॥ ५७॥ संसारबन्धहेतुश्च सैव सर्वेश्वरेश्वरी ॥५८॥ राजोवाच ॥५९॥ भगवन्का हिसा देवी महामायेति यां भवान् ॥६०॥ ब्रवीति कथमुत्पन्ना सा कर्मास्या-

---

कोई बात नहीं। महामाया त्रिलोकीनाथ हरि की योगमाया है।५४। वही इस संसार को मोह में घेरे रहती है।। वही भगवती महामाया ज्ञानियों का चित्त बलात् खींचकर मोह में गिरा देती है ॥५५॥ उस ही देवी ने इस चराचर जगत् को सृजन (पैदा) किया है ॥५६॥ वही खुश हो मनुष्य को मुक्ति देने वाला वर देती है ॥ वही मुक्ति और मोक्ष का परम कारण है, और वही सनातनी ब्रह्म ज्ञान स्वरूपा विद्या है ॥५७॥ वही संसार के बन्धन का (अर्थात् जन्म मरण का) कारण है, और वही सर्वेश्वर की भी ईश्वरी है ॥५८॥ राजा बोला ॥५९॥ हे भगवन्! जिसको आप महामाया कह-कह कर सम्बोधन करते हैं वह देवी कौन है ॥६०॥

एक विंशति वारन्तु पठेदेवज्ञपेत्तुवा ॥ राजद्वारे श्मशाने च विदेशे शत्रु मंडले ॥१॥ भूताग्नि रण मध्ये च सर्वकार्याणि साधयेत् ॥ चण्डिका हृदयं गुह्यं त्रिसन्ध्यं कीर्तयेद्द्विजः ॥ २ ॥ सर्व कामप्रदं नृणां भुक्ति मुक्तिं च विन्दति ॥३॥ इति रुद्रयामले तन्त्रे सप्तशती हृदयं सम्पूर्णम् ॥

श्च किं द्विज ॥ यत्स्वभावा च सा देवीयत्स्वरूपा
यदुद्भवा ॥ ६१ ॥ तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामित्वत्तोब्रह्मविदांवर ॥ ६२ ॥ ऋषिरुवाच ॥६३॥ नित्यैवसा
जगन्मूर्तिस्तया सर्वमिदं ततम् ॥ ६४ ॥ तथापि
तत्समुत्पत्तिर्बहुधा श्रूयतां मम ॥देवानां कार्यसिद्धयर्थमाविर्भवतिसा यदा ॥६५॥ उत्पन्नेति तदालोके
सानित्याप्यभिधीयते ॥ योगानिद्रांयदाविष्णुर्जगत्येकार्णवीकृते॥६६॥आस्तीर्यशेषमभजत्कल्पान्तेभगवान्प्रभुः॥तदाद्वावसुरौघोरौ विख्यातौमधुकैटभौ ॥

उसकी उत्पत्ति किस तरह है ? हे तपोधन ! वह क्या करती है ? उस महारानी का जिस प्रकार का स्वरूप तथा स्वभाव किससे पैदा हुई है ॥६१॥ हे ब्रह्मज्ञानियों में उत्तम ! आपके द्वारा सब बातें सुनने की इच्छा रखता हूँ ॥६२॥ ऋषि ने कहा—॥६३॥ वह जगन्मूर्त्ति जगदम्बा है (न कभी जन्म ग्रहण करती है न मरती है) वह सम्पूर्ण संसार अर्थात् चराचर में व्याप्त है ॥६४॥ तो भी उसकी उत्पत्ति अनेक तरह से है, सो मैं कहता हूँ ॥ देवताओं का काम सिद्ध करने के लिये जब वह दर्शन देती है ॥६५॥ तब ही उस नित्य रहने वाली को मनुष्य "उत्पन्न हुई" कहते हैं ॥ कल्प के बाद जब सृष्टि (संसार) जल में मग्न हो (डूब) जाती है ॥६६॥ तथा भगवान् विष्णु शेष शय्या पर योगनिद्रा में शयन करते हैं ; इसके बाद भगवान् विष्णु के कान के मैल से पैदा हो मधु कैटभ

॥६७॥विष्णुकर्णमलोद्भूतौहन्तुंब्रह्माणमुद्यतौ ॥ स
नाभिकमले विष्णोः स्थितो ब्रह्मप्रजापतिः ॥६८॥
दृष्ट्वा तावसुरौचोग्रौ प्रसुप्तं च जनार्दनम् ॥ तुष्टाव
योगनिद्रांतामेकाग्र हृदयस्थितः ॥ ६९ ॥ विबोध-
नार्थायहरेर्हरिनेत्रकृतालयाम् ॥ विश्वेश्वरींजगद्धात्रीं
स्थितिसंहारकारिणीम् ॥७०॥निद्रांभगवतीं विष्णो-
रतुलां तेजसः प्रभुः ॥७१॥ ब्रह्मोवाच ॥७२॥ त्वं
स्वाहा त्वंस्वधात्वंहि वषट्कारः स्वरात्मिका ॥७३॥

नाम के ॥६७॥ दो विख्यात बड़े भयानक राक्षस श्री ब्रह्माजी को खाने के लिये तयार होते हैं ॥६८॥ उस वक्त विष्णु भगवान की नाभि कमल पर बैठे हुए संसार की रचना करने वाले ब्रह्माजी उन दोनों डरावने (मधु कैटभ) राक्षसों को देख कर तथा भगवान् विष्णु को सोता हुआ जानकर विष्णु भगवान् को जगाने के लिये एकाग्र चित्त हो ॥६९॥ विष्णु भगवान की आंख पर बैठी हुई योग निद्रा की स्तुति करने लगे ॥ वह योग निद्रा संसार की ईश्वरी जगत् माता, (संसार को पालन करने वाली) रक्षा करने वाली तथा सब संसार की नाश करने ॥७०॥ वाली भगवान् विष्णु की निद्रा (नींद) स्वरूपा है ॥७१॥ ब्रह्माजी बोले ॥७२॥ हे ब्रह्म स्वरूपे ! अर्थात् सब संसार में व्याप्त हो) तुम स्वाहा (देवताओं के पोषक हवन के मन्त्र) हो, तुम स्वधा (पितृश्वरों के पोषक श्राद्ध करने के मन्त्र) हो, तुम ही वषट्कार स्वर (इन्द्र को यज्ञ भाग पहुँचाने का मन्त्र) हो ॥७३॥ (हे नित्ये ! तुम सुधा (अमृत) स्वरूपा हो, अक्षर में

सुधात्वमक्षरे नित्ये त्रिधामात्रात्मिका स्थिता ॥ अर्धमात्रास्थितानित्या यानुच्चार्याविशेषतः ॥७४॥ त्वमेवसन्ध्या सावित्रीत्वंदेवि जननीपरा॥त्वयैतद्धार्यते विश्वंत्वयैतत्सृज्यते जगत्॥७५॥त्वयैतत्पाल्यते देवि त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा ॥ विसृष्टौ सृष्टिरूपात्वंस्थिति रूपा च पालने ॥७६॥ तथा संहृतिरूपान्ते जगतोऽस्य जगन्मये ॥ महाविद्या महामाया महामेधा महास्मृतिः ॥७७॥ महामोहा च भवती महादेवी महेश्वरी ॥ प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्य गुणत्रियविभाविनी

---

३ मात्रा ह्रस्व, दीर्घ, (प्लुत) आप ही हो ॥ जिस आधी मात्रा (व्यंजन) का उच्चारण विशेष रूप से नहीं होता है वह आधी मात्रा स्वरूप आप ही हो ॥७४॥ हे देवि ! आप ही संध्या, सावित्री स्वरूपा हो, और आप ही संसार को पैदा करने वाली संसारकी माता हो ॥ आप ही को सब मनुष्य धारण करते हैं ॥७५॥ और आप ही के द्वारा संसार की उत्पत्ति होती है तुम ही से पालन होता है तथा आप ही के द्वारा सदा इस संसार का विनाश होता है ॥ संसार के पैदा करने के समय आप सृष्टि स्वरूप हैं ॥ संसार को पालन करने में स्थिति स्वरूप हो ॥७६॥ हे जगन्मये ! इस संसार के विनाश काल में आप ही संहार रूप हो ! हे देवि ! आप महाविद्या, महामेधा, महामाया, महास्मृति, ॥७७॥ महामोह, महादेवि तथा महेश्वरी हो ॥ हे दुर्गे ! तुम सम्पूर्ण चराचर (स्थावर जंगम) के तीन गुण (सत्व, रज, तम) की

॥७८॥ कालरात्रिर्महारात्रिर्मोहरात्रिश्च दारुणा॥ त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं ह्रीस्त्वं बुद्धिर्बोधलक्षणा॥ ॥७९॥ लज्जापुष्टिस्तथातुष्टिस्त्वं शान्तिः क्षान्तिरेव च॥ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा ॥८०॥शंखिनीचापिनी बाण भुशुण्डीपरिघायुधा॥ सौम्यासौम्यतराशेषसौम्येभ्यस्त्वतिसुन्दरी॥ ८१ ॥ परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी॥ यच्च किञ्चित्क्वचिद्वस्तुसदसद्वाखिलात्मिके॥८२॥ तस्यसर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे मया॥ यया त्वया

प्रकृति स्वरूप हो ॥७८॥ तुम काल रात्रि (भयंकर यमस्वरूप) महारात्रि (तमोगुण प्रधान प्रलय स्वरूप) (दारुण) मोहरात्रि (संसार को मोहित करने वाली) स्वरूप हो॥ हे माये ! तुम श्री हो, तुम ईश्वरी हो, बुद्धि मंत्ररूप दिव्यज्ञान के लक्ष्य हो ॥७९॥ तुम लज्जा, पुष्टि, तुष्टि हो, आप ही शान्ति और क्षान्ति हो आप ही खड्गिनी, शूलिनी, घोरा, गदिनी, चक्रिणी ॥८०॥ शंखिनी, चापिनी हो बाण, परिघ और भुशुण्डी भी तुम्हारे आयुध हैं॥ हे देवि तुम सौम्या सौम्यतरा हो॥ और क्या तमाम संसार के सब पदार्थों में तुम अत्यन्त सुन्दरी हो ॥८१॥ हे देवि ! तुम श्रेष्ठा हो, श्रेष्ठों में श्रेष्ठतर हो और श्रेष्ठतरों में भी सम्पूर्ण की ईश्वरी हो॥ हे अखिलात्मके ! (हे संसार की आत्मरूप) जो कुछ भी जिस प्रकार के सद् वा असत् पदार्थ हैं ॥८२॥ उन सब में जो शक्ति है, वह स्वरूप आप ही हो॥ मैं आपकी क्या किस प्रकार की स्तुति करूं ? जिसने संसार

जगत्स्रष्टा जगत्पात्यत्ति यो जगत् ॥ ८३ ॥
सोऽपि निद्रावशं नीतः कस्त्वांस्तोतुमिहेश्वरः ॥
विष्णुः शरीरग्रहणमहमीशान एवच ॥८४॥ कारि-
तास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान् भवेत् ॥
सा त्वमित्थं प्रभावैः स्वैरुदारैर्देवि संस्तुता ॥८५॥
मोहयैतौ दुराधर्षावसुरौमधुकैटभौ ॥ प्रबोधं च
जगत्स्वामी नीयतामच्युतो लघु ॥८६॥ बोधश्च
क्रियतामस्य हन्तुमेतौ महासुरौ ॥८७॥ ऋषिरुवाच॥
८८॥ एवं स्तुदा तदा देवी तामसी तत्रवेधसा॥८९॥

की रचना करी है और जो संसार का पालन व संहार करता है ॥८३॥ उस भगवान विष्णु को आपने निद्रावश कर लिया है, तब और कौन व्यक्ति आप की स्तुति कर सकता है ।। जब आपने विष्णु भगवान ईशान (महादेव) तथा मुझ (ब्रह्मा) से शरीर ग्रहण करा लिया है ॥८४॥ फिर कौन मनुष्य व देवता आपकी स्तुति करने का ताकत कर सकता है ? सो हे देवि ! इस तरह अपने उदार स्वभाव का वर्णन सुन प्रसन्न हो इन दुष्ट दुराधर्ष मधु और कैटभ नाम के राक्षसों को मोहित कर. ॥ जगत्स्वामी विष्णु को जगाओ ॥८६॥ तथा इन दोनों राक्षसों के संहार के लिये भगवान् अच्युत को जल्दी से जगाओ ॥८७॥ ऋषि ने कहा—॥८८॥ उन दोनों मधु और कैटभ राक्षसों को नाश कराने के विचार से विष्णु भगवान को जगाने की इच्छा रखने वाले ब्रह्माजा जब इस प्रकार उस तमोगुणी निद्रारूप देवी की स्तुति कर चुके ॥८९॥ तब अव्यक्त जन्मा ब्रह्मा के सामने

विष्णोः प्रबोधनार्थाय निहन्तुं मधुकैटभौ ॥ नेत्रास्य नासिकाबाहुहृदयेभ्यस्तथोरसः ॥ ६० ॥ निर्गम्य दर्शने तस्थौ ब्रह्मणोऽव्यक्तजन्मनः ॥ उत्तस्थौ च जगन्नाथस्तयामुक्तो जनार्दनः ॥६१॥ एकार्णवेऽहिशयनात्ततः स ददृशे च तौ ॥ मधुकैटभौ दुरात्मानावतिवीर्यपराक्रमौ ॥ ६२ ॥ क्रोधरक्तेक्षणावत्तुं ब्रह्माणं जनितोद्यमौ ॥ समुत्थाय ततस्ताभ्यां युयुधे भगवान् हरिः ॥६३॥ पञ्चवर्षसहस्राणि बाहुप्रहरणो विभुः ॥ तावप्यतिबलोन्मत्तौ महामायाविमोहितौ ॥६४॥ उक्तवन्तौ वरोऽस्मत्तो व्रियतामिति केशवम् ॥६५॥ भगवानुवाच ॥ ६६ ॥ भवेतामद्य मे

भगवान विष्णु के मुँह, आँख, नाक, बाहू, मन तथा हृदय से निकल कर योगमाया भगवती देवी ने खड़े हो ब्रह्मा को दर्शन दिया ॥६०॥ तदनन्तर योग निद्रा से छुटने पर भगवान विष्णु ने एकार्णवस्थित (केवल जलका समुद्र) शेषजी की शय्या से उठ कर अवलोकन किया ॥६१॥ और वही दोनों दुरात्मा अत्यन्त वीर्य पराक्रमशाली मधु-कैटभ क्रोध से लाल नेत्र करके ब्रह्मा को मारने के लिये तयार हैं ॥६२॥ तदनन्तर भगवान विष्णु ने उठकर उन दोनों के साथ ५ हजार वर्ष तक मल्लयुद्ध (कुश्ती) किया ॥६३॥ जब वे दोनों बल वाले उन्मत्त राक्षस उस जगदम्बा की कृपा से मोहित होकर कहने लगे ॥६४॥ हे केशव ! "तुम हम दोनों से वर माँगो ॥६५॥" भगवान बोले—॥६६॥ यदि तुम दोनों मुझ

तुष्टौ मम वध्यावुभावपि ॥९७॥ किमन्येन वरेणात्र एतावद्धि वृतं मम ॥९८॥ ऋषिरुवाच ॥ ९९ ॥ वञ्चिताभ्यामिति तदासर्वमापोमयं जगत् ॥१००॥ विलोक्य ताभ्यां गदितो भगवान्कमलेक्षणः ॥ आवां जहि न यत्रोर्वी सलिलेन परिप्लुता ॥१०१॥ ऋषिरुवाच ॥ १०२ ॥ तथेत्युक्त्वा भगवता शंखचक्रगदाभृता ॥ कृत्वा चक्रेण वै च्छिन्ने जघने शिरसी तयोः ॥१०३॥ एवमेषा समुत्पन्ना ब्रह्मणा संस्तुता स्वयम् ॥ प्रभावमस्या देव्यास्तु भूयः शृणु वदामि ते ऐं ॐ॥ १०४ ॥ इति श्री मार्कण्डेय पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये मधुकैटभ-

---

से खुश हुए हो, तो तुम दोनों मेरे द्वारा मारे जाओ ॥९७॥ मैं यही चाहता हूँ ! इस जगह और वर से क्या लाभ ॥९८॥ ऋषि ने कहा——॥९९॥ जब भगवान विष्णु ने इस प्रकार दोनों को ठग लिया ॥१००॥ तब उन दोनों राक्षसों ने सम्पूर्ण जगत को पानी से डूबा देखकर भगवान पुण्डरीकाक्ष से कहा ॥ हम दोनों को उस स्थान में मारो ॥ जहाँ पानी से पृथ्वी डूबी न हो, हम दोनों तुम से प्रसन्न हैं ॥१०१॥ ऋषि ने फिर कहा——॥१०२॥ भगवान ने कहा "ऐसा ही होगा" इतना कह कर शङ्ख, चक्र, गदाधारी भगवान ने उन दोनों राक्षसों के शिर अपनी जाँघ पर रखकर चक्र से काट दिये ॥१०३॥ यह महामाया जगदम्बा इसी प्रकार से पैदा हुई थी ॥ और स्वयं ब्रह्माजी ने उसकी स्तुति करी

बधः प्रथमोध्यायः ॥ १ ॥ उवाच १४ अर्द्ध २४ श्लोक ६६ ॥ एवं १०४ ॥

इति शब्दो हरेल्लक्ष्मीं बधः कुल विनाशकः ॥ अध्यायो हरते प्राणान्मार्कण्डेयादिकं वदेत ॥

थी आगे श्री देवीजी का वृत्तान्त तुमसे कहता हूं सो सुनो ॥

इति आगरा निवासी श्री घनश्याम गोस्वामी कृत भाषा मधु कैटभ बध की कथा समाप्त हुई ॥

अध्याय के अन्त में इति बोलने से लक्ष्मी का नाश होता है बधः बोलने से कुल का नाश होता है अध्याय बोलने से अपने प्राण नाश होते हैं इसलिये अध्याय के बाद आचमनी में जल लेकर

ॐ जय जय मार्कण्डेय पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये सत्याः सन्तु (यजमानस्यकामः) जगदम्बार्पणमस्तु ॥ ऐसा बोलकर जल छोड़ना ॥

तान्त्रिक आहुति, ॐ साङ्गायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै ऐं बीजाधिष्ठात्र्यैमहाकालिकायै महाहुतिं समर्पयामि नमः ॥ इतना कहकर आहुति छोड़ना सामान नीचे लिखा हुआ है ।

वैदिक आहुति अध्याय की

एक उलटे सावत पान पर शाकल्य घी में भिगोकर १ कमल गट्टा १ सुपारी २ लोंग, १ छोटी इलायची गूगल शहत यह सब चीजें स्रुची में रखकर खड़े होकर मन्त्र बोलना ॥ ॐ प्राणाय स्वाहा, पानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा ॥ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके नमानयति कश्चन ॥ ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कां पीलवासिनीथंस्वाहा ॥२२।२३॥ बाद में स्रुवे से ५ बार घी छोड़ते हुए इस मन्त्र को बोलना ॥

ॐ घृतं घृतपावानः पिवतव्वसां वसा पावानः ॥ पिवतांतरिचस्यहविरसिस्वाहा ॥ दिशः प्रतिशऽआदिशोव्विद्दिशऽउद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा ॥ यजु० सं० अ० ६।१६ मंत्र ॥

॥ अथ द्वितीय अध्यायः ॥

ॐ मध्यमचरित्रस्य विष्णुर्ऋषिः महालक्ष्मीर्देवता उष्णिक्छन्दः शाकम्भरीशक्तिः दुर्गाबीजं वायुस्तत्त्वं यजुर्वेदमूर्तिः आत्मनोभीष्ट फल प्राप्ति हेतवे धर्म्मार्थ काम कामोक्षार्थे पाठे (हवने) विनियोगः ॥२॥

मध्यम चरित्र के विष्णु ऋषि, महालक्ष्मी देवता, उष्णिगूछन्द, शाकम्भरीशक्ति, दुर्गाबीज, वायुतत्व तथा यजुर्वेद के समान मूर्ति है और महालक्ष्मी के प्रीत्यर्थ विनियोग है इतना कह कर जल छोड़ना ॥

विनियोग बोलकर जल छोड़ना ध्यान का अर्थ नीचे देखना।

महालक्ष्मी ध्यानम् ॥

ॐ अक्षस्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां
दण्डं शक्तिमसिञ्चचर्मजलजं घण्टां सुराभाजनम् ॥
शूलं पाश सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रवालप्रभां सेवे
सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सुरोजोद्भवाम् ॥२॥

॥ ध्यान का अर्थ ॥

रुद्राक्ष की माला, फरसा, गदा, बाण, वज्र, कमल, धनुष, कमंडलु, दंड, शक्ति, तरवार, ढाल, शंख, घंटा, सुरापात्र, त्रिशूल, फांसी और सुदर्शन चक्र, इनको १८ हाथों में लिए हुए मूंगे के समान शरीर की कान्ति वाली जो सब देवताओं के तेज से उत्पन्न है ऐसी महालक्ष्मी का ध्यान करता हूँ ॥

अक्षमाला, परशु, गदा, बाण, वज्र, पद्म, धनुः, कुण्डिका, दण्ड, शक्ति, असि, चर्म, जलज, घण्टा, सुराभाजन, शूल,

ॐ ह्रीं ऋषिरुवाच ॥१॥ देवासुरमभूद्युद्धंपूर्णमब्दशतंपुरा॥ महिषेऽसुराणामधिपेदेवानां च पुरन्दरे ॥ ॥२॥ तत्रासुरैर्महावीर्यैर्देवसैन्यं पराजितम्॥ जित्वा च सकलान्देवानिन्द्रोऽभून्महिषासुरः ॥३॥ ततः पराजितादेवाःपद्मयोनिंप्रजापतिम्॥ पुरस्कृत्यगतास्तत्र यत्रेशगरुडध्वजौ ॥४॥ यथावृत्तं तयोस्तद्वन्म-

---

पाश, चक्र पृ० १५१–१५४ में लिखी मुद्रा दिखाना व ध्यान करना ॥

ऋषि बोले—॥१॥ पूर्व समय में देवताओं के राजा इन्द्र और राक्षसों के मालिक महिषासुर के साथ देवासुर संग्राम पूर्ण १०० वर्ष तक अत्यन्त भयंकर हुआ था ॥२॥ इस युद्ध में महा वीर्यवान असुरों ने देवगणों को जीत तथा सब पल्टन को हरा कर स्वयं महिषासुर इन्द्र के सिंहासन पर बैठा ॥३॥ और सब देवता पराजित हो पद्मयोनि ब्रह्माजी को साथ में लेकर वहाँ गये जिस जगह महादेव और विष्णु भगवान विराजमान थे ॥४॥ महिषासुर के द्वारा जिस प्रकार देवतागण लड़ाई में हारने तथा स्वर्ग से निकलने का सब हाल शिव और विष्णु भगवान दोनों को कह सुनाया ॥ (इन्द्रादि देवतागण कहने लगे)

महिषासुर, शिव के अंश से महिषी में जम्भ नामक असुर से पैदा हुआ और कई सहस्र वर्ष तप करने के अनन्तर रुद्र (महेश्वर) द्वारा मनुष्य मात्र से अवध्य वर लेकर इन्द्रासन का राजा हुआ था इसकी विशेष कथा देवी भागवत, कालिकापुराण, मार्कण्डेय पुराण तथा और भी कई तन्त्र ग्रन्थों में देखने से मालूम होगी यहाँ विस्तार भय से नहीं लिखी है ॥

हिषासुरचेष्टितम्॥त्रिदशाःकथयामासुर्देवाभिभवविस्तरम्॥५॥सूर्येन्द्राग्न्यनिलेन्दूनांयमस्यवरुणस्यच। अन्येषां चाधिकारान्स स्वयमेवाधितिष्ठति ॥ ६ ॥ स्वर्गान्निराकृताः सर्वे तेन देवगणा भुवि ॥ विचरन्ति यथा मर्त्या महिषेण दुरात्मना ॥७॥ एतद्वः कथितं सर्वममरारिविचेष्टितम्॥ शरणं वः प्रपन्नाः स्मो बधस्तस्य विचिन्त्यताम् ॥८॥ इत्थं निशम्य देवानां वचांसि मधुसूदनः॥ चकार कोपंशम्भुश्च भ्रुकुटीकुटिलाननौ ॥९॥ ततोऽतिकोपपूर्णस्य चक्रिणो वदनात्ततः॥ निश्चक्राम महत्तेजो ब्रह्मणः शङ्करस्य च॥१०॥अन्येषां चैव देवानां शक्रादीनां शरीरतः॥

॥५॥ उस महिषासुर ने सूर्य, इन्द्र, अग्नि, पवन, चन्द्रमा, यम, वरुण तथा अन्य सब देवताओंके अधिकारको छीन लिया और आप ही राज करने लगा है ॥६॥ उस दुरात्मा महिषासुर के द्वारा स्वर्ग से निकाले हुए सब देवता गण अनाथ मनुष्यों की तरह पृथ्वी पर घूमते हैं ॥७॥ उस दुरात्मा महिषासुर का संपूर्ण बल आपको सुनाया, हम सब देवतागण आपकी शरण हैं ॥ अब उस महिषासुर को मारने का विचार आप करें ॥८॥ इस प्रकार इन्द्रादि देवगण की ये सब बातें सुनने से विष्णु और महादेवजी को क्रोध हुआ जिससे उन दोनों के मुख और भौंह टेढ़े हुए ॥९॥ तिस के बाद अत्यन्त क्रोधित ब्रह्मा, विष्णु और महादेव के शरीरों से महातेज निकला ॥१०॥ और सब इन्द्रादि देवताओं के देह से भी तेज निकला तथा सब तेज मिल कर

निर्गतं सुमहत्तेजस्तच्चैक्यं समगच्छत ॥११॥ अतीव तेजसः कूटंज्वलन्तमिव पर्वतम् ॥ ददृशुस्ते सुरास्तत्र ज्वालाव्याप्तदिगन्तरम् ॥ १२ ॥ अतुलं तत्र तत्तेजः सर्वदेवशरीरजम् ॥एकस्थं तदभून्नारी व्याप्तलोकत्रयं त्विषा ॥ १३ ॥ यदभूच्छाम्भवंतेजस्तेनाजायततन्मुखम् ॥ याम्येनचाभवन्केशा बाहवोविष्णु तेजसा ॥१४॥ सौम्येन स्तनयोर्युग्मं मध्यंचैन्द्रेण चाभवत् ॥ वारुणेन च जङ्घोरू नितम्बस्तेजसा भुवः ॥१५॥ ब्रह्मणस्तेजसा पादौ तदङ्गुल्योऽर्कतेजसा ॥ वसूनां च कराङ्गुल्यः कौबेरेण च नासिका ॥१६॥ तस्यास्तु दन्ताः सम्भूताः प्राजा-

एक हुआ ॥११॥ तब इन्द्रादि देवगण ने देखा कि वह सम्पूर्ण तेज राशि (ढेर) ज्वाला के समान सब दिशाओं में व्याप्त हो जलते हुए पहाड़ की तरह दृष्टिगोचर हुआ ॥१२॥ सम्पूर्ण देवताओं के शरीर से प्रकट होकर तीनों लोक में व्याप्त हुई ज्योति स्वरूपा वह राशि एक स्त्री के रूप में परिणित होने लगी ॥१३॥ शम्भु (महादेव) के (अंश) से उस स्त्री का मुँह बना, यमराज के अंश से बाल तथा विष्णु के तेज से बाहु ॥१४॥ चन्द्रमा के अंश से दोनों स्तन तथा इन्द्र के तेज से कमर का मध्य भाग वरुण के तेज से जाँघ तथा ऊरू, पृथ्वी के तेज से नितम्ब बने ॥१५॥ ब्रह्मा के अंश से पैर, सूर्य के तेज से पैर की उंगलियाँ वसु के तेज से हाथ की उंगलियाँ और कुबेर के अंश से नासिका ॥१६॥ उसके दाँत प्रजापति के अंश

पत्येन तेजसा ॥ नयनत्रितयं यज्ञे तथा पावकतेजसा ॥१७॥ भ्रुवौ च सन्ध्ययोस्तेजः श्रवणावनिलस्य च ॥ अन्येषां चैव देवानां सम्भवस्तेजसां शिवा ॥१८॥ ततः समस्तदेवानां तेजोराशिसमुद्भवाम् ॥ तांविलोक्यमुदंप्रापुरमरा महिषार्दिताः॥ *(ततोदेवा ददुस्तस्यैस्वानिस्वान्यायु धानिच)॥१९॥शूलंशूलाद्विनिष्कृष्य ददौ तस्यै पिनाकधृक् ॥२०॥ चक्रं च दत्तवान्कृष्णः समुत्पाद्य स्वचक्रतः॥ शङ्खं च वरुणः शक्तिं ददौ तस्यै हुताशनः ॥२१॥ मारुतो दत्तवांश्चापंबाणपूर्णौ तथेषुधी ॥ वज्रमिन्द्रः समुत्पाद्य

से, यज्ञ और अग्नि के अंश से तीनों नेत्र बने ॥१७॥ सन्धि के अंश से दोनों भौंह वायु के तेज से दोनों कान बने तथा सम्पूर्ण देवताओं के तेज से ही ये कल्याणकारिणी देवी की उत्पत्ति हुई ॥१८॥ तब सब देव गण के तेज (अंश) राशि से प्रगट महामाया को देख महिषासुर से सताये हुए सब देव गण प्रसन्न हुए ॥१९॥ पिनाक (धनुष) धारी महादेव ने अपने शूल (त्रिशूल) से निकाल कर शूल (त्रिशूल) भगवती को दिया ॥२०॥ वरुण ने शंख दिया, अग्नि ने शक्ति दी, वायु ने धनुष और बाण भरे हुए दो तरकश (तूणीर) दिये ॥२१॥ अमराधिप सहस्राक्ष इन्द्र ने अपने वज्र से पैदा कर वज्र आयुध भगवती

---

*इसके बाद देवताओं ने अपने २ आयुध (हथियार) उस भगवती को दिये।

कुलिशादमराधिपः ॥ २२ ॥ ददौ तस्यैसहस्राक्षो घण्टामैरावताद्गजात्॥ कालदण्डाद्यमोदण्डंपाशंचाम्बुपतिर्ददौ॥२३॥प्रजापतिश्चाक्षमालांददौ ब्रह्माकमण्डलुम् ॥ समस्तरोमकूपेषु निजरश्मीन् दिवाकरः ॥२४॥ कालश्च दत्तवान् खड्गं तस्यैचर्म च निर्मलम् ॥ क्षीरोदश्चामलं हारमजरे च तथाम्बरे ॥२५॥ चूडामणिं तथा दिव्यं कुण्डले कटकानि च ॥ अर्धचन्द्रं तथा शुभ्रं केयूरान्सर्वबाहुषु ॥२६॥ नूपुरौ विमलौ तद्वद्ग्रैवेयकमनुत्तमम् ॥ अङ्गुलीयकरत्नानि समस्ता स्वङ्गुलीषु च ॥२७॥ विश्वकर्मा

को दिया तथा ऐरावत हाथी से घंटा भी दिया ॥२२॥ यमराज ने अपने कालदण्ड से पैदा करके १ दण्ड (डंडा) दिया, अम्बुपति वरुण ने पाश (नागपाश) दी, दक्ष प्रजापति ने अक्षमाला और ब्रह्मा ने कमण्डलु (तोंबी) दिया ॥२३॥ दिवाकर सूर्य भगवान ने अपनी सम्पूर्ण किरणों में से तेज (प्रकाश) निकालकर भगवती देवीजी के रोम-रोम में स्थापित कर दिया, काल ने निर्मल खड्ग और चर्म (ढाल) दान किया ॥२४॥ क्षीरोद (समुद्र) ने अमलहार जो कभी मैला न हो तथा दो वस्त्र जो कभी फटें नहीं, सुन्दर चूड़ामणि, दो दिव्य कुण्डल (कानों के बाले) और कटकानि (हँसली) दी ॥ सब बाहुओं के केयूर (बाजू) विमल नूपुर, गरदन में पहनने वाला आभूषण ॥२६॥ तथा उंगलियों के गहने (अंगूठी) रत्न जटित दिये॥ विश्वकर्मा ने अत्यन्त मनोहर परशु (फरसा) दिया ॥२७॥

ददौ तस्यै परशुं चातिनिर्मलम् ।। अस्त्राण्यनेक-
रूपाणि तथाभेद्यं च दंशनम् ।।२८।। अम्लानपङ्क-
जांमालांशिरस्युरसि चापराम् ।। अददज्जलधिस्तस्यै
पंकजं चाति शोभनम् ।।२९।। हिमवान्वाहनं सिंहं
रत्नानि विविधानि च ।। ददावशून्यं सुरया पानपात्रं
धनाधिपः ।।३०।। शेषश्च सर्वनागेशो महामणि-
विभूषितम् ।। नागहारंददौ तस्यैधत्ते यः पृथिवीमि-
माम् ।।३१।। अन्यैरपि सुरैर्देवी भूषणैरायुधैस्तथा ।।
संमानिता ननादोच्चैः साट्टहासं मुहुर्मुहुः ।।३२।।

और अनेक प्रकार के अस्त्र तथा अभेद्य कवच दिये, जलनिधि (समुद्र) ने शिर तथा हृदय में पहरने के लिये जो कभी भी मैली न हो कमल के पुष्पों की माला दी तथा ।।२८।। कमल पुष्प दिया ।। हिमालय (पर्वत राज) ने भगवती को सवारी के लिये सिंह और रत्न दिये ।।२९।। धनाधिप (कुबेर) ने मधु से भरा पानपात्र (कटोरा व प्याला) दिया, जो सब पृथ्वी को अपने माथे पर धारण करे हुए हैं वही सर्वनागेश शेषजी ने भगवती को बड़ी बड़ी महा मणियों से सुसज्जित नागहार दिया ।।३०।। तथा अन्य सब देवताओं ने भी आभूषण और आयुध (हथियार) दिये ।।३१।। तब देवीजी देवताओं से सम्मानित हो बार-बार उच्च स्वर से अट्टहास के साथ गर्जना करने लगीं उस भगवती के घोर नाद से समस्त आकाश मंडल गुंजायमान हो गया ।।३२।। और एक बड़ी प्रतिध्वनि (लौट-

तस्या नादेन घोरेण कृत्स्नमापूरितं नभः ॥ अमायतातिमहता प्रतिशब्दो महानभूत् ॥३३॥ चुक्षुभुः सकला लोकाः समुद्राश्च चकम्पिरे ॥ चचाल वसुधा चेलुः सकलाश्चमहीधराः ॥३४॥ जयेति देवाश्च मुदा तामूचुः सिंहवाहिनीम् ॥ तुष्टुवुर्मुनयश्चैनां भक्तिनम्रात्ममूर्तयः ॥३५॥ दृष्ट्वा समस्तं संक्षुब्धं त्रैलोक्यममरारयः ॥ सन्नद्धाखिलसैन्यास्ते समुत्तस्थुरुदायुधाः ॥३६॥ आः किमेतदितिक्रोधादाभाष्य महिषासुरः ॥ अभ्यधावत तं शब्दमशेषैरसुरैर्वृतः ॥३७॥ स ददर्श ततो देवीं व्याप्तलोकत्रयां त्विषा ॥

कर आवाज) हुई ॥ सब लोग चौंक गये और समुद्र काँप गया ॥३३॥ पृथ्वी चलायमान हुई तथा सब पर्वत हिलने लगे तब सब देवता गण प्रसन्न होकर भगवती सिंह वाहिनी को देख कर बार-बार जय हो जय हो ॥३४॥ और मुनिगण भक्ति से नम्र हो भगवती की स्तुति करने लगे, इस प्रकार सम्पूर्ण संसार को भयभीत देखकर राक्षसगण ॥३५॥ अपनी सब प्रकार की सेना (पलटनें) तयार कर कवायद कराने लगे, आः—यह क्या हो रहा है क्रोध से इस प्रकार कहकर ॥३६॥ महिषासुर सब राक्षसों के बीच में स्थिति हो उस (देवीजी के शब्द को अनुसंधान (ढूँढने) के लिये चला, तब उस (महिषासुर) ने देखा ॥३७॥ कि देवी पैर के बोझ से पृथ्वी को नीचे रसातल में दबा रही है, माथे के मुकुट से आकाश

पादाक्रान्त्या नतभुवं किरीटोल्लिखिताम्बराम्॥ ३८॥
क्षोभिताशेषपातालां धनुर्ज्यानिः स्वनेन ताम् ॥
दिशो भुजसहस्रेण समन्ताद् व्याप्य संस्थिताम् ॥
३९॥ ततः प्रववृतेयुद्धंतया देव्या सुरद्विषाम् ॥
शस्त्रास्त्रैर्बहुधामुक्तैरादीपितदिगन्तरम् ॥ ४० ॥
महिषासुरसेनानीश्चिक्षुराख्यो महासुरः ॥ युयुधे-
चामरश्चान्यैश्चतुरङ्गबलान्वितः ॥४१॥ रथानाम-
युतैः षड्भिरुदग्राख्यो महासुरः ॥ अयुध्यतायुतानां

को उठाये देती है धनुष की प्रत्यंचा की ध्वनि से पाताल तक कंपायमान करती है ॥३८॥ अपनी सहस्र भुजाओं से भगवती सब दिशाओं को रोक रही है, तब श्री देवीजी के साथ सुरद्विष राक्षसों का युद्ध प्रारम्भ हुआ ॥३९॥ उस समय लड़ाई में छूटे हुए अनेक तरह के दिव्य अस्त्र शस्त्रों से दिशा विदिशा दीप्तमान हो गईं, और महिषासुर का सेनापति चिक्षुर नाम वाला बड़ा राक्षस लड़ने लगा ॥ ४० ॥ चतुरङ्गिणी (हाथी, घोड़े, रथ, पैदल) पलटन लेकर चामर नाम राक्षस और बहुत से राक्षसों को साथ में लेकर लड़ने लगा, साठ हज़ार रथ की सेना लेकर उदग्र नाम का राक्षस लड़ने लगा ॥४१॥ अयुत (दस हज़ार) एक हज़ार वार इकट्ठे करके रथों से घिर कर महाहनु नाम का राक्षस युद्ध में लड़ने लगा । असिलोमा (तलवार की नोंक के समान रोम वाला) नामक राक्षस ने पांच सौ अयुत (दश हजार) रथ की पलटन के बीच में स्थिति होकर

च सहस्रेण महाहनुः ॥४२॥ पञ्चाशद्भिश्च नियुतैरसिलोमा महासुरः ॥ अयुतानां शतैः षड्भिर्वाष्कलोयुयुधेरणे ॥ ४३ ॥ गजवाजिसहस्रौघैरनेकैः परिवारितः ॥ वृतोरथानां कोट्या च युद्धे तस्मिन्नयुध्यत ॥४४॥ बिडालाख्योऽयुतानां च पञ्चाशद्भिरथायुतैः ॥ युयुधे संयुगे तत्र रथानां परिवारितः

लड़ाई में लड़ा ॥४२॥ बाष्कल नामक राक्षस ने छः सौ अयुत रथ की सेना लेकर भगवती से युद्ध प्रारम्भ किया, और बिना गिन्ती हज़ारों हाथी, घोड़ों के समूह के बीच में ॥४३॥ परिवारित नामक राक्षस करोड़ रथ की सेना लेकर लड़ा, बिड़ालाक्ष (कंजा) राक्षस पांच सौ अयुत पैदल पलटन तथा रथ की पलटन से सजकर लड़ने लगा ॥४४॥ और बहुत से राक्षस अयुत सेना, रथ, हाथी, और घोड़े साथ में लेकर लड़ाई में

श्री सूर्यनारायणाय नमः ॥

नेत्रोपनिषद्

श्री गणेशाय नमः ॥ अथातश्चाक्षुषीं पठित सिद्धां चक्षुरोगहरां व्याख्यास्यामः ॥ यथाचक्षुरोगाःसर्वतोनश्यंति चक्षुषो दीप्तिर्भवति तस्याह चाक्षुषी विद्यायाः अहिर्बुध्न्य ऋषिर्गायत्री छंदः श्रीसूर्योदेवता चक्षुरोग निवृत्तयेजपे विनियोगः ओंचक्षुष् २ चक्षुष्तेजः स्थिरोभव मां पाहि २ त्वरितं चक्षुरोगान् शमय २ ममजातरूपं तेजोदर्शय २ यथाह मन्धोनस्याम् तथा कल्याणं कुरु २ येन पूर्वजन्मोपार्जितानि चक्षुः प्रतिरोधक दुष्कृतानि तानि सर्वाणि निर्मूलय २ ओं नमश्चक्षुष्तेजोदात्रे दिव्यभास्कराय ॥ ओंनमः करुणा करायामृताय ओंनमः श्री सूर्य्याय ओं नमो भगवतेसूर्याक्षातितेजसे नमः ओं खेचराय नमः ओंमहते नमः ओंतपसे नमः रजसे असतोमां सद्गमय तमसोमां ज्योतिर्गमय मृत्योर्मामृतंगमय उष्णोभगवान् शुचिरूपः हंसो भगवान् शुचिरप्रतिरूपः यद्रूपांचाक्षुष्मतीं विद्यांब्राह्मणोनित्यमधीते न तस्याक्षिरोगोभवति न तस्य कुलेन्धो भवति

॥४५॥ अन्ये च तत्रायुतशोरथनागहयैर्वृताः ॥ युयुधुः संयुगेदेव्या सह तत्र महासुराः॥४६॥कोटिकोटिसहस्रैस्तु रथानां दन्तिनां तथा ॥ हयानां च वृतो युद्धे तत्राभून्महिषासुरः ॥४७॥ तोमरैर्भिन्दिपालैश्च शक्तिभिर्मुसलैस्तथा॥ युयुधुः संयुगे देव्या खड्गैः परशुपट्टिशैः ॥ ४८ ॥ केचिच्च चिच्छिपुः

लड़ने लगे ॥४५॥ देवीजी के साथ में करोड़ २ हजार रथ, हाथी तथा इतने ही ॥४६॥ घोड़ों के साथ महिषासुर संग्राम भूमि में आया तब राक्षसगण तोमर, भिन्दिपाल, शक्ति, मूषल ॥४७॥ खड्ग पट्टिश आदि हथियारों द्वारा देवी से संग्राम करने लगे, कोई राक्षस देवीजी के ऊपर शक्ति फेंकते थे कोई पाश [फन्दा] फेंकते ॥४८॥ और दूसरे देवी को खड्ग की चोट से

अष्टौब्राह्मणान् ग्राहयित्वा विद्यासिद्धिर्भवति ओं विश्वरूपं घृणिते जातवेदसे हिरण्मयं पुरुषं ज्योतिरूपं तं सहस्ररश्मि शतधा वर्त्तमानः प्राणः प्रजानामुदयत्येषः सूर्यः ओं नमो भगवते आदित्याय अहोवाहिन्यहोवाहिनीस्वाहा ॥ इति श्री अथर्वण वेदोक्त नेत्रोपनिषत्संपूर्णम् ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ कैलास शिखरासीनं शंकरं वरदं शिवं ॥ देवी पप्रच्छ सर्वज्ञं देवदेवं महेश्वरम् ॥१॥ देव्युवाच ॥ भगवन्देवदेवेशदेवानां मोक्षदः प्रभो ॥ प्रब्रूहिमे महाभाग गोप्यं यद्यपि च प्रभो ॥२॥ शत्रूणां येन नाशः स्यादात्मनो रक्षणं भवेत् ॥ परमैश्वर्य्यं मतुलं लभेद्येन हि तं वद ॥३॥ भैरव उवाच ॥ वक्ष्यामिते महादेवि सर्वं धर्म्महितायच ॥ अद्भुतं कवचं देव्यास्सर्वं रक्षाकरं नृणाम् ॥४॥ सर्वारिष्ट प्रशमनं सर्वोपद्रवनाशनम् ॥ सुखदं भोगदं चैव वश्याकर्षणमद्भुतम् ॥५॥ शत्रूणां संक्षयकरं सर्वं व्याधिनिवारणम् ॥ दुःखिनोज्वरिणश्चैवस्वाभीष्टाप्रहतातथा ।६॥ भोगमोक्ष प्रदं चैव कालिका कवचं पठेत् ॥ ॐ अस्यश्रीकालिकाकवचस्य श्रीभैरवऋषिर्गायत्री छन्दः श्रीकालिकादेवता ममाभीष्टसिद्धये पाठेविनि-

शक्तीः केचित्पाशांस्तथापरे ॥ देवीं खड्गप्रहारस्तु ते तां हन्तुं प्रचक्रमुः ॥४९॥ सापि देवी ततस्तानि शस्त्राण्यस्त्राणि चण्डिका ॥ लीलयैव प्रचिच्छेद-निजशस्त्रास्त्रवर्षिणी ॥५०॥ अनायस्तानना देवी स्तूयमानासुरर्षिभिः ॥ मुमोचासुरदेहेषु शस्त्राण्य-

मारने के लिये घूम रहे थे। तब चण्डिका देवी ने राक्षसों के द्वारा चलाये गये विविध भाँति के अस्त्र शस्त्रों को ॥४९॥ अनायास साधारण रण क्रीडा से ही अपने शस्त्रास्त्र से काट, गेरा, तब देवता और ऋषियों से स्तुति की गई देवी ॥५०॥ प्रसन्न मुखी ईश्वरी देवी राक्षसों के शरीर पर अस्त्रशस्त्र की

योगः ॥ ॐ ध्यायेत्कालीं महामायां त्रिनेत्रां बहुरूपिणीम् ॥ चतुर्भुजां ललज्जिह्वां पूर्णचंद्रनिभाननां ॥ नीलोत्पलदलप्रख्यां शत्रुसंघविदारिणीम् ॥८॥ नरमुण्डं तथा खड्गंकमलं च वरंतथा ॥ बिभ्राणां रक्तवसनांदंष्ट्रयालींघोररूपिणीम् ॥ ९ ॥ अट्टहास निरतांसर्वदा च दिगम्बराम् ॥ शवासनस्थितां देवीं मुण्डमाला विभूषिताम् ॥१०॥ इतिध्यात्वा महादेवीं पुनस्तु कवचंपठेत ॥ ॐ कालिकाघोररूपाढ्या सर्वकामप्रदाशुभा ॥११॥ सर्वदेवस्तुतादेवी शत्रुनाशं करोतु मे ॥ ह्रीं ह्रीं स्वरूपिणीचैव ह्रां ह्रां ह्रूँ रूपिणी तथा ॥१२॥ ह्रीं ह्री ह्रें २ स्वरूपा सा सदाशत्रून्विदारयेत् ॥ श्रीं ह्रीं ऐं रूपिणीदेवी भवबंधविमोचनी ॥१३॥ हसकूल ह्रींह्रीं रिपून्साहरतु देवी सर्वदा ॥ यथाशुम्भो हतो दैत्यो निशुम्भश्च महासुरः ॥१०॥ वैरिनाशाय वंदे तां कालिकां शंकरप्रियाम् ॥ ब्राह्मी शैवी वैष्णवी च वाराही नारसिंहिका ॥१५॥ कौमार्यैन्द्री च चामुण्डा खादयन्तु ममद्विषः ॥ सुरेश्वरी घोररूपा चण्डमुण्ड विनाशिनी ॥१६॥ मुण्डमालावृतांगी च सर्वतः पातुमाम् सदा ॥ ह्रीं ह्रीं कालिके घोरदंष्ट्रे रुधिर प्रिये रुधिर पूर्ण-वक्त्रे रुधिरावृत्तस्तनि मम शत्रून्खादय २ हिंसय २ मारय २ भिंदि २ छिंधि २ उच्चाटय २ द्रावय २ शोषय २ स्वाहा ह्रीं ह्रीं कालिकायैमदीय शत्रूं समर्पयामि स्वाहा ॐ जय २ किरि २ किटि २ कुट२ कट्ट २ मर्दय २

स्त्राणि चेश्वरी ॥५१॥ सोऽपि क्रुद्धो धुतसटो देव्या वाहनकेशरी ॥ चचारासुरसैन्येषु वनेष्विव हुताशनः ॥ ५२ ॥ निश्वासान्मुमुचेयांश्च युध्यमाना रणेऽम्बिका ॥ त एव सद्यः सम्भूतागणाः शतसहस्रशः ॥५३॥ युयुधुस्ते परशुभिर्भिन्दिपालासिपट्टिशैः ॥

वरषा करने लगी, और देवी के वाहन उस सिंह ने जिस प्रकार वन में घूम २ कर अग्नि फैलकर तमाम वन को भस्म कर देती है तद्वत् क्रोध से सिंह अपने गदन के केश [बालों को] हिलाता हुआ असुर सेना का नाश करने लगा ॥५१॥ युद्ध के बीच में अम्बिका ने जितने स्वास छोड़े उन एक २ स्वास में ॥५२॥ एक-एक लाख गण पैदा हुए, देवी जी के प्रभाव से बढ़ा हुआ वह गण समूह फरसा, भिन्दिपाल, ॥५३॥ आदि

मोहय २ हर २ ममरिपून्ध्वंसय २ भक्षय २ त्रोटय २ यातुधानि चामुण्डे सर्व जनान्राज्ञो राजपुरुषां (स्त्रि) योषाः रिपून्ममवश्यान्कुरु २ तनु २ धान्यंधनमश्वान्गजान् रत्नानिदिव्यकामिनीः पुत्रपौत्रान्राजश्रियं देहि २ यक्ष २ क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः स्वाहा ॥ इत्येतत्कवचं दिव्यं कथितं शम्भुनापुरा ॥१७॥ ये पठन्ति सदा तेषां ध्रुवं नश्यन्तिशत्रवः ॥ प्रलयंयान्ति व्याधीनां भवन्तीह न संशयः ॥१८॥ धनहीनाः पुत्रहीनाः शत्रवस्तस्यसर्वदा ॥ सहस्र पठनात्सिद्धिः कवचस्य भवेत्तथा ॥१६॥ ततः कार्याणि सिद्ध्यन्ति यथा शंकर भाषितम् ॥ श्मशानांगारमादाय चूर्णीकृत्वा प्रयत्नतः ॥२०॥ पादोदकेन पिष्ट्वाच लिखेल्लौह-शलाकया ॥ भूमौ शत्रून् हीन रूपान् उत्तराशिरसस्तथा ॥२१॥ हस्तं दत्वातद्हृदये कवचं तु स्वयं पठेत् ॥ शत्रोः प्राणप्रतिष्ठान्तु कुर्यान्मंत्रेण मंत्रवित् ॥ २२ ॥ हन्यादस्त्र प्रहारेण शत्रुर्गच्छेद्यमालयम् ॥ ज्वलदंगार-तापेन भवन्तिज्वरिणोऽरयः ॥२३॥ प्रोक्षणैर्वामपादेन दरिद्रो भवति ध्रुवम् ॥ वैरिनाशकरं प्रोक्तं कवचं वश्यकारकम् ॥२४॥ परमैश्वर्यदं चैवपुत्रपौत्रादिवृद्धिदम् ॥ प्रभात

नाशयन्तोऽसुरगणान्देवीशक्त्युपबृंहिताः ॥५४॥ अवादयन्त पटहान्गणाःशंखांस्तथापरे॥ मृदङ्गांश्च तथैवान्ये तस्मिन्युद्धमहोत्सवे ॥५५॥ ततो देवी त्रिशूलेन गदया शक्तिवृष्टिभिः ॥ खड्गादिभिश्च शतशो निजघान महासुरान् ॥५६॥ पातयामास चैवान्यान् घण्टास्वनविमोहितान् ॥ असुरान्भुवि पाशेनबद्ध्वाचान्यानकर्षयत् ॥५७॥ केचिद्द्विधाकृतास्तोक्ष्णैः खड्गपातैस्तथापरे ॥ विपोथितानि-

आयुधों से देवी के गण राक्षसों का संहार करने लगे उस देवासुर संग्राम महोत्सव में देवी के गणों में से कोई पटह, (ढोल) कोई शंख ॥५४॥ कोई मृदङ्ग (पखावज) बजाने लगे, उसके बाद देवीजी ने त्रिशूल से, गदा से शक्ति (भाल्लों) की वृष्टि से ॥५५॥ तलवारों से सैकड़ों महा असुरों को मार गेरा और बहुत से राक्षसों को घंटे को ध्वनि से मोहित करके मार दिया ॥५६॥ और बहुत से राक्षसों को पाश में बाँधकर पृथ्वी पर खींच कर मार दिया, और कितने राक्षसों को तरवार से काट-काट कर दो टुकड़े कर दिये ॥ ५७ ॥ और बहुत से राक्षस गदा की चोट से मूर्छा खाकर सो रहे ॥ बहुत से मूषल

समये चैव पूजाकाले प्रयत्नतः ॥२५॥ सायंकाले तथा पाठात्सर्वसिद्धिर्भवेद्ध्रुवम् ॥ शत्रुरुच्चाटनं याति देशाच्चविच्युतोभवेत् ॥२६॥ पश्चात्किंकरमाप्नोति सत्यं २ न संशयः ॥ शत्रुनाशकरं देवि सर्व-संपत्प्रदे शुभे ॥२७॥ सर्वदेवस्तुते देवि कालिकेत्वां नमाम्यहम् ॥

इति रुद्रयामले कालीकवचं सम्पूर्णम् ॥

पातेन गदया भुवि शेरते ॥५८॥ वेमुश्च केचिद्रुधिरं मुसलेन भृशं हताः ॥ केचिन्निपतिता भूमौ भिन्नाः शूलेन वक्षसि ॥५९॥ निरन्तराः शरौघेण कृताः केचिद्रणाजिरे ॥ श्येनानुकारिणः प्राणान्मुमुचुस्त्रिदशार्दनाः ॥६०॥ केषांचिद्बाहवश्छिन्नाश्छिन्नग्रीवास्तथापरे ॥ शिरांसि पेतुरन्येषामन्ये मध्ये विदारिताः ॥६१॥ विच्छिन्नजंघास्त्वपरे पेतुरुर्व्यां महासुराः ॥ एकबाह्वक्षिचरणाः केचिद्देव्या द्विधाकृताः ६२॥ छिन्नेऽपि चान्ये शिरसि पतिताः पुनरुत्थिताः॥

की चोट से घायल होकर मुँह से रुधिर वमन करने लगे ॥५८॥ और बहुत से राक्षस हृदय में त्रिशूल की वेदना से घायल होकर पृथ्वी पर गिर गये, कितने बाण वृष्टि से घायल हुए ॥५९॥ महिषासुर की सेना (पलटन) के यूथपति इसी तरह अपने अपने प्राणों का मोह त्याग शरीर छोड़ने लगे, कितने राक्षसों के हाथ कट गये, कितनों की गरदन कट गईं ॥६०॥ कितनों के शिर कट गये और अन्य बहुत राक्षसोंके बीच के हिस्से (पेट छाती) फट गये ॥ बहुत से राक्षसों की जाँघ कटने से पृथ्वी पर गिर पड़े ॥६१॥ श्री देवीजी ने कितने ही राक्षसों के एक बांह, आँख और पैर नष्ट कर दिये, तथा कितनों को बीच में से चीरकर दो टुकड़े कर दिये, और राक्षसों के शिर कटने से गिर जाने पर भी फिर उठकर ॥६२॥ उनके रुंड शरीर (जिनको कबंध कहते हैं) सुन्दर अस्त्र लेकर श्रीजगदम्बा देवीजी से लड़ने

* (कबन्धायुयुधुर्देव्या गृहीतपरमायुधाः) ॥ ननृतुश्चापरे तत्र युद्धे तूर्यलयाश्रिताः ॥६३॥ कबन्धाश्छिन्नशिरसः खड्गशक्त्यृष्टिपाणयः ॥ तिष्ठतिष्ठेति भाषन्तो देवीमन्ये महासुराः ॥६४॥ पातितैरथनागाश्वैरसुरश्च वसुन्धरा ॥ अगम्यासाभवत्तत्र यत्राभूत्समहारणः ॥६५॥ शोणितौघा महानद्यः सद्यस्तत्र प्रसुस्रुवुः ॥ मध्ये चासुरसैन्यस्य वारणासुरवाजिनाम् ॥६६॥ क्षणेन तन्महासैन्यमसुराणां तथाम्बिका ॥ निन्ये क्षयं यथा वह्निस्तृणदारु महाचयम् ॥६७॥ स च सिंहो महानादमुत्सृजन्धुत-

लगे, और दूसरे कबंध बाजे बजाने और नाचने लगे ॥६३॥ और अन्य बड़े बड़े राक्षस जिनके मस्तक कट गये थे वे सब कबन्ध होकर गदा, शक्ति और (कृपाण) हाथों में लेकर श्रीदेवीजी से "ठहरो ठहरो" कहकर लड़ने लगे ॥६४॥ जिस स्थान पर यह बड़ी लड़ाई हुई थी उस जगह रथ, हाथी, घोड़े तथा राक्षसों के गिरने से पृथ्वी इस तरह भर गई कि रास्ता निकलना असम्भव था ॥६५॥ राक्षसों की सेना के मृत हाथी, घोड़े और असुरों के रक्त की महानदी इधर उधर बहने लगी ॥६६॥ जिस प्रकार तृण (घास) और लकड़ी के बड़े बन को अग्नि जलाकर भस्म कर देता है ठीक उसी प्रकार श्रीजग-

---

*'कबन्धायुयुधुर्देव्या गृहीतपरमायुधाः'।
इत्यर्धं गुर्जर सांप्रदायिके पुस्तके नदृश्यते ॥

केसरः ॥ शरीरेभ्योऽमरारीणामसूनिव विचिन्वति ॥६८॥ देव्या गणैश्च तैस्तत्र कृतं युद्धं महासुरैः ॥ यथैषां तुष्टुवुर्देवाः पुष्पवृष्टिमुचो दिवि ॐ ॥६९॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये (महिषासुरसैन्यबधो नाम)द्वितीयोऽध्यायः ॥२॥ उवाच १ श्लोक ६८ एवं ६९ एवमादितः ॥ १७३ ॥

वैदिक आहुति २ अध्याय की ॥

एक पान पर शाकल्य १ कमलगट्टा घी में भिगोकर १ सुपारी, २ लोंग, १ छोटी इलायची, गूगल, इस अध्याय में विशेष गूगल ही है। सब चीजें स्रुची में रख खड़े होकर मंत्र २५० पृष्ठ में लिखे हैं वही बोलना॥ ॐ जय जय मार्कण्डेयपुराणे सावर्णिकेमन्वन्तरे देवी माहात्म्ये सत्याः सन्तु (यजमानस्य कामाः) जगदम्बार्पणमस्तु। ऐसा बोलकर जल छोड़ना।

दम्बा ने क्षण मात्र में राक्षसों की बड़ी सेना का नाश कर दिया ॥६८॥ और उस भगवती के वाहन सिंह ने भी अपने बालों को हिलाते हुए घोर नाद करके उसी प्रकार (जैसे देवीजी ने राक्षसों का नाश किया था) राक्षस समूह के प्राण नष्ट कर दिये ॥६९॥ तथा देवी के गणों ने भी इस युद्ध में ऐसी लड़ाई की जिससे सब देवतागण प्रसन्न होकर स्वर्ग से पुष्पों की वर्षा करने लगे ॥

इति आगरा निवासी श्री घनश्याम गोस्वामी कृत मार्कण्डेय
पुराण के दुर्गा माहात्म्य में महिषासुर
सैन्य बध की कथा समाप्त हुई ॥

तान्त्रिक आहुति ॥

ह्रीं·सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै श्री महालक्ष्म्यै अष्टाविंशति वर्णात्मिकायै लक्ष्मी बीजाधिष्ठात्र्यै नमः महाहुतिं समर्पयामि स्वाहा ॥ सामान सब वही है जो २६० पृष्ठ में लिखा है ।

अथ तृतीयोध्यायः ॥

अथ ध्यानम् ॥

ॐ उद्यद्भानुसहस्रकान्तिमरुणक्षौमां शिरोमालिकां रक्तालिप्तपयोधरां जपवटीं विद्यामभीतिं वरम् ॥ हस्ताब्जैर्दधतीं त्रिनेत्रविलसद्वक्त्रारविन्दश्रियंदेवीं बद्धहिमांशुरत्नमुकुटां वन्देऽरविन्द स्थिताम् ॥३॥ ऋषिरुवाच ॥१॥ ॐ निहन्यमानं तत्सैन्यमवलोक्य महासुरः ॥ सेनानीश्चिक्षुरः कोपाद्ययौ योद्धुमथाम्बिकाम्॥२॥ स देवीं शरवर्षेण ववर्ष समरेऽसुरः ॥

उदय होते हुए सहस्र सूर्य के समान कान्ति व लाल रेशमी वस्त्र धारण किये तथा मुण्डों की माला पहिने हुए, लाल चन्दन को लगाये, जपवटी, विद्या, अभय, वर को कर कमलों में धारण करे हुए बड़े-बड़े तीन नेत्र और कमल के समान सुहावना मुख, रत्न जड़े हुए अर्ध चन्द्रमा सहित मुकुट को धारण करे हुए अपने हृदय कमल में बैठी हुई देवी को ध्यान करता हूँ।

ऋषि बोले १—"जब महा असुर सेनापति चिक्षुर उस अपनी बड़ी सेना को मरती हुई देख क्रोध कर अम्बिका से लड़ने के लिये गया ॥२॥ जिस तरह सुमेरु पर्वत के शृंग पर मेघ जल बरसाता है उसी प्रकार वह (चिक्षुर) असुर भगवती

यथा मेरुगिरेः शृङ्गं तोयवर्षेणतोयदः ॥३॥ तस्यच्छित्वा ततो देवी लीलयैव शरोत्करान् ॥ जघान तुरगान्बाणैर्यन्तारं चैव वाजिनाम् ॥४॥ चिच्छेद च धनुः सद्यो ध्वजं चातिसमुच्छ्रितम् ॥ विव्याध चैव गात्रेषु छिन्नधन्वानमाशुगैः ॥५॥ सच्छिन्नधन्वा विरथो हताश्वो हतसारथिः ॥ अभ्यधावत तां देवीं खड्गचर्मधरोऽसुरः ॥ ६ ॥ सिंहमाहत्य खड्गेन तीक्ष्णधारेण मूर्धनि ॥ आजघान भुजे सव्ये देवीमप्यतिवेगवान् ॥७॥ तस्याः खड्गो भुजं प्राप्य पफाल नृपनन्दन ॥ ततो जग्राह शूलं स

के ऊपर शर (तीर) बरसाने लगा ॥३॥ तदनन्तर देवीजी ने बहुत सावधानी से उस राक्षस की शर वर्षा को काट कर उसके रथ के घोड़े और सारथी (साईस) को बाण से मार दिया ॥४॥ भगवती ने उसका धनुष तथा उत्तम रथ की ध्वजा (झंडी) भी काट दी और उस कटे हुए धनुष वाले चिक्षुर राक्षस के शरीर में बाणों की वर्षा से घाव कर दिये ॥ ५ ॥ तिसके बाद धनुष, रथ घोड़े और सारथी बिहीन वह असुर चिक्षुर (खड्ग) तरवार चर्म्म (ढाल) ले देवी की तरफ दौड़ा ॥ ६ ॥ तथा अत्यन्त बेग से तरवार की तीक्ष्ण धार से देवीजी के वाहन उस सिंह के शिर में आघात (मार) कर देवीजी के वामभुजा पर भी चोट की ॥७॥ हे राजा सुरथ ! उस राक्षस की तरवार देवीजी की बांहको छूने से टूट गई तब क्रोध

कोपादरुणलोचनः ॥८॥ चिक्षेप च ततस्तत्तु भद्रकाल्यां महासुरः ॥ जाज्वल्यमानं तेजोभी रविबिम्बमिवाम्बरात् ॥ ९ ॥ दृष्ट्वातदापतच्छूलंदेवीशूलममुञ्चत ॥ तच्छूलं शतधा तेन नीतं स च महासुरः ॥ १० ॥ हते तस्मिन्महावीर्ये महिषस्य चमूपतौ ॥ आजगाम गजारूढश्चामरस्त्रिदशार्दनः ॥११॥ सोऽपि शक्तिं मुमोचाथ देव्यास्तामम्बिका द्रुतम् ॥ हुङ्काराभिहतां भूमौ पातयामास निष्प्रभाम् ॥१२॥ भग्नां शक्तिं निपतितांदृष्ट्वा क्रोधसमन्वितः ॥

से लाल आंखें करते हुए उस राक्षस ने शूल (त्रिशूल) लिया ॥ ८ ॥ और भद्रकाली की तरफ़ निशाना करके फेंक दिया वह शूल आकाश से गिरती हुई सूर्य की किरण के समान तेज से अतीव जाज्वल्यमान मालूम हुआ ॥९॥ उस राक्षस की त्रिशूल को अपनी ओर आते देख कर देवीजी ने अपना शूल चलाया देवीजी के शूल (त्रिशूल) ने राक्षस के शूल के सैकड़ों खण्ड करके महा असुर चिक्षुर के भी सैकड़ों टुकड़े कर दिये ॥१०॥ जब युद्ध में बड़ा बलवान चिक्षुर नाम का राक्षस महिषासुर की सेना का अधिपति (आफिसर) मारा गया तब हाथी पर बैठ कर चामर नाम का असुर देवताओं का शत्रु श्री देवीजी से संग्राम में लड़ने को आया ॥११॥ उस चामर असुर ने देवीजी के ऊपर शक्ति (भाला सांग) फेंकी परन्तु जगदम्बा देवी के हुङ्कार से जल्दी निस्तेज (भस्म) होकर नीचे पृथ्वी पर गिर गई ॥१२॥

चिक्षेप चामरः शूलं बाणैस्तदपि साच्छिनत्॥१३॥ ततः सिंहः समुत्पत्य गजकुम्भान्तरेस्थितः ॥ बाहुयुद्धेन युयुधे तेनोच्चैस्त्रिदशारिणा ॥१४॥ युद्ध्यमानौ ततस्तौ तु तस्मान्नागान्महीं गतौ ॥ युयुधातेऽतिसंरब्धौ प्रहारैरतिदारुणैः ॥ १५ ॥ ततो वेगात्खमुत्पत्य निपत्य च मृगारिणा ॥ करप्रहारेण शिरश्चामरस्य पृथक्कृतम् ॥ १६ ॥ उदग्रश्च रणे देव्या शिलावृक्षादिभिर्हतः ॥ दन्तमुष्टितलैश्चैव करालश्च निपातितः ॥१७॥ देवी क्रुद्धा गदापातैश्चूर्णयामास चोद्धतम् ॥ वाष्कलं भिन्दिपालेन

चामर ने अपनी (शक्ति सांग) को भस्म होकर नीचे गिरा हुआ देख अत्यन्त क्रोध से विवश हो शूल चलाया तब देवीजी ने इसको भी बाण वृष्टि से काट गिराया ॥१३॥ अनन्तर देवी का वाहन वह सिंह उछल कर (चामर राक्षस के) हाथी के माथे पर बैठ राक्षस से मल्ल युद्ध करने लगा ॥ १४ ॥ वे दोनों हाथी के ऊपर से लड़ते-लड़ते पृथ्वी पर गिरकर अत्यन्त दारुण चोट एक के ऊपर दूसरा करने लगा ॥ १५ ॥ कुछ देरी के बाद सिंह ने उछल कर हाथ के थप्पड़ से चामर नामक राक्षस का शिर शरीर से अलग कर दिया ॥१६॥ फिर देवी ने उदग्र नामक असुर को पत्थर और वृक्ष (पेड़) बरसा करके मार दिया और दाँत तथा मुक्कों की मार से कराल नामक राक्षस को मारा ॥ १७ ॥ क्रोध में आकर देवी ने गदा प्रहार

बाणैस्ताम्रं तथांधकम् ॥ १८ ॥ उग्रास्यमुग्रवीर्यं च तथैव च महाहनुम् ॥ त्रिनेत्रा च त्रिशूलेन जघान परमेश्वरी ॥१९॥ बिडालस्यासिना कायात्पातयामास वै शिरः ॥ दुर्धरं दुर्मुखं चोभौ शरैर्निन्येयमक्षयम् ॥ २० ॥ एवं संक्षीयमाणे तु स्वसैन्ये महिषासुरः ॥ माहिषेण स्वरूपेण त्रासयामास तान्गणान् ॥२१॥ काँश्चित्तुण्डप्रहारेण खुरक्षेपैस्तथापरान् ॥ लाङ्गूलताडितांश्चान्याञ्छृङ्गाभ्याञ्च विदारितान् ॥२२॥ वेगेन कांश्चिदपरान्नादेन भ्रमणेन च॥निःश्वासपवनेनान्यान्पातयामास भूतले॥२३॥

कर उद्धत राक्षस को मारकर चूर्ण कर दिया बाष्कल नामक राक्षस को भिन्दिपाल से और ताम्र तथा अन्धक को वाण से संहार किया ॥ १८ ॥ तीन नेत्र वाली देवी ने उग्रास्य उग्रवीर्य तथा महाहनु नामक राक्षसों का त्रिशूल से नाश कर दिया ॥१९॥ विडाल नामक असुर का मस्तक उसके शरीर से तरवार द्वारा अलग कर दिया दुर्धर और दुर्मुख राक्षसों को वाणों से यमलोक भेजा ॥२०॥ इस तरह अपनी सेना का नाश होते देख महिषासुर भैंसे का रूप धारण कर देवी के गणों को डराने लगा ॥२१॥ कितनों को मुख की चोट से किसी को पैर के खुर की चोट से किसी को पूँछ के प्रहार से किसी को सींगों से चोट पहुँचाता हुआ ॥२२॥ किसी को झटके से किसी को गर्जना से किसी को भ्रमण तथा श्वास की वायु से पृथ्वी पर गिराने लगा ॥२३॥ पहले देवी के गणों को इस तरह गिराता हुआ वह

निपात्य प्रमथानीकमभ्यधावत सोऽसुरः ।। सिंहंहन्तुं महादेव्याः कोपं चक्रे ततोऽम्बिका ।।२४।। सोऽपि कोपान्महावीर्यः खुरक्षुण्णमहीतलः ।। शृङ्गाभ्यां पर्वतानुच्चांश्चिक्षेप च ननाद च ।।२५।। वेगभ्रमण विक्षुण्णा मही तस्य व्यशीर्यत ।। लाङ्गूलेनाहतश्चाब्धिः प्लावयामास सर्वतः ।।२६।। धुतशृङ्गविभिन्नाश्चखण्डं खण्डं ययुर्घनाः।।श्वासानिलास्ताः शतशो निपेतुर्नभसोऽचलाः ।। २७ ।। इति क्रोध समाध्मातमापतन्तं महासुरम् ।। दृष्ट्वा सा चण्डिका कोपं तद्वधाय तदाकरोत् ।।२८।। सा क्षिप्त्वा तस्य

राक्षस महिषासुर देवीजी के सिंह को मारने की इच्छा से दौड़ा तब भगवती ने गुस्सा किया ।। २४ ।। और वह महावीर्य राक्षस महिषासुर भी क्रोधकर अपने खुरों से पृथ्वी को विदीर्ण कर सींगों से बड़े-बड़े पहाड़ों को गिराकर गर्जने लगा ।।२५।। उस राक्षस महिषासुर के जल्दी-जल्दी घूमने से पृथ्वी फटने लगीं तथा पूँछ (दुम) की फटकार से समुद्र उछल-उछल कर सब वस्तुओं को डुबाने लगा ।। २६ ।। और सींगों के हिलाने की चोट से बादल सब टुकड़े-टुकड़े हो गये, तथा स्वास की वायु से उड़े हुए पहाड़ आकाश से गिरने लगे ।। २७ ।। इस तरह महाअसुर (महिषासुर) को क्रोध से भरा हुआ आते हुए देख चण्डिका ने उसको मारने के लिये क्रोध किया ।।२८।। तब देवी ने उस महाअसुर को पाश (फंदा) से

वै पाशं तं बबंध महासुरम् ।। तत्याज माहिषं रूपं सोऽपि बद्धो महामृधे।।२९।।ततः सिंहोऽभवत्सद्यो यावत्तस्याम्बिका शिरः ।। छिनत्ति तावत्पुरुषः खड्गपाणिरदृश्यत ।।३०।।तत एवाशु पुरुषंदेवी चिच्छेद सायकैः ।। तं खड्गचर्मणा सार्द्धं ततः सोऽभून्महागजः ।।३१।। करेण च महासिंहं तं चकर्ष जगर्ज च ।।कर्षतस्तु करं देवी खड्गेन निरकृन्तत ।।३२।। ततो महासुरो भूयो माहिषं वपुरास्थितः ।। तथैव क्षोभयामास त्रैलोक्यं सचराचरम् ।। ३३ ।। ततः क्रुद्धा जगन्माता चंडिका पानमुत्तमम् ।। पपौ पुनः

बाँधा तत्क्षण असुर ने अपना महिष का रूप छोड़ दिया परन्तु बँध गया ।। २९ ।। बाद में वह राक्षस सिंह के रूप में जल्दी से प्रगट हुआ जब तक अम्बिका ने उसका शिर काटा तब तक वह राक्षस तलवार हाथ में ले पुरुष बन गया ।। ३० ।। जब देवी ने बाण से ढाल तलवार धारी उस राक्षस को मारा तब तक वह महिषासुर हाथी बन गया ।। ३१ ।। इसके बाद वह शुँड से भगवती के बाहन महा सिंह को खींच कर गर्जने लगा, जब भगवती ने खींचने वाले हाथी की शुँड को खड्ग द्वारा काट दिया ।। ३२ ।। तब फिर वह राक्षस भैंसे का स्वरूप बनाकर प्रगट हुआ और पहिले की ही भाँति तीनों लोक में बसने वाले चर (चलने वाले) अचर (नहीं चलने वाले) को दुःखित करने लगा ।। ३३ ।। तब जगत्माता

पुनश्चैव जहासाऽरुण लोचना ॥३४॥ ननर्द चासुरः सोऽपि बलवीर्यमदोद्धतः ॥ विषाणाभ्यां च चिक्षेप चण्डिकां प्रति भूधरान् ॥३५॥ सा च तान् प्रहितांस्तेन चूर्णयन्ती शरोत्करैः ॥ उवाच तं मदोद्धूत मुखरागाकुलाक्षरम् ॥३६॥देव्युवाच॥३७॥गर्ज* गर्ज क्षणं मूढ मधु यावत्पिबाम्यहम् ॥ मया त्वयि हतेऽत्रैव गर्जिष्यन्त्याशु देवताः ॥३८॥ऋषिरुवाच ॥३९॥ एवमुक्त्वा समुत्पत्य साऽरूढा तं महासुरम् ॥

चण्डिका देवी क्रोधित हो उत्तम मधु पीने लगी और रक्त नेत्र करके बार-बार हँसने लगी ॥ ३४ ॥ तथा बलवीर्य के घमण्ड से वह महिषासुर राक्षस भी गर्जने लगा और दोनों सींगों से चण्डिका देवी के ऊपर बड़े-बड़े पहाड़ों को फेंकने लगा ॥३५॥ तब चण्डिका देवी ने असुर के फेंके हुए पहाड़ों को अपनी बाण वृष्टि से चूरा कर दिया और मधु पीने से चण्डिका देवी का मुख लाल हो गया तथा अक्षर भी मुख से साफ नहीं निकलते थे ॥३६॥ देवी ने कहा—॥३७॥ अरे मूढ़ (नीच) जब तक मैं मधु पी रही हूँ तब तक क्षणमात्र खूब गर्जन करले-गर्जन करले, मैं तुझे बहुत जल्दी इस युद्ध क्षेत्र में मारूँगी तब सब देवता लोग गर्जन करेंगे ॥ ३८ ॥ ऋषि ने कहा—॥ ३९ ॥ देवी इतना कह उछलकर उस महा असुर के कण्ठ पर चढ़ गई

---

* हवन में यहाँ शहद की आहुति लगेगी ॥

पादेनाक्रम्य कंठेचशूलेनैनमताडयत् ।।४०।। ततः सोऽपि पदाक्रान्तस्तया निजमुखात्ततः ।। अर्धनिष्क्रान्त एवातिदेव्या वीर्येण संवृतः ।।४१।। अर्धनिष्क्रान्त एवासौ युध्यमानो महासुरः ।। तया महासिना देव्या शिरश्छित्वा निपातितः ।।४२।। ततो हाहाकृतं सर्वं दैत्यसैन्यं ननाश तत् ।। प्रहर्ष च परंजग्मुः सकला देवतागणाः ।।४३।। तुष्टुवुस्तां सुरा देवीं सह दिव्यैर्महर्षिभिः ।। जगुर्गन्धर्वपतयो ननृतुश्चाप्सरो गणाः ॐ ।। ४४ ।।❀ इति श्रीमार्कण्डेय पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्येमहिषासुरबधो नामतृतीयोऽध्यायः ।। ३ ।। उवाच ३ श्लोक ४१ एवं ४४ एवमादितः ।। २१७ ।।

और पैर से उसे दबाकर त्रिशूल से मारने लगी ।। ४० ।। तब देवी के पैर से दबकर राक्षस अपने मुख से बाहर होते न होते देवी के पराक्रम से वशीभूत हो गया ।।४१।। वह राक्षस अपने भैंसे के शरी से आधा निकला हुआ और लड़ाई लड़ने को तैयार उस महा असु (महिषासुर) को देवी ने अपने महाखड्ग से शिर काटकर नाश किया ।।४२।। तिसके बाद सम्पूर्ण राक्षसों की सेना हाहाकार करके नाश हो गई तब सब देवता लोग अत्यन्त प्रसन्न हुए ।।४३।। और देवी को महर्षि तथा देवगणों ने दिव्य अर्घ्य दे स्तुति से प्रसन्न किया । गन्धर्वगण के स्वामी गाने लगे और अप्सरा नृत्य करने लगीं ।।४४।।

श्री गोस्वामी घनश्याम कृत, तीसरे अध्याय की भाषा टीका समाप्त हुई।

तन्त्रोक्त आहुति ।।

ॐ जयन्ती सांगायै सायुधायै स शक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै लक्ष्मी बीजाधिष्ठात्र्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ।। सामान वही है ।।

तीसरे अध्याय की आहुति में सामान वही है जो पेज २५० में है केवल भेंसा गूगल विशेष है और मन्त्र भी सब वही हैं ।

चतुर्थोऽध्यायः ।।

अथ ध्यानम् ।।

ॐ कालाभ्राभां कटाक्षैररिकुलभयदांमौलिबद्धेन्दुरेखां शंखं चक्रं कृपाणं त्रिशिखमपि करैरुद्वहन्तीं

काले बादलों के समान शरीर की कान्ति कटाक्ष मात्र से ही शत्रुकुल को भय देने वाली बालों के बंधे हुए जूड़े पर बाल चन्द्रमा शोभायमान है, शंख, चक्र, कृपाण, त्रिशूल हाथों में लिये तींन नेत्र सिंह के ऊपर बैठी हुई तीनों लोकों को अपने तेज से पूर्ण करने वाली जय नामक दुर्गा को ध्यान करता हूँ ।। जिसको इन्द्रादिक देवता अपनी कामनाओं की सिद्धि के लिये पूजते हैं । *शक्रादि स्तुति में पायस की आहुति होती है ।। पायस बनाने की विधि ११ अध्याय में लिखी है ।।

अथ दुर्गाशतनाम स्तोत्रम् ।।

दुर्गायाः शतनामानि शृणु त्वम्भवगेहिनि ।। दुर्गाभवानी देवेशी विश्वनाथप्रिया शिवा ।। १ ।। घोरदंष्ट्राकरालास्या मुण्डमाला विभूषणा ।। रुद्राणी तारिणी तारा माहेशी भववल्लभा ।। २ ।। नारायणी जगद्धात्री महादेवप्रिया जया ।। विजया च जयाऽऽराध्या शर्व्वाणी हरवल्लभा ।।३।।

त्रिनेत्राम् ॥ *सिंहस्कन्धाधिरूढां त्रिभुवनमखिलं तेजसा पूरयन्तीं ध्यायेद् दुर्गां जयाख्यां त्रिदशपरिवृतां सेवितां सिद्धिकामैः ॥४॥ऋषिरुवाच ॥१॥ ॐ *शक्रादयः सुरगणा निहतेऽति वीर्ये तस्मिन्दुरात्मनि सुरारिबले च देव्या ॥ तां तुष्टुवुः प्रणतिनम्रशिरोधरांसा वाग्भिः प्रहर्षपुलकोद्गमचारुदेहाः ॥ २ ॥ देव्या यया ततमिदं जगदात्मशक्त्या निश्शेषदेवगणशक्तिसमूहमूर्त्या ॥ तामम्बि-

ऋषि बोले—॥ १ ॥ उस दुरात्मा अत्यन्त बलशाली महिषासुर और उसकी सेना का देवीजी के द्वारा नाश हो जाने से इन्द्रादि सब देवतागण गर्दन और शरीर को झुका कर प्रणाम करके हर्ष जनित पुलकावलि से शरीर को अतीव सुन्दर कर मीठे वाक्यों से भगवती की स्तुति करने लगे ॥२॥ जिसने यह संसार अपनी ही शक्ति से विस्तारित किया है,

असिता चाणिमा देवी लघिमा गरिमा तथा ॥ महेशशक्तिर्विश्वेशी गौरी पर्व्वतनन्दिनी ॥ ४ ॥ नित्या च निष्कलंका च निरीहा नित्यनूतना ॥ रक्ता रक्तमुखीवाणी वसुयुक्ता वसुप्रदा ॥५॥ रामप्रिया रामरता रघुनाथवरप्रदा ॥ राज्येश्वरी राज्यरता कृष्णा कृष्णवरप्रदा ॥ ६ ॥ यशोदा राधिका चण्डी द्रौपदी रुक्मिणी तथा ॥ गुहप्रिया गुहरता गुहवंश विलासिनी ॥ ७ ॥ गणेश जननी माता विश्वरूपा च जाह्नवी ॥ गंगा काली च काशी च भैरवी भुवनेश्वरी ॥ ८ ॥ निर्म्मला च सुगन्धा च देवकी देवपूजिता ॥ दक्षजा दक्षिणा दक्षा दक्षयज्ञविनाशिनी ॥ ९ ॥ सुशीला सुन्दरी सौम्यामातंगी कमला कला ॥ निशुम्भनाशिनी शुम्भनाशिनी चण्डनाशिनी ॥ १० ॥ धूम्रलोचनसंहर्त्री महिषासुरमर्द्दिनी ॥

---

*शक्रादि स्तुति के ११ पाठ नित्य करने से धन की प्राप्ति होगी।

कामखिलदेवमहर्षिपूज्यां भक्त्या नताःस्म विदधातु शुभानि सा नः ॥३॥ यस्याः प्रभावमतुलं भगवाननन्तो ब्रह्मा हरश्च नहि वक्तुमलं बलं च ॥ सा चण्डिकाखिलजगत्परिपालनाय नाशाय चाशुभभयस्य मतिं करोतु ॥४॥ या श्रीः स्वयं सुकृ-

जो निःशेष सम्पूर्ण देवताओं के तेज समूह की मूर्ति है, जो अखिल देवता और महर्षियों द्वारा पूजने योग्य है, उस अम्बिका देवी को हम (देवतागण समूह) सब भक्तिपूर्वक प्रणाम करते हैं। वह हमारा (सबका) शुभ (कल्याण) करे ॥३॥ जिसका अतुल प्रभाव और बल का वर्णन भगवान अनन्त देव, ब्रह्मा, शिव नहीं कर सकते हैं, वह चण्डिका देवी सम्पूर्ण जगत् का पारिपालन कर (आगामी) अशुभ तथा भय के नाश करने की इच्छा करे ॥४॥ जो पुण्यवान लोग हैं उनके यहाँ तुम (लक्ष्मी) सम्पत्तिरूप, और पापात्मा लोगों के घर में आप अलक्ष्मी (दरिद्रा) रूप, शुद्ध अन्तःकरण वालों के हृदय में बुद्धिरूप, सच्चरित्र वालों के स्थान में तुम श्रद्धा रूप तथा जो शुद्ध वंश में पैदा हुए मनुष्य हैं उनके यहाँ लज्जा रूप होकर निवास करती हो इसी से सम्पूर्ण रूप में विचरने वाली आपको

उमा गौरी कराला च कामिनी विश्वमोहिनी ॥ ११ ॥ इत्येवं शतनामानि कथितानि वरानने ॥ नामस्मरणमात्रेण जीवन्मुक्तोभवेन्नरः ॥ १२ ॥ यः पठेत् प्रातरुत्थाय स्मृत्वा दुर्गापदद्वयम् ॥ मुच्यते जन्मबन्धेभ्यो नात्र कार्य्या विचारणा ॥१३॥ सन्ध्याकाले दिवाभागे निशायां वा निशामुखे ॥ पठित्वाशतनामानि मंत्रसिद्धिंल्लभेद्ध्रुवम् ॥ १४ ॥ अज्ञात्वा स्तवराजञ्च दशविद्यां भजेद्यदि ॥ तथाऽपि नैव सिद्धिः स्यात् सत्यं सत्यम्महेश्वरि ॥ इति मुण्डमालातन्त्रे द्वितीयपटले श्रीदुर्गादेव्याः शतनामस्तोत्रं समाप्तम् ॥

तिनां भवनेष्वलक्ष्मीः पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः ॥ श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा तां त्वां नताःस्म परिपालय देवि विश्वम् ॥ ५ ॥ किं वर्णयामतव रूपमचिन्त्यमेतत्किञ्चातिवीर्यमसुरक्षयकारिभूरि ॥ किंचाहवेषुचरितानि तवाद्भुतानि सर्वेषु देव्यसुरदेवगणादिकेषु ॥ ६ ॥ हेतुः समस्तजगतां त्रिगुणापिदोषैर्नज्ञायसे हरि-हरादिभिरप्यपारा ॥ सर्वाश्रयाखिलमिदं जगदंशभूतमव्याकृताहि परमा प्रकृतिस्त्वमाद्या ॥७॥ यस्याः समस्तसुरतासमुदीरणेन तृप्तिंप्रयातिसकलेषु मखेषु देवि ॥ स्वाहासिवै

(हम सब) नमस्कार करते हैं। हे देवो ! सब संसार की रक्षा करो ! ॥५॥ तुम्हारे इस अचिन्त्य स्वरूप का वर्णन हम सब किस प्रकार करें ? हे देवि ! महिषासुर आदि राक्षसों का संहार करने वाला तुम्हारा पुरुषार्थ पुनः रजनीचर और देवताओं के संग्राम में आपके अद्भुत व्यवहारों का वर्णन किस प्रकार करें ? ॥६॥ हे देवि ! आप विकार रहित आद्या प्रकृति हो, त्रिगुणात्मक होते हुए भी तुम सब संसार की हेतु (कारण) हो, रागद्वेष युक्त हरिहर आदि भी आपको नहीं जानते, हे देवि ! तुम अपार हो संसार के सम्पूर्ण पदार्थ आपके आश्रय हैं और यह जगत् तुम्हारा ही अंश है ॥७॥ हे देवि ! सब यज्ञों में मन्त्ररूप आपका नाम लेकर हवि देने से सब देवता तृप्त होजाते हैं, क्योंकि तुम्हारे ही द्वारा देव ऋषि और

पितृगणस्य च तृप्तिहेतुरुच्चार्यसेत्वमतएवजनैः स्वधा च ॥८॥ या मुक्तिहेतुरविचिन्त्यमहाव्रता च अभ्यस्यसे सुनियतेन्द्रियतत्त्वसारैः ॥ मोक्षार्थिभिर्मुनिभिरस्तसमस्तदोषैर्विद्यासि सा भगवती परमा हि देवि ॥९॥ शब्दात्मिका सुविमलर्ग्यजुषां निधान मुद्गीथरम्यपदपाठवतां च साम्नाम् ॥ देवी त्रयी भगवती[1] भवभावनाय वार्त्ता च सर्वजगतां परमार्त्तिहन्त्री ॥ १०॥ मेधासि देवि विदिताखिलशास्त्रसारा दुर्गासि

पितृगण तृप्त होते हैं इसी से तुम इनको तृप्त करने वाली स्वाहा और स्वधा नाम से पुकारी जाती हो ॥ ८ ॥ हे देवि ! तुम्हारी बृहत् उपासना का विषय केवल चिन्ता करने से नहीं मालूम होता । इन्द्रियों का निग्रह करते हुए सब तत्वों का सार जानते हुए मोक्ष के अभिलाषी निर्दोष मुनि ही तुमको मुक्ति का कारण जान निरन्तर तुम्हारा ही स्तव करते हैं। हे देवि ! इस कारण तुम भगवती हो, सर्वश्रेष्ठ मोक्ष विद्या हों ॥९॥ हे देवि ! आप शब्द मय तीनों वेदों की मूर्त्ति हो ओंकार सहित मनोंहर पाठशाली ऋग, यजु, साम के आश्रय रूप हो, वेद माता हो, तुम सब (षट्) ऐश्वर्य से युक्त हो और तुमही संसार की जीवन रक्षा के निमित्त कृषि रूप हो । हे देवि ! तुमही इस संसार की पीड़ा नाश करने वाली हो ॥ १० ॥ हे देवि, ! तुम बुद्धि स्वरूप हो अर्थात् सब

---

[1] ऐश्वर्यस्य समग्रस्य धर्मस्य यशसः श्रियः॥ ज्ञानवैराग्ययोश्चैव षण्णां भग इतीरणा। नित्यं षड्गुणैश्वर्य शालिन्यर्थः

दुर्गभवसागरनौरसङ्गा ॥ श्रीः कैटभारिहृदयैककृताधिवासा गौरी त्वमेव शशिमौलिकृतप्रतिष्ठा ॥११॥ ईषत्सहासममलं परिपूर्णचन्द्रबिम्बानुकारि कनकोत्तमकान्तिकान्तम्॥ अत्यद्भुतंप्रहृतमात्तरुषा तथापि वक्त्रंविलोक्य सहसामहिषासुरेण ॥१२॥ दृष्ट्वा तु देवि कुपितं भ्रुकुटीकरालमुद्यच्छशांकसदृशच्छवि यन्न सद्यः ॥ प्रणान्मुमोच महिषस्तदतीवचित्रं कैर्जीव्यते हि कुपितान्तकदर्शनेन ॥१३॥ देविप्रसीदपरमा भवती भवाय सद्यो विनाशयसि कोपवती कुलानि ॥ विज्ञातमेतदधुनैव यदस्तमेतन्नीतं बलं

शास्त्रों का तत्व जानती हो दुर्गा हो अर्थात् दुर्गम भवसागर से पार करने के लिये अनुपमेय नौका रूप तुमही हो, हें देवि तुम मधु–कैटभ नाम राक्षसों को मारने वाले नारायण के हृदय में एकाकी निवास करने वाली श्री हो और तुम ही महादेव की गौरी हो ॥११॥ हे देवि ! क्रोध से परिपूर्ण महिषासुर के अस्त्र चलाने पर भी तुम्हारा मुसकराता मुखारविन्द उस समय निर्मल पूर्ण चन्द्रमा को भी लज्जित करने वाला उत्तम सुवर्ण के समान सुशोभित मन को हरने वाला दीखता रहा सो ही बड़ा आश्चर्य है ॥१२॥ हे देवि ! तुम्हारी क्रोधित भौंह तथा उदय होते हुए चन्द्रमा के समान छवि का अवलोकन करने पर भी महिषासुर ने जो अपने प्राण विसर्जन नहीं किये सो भी बड़ा आश्चर्य हुआ गुस्से में भरे यमराज को देख कौन जींता रह

सु विपुलं महिषासुरस्य ॥१४॥ ते संमता जनपदेषु धनानि तेषां तेषां यशांसि न च सीदति धर्मवर्गः ॥ धन्यास्त एव निभृतात्मजभृत्यदारा येषां सदाभ्युयदा भवती प्रसन्ना ॥१५॥ धर्म्याणि देवि सकलानि सदैव कर्माण्यत्याहृतः प्रतिदिनं सुकृती करोति ॥ स्वर्गं प्रयाति च ततो भवतीप्रसादाल्लोकत्रयेऽपि फलदा ननु देवि तेन ॥ १६ ॥ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां

सकता है ? ॥ १४ ॥ हे देवि तुम प्रसन्न हो जाओ तुम परमात्मा हो मङ्गल (कल्याण) ही के लिए पैदा हुई हो तुम क्रोध करो तो सब का नाश कर सकती हो, यह बात अभी देखी गई है, अर्थात् महिषासुर का बहुत बड़ी सेना सहित तुमने अभी सर्वनाश कर दिया है ॥ १४ ॥ जिनके ऊपर तुम प्रसन्न होती हो उन्हीं का अभ्युदय होता है वही सम्मानित होते हैं, उन्हीं के धन होता है उन्हीं को यश प्राप्त होता है उन्हीं का धर्म [पुरुषार्थ वर्ग] कष्ट नहीं पाता वेही पुरुष धन्य हैं उन्हीं के पुत्र स्त्री सेवक उद्वेग रहित होते हैं ॥१५॥ हे देवि ! तुम्हारी कृपा से पुण्यशील मनुष्य सर्वदा धर्म कार्य किया करता है और आपकी ही कृपा से [मरने पर] स्वर्ग को जाता है, इसलिए हे देवि ! तुम तीनों लोक में फल देने वाली हो ॥१६॥ हे देवि ! दुर्गति में गिरे हुए मनुष्यों से स्मरण किये जाने पर तुम उन लोगों का भय दूर कर देती हो, और अच्छी अवस्था में स्मरण करने पर उन लोगों को आनन्द [मंगल] करने वाली बुद्धि दान करती हो हे

ददासि ।। दारिद्र्यदुःख-भयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणायसदार्द्रचित्ता ॥१७॥ एभिर्हतैर्जगदुपैतिसुखंतथैते कुर्वन्तु नाम नरकाय चिराय पापम् ॥ संग्राममृत्युमधिगम्य दिवं प्रयान्तु मत्वेति नूनमहितान्विनिहंसि देवि ॥ १८ ॥ दृष्ट्वैव किं न भवती प्रकरोति भस्म सर्वासुरानरिषु यत्प्रहिणोषि शस्त्रम् ॥ लोकान्प्रयान्तु रिपवोऽपि हि शस्त्रपूता इत्थं मतिर्भवति तेष्वपि तेऽतिसाध्वी ॥१९॥ खड्ग प्रभानिकरविस्फुरणैस्तथोग्रैः शूलाग्रकान्तिनिवहेन

दरिद्रता के दुःख का भय नाश करने वाली देवि ! सब लोगों को उपकार करने के लिए तुम्हें छोड़कर और कौन साधु दयालु हो सकता है क्या ? ॥१७॥ "साधु निस्पृह दूसरे का काम करने वाला है।" इन सब [महिषासुर आदि राक्षसों के मरने से संसार सुखी हो, ये सब [राक्षस] भी नरक में ले जाने वाला पाप फिर न करें, तथा ये सब शत्रु गण युद्ध में मरने से स्वर्ग को जाँय, हे देवि ऐसा सोच कर निश्चय तुम मारती हो ॥१८॥ हे देवि ! सब देवताओं के शत्रुओं को तुमने केवल देख हीं कर क्यों नहीं भस्म कर दिया तथा उन पर शस्त्र क्यों ? चलाया इसमें तुम्हारा अभिप्राय यही था कि शत्रु [राक्षस] लोग भी शस्त्र से पवित्र हो स्वर्ग को जाँय। इन राक्षसों के लिये भी जो तुम्हारा ऐसा मत है सो भी कल्याण कारी है ॥ १९ ॥ हे देवि ! उस खड्ग की प्रभा [तेज] समूह के

दृशोऽसुराणाम् ।। यन्नागता विलयमंशुमदिन्दुखण्डयोग्याननं तव विलोकयतां तदेतत् ।। २० ।। दुर्वृत्तवृत्तशमनं तव देवि शीलं रूपं तथैतदविचिन्त्यमतुल्यमन्यैः ।। वीर्यं च हन्तृहृतदेवपराक्रमाणां वैरिष्वपि प्रकटितैव दया त्वयेत्थम् ।।२१।। केनोपमा भवतु तेऽस्य पराक्रमस्य रूपंचशत्रुभयकार्यतिहारि कुत्र ।। चित्तेकृपा समरनिष्ठुरता च दृष्टा त्वय्येवदेविवरदे भुवनत्रयेऽपि ।।२२।। त्रैलोक्यमेतदखिलं

बल से और त्रिशूल की नोक़ के तेज समूह से उन [महिषासुर आदि] राक्षस गणों की आँख फूट क्यों नहीं गईं, इसका केवल यही कारण हुआ कि किरण युक्त चन्द्रमा के समान शीतल तुम्हारा मुँह उन लोगों ने देख लिया था ।।२०।। तेरा स्वभाव तथा चरित्र दुष्ट लोगों का दुश्चरित्र छुटाने वाला है, उसकी बराबरी नहीं है, और लोग उसे सोच कर भी जान सकते हैं, देवताओं का पराक्रम बढ़ाने वाला राक्षसों को मारने वाला तेरा वीर्य है ।। इसी प्रकार से शत्रुओं पर जो तू कृपा करती है सो प्रकट है ।। २१ ।। हे देवि किस के साथ तेरे इस अतुल पराक्रम की बराबरी हो सकती है ? शत्रुओं को भय देने वाला तेरे समान मनोहर रूप और कहाँ ? हे वर देने वाली देवि ? कृपा पूर्ण चित्त में लड़ाई के अवसर कठोरता, तीनों लोकों में तेरे सिवाय और किसी में नहीं देखी जाती है ।। २२ ।। हे देवि ! महिषासुर को मार कर संसार की रक्षा करी तथा उसके साथी राक्षस गणों का

रिपुनाशनेन त्रातं त्वया समरमूर्धनि तेऽपि हत्वा ॥ नीता दिवं रिपुगणा भयमप्यपास्तमस्माकमुन्मदसुरारिभवंनमस्ते ॥२३॥ *शूलेन पाहिनोदेवि पाहि खड्गेनचाम्बिके ॥ घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च ॥ २४ ॥ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे ॥ भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि ॥२५॥ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये

शिर काट कर उन सब को भी स्वर्ग भेज दिया और उन्मत्त राक्षसों से हम सब देव गणों का भय भी दूर कर दिया तुझ को नमस्कार है । २३ ॥ हे देवि ! शूल [त्रिशूल] से हम सब [देव गणों] की रक्षा करो, हे अम्बिके खड्ग से हम सब की रक्षा करो तथा घण्टा ध्वनि औ धनुष की प्रत्यंचा [डोरी] की झनकार से हम लोगों की रक्षा करो ॥२४॥ हे चण्डिके ! अपने त्रिशूल को घुमा कर हम सब देव गणों (भक्तजनों) कों पूर्व, पश्चिम, दक्षिण और उत्तर में हे ईश्वरी ! रक्षा कर ॥ २५ ॥ हे अम्बिके ! तीनों लोक में तुम्हारे

---

*हवन में कवच के इन चार मन्त्रों की आहुति न करना ॥

अत्र के चित्कवचादि त्रयस्य रहस्य त्रयस्य च प्रति श्लोकं होममनुतिष्ठन्ति ॥ तत्र कवचांशे होमोनयुक्तस्तन्त्रान्तरे निषेधात् ॥ चण्डीस्तवे प्रतिश्लोकमेकाहुतिरिहेष्यते ॥ रक्षा कवचगैर्मन्त्रै र्होमं तत्र न कारयेत् ॥ मौर्ख्यात्कवचगैर्मंत्रैः प्रति श्लोकं जुहोति यः ॥ स्याद्देह पतनं तस्य नरकं च प्रपद्यते ॥ अंधकाख्यो महादैत्यो दुर्गा भक्ति परायणः ॥ कवचाहुतिजात्पापान्महेशेन निपातितः ॥ इतिकात्यायनी तन्त्रे ॥

जो इन ४ मन्त्रों की आहुति करता है। उसका देह नाश होता है। इस कारण इन ४ मन्त्रों के स्थान में “ॐनमश्चण्डिकायै स्वाहा”

विचरन्ति ते।यानि चात्यर्थघोराणि तैरक्षास्मांस्तथा भुवम् ॥२६॥ खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके ॥ करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः ॥२७॥ ऋषिरुवाच ॥२८॥ एवं स्तुता सुरैर्दिव्यैः कुसुमैर्नन्दनोद्भवैः ॥ अर्चिता जगतां धात्री तथा गन्धानुलेपनैः ॥२९॥ भक्त्या समस्तैस्त्रिदशैर्दिव्यैर्धूपैस्तु धूपिता ॥ प्राह प्रसादसुमुखी समस्तान्प्रणतान् सुरान् ॥३०॥ देव्युवाच ॥ ३१ ॥ व्रियतां त्रिदशाः सर्वे यदस्मत्तोऽभिवाञ्छितम् ॥३२॥ देवा

सुन्दर और डरावने रूप घूमते रहते हैं इनही सब रूपों से हम सब की तथा पृथ्वी की रक्षा करो ॥ २६ ॥ हे अम्बिके! तेरे कर पल्लव [कर कमलों] में जो खड्ग शूल गदा आदिक अस्त्र हैं उन से हम तब तथा पृथ्वी की रक्षा करो ॥ २७ ॥ ऋषि बोले ॥ २८ ॥ देवता गण से इस तरह स्तुति करी गई तथा नन्दनवन के सुन्दर पुष्प तथा सुगन्धि चन्दन आदि से पूजित और दिव्य धूप दी हुई जगन्माता भगवती ॥२९॥ वर देने के लिये प्रसन्न मुख हो प्रणाम करते हुए देव गणों से कहने लगी ॥३०॥ देवी बोली ॥३१॥ हे देवता (भक्त) लोग आप सबकी जो इच्छा हो सो वर मांगो ॥३२॥

बोलकर आहुति देना मन्त्रों का केवल पाठ करना चाहिये ॥ तथा इनका पाठ करने से सब प्रकार का भय नष्ट हो जाता है ॥ शूलेनपाहि० इस मन्त्र का केवल १२५००० यथा विधि जप करके फूँक मारने से आधाशीशी आदि माथे के दर्द दूर होंगे सत्य है ॥

ऊचुः ॥३३॥ *भगवत्या कृतं सर्वं न किञ्चिदवशिष्यते ॥३४॥ यदयं निहतः शत्रुरस्माकं महिषासुरः॥ यदि चापिवरोदेयस्त्वयास्माकंमहेश्वरि ॥३५ संस्मृता संस्मृतात्वं नोहिंसेथाः परमापदः ॥ यश्चमर्त्यः स्तवैरेभिस्त्वां स्तोष्यत्यमलानने ॥ ३६ ॥

देवतागण बोले ॥ ३३ ॥ तुमने सब कुछ कर दिया कुछ भी बाकी नहीं रहा ॥३४॥ आपने हम सब देव (भक्त) जनों के इस शत्रु "महिषासुर" को मार दिया तब हे महेश्वरी ! जो हम सब को वर देना ही चाहती हो तो यही वर देना ॥५०॥ कि पुनः आपत्ति में जब हम लोग तुम्हें स्मरण करें तब ही तुम हम लोगों की परम आपत्ति का विनाश करना और हे अमलालने ! जो मनुष्य इस स्तुति से तुम्हारा ध्यान करे ॥ ३६ ॥ हम लोगों पर प्रसन्न हो तुम उनको

---

* ३४ से ३७ श्लोक तक १२५००० विधि पूर्वक जपने से सर्व कार्य सिद्धि होंगे ॥

जीव होनो यथा देही सर्व कर्मसु नक्षमः ॥ पुरश्चरणहानोऽपि तथा मन्त्रोऽफलप्रदः ॥ १ ॥ जप होमोतर्पणञ्च सैकब्राह्मणभोजनम् ॥ पञ्चाङ्गोपासनं लोके पुरश्चरण मुच्यते ॥ २ ॥ एवं कृत्वा हविष्याशी जपेल्लक्षं प्रकीर्तितम् ॥ ततः प्रयोगं सर्वेषां वश्यादीनां चकारयेत् ॥ ३ ॥ स्वेच्छाचारपरोमन्त्री पुरश्चणसिद्धये ॥ रहस्य मालामादाय लक्षमेकं सदा जपेत् ॥४॥ शठोऽपि यदिमूढस्याद्भावस्य वशतत्परः ॥ लभते श्रीमतींवाणीं मन्त्रस्यलक्ष जापतः ॥ ५ ॥ भावनारहितानान्तुक्षुद्राणं क्षुद्रचेतसां ॥ चतुर्गुणो जपः प्रोक्तः सिद्धये देविन्दसुन्दरि ॥ एवं कृत्वा हविष्याशी जपेल्लक्ष चतुष्टयम् ॥ विशेषततः कलियुगे मत्प्रसादाद्भविष्यति ॥ नीलतंत्रे ७ पटले ॥

तस्य वितर्द्धिविभवैर्धनदारादिसम्पदाम् ॥ वृद्धयेऽस्मत्प्रसन्ना त्वं भवेथाः सर्वदाम्बिके ॥३७॥ ऋषिरुवाच ॥३८॥ इति प्रसादिता देवैर्जगतोऽर्थे तथात्मनः ॥ तथेत्युक्त्वा भद्रकाली बभूवांन्तर्हिता नृप ॥३९॥ इत्येतत्कथितंभूप सम्भूता सा यथा पुरा ॥ देवी देवशरीरेभ्यो जगत्त्रयहितैषिणी ॥४०॥ पुनश्च गौरीदेहात्सा समुद्भूता यथाभवत् ॥ वधाय दुष्टदैत्यानां तथाशुम्भनिशुम्भयोः ॥४१॥ रक्षणाय च लोकानां देवानामुपकारिणी ॥ तच्छृणुष्व मयाख्यातं यथावत्कथयामि ते ह्रीं ॐ ॥४२॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये शक्रादि-

---

ज्ञान उपचय और ऐश्वर्य द्वारा धन, स्त्री, संतान प्रभृति की वृद्धि देना, क्योंकि तुम सब कुछ दे सकती हो ॥३७॥ ऋषि बोले—॥ ३८ ॥ हे राजा सुरथ! संसार और अपने कल्याण के लिये देवतागण से इस तरह प्रसन्न होने के अनन्तर देवी ने "ऐसा ही होगा" इतना कहकर अन्तर्हित होगई अर्थात् अपने स्थान को चली गई॥३९॥ हे भूपति! पूर्वकाल में देवताओं के शरीर से तीनों लोक का कल्याण करने वाली देवी जिस प्रकार पैदा हुई थी सो मैंने कहा ॥४०॥ फिर अनेक दुष्ट दैत्य तथा शुम्भ, निशुम्भ नामक दोनों राक्षसों को मारने के लिये ॥४१॥ और संसार की रक्षार्थ तथादेव गण का उपकार करने

स्तुतिर्नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥४॥ उवाच ५ अर्ध २ श्लोक ३५ एवं ४२ एवमादितः ॥ २५६ ॥

वाली देवी जिस प्रकार पार्वती की देह से उत्पन्न हुई सो मैं यथावत् (ठीक-ठीक) कहता हूँ तुम सुनो ॥ ४२ ॥

☞ पायस बनाने की विधि ११ वें अध्याय में देखिये ॥ ☜

इति आगरा निवासी श्री घनश्याम गोस्वामी कृत मार्कण्डेय पुराण के दुर्गा महात्म्य में शक्रादि स्तुति की भाषा टीका समाप्त हुई ।

वदिक आहुति ४ अध्याय की ॥

एक पान पर शाकल्य १ कमलगट्टा, घी में भिगोकर १ सुपारी, २ लोंग, १ छोटी इलायची, गूगल, इस अध्याय में विशेष मिश्री व पायस ही है । सब स्रुची में रख खड़े होकर मंत्र बोलना ॥ ॐ प्राणाय स्वाहा, पानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा ॥ अम्बेऽअम्बिकेम्बालिके नमानयति कश्चन ॥ ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कांपीलवासिनी ॐ स्वाहा ॥ इतना बोलकर पान पर रखा पदार्थ अग्नि में छोड़ना बाद में स्रुवे से ५ वार घी छोड़ते हुए आगे लिखे मंत्र को बोलना ॥ मन्त्र २४३ पृष्ठ में हैं ॥

तान्त्रिक आहुति ॥

ह्रीं जयन्ती सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै श्रीमहालक्ष्म्यै अष्टाविंशति वर्णात्मिकायै लक्ष्मी बीजाधिष्ठात्र्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ॥ सामान सब ऊपर लिखा है ॥

अथ पंचमोऽध्यायः

ओं अस्य श्रीउत्तमचरित्रस्य रुद्रऋषिः । महासरस्वती देवता । अनुष्टुप्छन्दः । भीमाशक्तिः । भ्रामरी बीजं । सूर्यस्तत्त्वं । सामवेदस्वरूपं । महासरस्वतीप्रीत्यर्थे उत्तमचरित्र पाठे (हवने) विनियोगः ॥ ३ ॥

अथ ध्यानम् ॥

ओं घण्टाशूलहलानि शंखमुसले चक्रं धनुः सायकं हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम् ॥ गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूता महापूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम्॥५॥ ओं क्लीं ऋषिरुवाच ॥१॥ पुरा शुम्भनिशुम्भभ्यामसुराभ्यांशचीपतेः॥त्रैलोक्यं यज्ञभागाश्च हृता मदबलाश्रयात् ॥ २ ॥ तावेव सूर्यतां तद्वदधिकारं तथैन्द-

घंटा, शूल, हल, शंख, मुषल, चक्र, धनुष, सायक इन आयुधों को धारण करनेवाली बादलों में से निकलते हुए पूर्ण चन्द्रमा के समान शीतल सुन्दर मुख, गौरी (पार्वती की देह से उत्पन्न तीन नेत्र सम्पूर्ण संसार की आधारभूत शुम्भादि दत्यों को मारने वाली महासरस्वती का ध्यान करता हूँ ॥

ऋषि बोले ॥ १ ॥ पूर्व काल में शुंभ, निशुम्भ नामक दोनों राक्षसों ने अपने बल का घमण्ड करके इन्द्र का त्रैलोक्य राज्य और सब यज्ञ के भाग छीन लिये ॥ २ ॥ वही दोनों (शुम्भ, निशुम्भ) सूर्य और चन्द्रमा के अधिकार का काम

घंटादि आठ मुद्रा दिखाना वा ध्यान करना मुद्रा १५२–५५ पृष्ठ में है ॥

शुम्भ, निशुम्भ दोनों राक्षस कश्यप ऋषि और अदिति के गर्भ से उत्पन्न नमुचि दैत्य के बड़े भाई ब्रह्माजी की आराधना से वर प्राप्त कर त्रैलोक्य की सर्व सम्पत्ति रत्नादिक और इन्द्र का त्रैलोक्य राज छीन कर आप ही राजा बन कर रहे यह कथा सम्पूर्ण लक्ष्मीतन्त्र और वामन पुराण में हैं। विस्तार होने से नहीं लिखी है।

वम् ॥ कौबेरमथ याम्यं च चक्राते वरुणस्य च ॥३॥ तावेव पवनर्द्धिञ्च चक्रतुर्वह्निकर्म च ॥ ततोदेवाविनिर्धूता भ्रष्टराज्याः पराजिताः॥४॥ हृताधिकारास्त्रिदशास्ताभ्यां सर्वे निराकृताः ॥ महासुराभ्यां तां देवीं संस्मरन्त्यपराजिताम् ॥ ५ ॥ तयास्माकंवरो दत्तो यथापत्सु स्मृताखिलाः ॥ भवतां नाशयिष्यामि तत्क्षणात्परमापदः ॥६॥ इति कृत्वा मतिं देवा हिमवन्तं नगेश्वरम् ॥ जग्मुस्तत्र ततो देवीं विष्णुमायां प्रतुष्टुवुः ॥७॥ देवा ऊचुः ॥८॥ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ॥ नमः प्रकृत्यै भद्रायै

तथा कुबेर और वरुण के अधिकार का काम करने लगे ॥३॥ और वही दोनों वायु, अग्नि का भी कार्य करने लगे, इसके बाद असुरों द्वारा अधिकार छिन जाने से तिरस्कार को प्राप्त हुए, राजहीन, ॥ ४ ॥ पराजित और स्वर्ग से निकाले हुए देवगण उस अपराजिता देवी का स्मरण करने लगे ॥ ५ ॥ जिस देवीजी ने (महिषासुर-संग्राम के बाद) हम सब को वर दिया था, कि आपत्ति के समय स्मरण करने से मैं तुम सब की परम (विशेष) आपद का उसी समय नाश कर दूंगी ॥ ६ ॥ ऐसा विचार कर सब इन्द्रादि देव गण पर्वतों में उत्तम (श्रेष्ठ) हिमवान पर्वत पर खड़े होकर विष्णुमाया भगवती की स्तुति करने लगे ॥ ७ ॥ देवता लोग बोले ॥ ८ ॥ देवी महादेवी शिवा को नमस्कार निरन्तर (सदा) नमस्कार, प्रकृति भद्रा को नमस्कार हम लोग संयत हो उस (देवी) को

नियताः प्रणताःस्मताम्॥९॥ रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमोनमः ॥ ज्योत्स्नायैचेन्दुरूपिण्यैसुखायै सततं नमः ॥१०॥कल्याण्यै प्रणतां वृद्ध्यै सिद्ध्यै कुर्मो नमोनमः ॥ नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः ॥ ११ ॥ दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै ॥ ख्यात्यैतथैवकृष्णायै धूम्रायै सततं नमः ॥१२॥ अतिसौम्यातिरौद्रायै नतास्तस्यै नमोनमः ॥ नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमोनमः ॥१३॥ *या देवी सर्वभूतेषु‡ विष्णुमायेति शब्दिता

नमस्कार करते हैं ॥९॥ रौद्रा को नमस्कार, नित्या, गौरी, और धात्री को नमस्कार प्रकाश रूपा, चन्द्र रूपा, तथा परम आनन्द स्वरूपा को सदा नमस्कार ॥१०॥ कल्याणी, वृद्धि रूपा को नमस्कार, सिद्धि रूपा देवी को नमस्कार करते हैं, नैर्ऋती देवी को नमस्कार भूपतियों (राजाओं) के घर में लक्ष्मी रूप से रहने वाली तथा शर्वाणी के लिये नमस्कार ॥११॥ दुर्गा, दुर्गपारा, सारा, सर्व कारिणी, ख्याति, कृष्णा और धूम्र स्वरूपा को सदा नमस्कार॥१२॥ जो अत्यन्त सौम्य है और अत्यन्त रौद्र (भयानक) है उस देवी को हम सब देवगण अत्यन्त विनीत भावसे नम्र हो नमस्कार करते हैं, जगत की प्रतिष्ठा रूपा देवी को नकस्कार, कृति स्वरूपा देवी को नमस्कार॥१३॥ जो देवी सब प्राणियों में विष्णु

---

*विंशत्यक्षर पर्यन्तं प्रथमः खण्डईरितः ॥ वेदाक्षरो द्वितीयस्तु तृतीयाष्टाक्षरः स्मृतः ॥ १ ॥ कुब्जिका तन्त्रे ॥

‡ विष्णु मायाहि सात्विक, राजस, तामस, भेदेन त्रिधाभिद्यत इति ॥ तत्परामर्शकं तस्यै इति पदं त्रिरभ्यस्यते । नमः पदन्तु प्रसादने संभ्रमे वा ॥ तदुक्तम् ॥ विषादे विस्मये हर्षे खेदे दैन्येवऽधारणे ॥ प्रसादने

नमस्तस्यै ॥ १४ ॥ नमस्तस्यै ॥१५॥ नमस्तस्यै नमोनमः ॥१६॥ या देवीसर्वभूतेषुचेतनेत्यभिधीयते नमस्तस्यै ॥१७॥ नमस्तस्यै ॥१८॥नमस्तस्यै नमोनमः ॥१९॥ या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै॥२०॥नमस्तस्यै ॥२१॥ नमस्तस्यै नमोनमः ॥२२॥ या देवी सर्वभूतेषुनिद्रारूपेणसंस्थिता नमस्तस्यै ॥ २३ ॥ नमस्तस्यै ॥२४॥ नमस्तस्यै नमोनमः ॥ २५ ॥ या देवीसर्वभूतेषु क्षुधारूपेण-

माया नाम से कही जाती है उसको नमस्कार ॥१४॥ उसको नमस्कार ॥१५॥ उसको नमस्कार नमस्कार नमस्कार ॥१६॥ जो देवी सब प्राणियों में चेतना कही जाती है, उसको नमस्कार ॥१७॥ उसको नमस्कार ॥१८॥ उसको नमस्कार, नमस्कार नमस्कार ॥१९॥ जो देवी सब प्राणियों में बुद्धिरूप से निवास करती है, उसको नमस्कार ॥ २० ॥ उसको नमस्कार ॥२१॥ उसको नमस्कार, नमस्कार, नमस्कार ॥ २२ ॥ जो देवी सब प्राणियों में निद्रा रूप से निवास करती है, उसको नमस्कार ॥२३॥ उसको नमस्कार ॥२४॥ उसको नमस्कार,नमस्कार, नमस्कार ॥२५॥ जो देवी सब भूतों (प्राणियों) में क्षुधा [भूख] रूप

संभ्रमे च द्विस्त्रिरुक्तं न दुष्यतीति ॥ अन्यत्रापि ॥ प्रकर्ष हर्ष कोपेषु स्वप्ने दैन्यभयेषु च ॥ स्तुत्यभ्यासानुवादेषु पौनरुक्त्यं नदुष्यतीति ॥ अत्रकेचित्त्रः प्रणयने महत्फलं ॥ एकस्या स्त्रिर्नमस्काराश्च स्त्रिःप्रदक्षिणमित्याहुः ॥ येति विष्णु माया मूल शाब्द-विद्येति शब्दिता सर्वागमेषु प्रतिपादिता ॥ नमस्तस्यै इति पदत्रयेण कायिक वाचिक मानसिक नमस्कारत्रयं प्रदर्शितमिति नागेशरामाश्रम वंशोद्धारा ॥ अथवा ॥ पञ्चतत्व रचित कायेन पंचधा नमस्कारा उक्ताः ॥

संस्थिता नमस्तस्यै ॥२६॥ नमस्तस्यै ॥२७॥ नमस्तस्यै नमोनमः ॥२८॥ या देवी सर्वभूतेषु छायारूपेण संस्थिता नमस्तयै ॥२९॥ नमस्तस्यै ॥३०॥ ममस्तस्यै नमोनमः ॥ ३१ ॥ या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता नमस्तम्यै ॥ ३२ ॥ नमस्तस्यै ॥३३॥ नमस्तस्यै नमोनमः ॥३४॥ या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता नमस्तस्यै ॥ ३५ ॥ नमस्तस्यै ॥३६॥ नमस्तस्यै नमोनमः ॥३७॥ या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै ॥३८॥ नमस्तस्यै ॥ ३९ ॥ नमस्तस्यै नमोनमः

से निवास करती है, उसको नमस्कार ॥२६॥ उसको नमस्कार ।२७। उसको नमस्कार, नमस्कार, नमस्कार ॥२८॥ जो देवी सब प्राणियों में छायारूपसे निवास करती है, उसको नमस्कार॥१९॥ उसको नमस्कार ॥ ३० ॥ उसको नमस्कार नमस्कार नमस्कार ॥३१॥ जो देवो सब प्राणियों में शक्ति रूप से निवास करती है, उसको नमस्कार ॥ ३२ ॥ उसको नमस्कार ॥ ३३ ॥ उसको नमस्कार, नमस्कार, नमस्कार ।। ३४ ॥ जो देवी सब प्राणियों में तृष्णा रूप से निवास करती है, उसको नमस्कार ॥ ३५॥ उसको नमस्कार ॥३६॥ उसको नमस्कार, नमस्कार, नमकार ॥ ३७ ॥ जो देवी सब प्राणियों में क्षान्ति (उपेक्षा) रूप से निवास करती हैं, उसको ननस्कार ॥ ३८ ॥ उसको नमस्कार ॥३९॥ उसको नमस्कार, नमस्कार, नमस्ककार ॥४०॥

॥४०॥ या देवी सर्वभूतेषु जाति रूपेण संस्थिता नमस्तस्यै ॥४१॥ नमस्तस्यै ॥ ४२ ॥ नमस्तस्यै नमोनमः ॥ ४३ ॥ या देवीसर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता नमस्तस्यै ॥ ४४ ॥ नमस्तस्यै ॥ ४५ ॥ नमस्तस्यै नमोनमः ॥ ४६ ॥ या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै ॥४७॥ नमस्तस्यै ॥४८॥ नमस्तस्यै नमोनमः ॥४९॥ या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता नमस्तस्यै ॥ ५० ॥ नमस्तस्यै ॥५१॥ नमस्तस्यै नमोनमः ॥५२॥ या देवीसर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै॥५३

जो देवी सब प्राणियों में जाति रूप से निवास करती है, उसको नमस्कार ॥ ४१ ॥ उसको नमस्कार ॥ ४२ ॥ उसको नमस्कार, नमस्कार, नमस्कार ॥४३॥ जो देवी सब प्राणियों में लज्जा रूप से निवास करती है, उसको नमस्कार ॥ ४४ ॥ उसको नमस्कार ॥४५॥ उसको नमस्कार, नमस्कार, नमस्कार ॥४६॥ जो देवी सब प्राणियों में शान्ति रूप से निवास करती है, उसको नमस्कार ॥४७॥ उसको नमस्कार ॥ ४८ ॥ उसको नमस्कार, नमस्कार, नमस्कार ॥४९॥ जा देवी सब प्राणियों में श्रद्धा रूप से निवास करती है, उसको नमस्कार ॥ ५० ॥ उसको नमस्कार ॥५१॥ उसको नमस्कार, नमस्कार, नमस्कार ॥५२॥ जो देवी सब प्राणियों में कान्ति रूप से निवास करती है, उसको नमस्कार ॥५३॥ उसको नमस्कार ॥ ५४ ॥ उसको

नमस्तस्यै ॥५४॥ नमस्तस्यै नमोनमः ॥ ५५ ॥ या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै ॥५६॥नमस्तस्यै॥५७॥नमस्तस्यैनमोनमः॥५८॥ या देवी सर्वभूतेषु वृत्ति-रूपेण संस्थिता नमस्तस्यै ॥५६॥ नमस्तस्यै ॥६०॥ नमस्तस्यै नमोनमः ॥ ६१॥ या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थितानमस्तस्यै॥६२॥नमस्तस्यै॥६३॥नमस्तस्यैनमोनमः॥ ६४॥ या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता नमस्तस्यै ॥६५॥ नमस्तस्यै ॥६६॥ नमस्तस्यै नमो नमः॥६७॥ या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता

नमस्कार, नमस्कार, नमस्कार ॥ ५५ ॥ जो देवी सब प्राणियों में लक्ष्मी रूप से निवास करती है, उसको नमस्कार ॥ ५६ ॥ उसको नमस्कार ॥५७॥ उसको नमस्कार, नमस्कार, नमस्कार ॥ ५८ ॥ जो देवी सब प्राणियों में वृत्ति रूप से निवास करती है, उसको नमस्कार ॥ ५६ ॥ उसको नमस्कार ॥६०॥ उसको नमस्कार, नमस्कार, नमस्कार, ॥६१॥ जो देवी सब प्राणियों में स्मृति रूप से निवास करती है, उसको नमस्कार ॥ ६२ ॥ उसको नमस्कार ॥६३॥ उसको नमस्कार, नमस्कार, नमस्कार ॥ ६४ ॥ जो देवी सब प्राणियों में दया रूप से निवास करती है, उसको नमस्कार ॥६५॥ उसको नमस्कार ॥ ६६ ॥ उसको नमस्कार, नमस्कार, नमस्कार ॥ ६७ ॥ जो देवी सब प्राणियों में तुष्टि (संतोष) रूप से निवास करती है, उसको नमस्कार

नमस्तस्यै ॥ ६८॥ नमस्तस्यै ॥ ६९ ॥ नमस्तस्यै नमोनमः ॥ ७० ॥ या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै ॥ ७१ ॥ नमस्तस्यै ॥ ७२ ॥ नमस्तस्यै नमोनमः ॥ ७३ ॥ या देवी सर्वभूतेषु भ्रान्तिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै ॥७४॥ नमस्तस्यै ॥७५॥ नमस्तस्यै नमोनमः ॥७६॥ इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानांचाखिलेषु या ॥ भूतेषु सततं तस्यै व्याप्त्यैदेव्यै नमोनमः ॥७७॥ चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद्व्याप्यस्थिताजगत् नमस्तस्यै ॥ ७८ ॥ नमस्तस्यै॥७९॥नमस्तस्यै नमोनमः॥८०॥स्तुता-

॥६८॥उसको नमस्कार॥६९॥उसको नमस्कार,नमस्कार,नमस्कार ॥७०॥ जो देवी सब प्राणियों में मातृ (माता) रूप से निवास करती है, उसको नमस्कार ॥७१॥ उसको नमस्कार ॥ ७२ ॥ उसको नमस्कार, नमस्कार, नमस्कार ॥ ७३ ॥ जो देवी सब प्राणियों में भ्रान्ति (सन्देह) रूप से निवास करती है, उसको नमस्कार ॥ ७४ ॥ उसको नमस्कार ॥७५॥ उसको नमस्कार, नमस्कार, नमस्कार ॥ ७६ ॥ जो देवी सब इन्द्रियों की तथा अखिल भूतों (प्राणीमात्र) की अधिष्ठात्री है, और सब भूतों में निरन्तर व्याप्त रहती है,उस देवी को नमस्कार,नमस्कार॥७७॥ जो देवी चैतन्य रूप से इस संसार में व्यापक रहती है, उसको नमस्कार ॥ ७८ ॥ उसको नमस्कार ॥७९॥ उसको नमस्कार, नमस्कार,नमस्कार॥८०॥पूर्व काल में अपना इच्छित फल मिलने

सुरैः पूर्वमभीष्टसंश्रयात्तथासुरेन्द्रेण दिनेषुसेविता ॥ करोतुसानः शुभहेतुरीश्वरीशुभानि भद्राण्यभिहन्तुचापदः॥८१॥ या साम्प्रतं चोद्धत दैत्यतापितैरस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते ॥ या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः सर्वापदो भक्तिविनम्रमूर्तिभिः॥८२॥ऋषिरुवाच॥ ८३ ॥ एवं स्तवादियुक्तानां देवानां तत्र पार्वती ॥ स्नातुमभ्याययौ तोये जाह्नव्या नृपनन्दन ॥८४॥ साब्रवीत्तान् सुरान् सुभ्रूर्भवद्भिः स्तूयतेऽत्र का ॥ शरीरकोशतश्चास्याः समुद्भूताब्रवीच्छिवा ॥ ८५॥ स्तोत्रं ममैतत् क्रियते शुम्भदैत्यनिराकृतैः ॥

से हम (देवगण) ने जिसकी स्तुति करी थी, और देवताओं के राजा (इन्द्र) ने बहुत दिन तक जिसकी पूजा की थी ॥ जो सब मंगल की कारण है, वही ईश्वरी हम सब (देवगणों) का कल्याण करे और सम्पूर्ण आपत्तियों को दूर करे ॥ ८१ ॥ जो अभी प्रचण्ड असुर से दुःख पाकर शरण में आये हुए सब देवगण जिसको नमस्कार करते हैं और नम्रता पूर्वक हम सब (देव गण) जिसका ध्यान करते हैं वही ईश्वरी तत्काल हमारी आपत्तियों का नाश करे ॥ ८२ ॥ ऋषि बोले ॥८३॥ हे नृप नन्दन ! इस तरह स्तुति करते हुए सब देवताओं के सामने वहाँ पार्वती गङ्गा जल में स्नान करने को आईं ॥ ८४ ॥ तब सुन्दर भौंह वाली पार्वती ने सब देवगण से कहा कि तुम सब किसकी स्तुति करते हो ? उसी क्षण पार्वती के शरीर कोश से "शिवा" उत्पन्न होकर कहने लगी ॥ ८५ ॥ शुम्भ के द्वारा

देवैः समस्तैः समरे निशुम्भेन पराजितैः ॥ ८६ ॥
शरीरकोशाद्यत्तस्याः पार्वत्या निःसृताम्बिका ॥
कौशिकीति* समस्तेषु ततोलोकेषु गीयते ॥८७॥
तस्यां विनिर्गतायां तु कृष्णाभूत्सापि पार्वती ॥
कालिकेति समाख्याता हिमाचलकृताश्रया ॥८८॥
ततोम्बिकां परं रूपं बिभ्राणां सुमनोहरम् ॥ ददर्श
चण्डो मुण्डश्च भृत्यौ शुम्भनिशुम्भयोः॥८९॥ ताभ्यां
शुम्भाय चाख्याता सातीव सुमनोहरा ॥ काप्यास्ते

स्वर्ग से निकाले हुए तथा निशुम्भ से लड़ाई में हराए गये सब देवगण यहाँ इकट्ठे होकर मेरी स्तुति कर रहे हैं॥८६॥ पार्वती के शरीर कोश से अम्बिका पैदा हुई, इस कारण लोक में कौशिकी नाम से विख्यात हुई, ॥८७॥ इस पार्वती के शरीर से *कौशिकी निकली इसी से पार्वती के शरीर का रंग काला हुआ इस हेतु कालिका के नाम से प्रसिद्ध हो हिमालय पर रहने लगी ॥ ८८ ॥ इसके बाद अत्यन्त सुन्दर अम्बिका (कौशिकी) को उत्तम-उत्तम आभूषण वस्त्र पहने हुए शुम्भ, निशुम्भ के दूत (नौकर) चण्ड-मुण्ड ने देखा ॥ ८९ ॥ और

---

*कौशिकी स्वरूपं कालिका पुराणे ॥

साकौशिकीतिविख्याता चारुरूपा मनोहरा ॥ शूलं वज्रं च बाणं च खड्गं शक्तिं तथैवच ॥ दक्षिणैः पणिभिर्देवी गृहीत्वातु विराजिता ॥ गदां घण्टां च चापं च चर्म शंखं तथैवच ॥ ऊर्ध्वादिक्रमतो देवी बिभ्रती वामपाणिभिः ॥वज्रेणेत्यस्य स्थाने चक्रेणेत्यपिपाठः ॥३॥ कौशिक्याश्चक्रस्याभावात् ॥२॥ सिंहस्योपरितिष्ठन्ती व्याघ्र चर्मणि कौशिकी ॥ बिभ्रती रूपमतुलं स सुरासुर-मोहनम् ॥

स्त्री महाराज भासयन्ती हिमाचलम् ॥ ६० ॥ नैव तादृक् क्वचिद्रूपं दृष्टं केनचिदुत्तमम्॥ज्ञायतांकाप्यसौ देवी गृह्यतां चासुरेश्वर ॥६१॥ स्त्रीरत्नमतिचार्वङ्गी द्योतयन्ती दिशास्त्विषा ॥ सा तु तिष्ठति दैत्येन्द्र तां भवान्द्रष्टुमर्हति ॥६२॥ यानि रत्नानि मणयो गजाश्वादीनि वै प्रभो ॥ त्रैलोक्ये तु समस्तानि साम्प्रतं भान्ति ते गृहे ॥६३॥ ऐरावतः समानीतो गजरत्नं पुरन्दरात् ॥ पारिजाततरुश्चायं तथैवोच्चैः श्रवाहयः ॥६४॥ विमानं हंससंयुक्तमेतत्तिष्ठति तेऽङ्गणे ॥

उन दोनों दैत्यों ने राक्षसाधिप शुम्भासुर के पास जाकर कहा, हे महाराज ! हिमालय के ऊपर अनुपमेय एक स्त्री शोभायमान है ॥६०॥ हे असुरेश्वर ! उसके समान सुन्दरी कहीं किसी के देखने में नहीं है, तथा यह मालूम कीजिये कि वह स्त्री कौन और किस की है ॥६१॥ उसके सब अङ्ग मन को हरने वाले हैं और वह स्त्रियों में रत्न है अपनी प्रभा से दिशाओं को प्रकाशित करती हुई बैठी है हे दैत्येन्द्र ! उसको आप देखें ! अर्थात् वह देखने ही योग्य है ॥६२॥ हे प्रभो ! हे महाराज ! जितने रत्न, मणि, हाथी, घोड़े आदि इस समय तीनों लोक में उत्तम हैं वे सब आपके घर में सुशोभित हैं ॥ ६३ ॥ हाथियों में उत्तम रत्न ऐरावत उच्चैःश्रवा नाम का घोड़ा और पारिजात वृक्ष यह सब इन्द्र (देवराज) से छीन कर आप लाये हैं ॥६४॥ विधाता (ब्रह्मा) का विमान रत्न स्वरूप जिसमें हंस लगे हैं जो कि

रत्नभूतमिहानीतंयदासीद्वेधसोऽद्भुतम्॥९५॥निधिरेष महापद्मः समानीतो धनेश्वरात् ॥ किञ्जल्किनीं ददौचाब्धिर्मालामम्लानपङ्कजाम् ॥ ९६ ॥ छत्रं ते वारुणं गेहे काञ्चनस्रावितिष्ठति ॥ तथायं स्यन्दन वरो यः पुरासीत्प्रजापतेः ॥९७॥ मृत्योरुत्क्रान्तिदा नाम शक्तिरीश त्वया हृता ॥ पाशः सलिलराजस्य भ्रातुस्तव परिग्रहे ॥९८॥ निशुम्भस्याब्धिजाताश्च समस्ता रत्नजातयः ॥ वह्निरपि ददौ तुभ्यमग्निशौचे च वाससी ॥ ९९ ॥ एवं दैत्येन्द्र रत्नानि समस्तान्याहृतानि ते ॥ स्त्रीरत्नमेषा कल्याणी त्वया कस्मान्न

आँगन में रखा है ॥९५॥ यह महापद्म नाम निधि जो कुबेर के यहाँ से आई है, तथा जो कभी मैली न हो न मुरझावे ऐसी किंजल्किनी नामक कमल माला समुद्र ने आपको दी ॥९६॥ और वरुण का यह काञ्चनस्रावि छत्र आपके ही स्थान में है, वैसे ही अत्यन्त सुन्दर यह रथ जो पहले प्रजापति का था (आपके पास है) ॥ ९७ ॥ हे ईश ! हे स्वामी ! यमराज से आपने उत्क्रान्तिदा नामक "शक्ति" छीन ली तथा आपके भाई निशुम्भ ने सालिलराज वरुण से पाश (फंदा) ॥ ९९ ॥ और समुद्र में से निकले हुए सम्पूर्ण जाति के रत्न ले लिये, अग्नि देव ने अग्नि से पवित्र किये हुए दो वस्त्र दिये ॥ ९९ ॥ हे दैत्येन्द्र ! हे राक्षसाधिप ! इस प्रकार आपने सब रत्नों को ले लिया तो यह कल्याण करने वाली स्त्री रूप रत्न को आप क्यों नहीं लेते ? अर्थात् अवश्य ही

गृह्यते ॥१००॥ ऋषिरुवाच ॥ १०१ ॥ निशम्येतिवचः शुम्भः स तदा चण्डमुण्डयोः ॥ प्रेषयामास सुग्रीवं दूतं देव्या महासुरम् ॥१०२॥ इतिचेति च वक्तव्या सा गत्वा वचनान्मम ॥ यथा चाभ्येति संम्प्रीत्या तथा कार्यं त्वया लघु ॥१०३॥ स तत्र गत्वा यत्रास्ते शैलोद्देशेऽतिशोभने ॥ सा देवी तां ततः प्राह श्लक्ष्णं मधुरया गिरा ॥ १०४ ॥ दूत उवाच ॥१०५॥ देवि दैत्येश्वरः शुम्भस्त्रैलोक्ये परमेश्वरः ॥ दूतोऽहं प्रेषितस्तेन त्वत्सकाशमिहागतः॥१०६॥ अव्याहताज्ञः सर्वासु यः सदा देवयोनिषु ॥ निर्जि-

---

लीजिये ॥ १०० ॥ ऋषि बोले ॥ १०१ ॥ शुम्भ ने इस तरह अपने राक्षस चण्डमुण्ड की बातें सुनकर सुग्रीव नाम वाले महाअसुर को दूत बनाकर देवी के समीप भेजा ॥ १०२ ॥ और समझाकर कह दिया कि मेरी तरफ से इस प्रकार की बात कहना जिससे वह प्रसन्न होकर मेरे पास चली आवै ऐसा करना ॥ १०३ ॥ वह सुग्रीव नाम वाला दूत जहाँ हिमालय के अति सुन्दर स्थान में देवी बैठी थी वहाँ जाकर सुन्दर मीठी-मीठी बात करने लगा ॥१०४॥ दूत बोला ॥१०५॥ हे देवि ! शुम्भ (राक्षस राज) त्रिलोक (तीनों लोक) का राजा है और परमेश्वर है उसने मुझे दूत बनाकर तेरे समीप भेजा है ॥१०६॥ उस (शुम्भ) की आज्ञा कोई देवता कभी नहीं त्याग सकते, जिसने सब दैत्यारियों (देवताओं) को

ताखिलदैत्यारिः सयदाह शृणुष्व तत् ॥ १०७ ॥
मम त्रैलोक्यमखिलं मम देवा वशानुगाः ॥ यज्ञभागानहं
सर्वानुपाश्नामि पृथक् पृथक् ॥ १०८ ॥
त्रैलोक्ये वररत्नानि मम वश्यान्यशेषतः ॥ तथैव
गज-रत्नं च हृत्वा देवेन्द्र वाहनम् ॥१०९॥ क्षीरोदमथनोद्भूतमश्वरत्नं
ममामरैः ॥ उच्चैःश्रवससंज्ञं
तत्प्रणिपत्य समर्पितम् ॥ ११० ॥ यानि चान्यानि
देवेषुगन्धर्वेषूरगेषुच ॥ रत्नभूतानिभूतानितानि मय्यैव
शोभने ॥१११॥ स्त्रीरत्नभूतां त्वां देवि लोके
मन्यामहे वयम् ॥ सा त्वमस्मानुपागच्छ यतो रत्नभुजो
वयम् ॥११२॥ मां वा ममानुजं वापि निशुम्भ-

जीत लिया है, उसने जो कुछ कहा है वह तू सुन ॥ १०७ ॥
सब त्रैलोक्य मेरा है, सब देवता मेरे आधीन हैं और यज्ञ के
सम्पूर्ण भागों को मैं ही अलग २ लेता हूँ ॥१०८॥ तीनों लोक
के अच्छे २ रत्न मेरे पास हैं, वैसेही हाथियों में जो रत्न है इन्द्र
का वाहन छीना हुआ सो भी मेरे पास है ॥१०९॥ समुद्र मथने
पर उत्पन्न उच्चैःश्रवा नाम अश्व रत्न भी देवताओं ने
अत्यन्त नम्रता से मुझे दे दिया है ॥ ११० ॥ हे शोभने !
देवता गन्धर्व और नागों के पास जो उत्तम-उत्तम रत्न थे
वे सब मेरे ही हैं ॥ १११ ॥ हे देवि ! तुझे हम मनुष्य
जाति में स्त्री रत्न मानते हैं सो तू हमारे यहाँ आ, कारण
रत्नों के भोगने वाले तो हम (राक्षस) ही हैं ॥ ११२ ॥ हे

मुरुविक्रमम् ॥ भज त्वं चंचलापाङ्गि रत्नभूतासि वै यतः॥११३॥परमैश्वर्यमतुलं प्राप्स्यते मत्परिग्रहात् ॥एतद्बुद्ध्या समालोच्य मत्परिग्रहतांव्रज॥११४॥ ऋषिरुवाच॥११५॥इत्युक्ता सा तदा देवी गम्भीरान्तः स्मिता जगौ ॥ दुर्गा भगवती भद्रा ययेदं धार्यते जगत् ॥११६॥ देव्युवाच ॥११७॥ सत्यमुक्तंत्वयानात्रमिथ्याकिञ्चित्त्वयोदितम् ॥ त्रैलोक्याधिपतिः शुम्भो निशुम्भश्चापि तादृशः ॥११८॥ किं त्वत्र यत्प्रतिज्ञातं मिथ्या तत्क्रियते कथम् ॥ श्रूयतामल्पबुद्धित्वात्प्रतिज्ञा या कृता पुरा ॥११९॥

चञ्चलापाङ्गि ! तू मुझको वा मेरे भाई साहसी निशुम्भ को भज (अर्थात् हम दोनों में से किसी एक को वर ले) क्योंकि तू रत्न भूता है ॥ ११३ ॥ मेर वरने (मुझ से विवाह करने) से तू अतुल ऐश्वर्य पावैगी यह बुद्धि से विचार कर मेरी सेवा कर ॥ ११४ ॥ ऋषि बोले ॥ ११५ ॥ दूत के मुख से इतना सुनकर जो भगवती दुर्गा सम्पूर्ण संसार को धारण करे रहती है वही देवी भद्रा गम्भीर भाव से मुसकराती हुई बोली ॥ ११६ ॥ देवी बोली ॥ ११७ ॥ तू ने जो कुछ कहा सब सत्य है इसमें कुछ झूँठ नहीं शुम्भ तीनों लोक का मालिक है और निशुम्भ भी ऐसा ही है ॥ ११८ ॥ परन्तु इस विषय में मैंने जो प्रतिज्ञा करली है उसको किस प्रकार से झूँठी करूँ ॥ जो मैंने अज्ञानता से प्रतिज्ञा करली है उसको

यो मां जयति संग्रामे यो मे दर्पं व्यपोहति ॥ यो मे प्रतिबलो लोके स मे भर्ता भविष्यति ॥ १२० ॥ तदागच्छतु शुम्भोऽत्र निशुम्भो वा महासुरः ॥ मां जित्वा किं चिरेणात्र पाणिं गृह्णातु मे लघु ॥१२१॥ दूत उवाच ॥ १२२ ॥ अवलिप्तासि मैवं त्वं देवि ब्रूहि ममाग्रतः ॥ त्रैलोक्ये कः पुमांस्तिष्ठेदग्रे शुम्भनिशुम्भयोः ॥ १२३ ॥ अन्येषामपि दैत्यानां सर्वे देवा न वै युधि ॥ तिष्ठन्ति सम्मुखे देवि किं पुनः स्त्री त्वमेकिका ॥१२४॥ इन्द्राद्याः सकला देवास्तस्थुर्येषां न संयुगे॥शुम्भादीनां कथं तेषां स्त्री प्रयास्यसि संमुखम् ॥ १२५ ॥ सा त्वं गच्छ मयैवोक्ता

सुन ॥ ११६ ॥ जो मुझको लड़ाई में जीतेगा, जो मेरे दर्प (घमंड) को दूर कर देगा, जो सारे संसार भर में मेरे प्रतिबल (बराबर ताक़त वाला) होगा वही मेरा स्वामी होगा ॥१२०॥ इसलिये महाअसुर शुम्भ वा निशुम्भ यहाँ आवें और मुझको जीत कर जल्दी ही विवाह करलें ॥१२१॥ दूत बोला ॥१२२॥ हे देवी तुझको घमण्ड हुआ है मेरे सामने ऐसी बात न बोलना, तीनों लोक में ऐसा कौन मनुष्य है जो शुम्भ निशुम्भ के सामने ठहर सके ॥१२३॥ सुन लड़ाई में राक्षसों के सामने सब देवता नहीं ठहर सकते हैं ॥ तब हे देवि ! तु अकेली स्त्री कैसे ठहर सकती है ॥१२४॥ जिन शुम्भ निशुम्भ आदि के सामने इन्द्रादि देवता नहीं ठहर सकते हैं तब उन (शुम्भादिकों) के

पार्श्वंशुम्भनिशुम्भयोः॥केशाकर्षणनिर्द्धूतगौरवामागमिष्यसि ॥१२६॥ देव्युवाच ॥१२७॥ एवमेतद्बली शुम्भो निशम्भश्चातिवीर्यवान् ॥ किं करोमि प्रतिज्ञा मे यदनालोचितापुरा ॥१२८॥ स त्वं गच्छ मयोक्तं ते यदेतत्सर्वमादृतः॥ तदाचक्ष्वाऽसुरेन्द्राय सच युक्तं करोतु यत् ॐ ॥१२९॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये देव्यादूत संवादो नाम पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥ उवाच ६ त्रिपान्मंत्राः ६६ श्लोक ५४ एवम् १२९ एवमादितः ॥३८८॥

सामने तू अकेली स्त्री कैसे ठहरेगी ? ॥ १२५ ॥ इसलिये तू मेरे कहने से शुम्भ निशुम्भ के पास चली चल, बाल पकड़ा कर घिसटते हुए अपनी प्रतिष्ठा बिगाड़कर मत जाना ॥१२६॥ देवी बोली ॥१२७॥ जो तूने कहा सच है शुम्भ ऐसा ही बलवान है और निशुम्भ भी बहुत वीर्यवान है पर क्या करूँ ? थोड़ी बुद्धि के कारण मैंने ऐसी प्रतिज्ञा के बारे में पहिले नहीं विचारा था ॥ १२८ ॥ सो तू जाकर मैंने जो कुछ कहा है सो राक्षसाधिप शुम्भ को समझा कर आदर से कहना वह (शुम्भ) जो उचित समझे सो करै ॥ १२९ ॥

इति आगरा निवासी श्री घनश्याम गोस्वामी कृत दुर्गा भाषा
५ अध्याय की समाप्त हुई ॥

ॐ जय जय मार्कण्डेयपुराणे सावर्णिकेमन्वन्तरे देवी महात्म्ये सत्याः सन्तु (यजमानस्य कामाः) जगदम्बार्पणमस्तु ॥ ऐसा बोलकर जल छोड़ना ॥ मंत्र २४३ पृष्ठ में हैं ॥

वैदिक आहुति ५ अध्याय की ॥

एक पान पर शाकल्य १ कमलगट्टा घी में भिगोकर १ सुपारी, २ लोंग, १ छोटी इलायची, गूगल, इस अध्याय में विशेष कपूर, पुष्प, व ऋतुफल ही है। सब चीजें स्रुची में रख खड़े होकर मन्त्र बोलना ॥

तान्त्रिक आहुति ॥

क्लीं जयन्ती सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै धूम्राक्ष्यै विष्णुमायादि चतुर्विंशद्देवताभ्यो महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ॥ सामान सब ऊपर लिखा है ॥

अथ षष्ठोऽध्यायः

अथ ध्यानम् ॥

ॐ नागाधीश्वरविष्टरां फणिफणोत्तंसोरुरत्नावलीभास्वद्देहलतां दिवाकरनिभां नेत्रत्रयोद्भासिताम्।मालाकुम्भकपालनीरजकरां चन्द्रार्धचूडां परां सर्वज्ञेश्वर भैरवाङ्कनिलयां पद्मावतीं चिन्तये ॥६॥

सिंह के ऊपर बैठी हुई मणियों की माला से दीप्तमान देहलता जिसकी सूर्य के समान कान्तिवाली तीन नेत्र से सुशोभित माला, कुम्भ (घड़ा) कपाल, कमल हाथ में धारण करे हुए वाल चन्द्रमा मस्तक में विराजमान है शिव और भैरव का जो अंक वही जिसका स्थान है ऐसी सर्वोत्कृष्ट पद्मावती को ध्यान करता हूँ ॥

ऋषिरुवाच ॥ १ ॥ ॐ इत्याकर्ण्य वचो देव्याः स दूतोऽमर्षपूरितः ॥ समाचष्ट समागम्य दैत्यराजाय विस्तरात् ॥२॥ तस्य दूतस्य तद्वाक्यमाकर्ण्यासुरराट् ततः ॥ सक्रोधःप्राह दैत्यानामधिपं धूम्रलोचनम् ॥३॥ हे धूम्रलोचनाशु त्वं स्वसैन्यपरिवारितः ॥ तामानय बलाद् दुष्टां केशाकर्षणविह्वलाम् ॥ ४ ॥ तत्परित्राणदः कश्चिद्यदिवोत्तिष्ठतेऽपरः ॥ स हन्तव्योऽमरो वापि यक्षो गन्धर्व एव वा ॥५॥ ऋषिरुवाच ॥६॥ तेनाज्ञप्तस्ततः शीघ्रं स दैत्यो धूम्रलोचनः ॥ वृतः षष्ठ्या सहस्राणामसुराणां द्रुतं ययौ ॥७॥ स दृष्ट्वा तां ततो देवीं तुहिना-

---

ऋषि बोले—॥१॥ देवी की सब बात सुन क्रोधपूर्ण दूत ने दैत्यराज (शुम्भ) के समीप विस्तार पूर्वक कही ॥ २ ॥ तब सुग्रीव (दूत) से देवी की सब बातें सुनकर दैत्यराज ने राक्षसों के अधिपति (सेनापति) धूम्रलोचन से क्रोधयुक्त कहा ॥ ३ ॥ हे धूम्रलोचन ! तुम जल्दी से अपनी सेना सहित जाकर उस दुष्टा देवी के झोंटे पकड़ कर खींचते हुए विह्वल करके ले आओ ॥ ४ ॥ यदि उसको बचाने के लिये दूसरा कोई देवता, यक्ष अथवा गन्धर्व आवे तो उसको मार देना ॥ ५ ॥ ऋषि बोले—॥ ६ ॥ (दैत्यराज) से आज्ञा मिलने पर वह धूम्रलोचन दैत्य ६० हजार राक्षसों को इकट्ठा करके जल्दी से गया ॥७॥ तब उस (धूम्रलोचन) ने देवी को हिमालय की चोटी

चलसंस्थिता जगादोच्चैः प्रयाहीति मूलं शुम्भनिशुम्भयोः ॥८॥ न चेत्प्रीत्याद्य भवती मद्भर्तारमुपैष्यति ॥ ततो बलान्नयाम्येष केशाकर्षणविह्वलाम् ॥९॥ देव्युवाच ॥१०॥ दैत्येश्वरेण प्रहितो बलवान् बलसंवृतः ॥ बलान्नयसि मामेवं ततः किं ते करोम्यहम् ॥११॥ऋषिरुवाच॥१२॥ इत्युक्तः सोऽभ्यधावत्तामसुरो धूम्रलोचनः ॥ हुङ्कारेणैव तं भस्म सा चकाराम्बिका ततः ॥१३॥ अथ क्रुद्धं महासैन्यमसुराणां तथाम्बिका ॥ ववर्ष सायकैस्तीक्ष्णैस्तथा धैशक्तिपरश्वधैः ॥१४॥ ततो धुतसटः कोपात्कृत्वा नादं सुभैरवम् ॥ पपातासुरसेनायां सिंहो देव्याः

पर बैठा हुआ देख चिल्ला कर कहा कि तू शुम्भ-निशुम्भ के पास चल ॥८॥ यदि तू मेरे स्वामी के पास प्रीति पूर्वक नहीं चलेगी तो मैं केश (सिर के बाल) पकड़ कर खींचता हुआ ले जाऊँगा ॥ ९ ॥ देवी बोली ॥ १०॥ दत्येश्वर (शुम्भ) ने तुझ बलवान को मेरे पास सेना सहित भेजा है, अगर तू जबरदस्ती मुझको ले जावैगा तों मैं क्या करूँगी ? ॥११॥ ऋषि बोले ॥१२॥ इस प्रकार से कह कर धूम्रलोचन असुर देवी की ओर) दौड़ा, तब अम्बिका ने हुँकार से उस धूम्रलोचन सेनापति को भस्म कर दिया ॥ १३ ॥ बाद इसके ६० हजार दैत्य सेना क्रुद्ध होकर पैने बाण, शक्ति, और परश्वध (कुल्हाड़ी) बरसाने लगे ॥ १४ ॥ तब देवी का बाहन सिंह भी अपनी

स्ववाहनः ॥१५॥ कांश्चित् करप्रहारेण दैत्यानास्येन चापरान् ॥ आक्रम्य चाधरेणान्यान् सजघान महासुरान् ॥१६॥ केषाञ्चित्पाटयामास नखैः कोष्ठानि केसरी ॥ तथा तलप्रहारेण शिरांसि कृतवान् पृथक् ॥१७॥ विच्छिन्नबाहुशिरसः कृतास्तेन तथापरे ॥ पपौ च रुधिरं कोष्ठादन्येषां धुतकेसरः ॥१८॥ क्षणेन तद्बलं सर्वं क्षयं नीतं महात्मना ॥ तेन केसरिणा देव्या वाहनेनातिकोपिना ॥ १९ ॥ श्रुत्वा तमसुरं देव्या निहतं धूम्रलोचनम् ॥ बलञ्च क्षयितं कृत्स्नं देवी केसरिणा ततः ॥२०॥ चुकोप दैत्याधिपतिः

गरदन के बाल (केशर) हिलाकर क्रोध से भयंकर नाद करता हुआ असुर सेना पर झपटा ॥ १५ ॥ कितने ही दैत्यों को हाथ की चपेट से कितनों को मुँह से कितनों को आक्रमण करके अथवा होठ से पकड़-पकड़कर बड़े-बड़े राक्षसों को मार दिया ॥ १६ ॥ कितनों की छाती अपने नख से फाड़ गेरीं तैसे ही पैर की थपेड़ द्वारा शरीर से शिर अलग कर दिया ॥ १७॥ और बहुत से राक्षसों के हाथ, शिर विभिन्न कर दिये और गरदन के केशर (बालों को) हिलाकर छाती में से रक्त पीलिया ॥१८॥ देवी के वाहन महात्मासिंह ने अत्यन्त क्रोध के साथ क्षणमात्र में दैत्यों की बड़ी सेना का नाश कर दिया ॥ १९ ॥ देवी ने धूम्रलोचन को मार दिया तथा सिंह ने बड़ी सेना का नाश कर दिया यह सुनकर शुम्भ ने बहुत ही क्रोध

शुम्भः प्रस्फुरिताधरः ॥ आज्ञापयामास च तौ चण्डमुण्डौ महासुरौ ॥ २१ ॥ हे चण्ड हे मुण्ड बलैर्बहुलैः परिवारितौ ॥ तत्र गच्छत गत्वा च सा समानीयतां लघु ॥ २२ ॥ केशेष्वाकृष्य बद्ध्वा वा यदिवः संशयो युधि ॥ तदाशेषायुधैः सर्वैरसुरैर्विनिहन्यताम् ॥२३॥ तस्यां हतायां दुष्टायां सिंहे च विनिपातिते ॥शीघ्रमागम्यतां बद्ध्वा गृहीत्वा तामथाम्बिकाम् ॥ ॐ ॥२४॥ इति श्री मार्कण्डेय पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्येशुम्भनिशुम्भ सेनानीधूम्रलोचनवधो नाम षष्ठोऽध्यायः ॥६॥ उवाच ४ अर्ध० श्लोक २० एवम् २४॥ एवमादितः ॥४१२॥

किया होठ उसके कम्पित होने लगे तथा बलवान चण्ड-मुण्ड नामक असुरों को आज्ञा दी कि ॥२०॥ हे चण्ड ! हे मुण्ड ! तुम दोनों बहुत बड़ी सेना लेकर वहां जाओ और वहां जाकर उस (देवी) को पकड़ कर जल्दी ले आओ ॥ २२ ॥ अथवा देवी को बांध कर झोंट पकड़ कर खींच लाओ यदि कोई प्रकार का सन्देह मालूम होतो सम्पूर्ण आयुध और असुरों द्वारा मार डालना ॥२३॥ उस दुष्टा (देवी) के मारे जाने बाद तथा सिंह के भी मारे जाने पर अम्बिका को उसी दशा (मरी हुई) में पकड़के बांध कर जल्दी लाओ ॥२४॥

इति आगरा निवासी श्री घनश्याम गोस्वामी कृत
देवी महात्म्य में धूम्रलोचन बध की कथा समाप्त हुई ॥

इस अध्याय की अधिष्ठाता तन्त्रान्तर के मत से धूमावती है ॥

ॐ जय जय मार्कण्डेयपुराणेसावर्णिकेमन्वन्तरे देवी माहात्म्ये सत्याः सन्तु (यजमानस्य कामाः) जगदम्बार्पणमस्तु ॥ ऐसा बोलकर जल छोड़ना ॥

वैदिक आहुति ६ अध्याय की ॥

एक पान पर शाकल्य १ कमलगट्टा घी में भिगोकर १ सुपारी, २लोंग, १ छोटी इलायची, गूगल, इस अध्याय में विशेष भोजपत्र ही है। सब चीजें स्रुची में रख कर खड़े होकर मन्त्र बोलना ॥मंत्र २४३ पृष्ठ में हैं।

तान्त्रिक आहुति ॥

क्लीं जयन्ती सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ॥ सामान सब ऊपर लिखा है ॥

अथ सप्तमोऽध्यायः ॥

अथ ध्यानम् ॥

ॐ ध्यायेयं रत्नपीठे शुककलपठितं शृण्वतीं श्यामलांगीं न्यस्तैकाङ्घ्रिं सरोजे शशिशकलधरां वल्लकीं वादयन्तीम् ॥ कह्लाराबद्धमालां नियमितविलसच्चूडिकां रक्तवस्त्रां मातङ्गीं शंखपात्रां मधुरमधुमदां चित्रकोद्भासिभालाम् ॥७॥

रत्न जटित सिंहासन पर बैठी हुई तोते का मधुर शब्द सुनने वाली श्याम रंग कमल पर एक पैर स्थित है बाल चन्द्रमा धारण करने वाली वीणा बजाती हुई कमल की माला पहरे हुए शोभायमान चोली तथा रक्तवस्त्र पहरने वाली शंख हाथ में लिये हुए मद से युक्त माथे में बिन्दी लगाये हुई मातङ्गी को ध्यान करता हूँ ॥

ऋषिरुवाच ॥१॥ ॐ आज्ञप्तास्ते ततो दैत्याश्चण्डमुण्डपुरोगमाः॥चतुरंगबलोपेता ययुरभ्युद्यतायुधाः ॥२॥ ददृशुस्ते ततो देवीमीषद्धासां व्यवस्थिताम् ॥ सिंहस्योपरि शलेन्द्रशृङ्गे महति काञ्चने ॥ ३ ॥ ते दृष्ट्वा तां समादातुमुद्यमं चक्रुरुद्यताः ॥ आकृष्टचापासिधरास्तथान्ये तत्समीपगाः ॥४॥ततः कोपं चकारोच्चैरम्बिका तानरीन्प्रति॥ कोपेन चास्या वदनं मसीवर्णमभूत्तदा ॥ ५ ॥ भ्रुकुटीकुटिलात्तस्या ललाटफलकाद्द्रुतम् ॥ काली करालवदना विनिष्क्रान्तासिपाशिनी॥६॥ विचित्रखट्वाङ्गधरा नर-

---

ऋषि बोले—॥१॥ ऐसी आज्ञा मिलने पर चण्ड-मुण्ड के साथी सम्पूर्ण चतुरंगिणी (हाथी, घोड़े, रथ और पैदल) सेना के दैत्य आयुध (अस्त्र-शस्त्र) लेकर चले ॥२॥ उन (दैत्य) लोगों ने वहां जाकर देखा कि हिमालय की सुवर्णमयी शिखर के ऊपर देवी सिंह सर सवार हुई मन्द-मन्द मुसकरा रही है ॥ ॥३॥ तब सब राक्षस लोग और उनके साथी दानव देवी को इस प्रकार निःशङ्क बैठा हुआ देखकर धनुष खींच तरवार उठा कर (देवी को) पकड़ने का उपाय करने लगे ॥ ४ ॥ तब अम्बिका ने उन शत्रुओं के ऊपर बहुत क्रोध करा जिससे भगवती का मुख काला हो गया तब ॥५॥ अम्बिका के टेढ़ी भौंह और माथे के सुकड़ने से अत्यन्त शीघ्र काली भयंकर वदना असि पाशिनी ॥६॥ विचित्र खट्वाङ्ग लेकर मुण्डमाला से

मालाविभूषणा ॥ द्वीपिचर्मपरीधाना शुष्कमांसातिभैरवा ॥७॥ अति विस्तारवदना जिह्वाललनभीषणा ॥ निमग्ना रक्तनयना नादापूरितदिङ्मुखा ॥८॥ सा वेगेनाभिपतिता घातयन्ती महासुरान् ॥ सैन्ये तत्र सुरारीणामभक्षयत तद्बलम् ॥ ९ ॥ पार्ष्णिग्राहाङ्कुशग्राहि योधघण्टासमन्वितान् ॥ समादायैकहस्तेन मुखे चिक्षेप वारणान् ॥१०॥ तथैव योधं तुरगै रथं सारथिना सह ॥ निक्षिप्य वक्त्रे दशनैश्चर्वयन्त्यतिभैरवम् ॥११॥ एकं जग्राह केशेषु ग्रीवायामथ चापरम् ॥ पादेनाक्रम्य चैवान्य-

---

शोभायमान चीते का चर्म ओढ़े अत्यन्त भयावनी क्षुधा से मांस सूख गया है ॥७॥ बहुत लम्बा शरीर मुँह के बाहर जीभ चलाती हुई भीषणा, भीतर को घुसी हुई लाल आंख वाली घोर शब्द से दिशाओं को पूर्ण करनेवाली देवी निकली ॥८॥ वह भयङ्कर काली देवी (चण्ड-मुण्डदैत्य की) सेना पर अत्यन्त वेग से गिरकर राक्षसों को मारने और खाने लगी ॥९॥ पार्श्व रक्षक अङ्कुशादि लिये योद्धा तथा घण्टा आदि के साथ हाथियों को एक ही हाथ से लेकर मुँह में गेरने लगी ॥१०॥ उसी तरह घोड़े, रथ और सारथी सहित योद्धा (लड़ने वाले) लोगों को पकड़ २ कर मुँह में गेर कर डरावना रूप बनाकर दांतों से चबाने लगी ॥११॥ किसी को अपने बालों से पकड़

मुरसान्यमपोथयत् ॥१२॥ तैर्मुक्तानि च शस्त्राणि
महास्त्राणि तथासुरैः ॥ मुखेन जग्राह रुषा दशनै-
र्मथितान्यपि ॥१३॥ बलिनां तद्बलं सर्वमसुराणां
दुरात्मनाम् ॥ ममर्दाभक्षयच्चान्यानन्याँश्चाताडय-
तथा ॥१४॥ असिना निहताः केचित्केचित्खट्वाङ्ग-
ताडिताः ॥जग्मुर्विनाशमसुरा दन्ताग्राभिहतास्तथा
॥१५॥ क्षणेन तद्बलं सर्वमसुराणां निपातितम् ॥
दृष्ट्वा चण्डोऽभिदुद्राव तां कालीमतिभीषणाम् ॥१६॥
शरवर्षैर्महाभीमैर्भीमाक्षीं तां महासुरः ॥ छादया-
मास चक्रैश्च मुण्डः क्षिप्तैः सहस्रशः ॥ १७ ॥
तानि चक्राण्यनेकानि विशमानानि तन्मुखम् ॥

कर किसी को पैर और छाती की झपेट से कुचल दिया ॥१२॥ उन असुरों द्वारा फेंके हुए शस्त्र और महास्त्र देवी ने मुँह से पकड़ दांत से चबाना प्रारम्भ कर दिया ॥१३॥ बलवान विशाल असुरों की सेना को इस तरह मथन करते हुए देवी ने कितनों को खाया और मार भगाया ॥१४॥ कितनों को तरवार से मारा कितनों को खट्वाङ्ग से ताड़ा बहुतों को दांत के अग्रभाग की चोट से नष्ट किया ॥१५॥ क्षणमात्र में ही उस बड़ी राक्षसों की सेना को नष्ट होता हुआ देख असुर चण्ड भयंकर काली के सामने पहुँचा ॥१६॥ और असुर मुण्ड ने उस कामाक्षी देवी को महाभयंकर शर (बाण) वर्षा तथा हजारों चक्र फेंककर ढक दिया ॥१७॥ भगवती काली के मुँह पर चक्रों की

बभुर्यथार्कबिम्बानि सुबहूनि घनोदरम् ॥१८॥ ततो जहासाति रुषा भीमं भैरवनादिनी ॥ काली करालवक्त्रान्तर्दुर्दर्शदशनोज्ज्वला ॥ १९ ॥ उत्थाय च महासिंहं देवी चण्डमधावत ॥ गृहीत्वा चास्य केशेषु शिरस्तेनासिनाच्छिनत् ॥ २० ॥ अथ मुण्डोऽभ्यधावत्तांदृष्ट्वा चण्डं निपातितम् ॥ तमप्यपातयद्भूमौ सा खड्गाभिहतं रुषा ॥ २१ ॥ हतशेषं ततः सैन्यं दृष्ट्वा चण्डं निपातितम् ॥ मुण्डं च सुमहावीर्यं दिशो भेजे भयातुरम् ॥ २२ ॥ शिरश्चण्डस्य काली च गृहीत्वा मुण्डमेव च ॥ प्राह प्रचण्डाट्टहासमिश्रमभ्येत्य चण्डिकाम् ॥२३॥ मया तवात्रोपहृतौ चण्ड-

---

वर्षा कैसी शोभायमान हुई जैसे मेघ (बादल) मण्डल में अनेक सूर्यों के बिम्ब आभास होते हैं ॥१८॥ इसके बाद भयंकर शब्द करने वाली काली देवी अत्यन्त क्रोध पूर्वक हँसी तब कराल मुँह के भीतर दुर्द्दर्श दांतों की प्रभा से वह (काली) उज्वल हो गई ॥१९॥ तब क्रोध से महाअसि (तरवार) को उठा कर चण्ड असुर के पीछे दौड़ी और उसके केश पकड़ कर खड्ग से शिर काट दिया ॥२०॥ चण्ड को मरा हुआ जान मुण्ड भी देवी की ओर दौड़ा तब देवी ने उसको क्रो पृथ्वी में पटक खड्ग से मार गेरा ॥२१॥ तब मरने से बची सेना चण्ड और महावीर मुण्ड को मरा देख घबड़ा कर चारों तरफ भाग गई ॥२२॥ तब काली चण्ड और मुण्ड के शिर लेकर चण्डिका के पास आ अट्टहास (ठट्ठामार) कर बोली ॥२३॥ चण्ड-

मुण्डौ महापशू ॥ युद्धयज्ञे स्वयं शुम्भं निशुम्भञ्च हनिष्यसि ॥२४॥ ऋषिरुवाच ॥२५॥ तावानीतौ ततो दृष्ट्वा चण्डमुण्डौ महासुरौ ॥ उवाच कालीं कल्याणीं ललितं चण्डिका वचः ॥२६॥ यस्माच्चण्डं च मुण्डं च गृहीत्वा त्वमुपागता ॥ चामुण्डेति ततो लोके ख्याता देवि भविष्यसि ॐ ॥ २७ ॥ इति-श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिकेमन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये चण्डमुण्डबधो नाम सप्तमोऽध्यायः ॥७॥ उवाच २ श्लोक २५ एवम् २७ एवमादितः ॥४३६॥

ॐ जय जय मार्कण्डेयपुराणेसावर्णिकेमन्वन्तरे देवी माहात्म्ये सत्याः सन्तु (यजमानस्य कामाः) जगदम्बार्पणमस्तु ॥ ऐसा बोलकर जल छोड़ना ॥

मुण्ड नाम के दो पशु राक्षसों को मार कर तुम्हारी भेट करती हूं और शुम्भ निशुम्भ को तुम स्वयं ही युद्ध यज्ञ में मारना ॥ ॥२४॥ ऋषि बोले ॥२५॥ उन दोनों चण्ड मुण्ड के शिर को इस अवस्था में आया देख कल्याण करने वाली चण्डिका ने यह ललित बात कही ॥२६॥ हे देवि चण्ड-मुण्ड को मारकर तुम आई हो इसलिये संसार में चामुण्डा नाम से विख्यात होगी ॥२७॥

इति आगरा निवासी श्री घनश्याम गोस्वामी कृत दुर्गा भाषा में चण्डमुण्ड बध सातवां अध्याय समाप्त हुआ ॥

वैदिक आहुति ७ अध्याय को ॥

एक पान पर शाकल्य १ कमलगट्टा घी में भिगोकर १ सुपारी, २ लोंग, १ छोटी इलायची, गूगल, इस अध्याय में विशेष दो जायफल ही हैं। सब चीजें स्रुची में रख खड़े होकर मन्त्रबोलना मंत्र २४३ पृष्ठ में ॥

तान्त्रिक आहुति ॥

ॐ जयन्ती सांगायै सायुधायै सशक्तिकाय सपरिवारायै सवाहनायै काली चामुण्डादेव्यै कर्पूरबीजाधिष्ठात्र्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ॥ सामान सब ऊपर लिखा है ॥

अथाष्टमोध्यायः

अथ ध्यानम् ॥

ॐ अरुणा करुणातरङ्गिताक्षीं धृतपाशाङ्कुशबाणचापहस्ताम् ॥ अणिमादिभिरावृतां मयूखैरहमित्येव विभावये भवानीम् ॥८॥

ऋषिरुवाच ॥ १ ॥ ॐ चण्डे च निहते दैत्ये मुण्डे च विनिपातिते ॥ बहुलेषु च सैन्येषु क्षयितेष्वसुरेश्वरः ॥२॥ ततः कोपपराधीनचेताः शुम्भः प्रतापवान् ॥ उद्योगं सर्वसैन्यानां दैत्यानामादिदेश

शरीर रक्त वर्ण करुणापूर्ण दृष्टि पाश, अंकुश, बाण को धारण करे हुए अणिमादि सिद्धि रूप किरणों से वेष्टित ऐसी भवानी का ध्यान करता हूँ ॥

ऋषि बोले—॥१॥ असुर चण्ड तथा असुर मुण्ड को बहुत बड़ी दैत्य सेना के साथ मर जाने से असुरेश्वर ॥ २ ॥ प्रतापवान् शुम्भ ने अत्यन्त क्रोध कर अपनी सब दैत्य सेना

ह ॥३॥ अद्य सर्वबलैर्दैत्याः षडशीतिरुदायुधाः ॥
कम्बूनां चतुरशीतिर्निर्यान्तु स्वबलैर्वृताः ॥ ४ ॥
कोटिवीर्याणि पञ्चादशसुराणां कुलानि वै ॥ शतं
कुलानि धौम्राणां निर्गच्छन्तुममाज्ञया ।५॥ कालका
दौर्हृदा मौर्याः कालकेयास्तथासुराः ॥ युद्धाय सज्जा
निर्यान्तु आज्ञया त्वरिता मम ॥ ६ ॥ इत्याज्ञाप्या-
सुरपतिः शुम्भो भैरवशासनः ॥ निर्जगाम महा-
सैन्यसहस्रैर्बहुभिर्वृतः ॥ ७ ॥ आयांतं चण्डिका
दृष्ट्वा तत्सैन्यमतिभीषणम् ॥ ज्यास्वनैः पूरयामास
धरणीगगनान्तरम् ॥८॥ततः सिंहो महानादमतीव

को लड़ने की आज्ञा देकर ॥३॥ (शुम्भ ने कहा) आज ८६ उदायुध (जल्दी लड़ने वाले) दैत्य सेनापति और कम्बु (शंखाकृति) के ८४ असुर अपनी अपनी सेना के साथ युद्ध में जाँय ॥ ४ ॥ कोटि वीर्य नामक असुरों के ५० कुल धूम्र (कंजे) कुल में पैदा हुए ५०० कुल मेरी आज्ञा से लड़ाई को जाँय ॥५॥ कालक, दुर्हृद, मयूरवंशी और काल वंश में पैदा हुए असुर मेरी आज्ञा से जल्दी से तैयारी कर लड़ने को जाँय ॥६॥ इस प्रकार असुरपति शुम्भ भयंकर शासन करने वाला आज्ञा देकर कई सहस्र महा सेना (छँटी हुई) साथ लेकर लड़ने को निकला ॥७॥ चण्डिका ने आती हुई भीषण सेना को देख कर धनुष की टंकार से पृथ्वी और आकाश को पूरित (गुंजायमान) कर दिया ॥८॥ हे राजन! सिंह ने भी अति

कृतवान् नृप ॥ घण्टास्वनेन तन्नादमम्बिका चोपबृंहयत् ॥९॥ धनुर्ज्यासिंहघण्टानां नादापूरितदिङ्मुखा ॥ निनादैर्भीषणैः काली जिग्ये विस्तारिताननना ॥१०॥ तं निनादमुपश्रुत्य दैत्यसैन्यैश्चतुर्दिशम् ॥ देवी सिंहस्तथा काली सरोषैः परिवारिताः ॥११॥ एतस्मिन्नन्तरे भूप विनाशाय सुरद्विषाम् ॥ भवायामरसिंहानामतिवीर्यबलान्विताः ॥१२॥*

गर्जना की तब चण्डिका ने अपना घण्टा बजाकर द्विगुण शब्द कर दिया इन शब्दों से काली का मुह बढ़ गया ॥९॥ धनुष की डोरी (गुण) चढ़ाने से सिंह और घण्टे के शब्द से सब दिशा पूर्ण हो गईं ॥ १० ॥ इन शब्दों को सुनकर दैत्य सेना ने चारों ओर से क्रोध र्क बाण वर्षा से देवी, सिंह और काली को घेर लिया ॥११॥ हे राजा ! इसी समय में असुर दल को संहार करने और देवताओं का भय नाश करने के लिये ॥ १२॥ ब्रह्मा, ईश (महादेव) गुह (स्वामिकार्तिक) विष्णु और इन्द्र के शरीरों से शक्तियाँ निकल कर उन्हीं देवताओं के समान

---

*वामन पुराणे ॥ निनदन्त्यास्ततोदेव्या ब्रह्माणी मुखतोऽभवत् । हंसयुक्त विमानस्था साक्षसूत्रकमण्डलुः ॥ १ ॥ माहेश्वरी त्रिनेत्रा च वृषारूढा त्रिशूलिनी ॥ महाहिवलया रौद्रा जटामण्डलिनीक्षणात् ॥ २ ॥ कण्ठादथ च कौमारी वर्हिपत्राथ शक्तिनी ॥ समुद्भूता च देवर्षे मयूरवरवाहना ॥३॥ बाहुभ्यां गरुड़ारूढा शंखचक्रगदासिनी ॥ शार्ङ्ग वाणधरा जाता वैष्णवी रूपशालिनी ॥४॥ महोग्रमुसला रौद्रा दंष्ट्रोल्लिखितभूतला ॥ वाराही पृष्ठतो जाता शेषनागोपरिस्थिता ॥५॥ वज्राङ्कुशोद्यतकरा नानालंकारभूषिता ॥ जातागजेन्द्रपृष्ठस्था माहेन्द्रीस्तनमंडलात् ॥६। विद्वि-

ब्रह्मेशगुहविष्णूनां तथेन्द्रस्य च शक्तयः ।। शरीरेभ्यो विनिष्क्रम्य तद्रूपैश्चंडिकां ययुः ।। १३ ।। यस्य देवस्य यद्रूपं यथाभूषणवाहनम् ।। तद्वदेव हि तच्छक्तिरसुरान्योद्धुमाययौ ।।१४।। हंसयुक्त-विमानाग्रे साक्षसूत्रकमण्डलुः ।। अयाता ब्रह्मणः[1] शक्तिर्ब्रह्माणी साभिधीयते ।।१५।। माहेश्वरी[2] वृषारूढा त्रिशूलवरधारिणी ।। महाहिवलया प्राप्ता चन्द्ररेखा

रूप और वीर्य बल से युक्त चण्डिका के समीप आईं ।।१३।। जिस देवता का जैसा रूप आभूषण तथा वाहन है निश्चय उसी के समान रूप आदि से युक्त शक्तियाँ असुरों से लड़ने के लिये आईं ।।१४।। हंस युक्त विमान पर बैठी हुई अक्षमाला और कमण्डल लेकर ब्रह्मा की शक्ति आई उसको ब्रह्माणी कहा गया ।।१५।। माहेश्वरी बैल पर बैठ कर त्रिशूल और वर को धारण करे हुए माथे पर अर्द्ध चन्द्रमा से सुशोभित तथा बड़े-बड़े सर्पों

पन्ती सटाक्षेपैर्ग्रहनक्षत्रतारकाः ।। नखिनी हृदयाज्जाता नारसिंही सुदारुणा ।।७।।* १ विष्णु धर्मोत्तरे ।। तत्रब्राह्मी चतुर्वक्त्रा षड्भुजा हंसवाहना ।। पिङ्गाभाभूषणोपेता मृगचर्मोत्तरीयका ।। वरं सूत्रं स्रुचं धत्ते दक्षवाहुत्रयेक्रमात ।। वामेतु पुस्तकं कुंडींबिभ्रती चाभयप्रदा ।।२।। माहेश्वरी वृषारूढा पञ्चवक्त्रा त्रिलोचना ।। वालेन्दुभृज्जटाजूटा शुक्ला सर्ववरप्रदा ।। षड्भुजावरदा दक्षे सूत्रं डमरुकं तथा ।। २ ।। शूलं घण्टाभये वामे सैव धत्ते महाभुजा ।। शूलं घंटा भयं वामे सैव धत्ते महाभुजा ।। ३ ।। कौमारी रक्त वर्णा स्यात् षड्वक्त्रा सार्क लोचना ।। रविबाहुर्मयूरस्था वरदा शक्तिधारिणी ।। पताकां बिभ्रती दण्डं पानंवाणं च दक्षिणे ।। वामेचापमधो घंटां कमलं कुक्कुटं त्वधः ।। परशुं बिभ्रती

विभूषणा ॥१६॥ कौमारी[३] शक्तिहस्ता च मयूरवरवाहना ॥ योद्धुमभ्याययौ दैत्यानम्बिका गुहरूपिणी ॥१७॥ तथैव वैष्णवी[४] शक्तिर्गरुडोपरिसंस्थिता ॥ शंख चक्र गदा शाङ्‍र्गखड्गहस्ताभ्युपाययौ ॥१८॥ यज्ञवाराहमतुलं रूपं या बिभ्रतो हरेः ॥ शक्तिः साप्याययौ तत्र वाराहीं[५] बिभ्रतीतनुम्॥१६॥नारसिंही[६] नृसिंहस्य बिभ्रती सदृशं वपुः ॥ प्राप्ता तत्र सटाक्षेपक्षिप्तनक्षत्र-संहतिः ॥२०॥ वज्रहस्ता तथैवैन्द्री[७] गजराजोपरिस्थिता ॥ प्राप्ता सहस्रनयना यथा शक्र-

---

का चूड़ा पहरे महादेव की शक्ति माहेश्वरी आई ॥१६॥ कौमारी हाथ में शक्ति (भाला) लिये मोर पर बैठी हुई गुहरूपिणी [कार्तिकेय की शक्ति] अम्बिका की तरफ से राक्षसों से लड़ने आई ॥१७॥ वैसे ही वैष्णवी [विष्णु की शक्ति] गरुड़ पर सवार हो शंख चक्र गदा शार्ङ्ग [धनुष] तथा खड्ग हाथों में लेकर आई ॥१८॥ यज्ञ वाराह भगवान की शक्ति वाराही भी वहाँ युद्ध में वाराह रूप में आई ॥१६॥ नारसिंही शक्ति नृसिंह के समान शरीर धारण कर युद्ध में आई उसके शिर के बाल हिलने से तारागण सब हिलने लगे ॥२०॥ वज्र हाथ में लेकर इन्द्र के

तीक्ष्णं तदधस्त्वभयान्विता ॥४॥ बाहुभिर्गरुडारूढा शंख चक्र गदासिनी ॥ शार्ङ्गबाणधरा जाता वैष्णवी रूपशालिनी ॥ ५ ॥ कृष्णवर्णातु वाराही शूकरास्यामहोदरी ॥ वरदा दण्डिनी खड्गं बिभ्रती दक्षिणेसदा ॥ खेटपाशाभया वामे सैव चाथ लसद्भुजा ॥६॥ नारसिंहस्येयं नारसिंही ॥७॥ ऐन्द्री सहस्र दृक्सौम्या हेमाभा गजसंस्थिता ॥ वरदा सूत्रिणी वज्रं बिभ्रत्यूर्ध्वे तु दक्षिणे ॥ वामेतु कलशं पात्रं त्वभयं दक्षिणे करे ॥

स्तथैव सा ॥२१॥ ततः परिवृतस्ताभिरीशानो देवशक्तिभिः॥ हन्यन्तामसुराः शीघ्रं मम प्रीत्याह चण्डिकाम्॥२२॥ ततो देवो शरीरात्तु विनिष्क्रान्तातिभीषणा ॥ चंडिका शक्तिरत्युग्रा शिवा शतनिनादिनी ॥२३॥ सा चाह धूम्रजटिलमीशानमपराजिता॥दूत त्वं गच्छ भगवन्पार्श्वं शुम्भ निशुम्भयोः ॥२४॥ब्रूहि शुम्भं निशुम्भं च दानवावतिगर्वितो ॥ ये चान्ये दानवास्तत्र युद्धाय समुपस्थिताः॥२५॥ त्रैलोक्यमिन्द्रो लभतां देवाः सन्तु हविर्भुजः ॥ यूयं

समान ऐन्द्री गजराज [ऐरावत हाथी] पर बैठकर हज़ार नेत्रयुक्त युद्ध में आई ॥२१॥ इसके बाद देव शक्तियों से घिरे हुए ईशान [महादेव] ने चण्डिका से कहा मेरी प्रीति से इन "राक्षसों को जल्दी मारो" ॥२२॥ इसके बाद देवी के शरीर से अत्यन्त भयावनी अत्युग्रशत शिवा [असंख्य गीदड़] के समान चिल्लाने वाली "चण्डिका" शक्ति निकलीं ॥२३॥ और उस अपराजिता भगवती ने धूम्रजटा वाले ईशान [महादेव] से कहा हे भगवन्! आप शुम्भ और निशुम्भ के पास मेरा दूत होकर जाइये ॥२४॥ और अतयन्त वीर्य युक्त शुम्भ निशुम्भ तथा अन्य दानवों से कहिये अगर तुम जीवित रहा चाहते हो तो इन्द्र तीनों लोक का राज पावे देवता लोग यज्ञ भाग पावें और तुम लोग पाताल को भागो ॥२५॥ और यदि अपने बल का घमंड कर युद्ध की इच्छा है तो आओ तुम सब [राक्षसों] का रक्त पीकर हमारी

प्रयात पातालं यदि जीवितुमिच्छथ ॥२६॥ बलावलेपादथ चेद्भवन्तो युद्धकांक्षिणः ॥ तदागच्छत तृप्यन्तु मच्छिवाः पिशितेनवः॥२७॥यतो नियुक्तो दौत्येन तया देव्या शिवः स्वयम् ॥❀ शिवदूतीति लोकेऽस्मिंस्ततः सा ख्यातिमागता ॥२८॥ तेऽपि श्रुत्वा वचो देव्याः शर्वाख्यातं महासुराः ॥ अमर्षापूरिता जग्मुर्यतः कात्यायनी स्थिता ॥२६॥ ततः प्रथममेवाग्रे शरशक्त्यृष्टिवृष्टिभिः ॥ ववर्षुरुद्धताम-

सब [शिवा] योगिनी तृप्त हो जायँगी ॥२६॥ उस देवी [अपराजिता] ने स्वयं शिव भगवान को दूत का काम करने को नियुक्त किया इसलिये तब से वह "शिवदूती" नाम से संसार में विख्यात हुई ॥२७॥ इसके अनन्तर सब राक्षस शिव द्वारा भगवती की बातें सुनकर क्रोधावेश हो जहाँ युद्ध में "कात्यायनी" देवी थी वहाँ ही गये ॥२८॥ और बढ़े हुए क्रोध में उन्मत्त राक्षस गुण शर (बाण) शक्ति (भाला) ऋष्टि (छोटी तरवार) भगवती के समक्ष जाते ही वरषा करने लगे ॥ २६ ॥ (राक्षसों द्वारा)

● शिवदूती का ध्यान ॥

शिवदूतीति साख्याता चण्डी फेरुशतैर्वृता ॥ चतुर्भुजां महाकायां सिन्दूर सदृश द्युतिम् ॥ रक्तदन्तां मुण्डमालां जटाजूटार्धं चन्द्रधृक् ॥ नागकुण्डल हाराभ्यां शोभितं नखरोज्वलम् ॥ व्याघ्रचर्मपरीधानं दक्षिणे चैवशूलधृक् ॥ वामे पाशं तथा चर्म बिभ्रदूर्ध्वाधरक्रमात् ॥ स्थूलवक्त्रं च पीनौष्ठं भृंगमूर्तिभयंकरम् ॥ निक्षिप्य दक्षिणं पादं संतिष्ठत्कुणपोपरि ॥ वामपादंश्शृगालस्यपृष्ठे फेरु शतैर्वृतम् ॥ तादृशं शिवदूत्यास्तुमूर्द्धिन ध्याये द्विभूतये ॥

र्षास्तान्देवीममरारयः॥३०॥ सा च तान्प्रहितान्बाणाञ्छूलशक्तिपरश्वधान् ॥ चिच्छेद लीलयाध्मातधनुर्मुक्तैर्महेषुभिः ॥३१॥ तस्याग्रतस्तथा कालीशूलपातविदारितान्॥खट्वाङ्गपोथितांश्चारीन्कुर्वती व्यचरत्तदा ॥३२॥ कमण्डलुजलाक्षेपहतवीर्यान्हतौजसः ॥ ब्रह्माणी चाकरोच्छत्रून्येन येन स्म धावति ॥३३॥ माहेश्वरी त्रिशूलेन तथा चक्रेण वैष्णवी ॥ दैत्याञ्जघान कौमारी तथा शक्त्यातिकोपना॥३४॥

चलाए हुए बाण, शूल, चक्र, परश्वधों (फरसे) को अनायास देवी ने क्रीड़ा की तरह अपने धनुष से छोड़े हुए बाणों द्वारा सहज ही में काट गिराया अर्थात् खण्ड-खण्ड कर दिया ॥३०॥ तब कौशिकी के आगे बैठी हुई काली जो ललाट (माथे) में से निकली थी अपने त्रिशूल खट्वाङ्ग (अस्थि पंजर) की मार से राक्षसों को कुचलती हुई इधर उधर घूमने लगी जैसे बादल में बिजली घूमती है ॥३१॥ पिटने के डर से जहाँ-जहाँ राक्षस भागते थे वहाँ-वहाँ ब्रह्माणी (ब्रह्मा की शक्ति) कुशा से कमण्डल के जल का छींटा देकर उन (राक्षसों) का बल वीर्य नाश करने लगी ॥३२॥ क्रोध से माहेश्वरी (शिव की शक्ति) ने त्रिशूल से, (विष्णु की शक्ति) ने चक्र से, कौमारी (स्वामि कार्तिक की शक्ति) ने शक्ति (भाले) से दैत्यों का संहार किया ॥३३॥ ऐन्द्री (इन्द्र की शक्ति) ने वज्र फेंक कर सैकड़ों दैत्य दानवों को काट दिया उनके शरीर से रक्त बहने लगा और वे पृथिवी पर गिर गये ॥ ३४ ॥ वाराही (वाराह

ऐन्द्री कुलिशपातेन शतशोदैत्यदानवाः॥पेतुर्विदारिताः पृथ्व्यां रुधिरौघप्रवर्षिणः॥३५॥तुण्डप्रहारविध्वस्ता दंष्ट्राग्रक्षतवक्षसः ॥ वाराहमूर्त्यान्यपतंश्चक्रेण च विदारिताः॥३६॥ नखैर्विदारितांश्चान्यान्भक्षयन्ती महासुरान्॥ नारसिंही चचाराजौ नादापूर्णदिगंतरा॥३७॥ चण्डाट्टहासैरसुराः शिवदूत्यभिदूषिताः ॥ पेतुःपृथिव्यांपतितांस्तांश्चखादाथ सा तदा ॥३८॥ इति मातृगणंक्रुद्धंमर्दयन्तंमहासुरान्॥

भगवान की शक्ति) की निकली हुई दंष्ट्रा की (तुण्ड) मार से तथा चक्र द्वारा राक्षसों की छाती फटकर माँस टुकड़े-टुकड़े होकर पृथ्वी पर गिर पड़े ॥३५॥ नारसिंही (नृसिंह की शक्ति) अपने घोर शब्द से दिशा विदशा को पूर्ण करती हुई नखून से बड़े-बड़े असुरों को फाड़ कर खाते-खाते घूमने लगी ॥३६॥ और शिवदूती के प्रचण्ड अट्टहास शब्द से निस्तेज हो सब असुर पृथ्वी पर गिर गये और देवी त्रिशूल से काट-काट कर टुकड़े करने लगी ॥३७॥ इस तरह मातृ गणों द्वारा सब असुर सेना का नाश होते देख बहुत से असुर लड़ाई छोड़-छोड़ भागने लगे ॥ ३८ ॥ मातृगण से दैत्य सेना को पीड़ित होकर भागते हुए देख "रक्तबीज" ‡ नामक राक्षस क्रोध-

---

‡ किसी समय रम्भ राक्षस और उसकी स्त्री महिषी चिता में भस्म हुए थे उनके रक्त से उत्पन्न जो असुर महिषासुर के मन्त्री का भाई था, यह रक्तप्रधान (रक्तबीज) था। इसकी कथा पद्मपुराण में है।

॥११॥ एतस्मिन्नन्तरे भूप विनाशाय सुरद्विषाम् ॥ भवायामरसिंहानामतिवीर्यबलान्विताः ॥ १२ ॥❀ ब्रह्मेशगुहविष्णूनां तथेन्द्रस्य च शक्तयः ॥ शरीरेभ्यो विनिष्क्रम्य तद्रूपैश्चण्डिकां ययुः ॥१३॥ यस्य देवस्य यद्रूपं यथाभूषणवाहनम् ॥ तद्वदेव हि तच्छक्तिरसुरान्योद्धुमाययौ ॥१४॥ हंसयुक्त-विमानाग्रे साक्षसूत्रकमण्डलुः ॥ आयाता ब्रह्मणः[1] शक्तिर्ब्र-

काली को घेर लिया ॥११॥ हे राजा ! इसी समय में असुर दल को संहार करने और देवताओं का भय नाश करने के लिये ॥१२॥ ब्रह्मा, ईश (महादेव) गुह (स्वामिकार्तिक) विष्णु और इन्द्र के शरीरों से शक्तियाँ निकल कर उन्हीं देवताओं के समान रूप और वीर्य बल से युक्त चण्डिका के समीप आईं ॥१३॥ जिस देवता का जैसा रूप आभूषण तथा वाहन है निश्चय उसी के समान रूप आदि से युक्त शक्तियाँ असुरों से लड़ने के लिये आईं ॥१४॥ हंस युक्त विमान पर बैठी हुई अक्षमाला और

---

*वामन पुराणे ॥ निनदन्त्यास्ततोदेव्या ब्रह्माणी मुखतोऽभवत् । हंसयुक्त विमानस्था साक्षसूत्रकमण्डलुः ॥ १ ॥ माहेश्वरी त्रिनेत्रा च वृषारूढा त्रिशूलिनी ॥ महाहिवलया रौद्रा जटामण्डलिनीक्षणात् ॥२॥ कण्ठादथ च कौमारी बर्हिपत्त्राथ शक्तिनी ॥ समुद्भूता च देवर्षे मयूर वरवाहना ॥३॥ बाहुभ्यां गरुड़ारूढा शंखचक्रगदासिनी ॥ शार्ङ्ग बाणधरा जाता वैष्णवी रूपशालिनी ॥४॥ महोग्रमुसला रौद्रा दंष्ट्रोल्लिखितभूतला ॥ वाराही पृष्ठतो जाता शेषनागोपरिस्थिता ॥५॥ वज्राङ्कुशोद्यतकरा नानालंकारभूषिता ॥ जातागजेन्द्रपृष्ठस्था माहेन्द्रीस्तनमंडलात् ॥६॥ विक्षिपन्ती सटाक्षेपैर्ग्रहनक्षत्रतारकाः ॥ नखिनी हृदयाज्जाता नारसिंही सुदारुणा ॥७॥❀

[1] विष्णु धर्मोत्तरे ॥ तत्रब्राह्मी चतुर्वक्त्रा षड्भुजा हंस वाहना ॥ पिङ्गाभाभूषणोपेत मृगचर्मोत्तरीयका ॥ वरं सूत्रं स्रुचं धत्ते दक्ष-

ह्माणी साभिधीयते ॥१५॥ माहेश्वरी[2] वृषारूढा त्रिशूलवरधारिणी ॥ महाहिवलया प्राप्ता चन्द्ररेखा विभूषणा ॥१६॥ कौमारी[3] शक्तिहस्ता च मयूरवरवाहना ॥ योद्धुमभ्याययौ दैत्यानम्बिका गुहरूपिणी ॥१७॥ तथैव वैष्णवी[4] शक्तिर्गरुडोपरिसंस्थिता ॥ शङ्खचक्रगदाशार्ङ्गखड्गहस्ताभ्युपाययौ ॥१८॥ यज्ञवाराहमतुलं रूपं या बिभ्रतो हरेः ॥ शक्तिः सा-

कमण्डल लेकर ब्रह्मा की शक्ति आई उसको ब्रह्माणी कहा गया ॥१५॥ माहेश्वरी बैल पर बैठ कर त्रिशूल और वर को धारण करे हुए माथे पर अर्द्ध चन्द्रमा से सुशोभित तथा बड़े-बड़े सर्पों का चूड़ा पहरे महादेव की शक्ति माहेश्वरी आई ॥१६॥ कौमरी हाथ में शक्ति (भाला) लिये मोर पर बैठी हुई गुहरूपिणी [कार्तिकेय की शक्ति] अम्बिका की तरफ से राक्षसों से लड़ने आई ॥१७॥ वैसे ही वैष्णवी [विष्णु की शक्ति] गरुड़ पर सवार हो शंख चक्र गदा शार्ङ्ग [धनुष] तथा खड्ग हाथों में लेकर आई ॥१८॥ यज्ञ वाराह भगवान् की शक्ति वाराही भी वहाँ युद्ध

बाहुत्रयेक्रमात ॥ वामेतु पुस्तकं कुडींम्बिभ्रती चाभयप्रदा ॥१॥ माहेश्वरी वृषारूढा पञ्चवक्त्रा त्रिलोचना ॥ बालेन्दुभृज्जटाजूटा शुल्का सर्ववरप्रदा ॥ षड्भुजावरदा दत्ते सूत्रं डमरुकं तथा ॥ २ ॥ शूलं घण्टा भये वामे सैव धत्ते महा भुजा ॥ शूलं घंटा भयं वामे सैव धत्ते महाभुजा ॥ २ ॥ कौमारी रक्तवर्णा स्या षड् वक्त्रासार्क लोचना ॥ रवि बाहुर्मयूरस्था वरदा शक्तिपाणिनी ॥ पताकां बिभ्रती दण्डं पात्रवाणं च दक्षिणे ॥ वामेचापमधो घंटां कमलं कुक्कुटं त्वधः ॥ परशुं बिभ्रती तीक्ष्णं तदधस्त्वभयान्विता ॥३॥ बाहुभिर्गरुडारूढा शंख चक्र गदासिनी ॥ शार्ङ्ग बाणधरा जाता वैष्णवी रूपशालिनी ॥४॥ कृष्णवर्णातु

प्याययौ तत्रवाराहीं[5] बिभ्रती तनुम्॥१६॥नारसिंही[6] नृसिंहस्य बिभ्रती सदृशं वपुः ॥ प्राप्ता तत्र सटाक्षेपक्षिप्तनक्षत्र संहतिः ॥२०॥ वज्रहस्ता तथैवैन्द्री[7] गजराजोपरिस्थिता ॥ प्राप्ता सहस्रनयना यथा शक्रस्तथैव सा ॥२१॥ ततः परिवृतस्ताभिरीशानो देवशक्तिभिः ॥ हन्यन्तामसुराः शीघ्रं मम प्रीत्याह चण्डिकाम् ॥२२॥ ततो देवी शरीरात्तु विनिष्क्रान्तातिभीषणा ॥ चंडिका शक्तिरत्युग्रा शिवा[8] शतनिनादिनी ॥२३॥ सा चाह धूम्रजटिलमीशानमपराजिता ॥ दूत त्वं गच्छ भगवन्पार्श्वं शुम्भनिशुम्भयोः

में वाराह रूप में आई ॥१६॥ नारसिंही शक्ति नृसिंह के समान शरीर धारण कर युद्ध में आई उसके शिर के बाल हिलने से तारागण सब हिलने लगे ॥२०॥ वज्र हाथ में लेकर इन्द्र के समान ऐन्द्री गजराज [ऐरावत हाथी] पर बैठकर हज़ार नेत्रयुक्त युद्ध में आई ॥२१॥ इसके बाद देव शक्तियों से घिरे हुए ईशान [महादेव] ने चण्डिका से कहा मेरी प्रीति से इन "राक्षसों को जल्दी मारो" ॥२२॥ इसके बाद देवी के शरीर से अत्यन्त भयावनी अत्युग्रशत शिवा [असंख्य गीदड़] के समान चिल्लाने वाली "चण्डिका" शक्ति निकली ॥२३॥ और उस अपराजिता

वाराही शूकरास्यामहोदरी ॥ वरदा दण्डिनी खड्गं बिभ्रती दक्षिणेसदा॥ खेटपाशाभया वामे सैव चाथ लसद्भुजा ॥५॥ नारसिंहस्येयं नारसिंही ॥६॥ ऐन्द्री सहस्र दृक्सौम्या हेमाभा गजसंस्थिता ॥ वरदा सूत्रिणी वज्रं बिभ्रत्यूर्ध्वे तु दक्षिणे ॥ वामेनु कलशं पात्रं त्वभयं दक्षिणे करे ॥

॥२४॥ ब्रूहि शुम्भं निशुम्भं च दानवावतिगर्वितौ ॥ ये चान्ये दानवास्तत्र युद्धाय समुपस्थिताः ॥२५॥ त्रैलोक्यमिन्द्रो लभतां देवाः सन्तु हविर्भुजः ॥ यूयं प्रयात पातालं यदि जीवितुमिच्छथ ॥२६॥ बलावलेपादथ चेद्भवन्तो युद्धकाङ्क्षिणः ॥ तदागच्छत तृप्यन्तु मच्छिवाः पिशितेन वः ॥२७॥ यतो नियुक्तो दौत्येन तया देव्या शिवः स्वयम् ॥❀ शिवदूतीति

भगवती ने धूम्रजटा वाले ईशान [महादेव] से कहा हे भगवन् ! आप शुम्भ और निशुम्भ के पास मेरा दूत होकर जाइये ॥२४॥ और अत्यन्त वीर्य युक्त शुम्भ निशुम्भ तथा अन्य दानवों से कहिये अगर तुम जीवित रहा चाहते हो तो इन्द्र तीनों लोक का राज पावे देवता लोग यज्ञ भाग पावें और तुम लोग पाताल को भागो ॥२५॥ और यदि अपने बल का घमंड कर युद्ध की इच्छा है तो आओ तुम सब [राक्षसों] का रक्त पीकर हमारी सब [शिवा] योगिनी तृप्त हो जायँगी ॥२६॥ उस देवी [अपराजिता] ने स्वयं शिव भगवान को दूत का काम करने को नियुक्त किया इसलिये तब से वह "शिवदूती" नाम से संसार में विख्यात

❀ शिवदूती का ध्यान ॥

शिवदूतीति साख्याता चण्डी फेरुशतैर्वृता ॥ चतुर्भुजां महाकायां सिन्दूर सदृश द्युतिम् ॥ रक्तदन्तां मुण्डमालां जटाजूटार्धे चन्द्रधृक् ॥ नागकुण्डल हाराभ्यां शोभितं नखरोज्वलम् ॥ व्याघ्रचर्मपरीधानं दक्षिणे चैवशूलधृक् ॥ वामे पाशं तथा चर्म बिभ्रदूर्ध्वाधरक्रमात् ॥ स्थूलवक्त्रं च पीनौष्ठं भृंगमूर्तिभयंकरम् ॥ निक्षिप्य दक्षिणं पादं संतिष्ठत्कुणपोपरि ॥ वामपादंश्शृगालस्यपृष्ठे फेरु शतैर्वृतम् ॥ तादृशं शिवदूत्यास्तुमूर्द्धिं ध्याये भूद्धितये ॥

लोकेऽस्मिंस्ततः सा ख्यातिमागता ॥२८॥ तेऽपि श्रुत्वा वचो देव्याः शर्वाख्यातं महासुराः ॥ अमर्षापूरिता जग्मुर्यतः कात्यायनी स्थिता ॥२९॥ ततः प्रथममेवाग्रे शरशक्त्यृष्टिवृष्टिभिः ॥ ववर्षुरुद्धतामर्षास्तान्देवीममरारयः ॥३०॥ सा च तान्प्रहितान्बाणाञ्छूलशक्तिपरश्वधान् ॥ चिच्छेद लीलयाध्मातधनुर्मुक्तैर्महेषुभिः ॥३१॥ तस्याग्रतस्तथा काली शूलपातविदारितान्॥ खट्वाङ्गपोथितांश्चारीन्कुर्वती व्य-

---

हुई ॥२७॥ इसके अनन्तर सब राक्षस शिव द्वारा भगवती की बातें सुनकर क्रोधावेश हो जहाँ युद्ध में ‘‘कात्यायनी’ देवी थी वहां ही गये ॥२८॥ और बढ़े हुए क्रोध में उन्मत्त राक्षस गण शर (बाण) शक्ति (भाला) ऋष्टि (छोटी तरवार) भगवती के समक्ष जाते ही वरषा करने लगे ॥ २९ ॥ (राक्षसों द्वारा) चलाए हुए बाण, शूल, चक्र, परश्वधों (फरसे) को अनायास देवी ने क्रीड़ा की तरह अपने धनुष से छोड़े हुए बाणों द्वारा सहज ही में काट गिराया अर्थात् खण्ड-खण्ड कर दिया ॥३०॥ तब कौशिकी के आगे बैठी हूई काली जो ललाट (माथे) में से निकली थी अपने त्रिशूल खट्वाङ्ग (अस्थि पंजर) की मार से राक्षसों को कुचलती हुई इधर उधर घूमने लगी जैसे बादल में बिजली घूमती है ॥३१॥ पिटने के डर से जहाँ-जहाँ राक्षस भागते थे वहाँ-वहाँ ब्रह्माणी (ब्रह्मा की शक्ति) कुशा से कमण्डल के जल का छींटा देकर उन (राक्षसों) का बल वीर्य नाश करने लगीं ॥३२॥ क्रोध से माहेश्वरी (शिव की शक्ति)

चरत्तदा ॥३२॥ कमण्डलुजलाक्षेपहतवीर्यान्हतौजसः ॥ ब्रह्माणी चाकरोच्छत्रून्येन येन स्म धावति ॥३३॥ माहेश्वरी त्रिशूलेन तथा चक्रेण वैष्णवी ॥ दैत्याञ्जघान कौमारी तथा शक्त्यातिकोपना॥३४॥ ऐन्द्री कुलिशपातेन शतशो दैत्यदानवाः॥ पेतुर्विदारिताः पृथ्व्यां रुधिरौघप्रवर्षिणः ॥३५॥ तुण्डप्रहारविध्वस्ता दंष्ट्राग्रक्षतवक्षसः ॥ वराहमूर्त्यान्यपतंश्चक्रेण च विदारिताः ॥३६॥ नखैर्विदारितांश्चान्यान्भक्षयन्ती महासुरान्॥ नारसिंही चचाराजौ नादापूर्णदिगम्बरा ॥३७॥ चण्डाट्टहासैरसुराः शिवदूत्य-

---

ने त्रिशूल से, (विष्णु की शक्ति) ने चक्र से, कौमरी (स्वामि कार्तिक की शक्ति) ने शक्ति (भाले) से दैत्यों का संहार किया ॥३३॥ ऐन्द्री (इन्द्र की शक्ति) ने वज्र फेंक कर सैकड़ों दैत्य दानवों को काट दिया उनके शरीर से रक्त बहने लगा और वे पृथिवी पर गिर गये ॥३४॥ वाराही (वाराह भगवान की शक्ति) की निकली हुई दंष्ट्रा की (तुण्ड) मार से तथा चक्र द्वारा राक्षसों की छाती फटकर माँस टुकड़े-टुकड़े होकर पृथ्वी पर गिर पड़े ॥३५॥ नारसिंही (नृसिंह की शक्ति) अपने घोर शब्द से दिशा विदशा को पूर्ण करती हुई नखून से बड़े-बड़े असुरों को फाड़ कर खाते-खाते घूमने लगी ॥३६॥ और शिवदूती के प्रचण्ड अट्टहास शब्द से निस्तेज हो सब असुर पृथ्वी पर गिर गये और देवी त्रिशूल से काट-काट कर टुकड़े करने लगी ॥३७॥ इस तरह मातृ गणों द्वारा सब असुर

भिदूषिताः ॥ पेतुः पृथिव्यां पतिताँस्ताँश्चखादाथ सा तदा ॥ ३८॥ इति मातृगणं क्रुद्धं मर्दयन्तं महासुरान्॥ दृष्ट्वाभ्युपायैर्विविधैर्नेशुर्देवारिसैनिकाः॥ ३९॥ पलायनपरान् दृष्ट्वादैत्यान्मातृगणार्दितान्॥ योद्धुमभ्याययौक्रुद्धः रक्तबीजो महासुरः ॥४०॥ रक्तबिन्दुर्यदा भूमौ पतत्यस्य शरीरतः ॥ समुत्पतति मेदिन्यां तत्प्रमाणस्तदासुरः ॥४१॥ युयुधे स गदापणिरिन्द्रशक्त्या महासुरः ततश्चैन्द्री स्ववज्रेण रक्तबीजमताडयत् ॥४२॥ कुलिशेनाहतस्याशु तस्य सुस्राव शोणितम्॥

सेना का नाश होते देख बहुत से असुर लड़ाई छोड़-छोड़ भागने लगे ॥३८॥ मातृगण से दैत्य सेना को पीड़ित होकर भागते हुए देख "रक्तबीज" ‡ नामक राक्षस क्रोधयुक्त लड़ने गया ॥३९॥ इसके शरीर से जितनी रक्त (खून की बूँद] बिन्दु पृथ्वी पर गिरती थीं वह सब उसी समय उसके समान बलशाली असुर होती थीं । इसी से रक्तबीज नाम हुआ ॥४०॥ वह [रक्तबीज] महाअसुर हाथ में गदा ले इन्द्रशक्ति से लड़ने लगा और ऐन्द्री ने अपने वज्र से मारा ॥४१॥ वज्र की चोट से उस राक्षस के शरीर से रक्त निकला जिससे उसी के समान रूप और बलवान् योद्धा पैदा होगये ॥४२॥ उस [रक्त-

---

‡ किसी समय रम्भ राक्षस और उसकी स्त्री महिषी चिता में भस्म हुए थे उनके रक्त से उत्पन्न जो असुर महिषासुर के मन्त्री का भाई इसकी विशेष कथा पद्मपुराण में है यह रक्त प्रधान (रक्तबीज) था ।

समुत्तस्थुस्ततो योधास्तद्रूपास्तत्पराक्रमाः ॥ ४३ ॥ यावन्तः पतितास्तस्य शरीराद्रक्तबिन्दवः ॥ तावन्तः पुरुषा जातास्तद्वीर्यबलविक्रमाः ॥४४॥ ते चापि युयुधुस्तत्र पुरुषा रक्तसम्भवाः॥ समं मातृभिरत्युग्र शस्त्रपातातिभीषणम् ॥४५॥ पुनश्च वज्रपातेन क्षतमस्य शिरो यदा॥ ववाह रक्तंपुरुषास्ततो जाताः सहस्रशः ॥४६॥ वैष्णवी समरे चैनं चक्रेणाभिजघान ह॥ गदया ताडयामास ऐन्द्रीतमसुरेश्वरम् ॥ ४७ ॥ वैष्णवी चक्रभिन्नस्य रुधिरस्रावसम्भवैः॥ सहस्रशो जगद्व्याप्तं तत्प्रमाणै र्महासुरैः ॥ ४८ ॥ शक्त्या जघान कौमारी वाराही च तथा-

---

बीज] के शरीर से जितने रक्त के बिन्दु गिरे उतनी ही संख्या में बलवीर्य युक्त पराक्रम वाले राक्षस पैदा हुए ॥४३॥ सब शोणित बिन्दु से पैदा हुए राक्षस सभी संग्राम में अत्यन्त उग्र शस्त्रों की वर्षा करके भयंकर युद्ध करने लग ॥४४॥ अनन्तर ऐन्द्री ने वज्र से उसका शिर काट दिया तब उसके शरीर से रक्त बहने लगा तब सहस्रों रक्तबीज पेदा होगये ॥४५॥ युद्ध-क्षेत्र में ऐन्द्री ने मारा तब भाग कर वैष्णवी से लड़ने लगा फिर वैष्णवी ने चक्र से काटा और गदा से मारा ॥४६॥ वैष्णवी के चक्र के घाव से रुधिर निकलने पर रक्तबीज के तद्रूप असंख्य असुर संसार में फैल गये ॥४७॥ फिर बढ़े हुए रक्तबीज महाअसुर को कौमारी ने शक्ति से, बाराही ने तरवार से तथा माहेश्वरी ने त्रिशूल से मारा ॥४८॥ और महा असुर रक्तबीज भी अति क्रुद्ध

सिना ॥ माहेश्वरी त्रिशूलेन रक्तबीजं महासुरम् ॥ ४९॥ स चापि गदया दैत्यः सर्वा एवाहनत् पृथक् ॥ मातृः कोपसमाविष्टो रक्तबीजो महासुरः ॥ ५० ॥ तस्याहतस्य बहुधा शक्तिशूलादिभिर्भुवि ॥ पपात यो वै रक्तौघस्तेनासञ्छतशोऽसुराः ॥५१॥ तैश्चासुरासृक्ससम्भूतैरसुरैः सकलं जगत् ॥ व्याप्तमासीत्ततो देवा भयमाजग्मुरुत्तमम् ॥५२॥ तान्विषण्णान् सुरान् दृष्ट्वा चण्डिका प्राह सत्वरा ॥ उवाच कालीं चामुण्डे विस्तरं वदनं कुरु ॥५३॥ मच्छस्त्रपातसम्भूतान् रक्तबिन्दून्महासुरान् ॥ रक्तबिन्दोः प्रतीच्छ त्वं वक्त्रेणानेन वेगिता ॥५४॥ भक्षयन्ती चर रणे तदु-

---

हो सब मातृकाओं को गदा से पृथक्-पृथक् मारने लगा ॥४९॥ तब शक्ति [सांग व भाला] त्रिशूल आदि अनेक अस्त्र-शस्त्रों से [रक्तबीज को] मारने से जितनी संख्या में रक्तबिन्दू पृथ्वी पर गिरे उनसे असंख्य असुर [रक्तबीज] पैदा होगये ॥५०॥ उस असुर के रूप के तुल्य असुर समूह से सम्पूर्ण संसार भर गया इससे देवतागण बहुत भयभीत हुए ॥५१॥ तब चण्डिका भगवती देवगण को भयभीत देख शीघ्र ही काली से कहने लगी कि हे चामुण्डे ! तुम अपना मुख बड़ा करो ॥५२॥ मेरे शस्त्र के आघात द्वारा असुरों के रक्त और उससे उत्पन्न दैत्य समूह को रण-क्षेत्र में घूमती हुई जल्दी २ खाओ ॥५३॥ जिससे उनका रक्त पृथ्वी में न गिरे इसी प्रकार वह [रक्तबीज] क्षीण

त्पन्नान्महासुरान्।। एवमेषक्षयं दैत्यः क्षीणरक्तोगमिष्यति ।।५५।। भक्ष्यमाणास्त्वया चोग्रा न चोत्पत्स्यन्ति चापरे ।। इत्युक्त्वा तां ततो देवीशूलेनाभिजघान तम् ।। ५६ ।। मुखेन काली जगृहे रक्तबीजस्य शोणितम् ।। ततोऽसावाजघानाथ गदया तत्र चण्डिकाम् ।।५७।। न चास्या वेदनां चक्रे गदापातोऽल्पिकामपि ।। तस्याहतस्य देहात्तु बहु सुस्राव शोणितम् ।।५८।। यतस्ततस्तद्वक्त्रेण चामुण्डा सम्प्रतीच्छति ।। मुखे समुद्गता येऽस्या रक्तपातान्महासुराः ।। तांश्चखादाथ चामुण्डा पपौ तस्य च शोणि-

---

रक्त हो जायगा ।।५४।। तुम उग्रा हो तेरे इस प्रकार खाने से दैत्य उत्पन्न नहीं होंगे इस प्रकार कालीजी को समझाकर देवी जी ने त्रिशूल से रक्तबीज को मारा और ।।५५।। तब कालीजी ने रक्तबीज का रक्त जो उसके शरीर से निकला था अपने मुंह से पीलिया तब रक्तबीज ने युद्ध में देवी को गदा से मारा ।। ५६।। परन्तु गदा ने देवी को किंचिन्मात्र भी पीडित नहीं किया और उस घायल दैत्य की देह से रुधिर बहने लगा ।। ५७ ।। चामुण्डा ने दैत्य के शोणित को मुंह से पीना प्रारम्भ कर दिया उस से चामुण्डा के मुँह में जो असुर पैदा होते थे ।।५८।। उन सब दैत्यों को चामुण्डा खा जाती और रक्त को पी लेती थी देवी ने शूल, बाण, तरवार, दो धार की ऋष्टि (एक तरफ धारवाली

तम् ॥ ५९ ॥ ❀देवीशूलेन वज्रेण बाणैरसिभिर्ऋष्टिभिः॥जघानरक्तबीजं तं चामुण्डापीतशोणितम् ॥ ६० ॥ स पपात महीपृष्ठे शस्त्रसङ्घसमाहतः ॥ नीरक्तश्च महीपाल रक्तबीजो महासुरः ॥६१॥ ततस्ते हर्षमतुलमवापुस्त्रिदशा नृप॥ ६२ ॥ तेषां मातृगणोजातो ननर्तासृङ्मदोद्धतः ओं ॥ ६३ ॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी महात्म्ये रक्तबीजवधो नामाष्टमोऽध्यायः ॥८॥ उवाच १ अर्ध १ श्लोक ६१ एवं ६३ एवमादितः ॥ ५०२ ॥

ॐ जय जय मार्कण्डेयपुराणेसावर्णिकेमन्वन्तरे देवी माहात्म्ये सत्याः सन्तु (यजमानस्य कामाः) जगदम्बार्पणमस्तु ॥ ऐसा बोलकर जल छोड़ना ॥

वैदिक आहुति ८ अध्याय की ॥

एक पान पर शाकल्य १ कमलगट्टा घी में भिगोकर १ सुपारी, २ लोंग, १ छोटी इलायची, गूगल, इस अध्याय में विशेष लाल चन्दन ही है ॥ सब चीजें स्रुचो में रख खड़े होकर मंत्र २६० पृ० लिखे बोलना ॥

तरवार) से रक्तबीज को मार दिया तब वह रक्तहीन होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा ॥६०॥ मेधा ऋषि बोले ॥६१॥ हे राजा सुरथ रक्तबीज के मरने से देवगण अत्यन्त प्रसन्न हो पुष्प बरसाने लगे ॥६१॥ और सब मातृगण रक्त को पी-पीकर तृप्त हो नृत्य करने लगीं ॥६२॥ गन्धर्वगाने तथा अप्सरागण नाचने लगे ॥

तान्त्रिक आहुति ॥

ॐ जयन्ती सांगायै सायुधायै शक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै रक्ताद्यै अष्टमातृ सहितायै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ॥ समान सब ऊपर लिखा है ॥

अथ नवमाध्यायारम्भः ॥

अथ ध्यानम् ॥

ॐ बन्धूककाञ्चननिभां रुचिराक्षमालां पाशाङ्कुशौ च वरदां निजबाहुदण्डैः ॥ विभ्राणमिन्दुसकलाभरणां त्रिनेत्रामर्धाम्बिकेशमनिशं वपुराश्रयामि ॥ ६ ॥

राजोवाच ॥१॥ ओं विचित्रमिदमाख्यातं भगवन्भवता मम॥देव्याश्चरितमाहात्म्यंरक्तबीजबधाश्रितम् ॥ २ ॥ भूयश्चेच्छाम्यहं श्रोतुं रक्तबीजे निपातिते ॥ चकार शुम्भो यत्कर्म निशुम्भश्चातिकोपनः ॥३॥

सुवर्ण (गुड़हल) के समान रक्तवर्ण सुन्दर रुद्राक्ष की माला पहरे हुये पाश, अंकुश, दंड और वर को धारण करे हुए माथे पर अर्द्धचन्द्र सुशोभित है सम्पूर्ण आभूषणों से युक्त तीन नेत्र अर्द्धनारीश्वररूप के आश्रित हूँ ।

राजा ने कहा ॥१॥ हे भगवन् ! रक्तबीज के बध का आश्रय करके आपने अद्भुत देवी चरित्र का माहात्म्य मुझ से कहा ॥२॥ मैं अब यह सुनना चाहता हूं कि रक्तबीज के अनन्तर क्रुद्ध हो शुम्भ और निशुम्भ ने क्या कर्म किया ॥३॥

ऋषिरुवाच ॥४॥ चकार कोपमतुलं रक्तबीजे निपातिते ॥ शुम्भासुरो निशुम्भश्च हतेष्वन्येषु चाहवे ॥५॥ हन्यामानं महासैन्यं विलोक्यामर्षमुद्वहन् ॥ अभ्यधावन्निशुम्भोऽथ मुख्ययासुरसेनया ॥६॥ तस्याग्रतस्तथा पृष्ठे पार्श्वयोश्च महासुराः ॥ संदष्टौष्ठपुटाः क्रुद्धा हन्तुं देवीमुपाययुः ॥७॥ आजगाम महावीर्यः शुम्भोऽपि स्वबलैर्वृतः ॥ निहन्तुं चण्डिकां कोपात्कृत्वा युद्धं तु मातृभिः ॥८॥ ततोयुद्धमतीवासीद्देव्याः शुम्भनिशुम्भयोः ॥ शरवर्षमतीवोग्रं मेघयोरिव वर्षतोः ॥९॥ चिच्छेदास्ताञ्छरांस्ताभ्यां चण्डिकाशु-

---

मेधा ऋषि ने कहा ॥४॥ युद्ध में रक्तबीज के मारेजाने पर तथा और बहुत सेना के नाश हो जाने से शुम्भ और निशुम्भ असुरों ने बड़ा क्रोध करा ॥५॥ अनन्तर बहुत बड़ी असुर सेना का नाश होते देख अच्छे-अच्छे सेना समूह से घिर कर शुम्भ असुर अत्यन्त क्रोध कर दौड़ा ॥६॥ तब उस (शुम्भ असुर) के आगे पीछे दोनों बगल में असुरगण दाँत पीसते तथा दाँतों से होठ को चबांते हुए क्रोध कर देवी को मारने के लिये चले ॥७॥ अपनी सेना द्वारा चारों ओर से घिरा हुआ महावीर्य शुम्भ असुर भी मातृगण के साथ युद्ध करने और देवी को मारनेके लिये कुपित ही आगे बढ़ा ॥८॥ तब शुम्भ तथा निशुम्भ के साथ देवी का घोर संग्राम हुआ जिस प्रकार वर्षाकाल में मेघ बरसते हैं ठीक उसी प्रकार वाण की उग्र वर्षा होने लगी ॥९॥ तब चण्डिका उन दोनों असुरेश्वर शुम्भ तथा निशुम्भ के चलाये शर जाल

शरोत्करैः ॥ ताडयामास चाङ्गेषु शस्त्रौघैरसुरेश्वरौ ॥१०॥ निशुम्भो निशितं खड्ग चर्म चादाय सुप्रभम् ॥ अताडयन्मूर्ध्नि सिंहं देव्या वाहनमुत्तमम् ॥११॥ ताडिते वाहने देवी क्षुरप्रेणासिमुत्तमम् ॥ निशुम्भस्याशु चिच्छेद चर्म चाप्यष्टचन्द्रकम् ॥१२॥ छिन्ने चर्मणि खड्गे च शक्तिं चिक्षेप सोऽसुरः ॥ तामप्यस्य द्विधा चक्रे चक्रेणाभिमुखागताम् ॥१३॥ कोपाध्मातो निशुम्भोऽथ शूलं जग्राह दानवः ॥ आयातं मुष्टिपातेन देवी तच्चाप्यचूर्णयत् ॥१४॥ आविध्याथगदां सोऽपि चिक्षेप चण्डिकां प्रति ॥ सापि देव्या त्रिशू-

को अपने शीघ्रता से चलाये शस्त्रों द्वारा उन दोनों असुरों के शरों को काट कर उन के अङ्गों को वेधने लगी ॥१०॥ निशुम्भ ने नङ्गी तरवार और चमकता हुआ चर्म (ढाल) ले देवी के वाहन सुन्दर सिंह के शिर में मारा ॥११॥ वाहन को पिटता हुआ देख देवी ने क्षुरप्र (बहुत तेजधार वाला बाण) चलाकर निशुम्भ की उत्तम तरवारको काट दिया तथा अष्ट चन्द्रक ढाल (जिसमें रत्न के जड़े हुए आठ चन्द्रमा बने थे) को भी काट कर चूर्ण कर दिया ॥१२॥ तरवार और ढाल के कट जाने पर उस (निशुम्भ) असुरने शक्ति (सांग व भाला) चलाई तब देवी ने आगे बढ़कर उस शक्ति के चक्र से दो टुकड़े कर दिये ॥१३॥ फिर विशेष क्रोध करके निशुम्भ ने शूल उस देवी पर चलाई परन्तु देवी ने मुक्के के प्रहार से आने वाली शूल का चूर्ण कर दिया ॥१४॥ फिर उसने क्रोध से देवी के ऊपर गदा फेंकी उसको भी

लेनभिन्नाभस्मत्वमागता॥१५॥ततःपरशुहस्तं तमायांतंदैत्यपुङ्गवम्॥आहत्य देवीबाणौघैरपातयत भूतले॥१६॥तस्मिन्निपतिते भूमौनिशुम्भेभीमविक्रमे॥भ्रातर्यतीव संक्रुद्धः प्रययौ हन्तुमम्बिकाम् ॥१७॥ स रथस्थस्तथात्युच्चैर्गृहीतपरमायुधैः ॥ भुजैरष्टाभिरतुलैर्व्याप्याशेषं बभौ नभः॥१८॥तमायान्तं समालोक्य देवी शंखमवादयत्॥ज्याशब्दं चापिधनुषश्चकारातीव दुःसहम् ॥१९॥ पूरयामास ककुभो निज घण्टास्वनेन च ॥ समस्तदैत्यसैन्यानां तेजोबधविधायिना ॥२०॥ ततः सिंहो महानादैस्त्याजितेभमहामदैः ॥

देवी ने त्रिशूल से टुकड़े-टुकड़े कर भस्म कर दिया ॥१५॥ अनन्तर इसके दैत्यपुङ्गव (निशुम्भ) को फरसा लेकर आते हुए देख कर देवी ने बाणों से मारा तब वह असुर पृथ्वी पर गिर गया॥१६॥ बलवान भीम पराक्रमीभाई निशुम्भ को पृथ्वी पर गिरा देख अत्यन्त क्रोध कर शुम्भ असुर देवी को मारने के लिये दौड़ा ॥१७॥ वह (शुम्भ असुर) परम अस्त्रों से सजकर बड़ी बड़ी आठ भुजाओं द्वारा आकश को व्याप्त कर के रथ में बैठा था ॥१८॥ उसको आते हुए देख देवी ने शंख बजाया तथा धनुष पर प्रत्यंचा (रस्सी) बांध ने का शब्द भी अत्यन्त डरावना हुआ ॥१९॥ और सम्पूर्ण दैत्य सेना के तेज का नाश करने वाला घण्टा बजा कर सब दिशाओं को पूरित कर दिया ॥२०॥ हथियों के महामद को दूर करने वाले सिंह ने भी अपने

पूरयामास गगनं गां तथोपदिशो दश ॥२१॥ ततः कालो समुत्पत्य गगनं क्ष्मामताडयत् ॥ कराभ्यां तन्निनादेन प्राक्स्वनास्ते तिरोहिताः ॥२२॥ अट्टाट्टहासमशिवं शिवदूतो चकार ह ॥ तैः शब्दैरसुरास्त्रेसुः शुम्भः कोपं परं ययौ ॥२३॥ दुरात्मँस्तिष्ठ तिष्ठेति व्याजहाराम्बिका यदा ॥ तदा जयेत्यभिहितं देवैराकाशसंस्थितैः ॥२४॥ शुम्भेनागत्य या शक्तिर्मुक्ता ज्वालातिभीषणा ॥ आयान्ती वह्निकूटाभा सा निरस्ता महोल्कया ॥२५॥ सिंहनादेन शुम्भस्य व्याप्तं लोकत्रयान्तरम् ॥ निर्घातनिःस्वनो घोरो जितवान-

---

गर्जन द्वारा पृथ्वी तथा दसों दिशाओं को पूरित किया ॥२१॥ इसके बाद कालीने आकाश से कूद कर अपने दोनों हाथ से पृथ्वी पर आघात किया तिसके शब्द से पहले के सब शब्द मन्द हो गये ॥२२॥ बाद में शिवदूती ने शत्रुओं का अमङ्गल करने (भयंकर डराने) वाला अट्टहास करा जिसके सुनने से राक्षसों को बहुत भय तथा शुम्भ को क्रोध हुआ ॥२३॥ जब अम्बिका ने कहा “अरे दुष्ट ! ठहर-ठहर” तब प्रसन्न होकर आकाश में बैठ देवगण कहने लगे “जय हो २” ॥ अनन्तर शुम्भ असुर ने आकर अत्यन्त चमकती हुई शक्ति (साँग व भाला) चलाई जो प्रदीप्त अग्नि के झुण्ड के समान उसको आती देख देवी ने महोल्का नाम अपनी शक्ति से हटा दिया ॥२५॥ हे महीपाल ! शुम्भ असुर के सिंहनाद (चिल्लाने) से तीनों लोकों के बाहरी स्थान भी पूरित हो गये तथा उस निर्घात घोर शब्द ने उस समय

वनीपते ॥२६॥ शुम्भमुक्ताञ्छरान्देवी शुम्भस्तत्प्रहिताञ्शरान् ॥ चिच्छेद स्वशरैरुग्रैः शतशोऽथ सहस्रशः॥२७॥ततः सा चण्डिका क्रुद्धा शूलेनाभिजघान तम् ॥ स तदाभिहतो भूमौ मूर्च्छितो निपपातह ॥२८॥ततो निशुम्भः सम्प्राप्य चेतनामात्तकार्मुकः॥ आजघानशरैर्देवींकालीं केशरिणंतथा॥२९॥पुनश्च कृत्वा बाहूनामयुतं दनुजेश्वरः॥ चक्रायुधेन दितिजश्छादयामास चण्डिकाम्॥३०॥ ततो भगवती क्रुद्धा दुर्गा दुर्गार्तिनाशिनी॥चिच्छेदतानि चक्राणिस्वशरैः सायकांश्च तान् ॥३१॥ ततो निशुम्भो वेगेन गदा-

के और सब शब्दों को जीत लिया ॥२६॥ अनन्तर शुंभ के चलाये एक लक्ष शरों को देवी ने अपने उग्र शरों द्वारा काट दिया इसी प्रकार शुम्भ ने भी देवी के १ लाख शरों को निज उग्र शरों से छेद दिया ॥२७॥ तब क्रोध से देवी ने शुम्भ असुर को त्रिशूल से घायल किया तब शुंभ असुर घायल होने से मूर्छित हो पृथ्वी पर गिर गया ॥२८॥ इसी अवसर में निशुम्भ की मूर्छा गई [१७ संख्या के श्लोक की भाषा देखो] निशुम्भ ने चैतन्य (होश में आया] हो और धनुष लेकर शरों से देवी, काली और सिंह को घायल कर दिया ॥२९॥ तिसके बाद दनुजेश्वर (कश्यपजी की पत्नी दिति में उत्पन्न) निशुम्भ ने अयुत (दशहजार) बाहु, विस्तार कर चक्रायुध से चंडिका को आच्छादित (ढक दिया) किया ॥३०॥ तब दुःखित जनों की पीड़ा नाश करने वाली भगवती दुर्गा ने क्रोधाविष्ट हो (निशुम्भ के) चक्र बाणों को

मादाय चण्डिकाम् ॥ अभ्यधावत वै हन्तुं दैत्यसेनासमावृतः ॥३२॥ तस्यापतत एवाशु गदां चिच्छेद चण्डिका ॥ खड्गेन शितधारेण स च शूलं समाददे ॥३३॥ शूलहस्तं समायान्तं निशुम्भममरार्दनम् ॥ हृदि विव्याध शूलेन वेगाविद्धेन चण्डिका ॥ ३४ ॥ भिन्नस्य तस्य शूलेन हृदयान्निःसृतोऽपरः ॥ महाबलो महावीर्यस्तिष्ठेति पुरुषो वदन् ॥ ३५ ॥ तस्य निष्क्रामतो देवी प्रहस्य स्वनवत्ततः ॥ शिरश्चिच्छेद खड्गेन ततोऽसावपतद्भुवि ॥३६॥ ततः सिंहश्चखादोग्रं दंष्ट्राक्षुण्ण शिरोधरान्॥ असुरांस्तांस्तथा

अपने शरों से काट दिया ॥३१॥ तब दैत्य सेना से घिरा हुआ (राक्षस) निशुम्भ गदा लेकर देवी को मारने के लिये वेग से दौड़ा ॥३२॥ तब निशुम्भ के द्वारा चलाई हुई गदा को देवी चण्डिका ने तेज धार वाली तरवार से काट दिया ॥३३॥ तब देवगण को पीड़ित करने वाले निशुम्भ को शूल लेकर आया हुआ अपने समीप में देख चण्डिका ने शीघ्र ही अपने शूल से हृदय बेध दिया ॥३४॥ शूल से बेधे हुए उस निशुम्भ असुर के हृदय में से एक दूसरा महा बलवान तथा वीर्यवान पुरुष देवी से "ठहर-ठहर" कहता हुआ बाहर निकला ॥३५॥ तिसके बाद उसे बाहर निकले हुए असुर को देवी ने हँसते बोलते खड्ग से मार दिया तब वह असुर पृथ्वी पर गिर पड़ा ॥३६॥ तब दाँत से गर्दन को चबाता हुआ सिंह असुरों को खाने लगा, शिव-

काली शिवदूती तथापरान् ॥ ३७ ॥ कौमारीशक्तिनिर्भिन्नाः केचिन्नेशुर्महासुराः ॥ ब्रह्माणी मन्त्रपूतेन तोयेनान्ये निराकृताः ॥ ३८ ॥ माहेश्वरीत्रिशूलेन भिन्नाः पेतुस्तथापरे ॥ वाराहीतुण्डघातेन केचिच्चूर्णीकृता भुवि ॥३९॥ खण्ड खण्डं च चक्रेण वैष्णव्या दानवाः कृताः ॥ वज्रेणचैन्द्रीहस्ताग्रविमुक्तेन तथापरे ॥ ४० ॥ केचिद्विनेशुरसुराः केचिन्नष्टा महाहवात् ॥ भक्षिताश्चापरे काली शिवदूतीमृगाधिपैः ॐ ॥ ४१ ॥ इति श्री मार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरेदेवीमाहात्म्येनिशुम्भवधोनामनवमोऽध्यायः ॥९॥उवाच२श्लोक३९एवम्४१एवमादितः॥५४३॥

दूती और काली दूसरे और असुरों को खाने लगीं ॥३७॥ कौमरी की शक्ति से कोई कोई महाअसुर टुकड़े-टुकड़े होकर मर गये। ब्रह्माणी के मन्त्र से पवित्र किये जल द्वारा निस्तेज हो गये ॥३८॥ कितने असुर माहेश्वरी के त्रिशूल से मारे गये और कितनों को बाराही ने अपने दाँत की चोट से पृथ्वी पर चूर्ण किया ॥३९॥ वैष्णवी ने चक्र से कितने असुरों को खण्ड खण्ड कर दिया तथा कितने ही राक्षस ऐन्द्री के हाथ से निकले हुए वज्र से नाश हुए ॥४०॥ कितने ही दूसरों की झपट से मरे और कितने महायुद्ध से भाग गये और जो कुछ बचे उन सब को काली, शिवदूती और सिंह ने खा लिया ॥४१॥

ॐ जय जय मार्कण्डेयपुराणेसावर्णिकेमन्वन्तरे देवी माहात्म्ये सत्याः सन्तु (यजमानस्य कामाः) जगदम्बार्पणमस्तु ॥ ऐसा बोलकर जल छोड़ना ॥ वैदिक आहुति ६ अध्याय की ॥

एक पान पर शाकल्य १ कमलगट्टा, घी में भिगोकर १ सुपारी, २ लोंग, १ छोटी इलायची, गूगल, इस अध्याय में विशेष १ बेलफल व मैनफल है। सब चीजें स्रुची में रख खड़े होकर मंत्र बोलना ॥

तान्त्रिक आहुति ॥

क्लीं जयन्ती सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै भैरव्यै तारादेव्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ॥ सामान सब ऊपर लिखा है ॥

अथ दशमोऽध्यायः प्रारम्भः ॥

अथ ध्यानम् ॥

ॐ उत्तप्तहेमरुचिरां रविचन्द्रवन्हिनेत्रां धनुश्शरयुताङ्कुशपाशशूलम् ॥ रम्यैर्भुजैश्च दधतींशिवशक्तिरूपांकामेश्वरींहृदिभजामिधृतेन्दुलेखाम्॥ १०॥

ऋषिरुवाच ॥ १ ॥ ॐ निशुम्भं निहतं दृष्ट्वा भ्रातरं प्राणसम्मितम् । हन्यमानंबलं चैव शुम्भः❀

तपे हुए सुवर्ण के समान वर्ण सूर्य, चन्द्रमा और अग्नि ही जिसके ३ नेत्र हैं धनुष, वाण, अंकुश और पाश हाथों में धारण करे हुए शिव शक्तिरूप कामेश्वरी को ध्यान करता हूँ जिसके माथे पर अर्द्ध चन्द्रमा शोभित है ॥

❀ शिव पुराणे ॥ दैत्यौ शुम्भनिशुम्भाख्यौ भ्रातरौ सं बभूवतुः ॥ याचितं तपसाताभ्यां ब्रह्मणः परमेष्ठिनः ॥ अवध्य त्वं जगत्यस्मिन्पुरुषैरखिलैरपि ॥ अयोनि जातु या कन्यास्त्र्यङ्ग कोश समुद्भवा ॥ अजात पुंस्पर्श रति रविलङ्घ्य पराक्रमा ॥ तस्यास्तु नौ बधः संख्ये तस्यां कामाभिभूतये ॥ इति चाभ्यर्थितोब्रह्मा ताभ्यां प्राहतथास्त्विति ॥

क्रुद्धोऽब्रवीद्वचः ॥२॥ बलावलेपदुष्टे त्वं मा दुर्गे गर्वमावह ॥ अन्यासां बलमाश्रित्ययुद्धयसे याति मानिनी ॥३॥ देव्युवाच ॥४॥ एकैवाहं जगत्यत्र द्वितीया का ममापरा ॥ पश्यैता दुष्ट मय्येव विशन्त्यो मद्विभूतयः ॥५॥ ततः समस्तास्ता देव्यो ब्रह्माणी प्रमुखा लयम् ॥ तस्या देव्यास्तनौ जग्मुरेकैवासीत्तदाम्बिका ॥ ६ ॥ देव्युवाच ॥ ७ ॥ अहं विभूत्या बहुभिरिह रूपैर्यदास्थिता ॥ तत्संहतं मयैकैव तिष्ठाम्याजौ स्थिरो भव ॥ ८॥ ऋषिरुवाच ॥९॥ ततः प्रववृते युद्धं देव्याःशुम्भस्य चोभयोः ॥

ऋषि कहने लगे—॥१॥ प्राण के समान भाई निशुम्भ को मरा हुआ तथा बहुत बड़ी सेना को मरी हुई देख 'शुम्भ' क्रोध से यह बोला ॥२॥ हे अपने बल का घमंड करने वाली दुष्टे! हे दुर्गे! तू गर्व मत कर, हे अभिमानिनी! तू दूसरी शक्तियों का सहारा लेकर लड़ती है ॥३॥ देवी बोली ॥४॥ अरे दुष्ट इस संसार में "मैं" एक ही हूँ मेरे सिवाय और दूसरी कौन है? ये सब (शक्तियाँ) मेरी ही विभूति हैं देख ये सब मुझमें ही मिल जाती हैं ॥५॥ तब ब्रह्माणी आदि सब शक्तियाँ देवी के मुख में चली गई और अम्बिका वहाँ इकेली रह गई ॥६॥ तब देवी बोली ॥७॥ हे शुम्भ! मैं अपनी विभूतियों द्वारा इस युद्ध में अनेक रूप होकर विद्यमान थी उन सब रूपों का संहार करके अब एक ही हूँ तू स्थिर (खड़ा) रह ॥८॥ ऋषि बोले ॥९॥ देखने वाले देवगण और लोगों के समक्ष देवी और शुम्भ

पश्यतां सर्व देवानाम सुराणां च दारुणम् ॥१०॥ शरवर्षैः शितैः शस्त्रैस्तथास्त्रैश्चैव दारुणैः❀॥ तयोर्युद्धमभूद्भूयः सर्वलोकभयंकरम्॥११॥ दिव्यान्यस्त्राणि शतशो मुमुचे यान्यथाम्बिका ॥बभञ्जतानि दैत्येन्द्रस्तत्प्रतीघातकर्तृभिः ॥१२॥ मुक्तानि तेन चास्त्राणि दिव्यानि परमेश्वरी । बभञ्ज लीलयैवोग्रहुङ्कारोच्चारणादिभिः ॥१३॥ ततः शरशतैर्देवीमाच्छादयत सोऽसुरः ॥ सापि तत्कुपिता देवी धनुश्चिच्छेद चेषुभिः॥१४॥ छिन्ने धनुषिदैत्येन्द्रस्त-

दोनों का दारुण संग्राम होने लगा ॥१०॥ फिर भी देवी और शुम्भ की शरवृष्टि शित (तीक्ष्ण) शस्त्र कुन्तायुधादि तथा दारुण (घोर ब्रह्मास्त्रादि) अस्त्रों* के आपस में प्रहार से सब लोक को भय देने वाला युद्ध हुआ ॥११॥ अम्बिका (कौशिकी) ने जिन सैकड़ों प्रकार के दिव्य अस्त्रों को चलाया, उन सबका नाश करने वाले अस्त्रों द्वारा उन सब (चंडिका के अस्त्रों) को शुम्भ असुर ने काट दिया ॥१२॥ शुम्भासुर ने भी जो सब दिव्य अस्त्र चलाये, उन सबका परमेश्वरी चण्डिका ने आसानी (क्रीड़ामात्र) से उग्र हूंकार मात्र के उच्चारण आदि द्वारा नाश कर दिया ॥१३॥ तब उस असुर ने सौ बाणों से देवी को आच्छादित (ढांक) कर दिया और देवी ने भी क्रोध कर बाण से उसका धनुष काट

❀ अस्त्र प्रति घातास्त्राणि यथा—आग्नेयं वारुणेन॥ वारुणं वायव्येन॥ वायव्यं सार्पेण॥ सार्पं गारुडेन॥ गारुडं वैष्णवेन प्रतिहतं भवति एतानि धनुः शास्त्रे प्रसिद्धानि॥

था शक्तिमथाददे ।। चिच्छेद देवी चक्रेण तामप्यस्यकरे स्थिताम् ।। १५।। ततः खड्गमुपादाय शतचन्द्रं च भानुमत्। अभ्यधावत्तदा देवीं दैत्यानामधिपेश्वरः ।। १६ ।। तस्यापतत एवाशु खड्गं चिच्छेद चंडिका ।। धनुर्मुक्तैः शितैर्बाणैश्चर्म चार्ककरामलम् ।। १७ ।। हताश्वः स तदा दैत्यश्छिन्नधन्वा विसारथिः ।। जग्राह मुद्गरं घोरमम्बिकानिधनोद्यतः ।। १८ ।। चिच्छेदापततस्तस्य मुद्गरं निशितैः शरैः ।। तथापि सोऽभ्यधावत्तां मुष्टिमुद्यम्य वेगवान् ।।१९।। स मुष्टिं पातयामास हृदये दैत्यपुंगवः ।।

दिया ।।१४।। धनुष के कट जाने से दैत्येन्द्र (शुम्भ ने)शक्ति ली ।। देवी ने उसके हाथ की शक्ति को चक्र द्वारा काट दिया ।।१५।। तब खड्ग और सौ चन्द्रमा चमकते हुए सूर्य के तेज के समान जिसमें लगे हुए थे ऐसा चर्म (ढाल) लेकर दैत्यों का स्वामी वह शुम्भ भगवती की ओर दौड़ा ।। १६ ।। तदनन्तर समीप में पहुँचे हुए शुम्भ के खड्ग और सूर्य के समान तेज वाली चर्म (ढाल) को चण्डिका ने धनुष से छोड़े हुये तीक्ष्ण बाण द्वारा काट दिया ।।१७।। घोड़े और सारथी के मारे जाने तथा रथ और धनुष के भी कट जाने से शुम्भ ने अम्बिका को मारने के लिये कठोर मुदगर लिया ।।१८।। देवी ने भी सामने आये हुए दैत्य के मुद्गर को तेज शरों द्वारा काट दिया. तब मुक्का बना कर देवी की ओर वेग से दौड़ा ।।१९।। दैत्य पुंगव (असुरेश्वर शुम्भ ने) देवी के हृदय पर उस मुक्के को मारा तब

देव्यास्तं चापि सा देवी तलेनोरस्य ताडयत्
॥ २० ॥ तलप्रहाराभिहतो निपपात महीतले ॥
स दैत्यराजः सहसा पुनरेव तथोत्थितः ॥२१॥
उत्पत्य च प्रगृह्योच्चैर्देवीं गगनमास्थितः ॥ तत्रापि सा
निराधारा युयुधे तेन चण्डिका ॥ २२ ॥ नियुद्धं खे
तदा दैत्यश्चण्डिका च परस्परम् ॥चक्रतुः प्रथमं सिद्धमुनिविस्मयकारकम् ॥ २३ ॥ ततो नियुद्धं सुचिरं
कृत्वा तेनाम्बिका सह ॥ उत्पात्य भ्रामयामास चिक्षेप
धरणी तले ॥२४॥ स क्षिप्तो धरणीं प्राप्य मुष्टिमुद्यम्य
वेगितः॥ अभ्यधावत दुष्टात्मा चण्डिका निधनेच्छया
॥२५॥ तामायान्तं ततो देवी सर्वदैत्यजनेश्वरम् ॥

देवी ने भी एक थप्पड़ उसके कलेजे पर मारा ॥२०॥ देवी के थप्पड़ की चोट खाकर वह दैत्यराज पृथ्वी पर गिर गया परन्तु जल्दी ही फिर उठ बैठा ॥२१॥ और बाद में उछल कर देवी को पकड़ आकाश में ले जाकर निराधार होने पर भी चंडिका वहीं उससे लड़ने लगी ॥२२॥ आकाश में दैत्य और चंडिका ने लड़ते हुए पहले सिद्ध और मुनियों को भय देने वाला युद्ध किया ॥२३॥ तब बहुत देर तक अम्बिका ने उसके साथ (बाहु युद्ध) लड़ाई लड़ी और उस (शुम्भ दैत्य) को घुमाकर गेंद की तरह ऊँचा उठा पृथ्वी पर पटक दिया ॥ २४ ॥ तब पृथ्वी पर गिर जाने के बाद वह दुष्टात्मा चंडिका को मारने के लिये मुका उठाकर जल्दी दौड़ा ॥२५॥ देवी ने उस सर्व दैत्यजन

जगत्यां पातयामास भित्त्वा शूलेन वक्षसि ॥ २६ ॥ स गतासुः पपातोर्व्यां देवीशूलाग्रविक्षतः ॥ चालयन्सकलां पृथ्वीं साब्धिद्वीपां सपर्वताम् ॥२७॥ ततः प्रसन्नमखिलं हते तस्मिन्दुरात्मनि ॥ जगत्स्वास्थ्यमतीवाप निर्म्मलं चाभवन्नभः ॥२८॥ उत्पातमेघाः सोल्का ये प्रागासंस्ते शमं ययुः ॥ सरितो मार्गवाहिन्यस्तथासंस्तत्र पातिते ॥२९॥ ततो देवगणाः सर्वे हर्षनिर्भरमानसाः ॥ बभूवुर्निहते तस्मिन्गन्धर्वा ललितं जगुः ॥३०॥ अवादयंस्तथैवान्ये ननृतुश्चाप्सरोगणाः ॥ववुः पुण्यास्तथावाताः सुप्रभोऽभूद्दिवाकरः

के ईश्वर (शुम्भ) को आते हुए देखकर शूल से उसके वक्षस्थल को बेधा तब वह पृथ्वी पर गिरा ॥२६॥ इसके बाद देवी के शूल के अग्र भाग (नोंक) से घायल हो वह (शुम्भ असुर) निष्प्राण हो पृथ्वी पर लेट गया जिससे सम्पूर्ण समुद्र, द्वीप और पर्वत के साथ पृथ्वी हिल गई ॥२७॥ इसके बाद उस दुरात्मा के मारे जाने से सब जगत स्थिर और आकाश निर्मल हो गया ॥२८॥ जितने अनिष्ट सूचक मेघ और उल्का (शुम्भ के सामने) थे वे सब नष्ट हो गये नदियां सब अपनी पुरानी धारों में बहने लगीं ॥२९॥ तब सब देवगण उस शुम्भ के मरने से हर्ष युक्त और निर्भय चित्त हो गये तथा गन्धर्व मनोहर गीत गाने लगे॥३० तथा कोई बाजे बजाने लगे और अप्सरायें नाचने लगीं सुन्दर

॥३१॥ जज्वलुश्चाग्नयः शान्ताः *शान्तदिग्जनितस्वनाः ओं ॥ ३२ ॥ इति श्री मार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये शुम्भबधो नाम दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ उवाच ४ अर्ध १ श्लोक २७ एवम् ३२ एवमादितः ॥५७५॥

वैदिक आहुति १० अध्याय की ॥

एक पान पर शाकल्य १ कमलगट्टा घी में भिगोकर १ सुपारी, २ लोंग, १ छोटी इलायची, गूगल, इस अध्याय में विशेष मैनफल व बेलफल हैं ॥ सब चीजें स्रु चीमें रख खड़े होकर मंत्र बोलना २६० पृष्ठे॥

ॐ जय जय मार्कण्डेयपुराणेसावर्णिकेमन्वन्तरे देवी माहात्म्ये सत्याः सन्तु (यजमानस्य कामाः) जगदम्बार्पणमस्तु ॥ ऐसा बोलकर जल छोड़ना ॥

हवा चलने लगी और सूर्य का प्रकाश भी उत्तम होगया ॥३१॥ अग्नि सब प्रज्वलित होगईं और दिशाओं में प्रशान्त शब्द होने लगे ॥३२॥

* * *

---

* शान्त दिग्लक्षणमाह वराहः ॥ अङ्गारिणी दिग्रविणा विमुक्ता यस्यां रविस्तिष्ठति सा प्रदीप्ता ॥ प्रधूमितायास्यति यां दिनेशः शेषाश्चशान्ताः शुभदाश्च तास्युः ॥

एकादशाध्यायः ॥

अथ ध्यानम् ॥

वालरविद्युतिमिन्दुकिरीटां तुङ्गकुचां नयनत्रययुक्ताम् । स्मेरमुखीं वरदाङ्कुशपाशाभीति करां प्रभजे भुवनेशीम् ॥११॥ यहाँ खीर का हवन होता है ।

* ऋषिरुवाच ॥१॥ ॐ देव्या हते तत्र महासुरेन्द्रे सेन्द्राःसुरा वह्निपुरोगमास्ताम् ॥ कात्यायनीं तुष्टुवुरिष्टलाभाद्विकाशिवक्त्राब्जविकाशिताशाः॥२॥ देवि प्रपन्नार्त्ति हरे प्रसीद प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य॥

उदय होते हुए सूर्य के समान कान्ति मुकुट में चन्द्रमा तुङ्गकुच तीन नेत्र से युक्त मुसकराती हुई वर, अंकुश, पाश अभय को धारण करनेवाली भुवनेशी का भजन करता हूँ ।

ऋषि बोले—॥१॥ देवी के द्वारा उस महा असुरेन्द्र को मार देने पर अग्नि और इन्द्र को आगे करके देवगण अपनी इच्छा सिद्ध होने पर देवी कात्यायनी की स्तुति करने लगे । देवगण की आशा पूर्ण हुई इस कारण प्रसन्न मुख से कहने लगे ॥२॥ हे देवि ! हे शरणागत का दुःख हरने वाली ! प्रसन्न होओ, हे अखिल जगत की माता ! प्रसन्न होओ, हे विश्वेश्वरी !

---

* क्षीरि ॥ (खीर) भावप्रकाशे पूर्व खण्डे कृतान्नवर्गे ॥

पायसं परमान्नं स्यात् क्षीरिकापि तदुच्यते ॥ शुद्धेर्द्ध पक्वे दुग्धेतु घृताक्तांस्तण्डुलान् पचेत् ॥ ते सिद्धाक्षीरकाख्याता सासिताज्ययुतोपमा । क्षीरिकादुर्जरावल्या धातुपुष्टि प्रदागुरुः ॥ विष्टम्भिनी हरेत्पित्तरक्तपित्ताग्निमारुतान् ॥

प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य ॥३॥ आधारभूता जगतस्त्वमेका महीस्वरूपेण यतः स्थितासि॥ अपां स्वरूपस्थितया त्वयैतदाप्यायते कृत्स्नमलङ्घ्यवीर्ये ॥४॥ त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या विश्वस्य वीजं परमासि माया ॥ संमोहितं देवि समस्तमेतत्त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः ॥५॥ विद्याः समस्तास्तव देवि भेदाः स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु॥ त्वयैकया पूरितमम्बयैतत्का ते स्तुतिः स्तव्यपरापरोक्तिः ॥ ६ ॥ सर्वभूता यदा

प्रसन्न होओ और संसार की रक्षा करो। हे देवि ! तुम चर (चलायमान) जंगम और स्थावर अचर (नहीं चलने वालों) की ईश्वरी हो ॥ ३ ॥ तुम इस जगत की एकमात्र आधार हो अर्थात् मही (पृथ्वी) रूप से रहती हो, हे देवि ! तुम जल स्वरूप से रहते हुए इस सम्पूर्ण संसार में व्याप्त हो, हे देवि ! तुम्हारा वीर्य अलंघनीय है ॥४॥ हे देवि ! तुम अनन्त वीर्या वैष्णवी शक्ति हो, तुम ही संसार की कारण स्वरूप परमा माया हो, हे देवि ! तुमने समस्त संसार को संमोहित कर रखा है, हे देवि ! पृथ्वी पर आपही के प्रसन्न होने से मोक्ष मिलती है ॥५॥ हे देवि ! सम्पूर्ण विद्या आपही की मूर्ति विशेष हैं, संसार में जितनी स्त्रियाँ हैं सब ही तुम्हारी मूर्ति विशेष हैं, हे जननी ! तुम अकेली ही इस विश्व में व्याप्त हो, हे देवि ! स्तुति किये जाने के योग्यों में तुम ही श्रेष्ठ हो, और किन शब्दों से तुम्हारी स्तुति करें ॥६॥ तुम सब जीवों में दीप्यमान हो,

देवी स्वर्गमुक्तिप्रदायिनी ॥ त्वं स्तुता स्तुतये का वा भवन्तु परमोक्तयः ॥७॥ सर्वस्य बुद्धिरूपेण जनस्य हृदि संस्थिते ॥ स्वर्गापवर्गदे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ८ ॥ कलाकाष्ठादिरूपेण परिणामप्रदायिनि ॥ विश्वस्योपरतौ शक्ते नारायणि नमोऽस्तु ते ॥९॥ [1]सर्वमंगलमङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके । शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥१०॥

तुम स्वर्ग [सुख] और मोक्ष (यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम) देती हो तब कौन स्तव (स्तोत्र) से आपकी स्तुति करें ? ॥७॥ हे बुद्धि रूप से सम्पूर्ण मनुष्यों के हृदय में निवास करने वाली ! स्वर्ग और अपवर्ग [मोक्ष]देने वाली नारायणी ! तुमको नमस्कार है ॥८॥ हे कला काष्ठादि [घड़ी पल] रूप से परिणाम देने वाली तथा विश्व (संसार) का नाश करने की शक्ति धारण करने वाली नारायणी ! तुमको नमस्कार है ॥९॥ हे सर्व मंगल मंगल्ये !※ हे शिवे !§ हे सर्वार्थ‡ साधिके ! हे शरण्ये !+ हे अम्बिके !÷ हे गौरि !× हे नारायणि !? तुमको नमस्कार है ॥१०॥ हे सृष्टि, =पालन, और

---

[1]इस श्लोक का ७ वार नित्य पाठ करने से सुन्दर फल मिलता है ॥ यह वृद्ध पुरुषों का वाक्य है ॥

देवी पुराणे ॥

※ सर्वाणि हृदयस्थानि मङ्गलानि शुभानि च ॥ ददाति चेप्सिताल्लोके तेन सा सर्व मङ्गला ॥

§ शिवामुक्तिः समाख्याता तत्प्रदत्वाच्छिवास्मृता इति ॥

‡ धर्मादींश्चिन्तिता यस्मात्सर्वलोकस्य यच्छति ॥ अतो देवी समाख्याता लोके सर्वार्थ साधिका ॥

सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्तिभूते सनातनि ॥ गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तु ते ॥११॥ शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे ॥ सर्वस्यार्त्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ १२ ॥ हंसयुक्तविमानस्थे

नाश करने वालों की शक्ति ! हे सनातनि ! हे गुणाश्रये ! हे गुणमयि ! हे नारायणि तुमको नमस्कार है ॥११॥ हे शरणागत दीन तथा दुखी मनुष्यों की रक्षा करने वाली ! हे सब की पीड़ा हरने वाली ! हे देवि ! हे नारायणी ! तुमको नमस्कार है ॥१२॥ हे हंस युक्त विमान में बैठने वाली ! हे ब्रह्माणी रूप

---

† विषाग्निभय घोरेषु शरण्यात्स्मरणाद्यतः ॥ शरण्य तेन सा देवी मुनिभिः परिकीर्तिता ॥

+ सोमसूर्यानलाक्षित्वात्त्र्यम्बका सा स्मृता बुधैः ॥

× योगाग्निदग्धदेहा या कन्या जाता हिमालये ॥ शंखेन्दुकुन्दधवला ततो गौरीति सा स्मृता ॥

§ जलायना निराधारा समुद्रशयनापि वा ॥ नारायणी समाख्याता नरनारी प्रवर्तका ॥

इति देवी पुराणे ॥

= यासा त्रिशक्तिरुद्दिष्टा शिवेन परमात्मना ॥ तत्र सृष्टिः पुराप्रोक्ता श्वेतवर्ण स्वरूपिणी ॥ १ ॥ एकाक्षरेति विख्याता सर्वाक्षरमयी शुभा ॥ वागीशीति समाख्याता सैव देवी सरस्वतीत्युपक्रम्य ॥ २ ॥ सावैष्णवी विशालाक्षी रक्तवर्णा सुरूपिणी ॥ अपरा सा समाख्याता रौद्री रुद्र परायणा ॥ ३ ॥ सितारक्ता तथा कृष्णा त्रिमूर्तित्वं जगामह ॥ या सा ब्राह्मी शुभामूर्तिस्तया सृजतिवै प्रजाः ॥ ४ ॥ सौम्यरूपेण सुश्रोणि ब्रह्म सृष्टि विधानतः ॥ या सा रक्तेन वर्णेन सुरूपा तनुमध्यमा ॥ ५ ॥ शंख चक्र धरा देवी वैष्णवी सकलास्मृता ॥ सापाति सकलं विश्वं विष्णुमायेतिकीर्त्यते ॥ ६ ॥ यासा कृष्णेन वर्णेन रौद्री मूर्तिस्त्रिशूलिनी ॥ दंष्ट्रा करालिनी देवी सा संहरति वै जगत् ॥ ७ ॥ एषात्रिशक्ति रुद्दिष्टा नय सिद्धान्त गामिनीः ॥ इति धरणीं प्रति वाराह भगवतो वाक्यम् ॥

ब्रह्माणीरूपधारिणि ॥ कौशाम्भःक्षरिके देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ १३ ॥ त्रिशूलचन्द्राहिधरे महावृषभवाहिनि ॥ माहेश्वरीस्वरूपेण नारायणि नमोऽस्तु ते ॥१४॥ मयूरकुक्कुटवृते महाशक्तिधरेऽनघे । कौमारीरूपसंस्थाने नारायणि नमोऽस्तुते॥१५॥ शंखचक्रगदाशार्ङ्गगृहीतपरमायुधे ॥ प्रसीदवैष्णवीरूपे नारायणि नमोऽस्तु ते ॥१६॥ गृहीतोग्रमहाचक्रे दंष्ट्रोद्धृतवसुन्धरे ॥ वराहरूपिणि शिवे नारायणि नमोऽस्तु ते ॥१७॥ नृसिंहरूपेणोग्रेण हन्तुं

को धारण करने वाली ! हे कुशा के जल से शत्रुओं का नाश करने वाली ! हे देवि ! हे नारायणी आपको नमस्कार है ॥१३॥ हे त्रिशूल, चन्द्रमा और सूर्य को धारण करने वाली ! माहेश्वरी स्वरूप से महावृषभ (बैल) पर बैठने वाली ! हे नारायणी आपको नमस्कार है ॥१४॥ हे मयूर कुक्कट (मोर के परों से) वेष्टित ! (ढके हुए) हे महाशक्तिधरे ! हे अनघे ! (पापनाशिनी) हे कौमारि (षडानन) रूप से विचरने वाली ! हे नारायणि ! तुमको नमस्कार है ॥१५॥ हे शंख, चक्र, गदा पद्म रूप महास्त्र धारिणी ! हे वैष्णवीरूपे ! आप प्रसन्न होओ हे नारायणी ! आपको नमस्कार है ॥१६॥ हे महा उग्र चक्र को धारण करने वाली ! हे पृथ्वी को अपने दाँत पर धारण करने वाली ! हे वराह रूपिणी ! हे शिवे ! हे नारायणि तुमको नमस्कार है हे उग्रनृसिंह के रूप से राक्षसों को मारने में उद्यम करने वाली ! हे तीनों लोक के कल्याण करने में समर्थ ! हे नारायणि आप

दैत्यान् कृतोद्यमे ।। त्रैलोक्यत्राणसहिते नारायणि नमोऽस्तुते ।।१८।। किरीटिनि महावज्रे सहस्रनयनोज्ज्वले ।। वृत्रप्राणहरे चैन्द्रि नारार्यणि नमोऽस्तु ते ।।१९।। शिवदूतीस्वरूपेण हतदैत्यमहाबले घोररूपे महारावे नारायणि नमोस्तु ते ।।२०।। दंष्ट्राकरालवदने शिरोमालाविभूषणे ।। चामुण्डे मुण्डमथने नारायणि नमोऽस्तु ते।।२१।। लक्ष्मिलज्जे महाविद्ये श्रद्धे पुष्टिस्वधे ध्रुवे ।। महारात्रि महाविद्ये नारार्यणि नमोऽस्तुते ।।२२।। मेधे सरस्वति वरे भूति वाभ्रवि तामसि ।। नियते त्वं प्रसीदेशे नारायणि नमोऽस्तु ते ।।२३।। सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते ।। भ-

---

को नमस्कार है ।।१८।। हे किरीटनी ! (मुकुट को धारण करने वाली) हे वज्र के द्वारा शत्रुओं को मारने वाली ! हे सहस्र नेत्रों से प्रकाशमान होने वाली ! वृत्रासुर का संहार करने वाली ! हे ऐन्द्री ! हे नारायणि ! आपको नमस्कार है ।।१९।। हे शिवदूती स्वरूप से महा बलवान दैत्य को मारने वाली ! हे घोर रूपे ! हे महारावे ! हे नारायणि ! आपको नमस्कार है ।। २० ।। हे दंष्ट्राकराल बदने ! हे मुण्डमाला विभूषणे ! हे चामुण्डे ! हे मुण्डमथने ! हे नारायणि आपको नमस्कार है ।।२१।। हे लक्ष्मि ! हे लज्जे ! हे महाविद्ये ! हे श्रद्धे ! हेपुष्टे ! हे स्वधे ! हे ध्रुवे ! हे महारात्रि ! हे महाविद्ये हे नारायणी आपको नमस्कार है ।।२२।। हे मेधे ! हे सरस्वति ! हे वरे ! हे वाभ्रवि हे तामसि !

येभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोस्तु ते॥२४॥ एतत्ते वदनं सौम्यं लोचनत्रयभूषितम् ॥ पातु नः सर्वभीतिभ्यःकात्यायनि नमोऽस्तु ते॥२५॥ ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषासुरसूदनम् ॥ त्रिशूलं पातुनोभीतेर्भद्रकालि नमोऽस्तु ते ॥२६॥ हिनस्तिदैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत् ॥ सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्यो नः सुतानिव ॥२७॥ असुरासृग्वसापङ्कचर्चितस्ते करोज्ज्वलः ॥ शुभाय खड्गो भवतु चण्डिके त्वां नता वयम् ॥२८॥ *रोगानशेषानप-

हे नियते ! हे ईशे ! आप प्रसन्न होओ हे नारायणि ! आपको नमस्कार है ॥२३॥ हे सर्वस्वरूपे ! हे सर्वेशे ! हे सर्व शक्ति समन्विते ! हम सब की भय से रक्षा करो । हे देवि ! हे दुर्गेदेवि ! आपको नमस्कार है ॥ २४ ॥ हे कात्यायनि ! आपका तीन नेत्रों से शोभायमान उत्तम मुख सब भयों से रक्षा करे आपको नमस्कार है ॥२५॥ हे कात्यायनि ! आपका मुख तीन नेत्रों से सुशोभित सुन्दर सब भीति (भयों) से हम सब की रक्षा करे ॥ हे देवी ! आपको नमस्कार है ॥२६॥ हे भद्रकाली ! कराल ज्वालायुक्त, अत्यन्त उग्र और असंख्य (बिना गिनती) असुरों को मारने वाली आपका त्रिशूल हम सब (देवगण) की सब भयों से रक्षा करे तुमको नमस्कार ॥२७॥ शब्द के द्वारा अखिल जगत को पूरित करने पर जो घण्टा राक्षसों के सम्पूर्ण तेज का नाश करता है वही घण्टा हम सब (देवगण) की पुत्र

---

*नोट—यहाँ गिलोय की आहुति होती है।

हंसि तुष्टा रुष्टा तु कामान्सकलानभीष्टान् ॥ त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिताह्याश्रयतां प्रयान्ति ॥२६॥ एतत्कृतं यत्कदनं त्वयाद्य धर्मद्विषां देवि महासुराणाम् ॥ रूपैरनेकैर्बहुधात्ममूर्तिं कृत्वाम्बिके तत्प्रकरोति कान्या ॥३०॥ विद्यासु शास्त्रेषु विवेकदीपेष्वाद्येषु वाक्येषु च का त्वदन्या ॥ ममत्वगर्तेऽति महान्धकारे विभ्रामयत्येतदतीव विश्वम् ॥३१॥ रक्षांसि यत्रोग्रविषाश्च नागा यत्रारयो दस्यु-

---

के समान सब पापों से रक्षा करे ॥२८॥ हे चण्डिके ! हम सब आपको नमस्कार करते हैं। जो असुर समूह के रक्त से रंगी हुई और वसापङ्क (चर्बी की कीचड़) से चर्चित [सना हुई] आप के हाथ में सुशोभित तरवार हम सब का कल्याण करे ॥२८॥ हे देवि ! तुम प्रसन्न होने से अशेष रोगों को हरती हो तथा रुष्ट (अप्रसन्न) होने से इच्छित पदार्थ और सब कामनाओं का नाश करती हो ! आपके आश्रित रहने से मनुष्यों को किसी प्रकार की विपत्ति नहीं होती और जो आपका ही आश्रय (भरोसा) करते हैं; वे सब के आश्रय होते हैं ॥२६॥ हे देवि ! चण्डिके ! आपने आज नाना प्रकार से कई तरह की मूर्ति बना कर धर्म के द्वेषी बड़े २ राक्षसों का जो विनाश किया सो क्या कोई दूसरा कर सकता है ? ॥३०॥ हे देवी ! तुम्हें छोड़ कौन पुरुष इस संसार को विद्या, विवेक, दीप, शास्त्र, आद्य वाक्य अथवा अत्यन्त महा अन्धकार ममत्व गर्त (गड्ढे) में भ्रमण कर सकता है ? ॥३१॥ हे देवी ! जहाँ राक्षस लोग, जहाँ बड़े २

बलानि यत्र ।। दावानलो यत्र तथाब्धिमध्ये तत्र स्थिता त्वं परि पासि विश्वम् ।।३२।। विश्वेश्वरि त्वं परिपासि विश्वं विश्वात्मिका धारयसीति विश्वम् ।। विश्वेशवन्द्या भवती भवन्ति विश्वाश्रया ये त्वयि भक्तिनम्राः ।।३३।। देवि प्रसीद परिपालय नोऽरिभीतेर्नित्यं यथासुरवधादधुनैव सद्यः ।। पापानि सर्वजगतां प्रशमं नयाशु उत्पातपाकजनिताँश्च महोपसर्गान् ।।३४।। प्रणतानां प्रसीद त्वं देवि विश्वार्तिहारिणि ।। त्रैलोक्यवासिनामीड्ये लोकानां वरदा

विष धर सर्प, जहाँ शत्रु लोग, जहाँ चोरों का बल रहता है, दावानल और समुद्र के मध्य में, उन स्थानों में स्थित होती हुई संसार की रक्षा करती हो ।।३२।। तुम संसार की रक्षा करती हो,–इसलिये विश्वेश्वरी हो संसार को धारण करती, इस कारण तुम विश्वात्मिका हो तुम (विश्वेश) संसार के स्वामी से वन्दना किये जाने के योग्य हो, हे देवी ! जो मनुष्य भक्ति पूर्वक तुम्हारे आगे नम्र होते हैं, वे (मनुष्य) विश्व (संसार) के आगे होते हैं ।।३३।। हे देवी ! तुम प्रसन्न हो ! शत्रु के भय से हम (सब) भीति (डरे हुए) मनुष्यों की रक्षा करो हे देवी ! जिस प्रकार असुरों को मार कर तुमने इस समय शान्ति की है ऐसे ही सदा सम्पूर्ण संसार को सब पापों से और उत्पात के परिणाम से उत्पन्न अथवा महोत्पन्न सब महोपसर्गों से शान्त क्रिया करो ।।३४।। हे संसार के दुःखों को दूर करने वाली देवी ! प्रणाम करते हुए मनुष्यों पर प्रसन्न होओ हे तीनों लोक के निवासी

भव ॥३५॥ देव्युवाच ॥३६॥ वरदाहं सुरगणा वरं यन्मनसेच्छथ ॥ तं वृणुध्वं प्रयच्छामिजगतामुपकारकम् ॥३७॥ देवा ऊचुः ॥३८॥ ❀सर्वाबाधा प्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि ॥ एवमेव त्वयाकार्यमस्मद्वैरिविनाशनम् ॥३९॥ देव्युवाच ॥४०॥ वैवस्वतेऽन्तरे प्राप्ते अष्टाविंशतिमे युगे ॥ शुम्भो निशुम्भश्चैवान्यावुत्पत्स्येते महासुरौ ॥४१॥ नन्दगोपगृहे जाता यशोदागर्भसम्भवा ॥ ततस्तौ नाशयिष्यामि विन्ध्याचलनिवासिनी ॥४२॥ पुनरप्यतिरौद्रेण रूपेण पृथिवीतले ॥ अवतीर्य हनिष्यामि वैप्रचित्तांस्तु

देव ऋषि मुनि नाग किन्नर, मनुष्यादि से पूजने योग्य ! तुम वर देनी वाली होओ ॥३५॥ देवी बोली ॥३६॥ हे देवगण ! मैं वर देने वाली हूँ, संसार का उपकार करने वाला जो वर तुम सब मन में इच्छा करते हो वह मुझसे मांगो. मैं दूंगी ॥३७॥ देवगण बोले ॥३८॥ हे अखिलेश्वरी ! तीनों लोक की सम्पूर्ण बाधा शान्त करो तथा इसी प्रकार हम (देवगण) लोगों के शत्रुओं का विनाश करो ॥३९॥ देवी बोली ॥ ४० ॥ वैवस्वत (७वें) मन्वन्तर के २८ अट्ठाईस में युग में शुम्भ और निशुम्भ दो अन्य असुर होकर जन्म लेंगे ॥४१॥ तब नन्दगोप के घर में यशोदा के गर्भ से जन्म धारण कर विन्ध्याचल में निवास कर उन (शुम्भ-निशुम्भ) दोनों को मारूँगी ॥४२॥ फिर भी पृथ्वी पर अत्यन्त भयंकर स्वरूप से उत्पन्न होकर मैं वैप्र-

---

❀ हवन में यहाँ काली मिरच वा सफ़ेद सरसों की आहुति देना ।

दानवान् ॥४३॥ भक्षयन्त्याश्च तानुग्रान्वैप्रचित्तान्महासुरान्※॥ रक्तादन्ता भविष्यन्ति दाडिमीकुसुमोपमाः[१]॥४४॥ ततो मां देवताः स्वर्गे मर्त्यलोके च मानवाः ॥ स्तुवन्तो व्याहरिष्यन्ति सततं रक्तदन्तिकाम् ॥४५॥ भूयश्च शतवार्षिक्यामनावृष्ट्यामनम्भसि ॥ मुनिभिः संस्तुता भूमौ संभविष्याम्ययोनिजा ॥४६॥ ततः शतेन नेत्राणां निरीक्षिष्यामि

चित्त नामक दानवों को मारूंगी ॥४३॥ उन वैप्रचित्त नामक राक्षसों को भक्षण करने के समय मेरे दांत अनार के फूल के सदृश लाल होंगे ॥४४॥ इस कारण स्वर्ग में देवगण और मर्त्य लोक में (पृथ्वी पर) मनुष्य गण निरन्तर" रक्तदन्तिका कह कर स्तुति करेंगे ॥५५॥ और फिर पृथ्वी पर १०० सौ वर्ष की अनावृष्टि (वर्षा न होने) के कारण मुनियों की स्तुति करने पर मैं अयोनिजा (बिना किसी के गर्भ द्वारा) उत्पन्न होऊँगी ॥४६॥ तब मैं १०० नेत्रों से उन मुनियों को देखूँगी, इस का-

---

विरुद्धाप्रचित्तिः प्रकृष्टं ज्ञानं यस्यासौ विप्रचित्तिर्नाम कश्चिद्दानवः ॥ काश्यप तृतीय पत्न्याः पुत्रः । विप्रचित्ति प्रधानास्ते दानवाः सुमहाबला इति हरिवंशे ॥ विख्यात विप्रचित्तेर्दानवस्यापत्यानि वैप्रचित्ताः ॥ विप्रचित्तेः पुत्राः हरिवंशे प्रसिद्धाः ॥ सिंहिकायामथोत्पन्ना ॥ विप्रचित्तेः सुतास्तदा । दैत्य दानव संयोगाज्जातास्तीव्र पराक्रमाः ॥ सैंहिकेया इति ख्यातास्त्रयो दश महाबलाः ॥ व्यङ्गः शल्यश्च बलिनो नभश्चैव महाबलाः ॥ [illegible] श्चैव इल्वलः खसृमस्तथा ॥ आञ्जिको नरकश्चैव कालना- [illegible] ॥ राहुर्ज्येष्ठश्चतेषांवैचन्द्रसूर्य प्रमर्दनः ॥ तत्रराहुश्चिरस्थायी । वातापिरगस्त्येन भुक्तः । नमुचिरिन्द्रेणहतः। शेषान्वैप्रचित्तान् शुम्भ निशुम्भौहत्वापुनर्हनिष्यामि ॥ इतिवामनपुराणे ॥हवनमेंअनारकीकली ॥

१ यज्ञ अनार के फूल की आहुति देना ।

यन्मुनीन् ।। कीर्तयिष्यन्ति मनुजाः शताक्षीमिति मां ततः ।।४७।। ततोऽहमखिलंलोकमात्मदेहसमुद्भवैः ।। भरिष्यामि सुराः शाकैरावृष्टेः प्राणधारकैः ।। ४८ ।। [1]शाकम्भरीति विख्यातिं तदा यास्याम्यहं भुवि।।तत्रैवचवधिष्यामि दुर्गमाख्यंमहासुरम्।।४६।। दुर्गा देवीति विख्यातं तन्मे नाम भविष्यति ।। पुनश्चाहं यदा भीमं रूपं कृत्वा हिमाचले ।।५०।। रक्षांसि भक्षयिष्यामि मुनीनां त्राणकारणात् ।। तदा मां मुनयः सर्वे स्तोष्यन्त्यानम्रमूर्तयः ।।५१।। भीमादेवी-

---

रण मनुष्य मुझको "शताक्षी" कह कर मेरी स्तुति करेंगे ।। ४७।। तदन्तर जब तक वृष्टि (बरषा) न होगी तब तक हे देवगण ! मैं अपनी देह (शरीर) से उत्पन्न करके शाक द्वारा सम्पूर्ण लोक का पालन करूँगी ।।४८।। इस कारण संसार में "मैं शाकम्भरी" नाम से विख्यात होऊँगी ।।४६।। और उसी समय मैं *दुर्गाख्य नामक असुर को मारूँगी ।।५०।। तब मेरा नाम "दुर्गा" ऐसा विख्यात होगा फिर जब मैं भीम रूप करके मुनिजनों की रक्षा करने के निमित्त हिमालय पर राक्षसों को मारूँगी तब सब मुनि लोग नम्रमूर्ति होकर मेरी स्तुति करेंगे ।।५१।। और मैं "भीमा देवी" नाम से प्रसिद्ध होऊँगी और

---

[1] भूयः सुरास्तिष्य युगे निराशिनी निरीक्ष्य मारीचगृहे शतक्रतोः ।। संभूयदेव्यामित सप्तधामया सुराभविष्यामि शाकम्भरीति प्रशाव,मैं ज्ञानात् वामनपुराणे ।। आहुति में बथुए का शाक व पालक

[2] अयं दुर्गमोरुरु पुत्रः पुरुषान्नमेमृतिरिति ब्रह्मणोलब्धवरः ।। शाकंभरीदेव्यवतारोऽष्टा विंशे कलियुगे इति ज्ञेयम् ।

तिविख्यातं तन्मेनामभविष्यति ॥ [३]यदारुणाख्यस्त्रैलोक्ये महाबाधां करिष्यति ॥५२॥तदाहं भ्रामरं रूपंकृत्वा संख्येयषट्पदम् ॥ त्रैलोक्यस्य हितार्थाय बधिष्यामि महासुरम् ॥५३॥ ❀भ्रामरीति च मां लोकास्तदा स्तोष्यन्तिसर्वतः ॥ इत्थंयदायदा बाधा दानवोत्था भविष्यति॥ ५४ ॥ तदा तदावतीर्याहं करिष्याम्यरि-संक्षयम् ओं ॥ ५५ ॥ इति श्री मार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देव्याः स्तुतिर्नामैकादशोऽध्यायः ॥११॥ उवाच ४ अर्घ १ श्लोक ५० एवम् ५५ एवमादितः ॥६३०॥

"अरुण" नामक असुर त्रैलोक्य में बाधा करेगा ॥५२॥ तब मैं असंख्य अष्टपद भ्रमर (भौंरा) होकर तीनों लोकों के हित के लिये उस [अरुण दानव] को मारूँगी ॥५३॥ तब सब जगह लोग मुझको "भ्रामरी" कहकर मेरी स्तुति करेंग इस प्रकार जब-जब दानव [राक्षस] कृत बाधा [कष्ट] होगी ॥५४॥ तब तब मैं अवतार लेकर शत्रुओं का नाश करूँगी ॥५५॥

इति आगरा निवासी श्री धनश्याम गोस्वामी कृत दुर्गा नारायणी स्तुति की भाषाटीका समाप्त हुई ॥

— — — —

---

[३] यदारुणाख्यो भवितामहासुरस्तदा भविष्यामिहिताय देवताः । महा रूपेण [illegible] नष्टजीवितं कृत्वा समेष्यामि पुनस्त्रिविष्टपम् ॥ क्वचिदरुणाख २[illegible] पाठः ॥ वामनपुराणे ॥

❀'भ्रामरी नाम्ना स्तोष्यन्ति वाचा पूजयिष्यन्ति ॥ भ्रामर्याः षष्टितम चतुर्युगेऽवतार इति लक्ष्मी तन्त्रे ॥

ॐ जय जय मार्कण्डेय पुराणेसावर्णिकेमन्वन्तरे देवी माहात्म्ये सत्याः सन्तु (यजमानस्यकामाः) जगदम्बार्पणमस्तु ॥ ऐसा बोलकर जल छोड़ना ॥ मंत्र २५० सफ़े में है ॥

वैदिक आहुति ११ अध्याय की ॥

एक पान पर शाकल्य १ कमलगट्टा घी में भिगोकर १ सुपारी, २ लौंग, १ छोटी इलायची, गूगल इस अध्याय में विशेष पुष्प व पायस ही है। सब चीजें स्रुची में रख खड़े होकर मंत्र बोलना ॥

तान्त्रिक आहुति ॥

क्लीं जयन्ती सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै लक्ष्मी बीजाधिष्ठात्र्यै गरुड़ वाहिनी नारायणि देव्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ॥ सामान सब ऊपर लिखा है ॥

द्वादशोऽध्यायः ।

अथ ध्यानम् ।

ओं विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां-
कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम् ॥
हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखाँश्चापं गुणं तर्जनीं बि-
भ्राणामनलात्मिकांशशिधरां दुर्गांत्रिनेत्रांभजे॥१२॥

विजली की रस्सी के समान कान्ति सिंह के ऊपर बैठी भाला और ढाल लिये हुए ८ कन्याओं से वेष्टित तथा हाथों में चक्र गदा, खड्ग, ढाल, वाण, धनुष, त्रिशूल, और तर्जनी से धनुष की डोरी को बजाती हुई चन्द्रमा को माथे पर धारण करे हुए ऐसी ३ नेत्र वाली दुर्गा का भजन करता हूँ ॥

देव्युवाच ॥ १ ॥ ॐएभिः स्तवैश्चमांनित्यंस्तोष्यते यः समाहितः ॥ तस्याहं सकलांबाधां शमयिष्याम्यसंशयम् ॥२॥ मधुकैटभनाशं च महिषासुरघातनम्॥ कीर्तयिष्यन्तियेतद्वद्वधंशुम्भनिशुम्भयोः ॥३॥अष्टम्यां च चतुर्दश्यांनवम्यांचैकचेतसः॥श्रोष्यन्ति चैव ये भक्त्याममममाहात्म्यमुत्तमम् ॥४॥न तेषांदुष्कृतं किञ्चिद्दुष्कृतोत्थानचापदः ॥भविष्यतिनदारिद्र्यं न चैवेष्टवियोजनम् ॥५॥ शत्रुतो न भयं तस्य दस्युतो वा न राजतः॥न शस्त्रानलतोयौघात्कदाचित्सम्भविष्यति ॥६॥ तस्मान्ममैतन्माहात्म्यं पठितव्यं

देवी बोली—॥१॥ जो मनुष्य एकाग्र चित्त हो इस (दुर्गापाठ) स्तोत्र से मेरी स्तुति सब दिन (हमेशा) किया करैगा मैं उसकी सब बाधायें (कष्ट) अवश्य ही नाश करूँगी ॥२॥ मधुकैटभ (प्रथम अध्याय) नाश का, महिषासुर के (दूसरे अध्याय से चार तक) मारे जाने का और उसी प्रकार [६ अध्याय से १३ तक] शुम्भनिशुम्भ के बध का महात्म्य ॥३॥ जो कोई अष्टमी, चौदस और दोनों पक्ष की नवमी को दृढ़ चित्त होकर भक्ति पूर्वक कीर्तन करे व सुनेगा ॥४॥ उसको दुष्कृत-जनित [पाप] व दुष्कृत-जनित कोई विपत्ति नहीं घेरेगी न उसे कभी दरिद्रता होगी तथा न उसे इष्टमित्रों का कभी वियोग होगा ॥५॥ उसको शत्रु का कभी भय न होगा, तथा चोर, रोग और राज का भय न होगा ॥ शस्त्र, अग्नि और जल का भय भी कभी कुछ न होगा ॥६॥ इसलिये मेरा ये माहात्म्य भक्ति पूर्वक चित्त

समाहितैः ॥ श्रोतव्यं च सदा भक्त्या परं स्वस्त्ययनं हि तत् ॥७॥ उपसर्गानशेषांस्तु महामारीसमुद्भवान् ॥ तथा ❀ त्रिविधमुत्पातं माहात्म्यं शमयेन्मम ॥८॥ यत्रैतत्पठ्यते सम्यङ्नित्यमायतने मम ॥ सदा न तद्विमोक्ष्यामि सान्निध्यं तत्र मे स्थितम् ॥९॥ वलिप्रदाने पूजायामग्निकार्ये महोत्सवे । सर्वं ममैतच्चरितमुच्चार्यं श्राव्यमेव च ॥१०॥ जानताजानता वापि वलिपूजां तथा कृताम् ॥ प्रतीच्छिष्याम्यहं प्रीत्या

लगा कर पढ़ने और सुनने योग्य है इससे परम कल्याण होता है ॥७॥ मेरा यह माहात्म्य महामारी [प्लेग] समुत्थित अनेक प्रकार के उपसर्ग तथा त्रिविध-उत्पात [आधि दैविक, आधिभौतिक, आध्यात्मिक] को दूर करता है ॥८॥ जिस घर में यह माहात्म्य पूर्ण रीति से निरन्तर पाठ किया जाता है मैं उस घर को कभी परित्याग नहीं करती हूं ॥ वहीं मेरा सांनिध्य होता है ॥९॥ बलिप्रदान के समय पूजा के समय अग्नि कार्य (हवन) के समय वा अन्यान्य महोत्सवों में मेरे इस चरित्र का उच्चारण करना और सुनना बहुत आवश्यक है॥१०॥ जानकर अथवा बिना जाने वलियुक्त, होम व पूजा होने से वह पूजा प्रसन्नता-पूर्वक मैं

त्रैविध्यं, आध्यात्मिकाधिदैविकाधिभौतिक भेदेन । तत्राध्यात्मिकं द्विविधं शारीरं मानसं च ॥ शारीरं वातपित्तश्लेष्मणां वैशम्यनिमित्तं ॥ मानसं, काम क्रोध लोभ मोहेर्ष्या विषाद दर्शन निबन्धनम् ॥ सर्वं चैतदान्तरो पाप साध्यत्वादाध्यात्मिकं च ॥ तत्राधिभौतिकं, मानुष पशु पक्षि सरीसृप स्थावर निमित्तं ॥ आधिदैविकं यक्ष राक्षस विनायक ग्रहादिनिबन्धनमिति ॥

वह्निहोमं तथा कृतम् ॥११॥ शरत्काले महापूजा क्रियते या च वार्षिकी ॥ तस्यां ममैतन्माहात्म्यं श्रुत्वा भक्तिसमन्वितः ॥१२॥ सर्वाबाधाविनिर्मुक्तो धनधान्यसुतान्वितः ॥ मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न-संशयः ॥१३॥ श्रुत्वा ममैतन्माहात्म्यं तथा चोत्पत्तयः शुभाः ॥ पराक्रमं च युद्धेषु जायते निर्भयः पुमान् ॥१४॥ रिपवः संक्षयं यान्ति कल्याणं चोपपद्यते ॥ नन्दते च कुलं पुंसां माहात्म्यं मम शृण्वताम् ॥१५॥ शान्तिकर्मणि सर्वत्र तथा दुःस्वप्नदर्शने । ग्रहपीडासु चोग्रासु माहात्म्यं शृणुयान्मम ॥१६॥ उपसर्गाः शमं यान्ति ग्रहपीडाश्च दारुणाः

ग्रहण करती हूं ॥शरत काल [आश्विन शुक्ला] में जो वार्षिकी महा पूजा होती है उस पूजा के समय मेरा यह माहात्म्य भक्ति पूर्वक सुनने से मनुष्य ॥१२॥ मेरी कृपा से सब प्रकार की आपत्ति यों से मुक्त होता है धन धान्य और पुत्र समन्वित निश्चय होता है ॥१३॥ मेरा यह माहात्म्य तथा मेरी इस शुभ उत्पत्ति की कथा सुनने तथा युद्ध में मेरा पराक्रम सुनने से पुरुष निर्भय होता है ॥१४॥ उस (सुननेवाले) के शत्रुओं का नाश हो जाता है तथा उसका कल्याण होता है और मेरा माहात्म्य सुननेवाले का कुल भी आनन्द पाता है ॥१५॥ सब जगह शान्ति कामों में, और दुःस्वप्न देखने से तथा उग्र ग्रह पीड़ा में पड़ने से मेरा यह माहात्म्य सुनना चाहिए ॥१६॥ इस माहात्म्य के सुनने से उपसर्ग

दुःस्वप्नं च नृभिर्दृष्टं सुस्वप्नमुपजायते ॥१७॥ बालग्रहाभिभूतानां बालानां शान्तिकारकम् ॥ संघातभेदे च नृणां मैत्रीकरणमुत्तमम् ॥१८॥ दुर्वृत्तानामशेषाणां बलहानिकरं परम् ॥ रक्षोभूतपिशाचानां पठनादेव नाशनम् ॥१९॥ सर्वं ममैतन्माहात्म्यं मम सन्निधिकारकम् ॥ पशुपुष्पार्घधूपैश्च गन्धदीपैस्तथोत्तमैः ॥२०॥ विप्राणां भोजनैर्होमैः प्रोक्षणीयैरहर्निशम् ॥ अन्यैश्चविविधैर्भोगैःप्रदानैर्वत्सरेण या ॥२१॥ प्रीतिर्मे क्रियते सास्मिन्सकृत्सुचरिते श्रुते ॥ श्रुतं हरति पापानि तथारोग्यं प्रयच्छति ॥२२॥ रक्षां करोति

(अतिवृष्टि-अनावृष्टि,४।८।१२स्थान स्थित क्रूर ग्रह जनित अरिष्ट दुःस्वप्न आदि) और दारुण ग्रह पीड़ा शान्त हो जाती है दुःस्वप्न देखे हुये सुस्वप्न हो जाते हैं ॥१७॥ बाल ग्रह के भूतों से पीड़ित बालकों को यह शान्तिकारक होता है मनुष्यों में आपस की शत्रुता नाश करके मित्रता कराता है ॥ १८ ॥ यह अशेष दुर्वृत्त मनुष्यों का परम उत्कृत्ष्ट बलहानि कारक है, इसके केवल पाठ मात्र से रक्ष (राक्षस) भूत और पिशाचों का नाश हो जाता है ॥१९॥ मेरा यह सम्पूर्ण माहात्म्य मेरा सन्निधि (समीप लाने वाला) कारक है, उत्तम पशु, पुष्प, अर्घ, धूप, गंध, दीप॥२०॥ ब्राह्मण भोजन, हवन, प्रोक्षणीय दान और अन्यान्य भोग के द्वारा रात दिन एक वर्ष पर्यन्त पूजा करने से ॥२१॥ जितना मैं प्रसन्न होती हूं उतना ही प्रसन्न मैं इसके एक बार सुनने से (सुनने वाले पर) होती हूँ मेरे माहात्म्य के सुनने से सब पाप

भूतेभ्यो जन्मनां कीर्तनं मम ॥ युद्धेषु चरितं यन्मे दुष्ट दैत्यनिबर्हणम् ॥२३॥ तस्मिञ्छ्रुते वैरिकृतं भयं पुंसां न जायते ॥ युष्माभिः स्तुतयो याश्च याश्च ब्रह्मर्षिभिः कृताः ॥२४॥ ब्रह्मणा च कृतास्तास्तु प्रयच्छन्ति शुभां मतिम् ॥ अरण्ये प्रान्तरे वापि दावाग्निपरिवारितः ॥२५॥ दस्युभिर्वा वृतः शून्ये गृहीतो वापि शत्रुभिः ॥ सिंहव्याघ्रानुयातो वा वने वा वनहस्तिभिः ॥२६॥ राज्ञा क्रुद्धेन चाज्ञप्तो बध्यो बन्धगतोऽपि वा ॥ आघूर्णितो वा वातेन स्थितः पोते महार्णवे ॥२७॥ पतत्सु चापि शस्त्रेषु संग्रामे भृश-

---

दूर हो जाते हैं और सब रोग भाग जाते हैं ॥ २२ ॥ और मेरे जन्म का कीर्तन करने से सब भूतों से रक्षा होती है शत्रुओं के मारने वाला जो मेरा चरित्र है ॥२३॥ उसको सुनने से वैरियों के द्वारा भय नहीं रहता है तुम (देवगणों) ने जो स्तुति (४ अ० ११ अ०) करी है और जो ब्रह्मर्षियों ने स्तुति करी है ॥२४॥ तथा ब्रह्मा ने जो (१ अ० रा० सू०) स्तुति करी है इन सब स्तुतियों के पढ़ने से शुभ मति (बुद्धि)होती है, वन में, गाँव के दूर रास्ते में अथवा दावाग्नि (बाँस के जंगल) में घिर जाने से ॥२५॥ चोरों से घिर जाने पर, शून्य स्थान में घिरने पर, शत्रुओं द्वारा पकड़े जाने पर, सिंह व्याघ्र (चीते) वा वन के हाथी से चोट खाने पर ॥२६॥ क्रुद्ध राजा से फाँसी की आज्ञा पाने पर, बंधन (कारागार) में जाने पर, पोत [जहाज] में समुद्र की यात्रा के समय दुष्ट वात चलने पर ॥२७॥ लड़ाई में दारुण शस्त्र

दारुणे ॥ सर्वाबाधासु घोरासु वेदनाभ्यर्दितोऽपि वा ॥२८॥ स्मरन्ममैतच्चरितं नरो मुच्येत सङ्कटात् ॥ मम प्रभावात्सिंहाद्या दस्यवो वैरिणस्तथा॥२९॥ दूरादेव पलायन्ते स्मरतश्चरितं मम ॥३०॥ ऋषिरुवाच ॥३१॥ इत्युक्त्वा सा भगवती चण्डिका चण्डविक्रमा ॥३२॥ पश्यतांसर्व देवानां तत्रैवान्तरधीयत॥ तेऽपि देवा निरातङ्काः स्वाधिकारान्यथा पुरा ॥३३॥ यज्ञभागभुजः सर्वे चक्रुर्विनिहतारयः ॥ दैत्याश्च देव्या निहते शुम्भे देवरिपौ युधि ॥३४॥ जगद्विध्वंसिनि तस्मिन् महोग्रेऽतुलविक्रमे ॥ निशुम्भे च महावीर्ये

की वरषा होने में, अथवा सब तरह की विपत्ति तथा यंत्रणा पाते रहने पर ॥२८॥ मेरे इस [सप्तशती] चरित्र का स्मरण करने से मनुष्य संकट से निकल जाता है, मेरे चरित्र को जो आदमी स्मरण करता है, मेरे प्रभाव से सिंह, चोर, तथा शत्रुगण ॥२९॥ मेरे इस चरित्र के स्मरण करने से दूर से ही भाग जाते हैं ॥३०॥ ऋषि बोले ॥३१॥ इतनी कथा कहकर चण्ड विक्रमा चण्डिका भगवती ॥३२॥ देखते ही देखते देवगण के सामने से वहाँ ही अन्तर्ध्यान होगई और सब देवगण भी निरातङ्क हो जिस प्रकार पूर्व में अपने अधिकार पर थे ॥३३॥ शत्रुओं का नाश होने से सब अपना-अपना यज्ञ भाग लेने लगे देवी के द्वारा सब दैत्यों के मारे जाने तथा देवताओं के शत्रु शुम्भ का युद्ध क्षेत्र में नाश होने से ॥३४॥ और जगत का विध्वंस करने वाले बड़े उग्र अतुल पराक्रमी तथा महाबली उस

शेषाः पातालमाययुः ॥३५॥ एवं भगवती देवी सा नित्यापि पुनः पुनः ॥ सम्भूय कुरुते भूप जगतः परिपालनम् ॥३६॥ तयैतन्मोह्यते विश्वं सैव विश्वं प्रसूयते ॥ सा याचिता च विज्ञानं तुष्टा ऋद्धिं प्रयच्छति ॥३६॥ व्याप्तं तयैतत्सकलं ब्रह्माण्डं मनुजेश्वर॥ महाकाल्या महाकाले महामारीस्वरूपया ॥३८॥ सैव काले महामारी सैव सृष्टिर्भवत्यजा ॥ स्थितिं करोति भूतानां सैव काले सनातनी ॥३६॥ भवकाले नृणां सैव लक्ष्मीर्वृद्धिप्रदा गृहे ॥ सैवाभावे तथालक्ष्मीर्विनाशायोपजायते ॥४०॥ स्तुता संपूजिता पुष्पैर्धूपगन्धादिभिस्तथा ॥ ददाति वित्तं पुत्रांश्च मतिं धर्मे

निशुम्भ के मारे जाने पर शेष बचे हुए राक्षस पाताल को चले गये ॥३५॥ हे राजन्! इस तरह वह भगवती देवी नित्या भी है परन्तु बार-बार प्रकट होकर संसार का परिपालन करती है ॥२६॥ वही भगवती इस संसार को मोहित करती है और उत्पन्न करती है तथा उस (भगवती) से याचना करने से प्रसन्न होने पर वह तत्वज्ञान और ऐश्वर्य देती है ॥ ३७ ॥ हे मनुजेश्वर! महामारी स्वरूपा वही महाकाली महाकाल (महाप्रलय) में इस सम्पूर्ण संसार को आवरण कर (ढक) लेती है ॥३८॥ और वही किसी काल में महामारी हो जाती है तथा किसी समय में संसार को पैदा करती है और वही सनातनी देवी किसी समय में रक्षा करती है ॥३६॥ मंगल समय में वही मनुष्यों के स्थान में

तथा शुभाम् ॐ ॥ ४१ ॥ इति श्री मार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमहात्म्ये फलस्तुतिर्नाम द्वादशोऽध्यायः ॥१२॥ उवाच २ अर्ध २ श्लोक ३७ एवम् ४१ एवमादितः ॥६७१॥

ॐ जय जय मार्कण्डेयपुराणेसावर्णिकेमन्वन्तरे देवी माहात्म्ये सत्याः सन्तु (यजमानस्य कामाः) जगदम्बार्पणमस्तु ॥ ऐसा बोलकर जल छोड़ना ॥

———

वैदिक आहुति १२ अध्याय की ॥

एक पान पर शाकल्य १ कमलगट्टा घी में भिगोकर १ सुपारी, २ लोंग, १ छोटी इलायची, गूगल, इस अध्याय में विशेष ऋतुफल, केला ही है ॥ सब चीजें स्रु चीमें रख खड़े होकर मंत्र बोलना २६० पृष्ठे ॥

तान्त्रिक आहुति ॥

क्लीं जयन्ती सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै *वर प्रदायै वैष्णवी देव्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ॥ सामान सब ऊपर लिखा है ॥

———

अनेक प्रकार का ऐश्वर्य देती है उसीके अभाव से लक्ष्मी अन्तर्हिता होती है और मनुष्य का नाश हो जाता है ॥४०॥ स्तुति करने से गन्ध पुष्प, धूप, दीप आदि से पूजन करने से वह भगवती धन पुत्र और धर्म्म में शुभमति देती है ॥४१॥

इति आगरा निवासी श्री घनश्याम गोस्वामी द्वारा रचित दुर्गापाठ के १२ अध्याय का भाषानुवाद समाप्त हुआ ॥

* पा० वाला त्रिपुर सुन्दर्यै ।

अथ त्रयोदशोऽध्यायारम्भः ॥

अथ ध्यानम् ॥

ॐ बालार्कमण्डलाभासां चतुर्बाहुं त्रिलोचनाम्॥ पाशाङ्कुशवराभीतिर्धारयन्तींशिवांभजे॥ १ ३॥

ऋषिरुवाच॥ १ ॥ ॐ एतत्ते कथितं भूप देवी-माहात्म्यमुत्तमम् ॥ एवं प्रभावा सा देवी ययेदं धार्यते जगत् ॥२॥ विद्या तथैव क्रियते भगवद्विष्णुमायया ॥ तया त्वमेष वैश्यश्च तथैवान्ये विवेकिनः ॥३॥ मोह्यन्ते मोहिताश्चैव मोहमेष्यन्ति चापरे ॥ तामुपैहि महाराज शरणं परमेश्वरीम् ॥ ४ ॥

बाल सूर्य [उदय होते हुए] के समान शरीर की कान्ति चार हाथों में पाश, अंकुश, वर, अभय- धारण करे हुए ३ नेत्र वाली शिवा की सेवा करता हूँ ॥

ऋषि बोले—॥१॥ हे राजा सुरथ मैंने तुझ से यह उत्तम देवी का माहात्म्य कह सुनाया जो देवी इस संसार को धारण करती है उसका ऐसा ही प्रभाव है ॥२॥ वही विष्णु माया विद्या देती है वही तुमको इस [समाधिवैश्य] को और हम लोगों के समान विवेकी वेद शास्त्र के जानने वाले [ज्ञानी] मनुष्यों को ॥३॥ मोहती है, मोहित करे हुए है और आगे होने वालों को भी मोह लेगी, हे महाराजा आप उसी भगवती परमेश्वरी की शरण में जाइये ॥४॥ उसकी आराधना करने से वह [भगवती] मनुष्यों को भोग [ऐश्वर्य] स्वर्ग (सौख्य) और मोक्ष (यद्गत्वा

आराधिता सैव नृणांभोगस्वर्गापवर्गदा ॥ ५ ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥६॥ इति तस्य वचः श्रुत्वा सुरथः स नराधिपः ॥७॥ प्रणिपत्य महाभागं तमृषिं शंसितव्रतम् ॥ निर्विण्णोऽतिममत्वेन राज्यापहरणेन च ॥८॥ जगाम सद्यस्तपसे स च वैश्यो महामुने ॥ संदर्शनार्थमम्बाया नदीपुलिनसंस्थितः ॥६॥ स च वैश्यस्तपस्तेपे देवीसूक्तं परं *जपन् ॥ तौतस्मिन्पुलिने देव्याः कृत्वा मूर्तिं महोमयीम् ॥१०॥ अर्हणां चक्रतुस्तस्याः पुष्पधूपाग्नितर्पणैः ॥ निराहारौ‡ यता-

---

न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम ॥ गीता से) जहाँ से लौटकर न आवै अर्थात् बार बार जन्ममरण से रहित होना देती है ॥५॥ मार्कण्डेयजी बोले ॥६॥ हे महामुनेक्रौष्टिकि ! ॥७॥ (अतिशय ममतापन्न और राज्य हरे जाने के कारण) वह राजा सुरथ मेधा (वसिष्ठ) ऋषि की बात सुनकर कठोर व्रत सम्पन्न उन महाभाग ऋषि को प्रणाम करके उसी समय तपस्या करने चला गया ॥८॥ और उस (समाधि) वैश्य ने भी ऐसा ही किया वह राजा सुरथ और समाधि वैश्य दोनों नदी के किनारे स्थित होकर भगवती के दर्शन करने के लिये ॥६॥ राजा और समाधि वैश्य दोनों देवी सूक्त का जप करने लगे उन दोनों ने नदी के किनारे पर ही देवी की मूर्ति मृत्तिका की बनाकर ॥१०॥ नित्य

---

* जिह्वोष्ठौ चालयेत्किंचिद्देवतागतमानसः ॥ किंचिच्छ्रवणयोग्यः स्यादुपांशुः स जपः स्मृतः ॥ १ ॥

‡ निराहाराविति विशेषणेन शरीरं पातयामि वा ॥ मन्त्रं साध-

हारौ तन्मनस्कौ समाहितौ ॥११॥ददतुस्तौ *वलिं चैव निजगात्रासृगुक्षितम् ॥ एवं समाराधयतोस्त्रिभिर्वर्षैर्यतात्मनोः ॥१२॥ परितुष्टा जगद्धात्री प्रत्यक्षं प्राह चण्डिका ॥१३॥ देव्युवाच ॥१४॥ यत्प्रार्थ्यते त्वया भूप त्वया च कुलनन्दन ॥ मत्तस्तत्प्राप्यतां सर्वं परितुष्टा ददामि तत् ॥१५॥ मार्कण्डेय उवाच॥१६॥ ततो वव्रे नृपो राज्यमविभ्रंश्यन्यजन्मनि ॥ अत्रैव च निजं राज्यंहतशत्रु बलंबलात् ॥१७॥सोऽपिवैश्यस्ततो ज्ञानं वव्रे निर्विण्णमानसः ॥ ममेत्यहमिति-

अति पुष्प, धूप, और हवन तर्पण आदि द्वारा देवी की अनन्यभाव से पूजा करने लगे उन दोनों ने नियमित आहार व निराहार तथा तद्गत चित्त और समाहित होकर ॥११॥ फिर राजा सुरथ और समाधि वैश्य ने अपने शरीर के रक्त व मांस का बलि देकर ३ वर्ष पर्यन्त मन व इन्द्रियों को वशकर तप किया ॥१२॥ तब चण्डिका देवी ने प्रसन्न होकर सामने प्रगट हो कहा ॥१३॥ जगद्धात्री देवी बोली ॥१४॥ हे राजा सुरथ ! और हे कुलनन्दन ! वैश्य तुम दोनों मुझसे जो वर चाहते हो ॥१५॥ वह सब मुझसे प्राप्त करो और "मैं" प्रसन्न होकर तुम दोनों को वर देती हूँ ॥ १६॥ मार्कण्डेयजी ने कहा ॥१७॥ कि हे क्रौष्टिकि मुने ! राजा

यामीति हठयोगः सूचितः ॥ पूर्वंयताहारौपश्चान्निराहारावित्यत्र विपरीते पाठक्रमादर्थ क्रमस्य बलवत्वम् ॥

* तदुक्तं । तुण्डजं बाहुजं वापि रक्तमांसमयं बलिम् । भक्त्यावेशान्महाशूरो महामायार्थमुत्सृजेत् ॥

प्राज्ञः संगविच्युतिकारकम् ॥१८॥देव्युवाच ॥१९॥
स्वल्पैरहोभिर्नृपते स्वं राज्यं प्राप्स्यते भवान् ॥२०॥
हत्वा रिपूनस्खलितं तव तत्र भविष्यति ॥२१॥
मृतश्च भूयः संप्राप्य जन्मदेवाद्विवस्वतः ॥२२॥
सावर्णिको मनुर्नाम भवान् भुवि भविष्यति ॥२३॥
वैश्यवर्य त्वया यश्च वरोऽस्मत्तोऽभिवाञ्छितः ॥२४॥
तं प्रयच्छामि संसिद्ध्यैतव ज्ञानं भविष्यति ॥२५॥
मार्कण्डेय उवाच ॥२६॥ इति दत्त्वा तयोर्देवी
यथाभिलषितं वरम् ॥२७॥ बभूवान्तर्हिता सद्यो

ने दूसरे जन्म में अखण्ड सम्पूर्ण राज्य और ॥१८॥ इस जन्म में भी अपने पुरुषार्थ से शत्रु को मारकर अपना राज्य मिलने का वर माँगा ॥१९॥ अनन्तर उस स्थिर चित्त बुद्धिमान वैश्य ने भी "यह मेरा" और "यह मैं" इस तरह अभिमान की जड़ का नाश करने वाला तत्त्व ज्ञान माँगा ॥२०॥ देवी ने कहा ॥२१॥ हे नृपति ! थोड़े ही दिनों में तू अपना राज्य पावेगा ॥२२॥ और वैरियों को मार कर तेरा अखंड राज होगा, तदनन्तर मृत्यु को प्राप्त होकर फिर सूर्य से जन्म लेकर ॥२३॥ पृथ्वी पर सावर्णि नामक मनु करके विख्यात होगा, और हे वैश्यवर्य ! तैंने जो मुझसे मनवांछित वर मांगा है ॥२४॥ सो वह वर मैं तुझको देती हूँ इससे तुझको ज्ञान की सिद्धि होगी ॥२५॥ मार्कण्डेयजी ने कहा ॥२६॥ देवी ने उन दोनों (सुरथ और समाधि) को इस प्रकार इच्छित वर देने के ॥२७॥ अनन्तर सुरथ और समाधि दोनों ने उस देवी की स्तुति करी और उसी समय देवी प्रसन्न-

भक्त्या ताभ्यामभिष्टुता । एवं देव्या वरं लब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्षभः ॥ २८ ॥ सूर्याज्जन्म समासाद्य सावर्णिर्भविता मनुः ॥ २९ ॥ ❀एवं देव्यावरं लब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्षभः ॥ सूर्याज्जन्म समासाद्य सावर्णिर्भविता मनुः॥ क्लीं ॐ ॥ ३० ॥ इति श्री मार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये सुरथवैश्ययोर्वरप्रदानं नाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥१३॥ उवाच ६ अर्ध ११ श्लोक १२ एवं २९ एवमादितः ॥ ७०० ॥ समस्त उवाच ५७ अर्ध ४२ श्लोक ५३५ अवदानम् ॥६६॥

ता पूर्वक वहाँ से अन्तरध्यान हो गई ॥ हे क्रौष्टिके इस प्रकार सुरथ राजा देवी से वर प्राप्त करके सूर्यदेव से सवर्णा में उत्पन्न होकर सावर्णि नाम का मनु होगा ॥२९॥

* * *

---

* स्तोत्रे च संहितायाञ्च अन्तःश्लोकं पठेद्द्विधा ॥ इति रुद्रयामले । ब्रह्मानन्द रसं पीत्वा येतु उन्मत्त योगिनः ॥ इन्द्रोऽपि रङ्कवद्भाति का कथा नृप कीटकः ॥

सप्तशती स्तोत्र प्रशंसा लक्ष्मी तन्त्रे ॥

सम्यग्हृदि स्थिता सेयं जन्मकर्मावलिस्तुतिः ॥ एतां द्विज मुखाज्ज्ञात्वा अधीयानो नरः सदा ॥ विधूय निखिलां मायां सम्यग्ज्ञानं समश्नुते ॥ सर्वसम्पदमाप्नोति धुनोति निखिलापद इति ॥ सर्वेषां द्विजातीनां सप्तशती पाठनिष्ठानां कामधुगेवेति शिवम् ॥

ॐ जय जय मार्कण्डेयपुराणेसावर्णिकेमन्वन्तरे देवी माहात्म्ये सत्याः सन्तु (यजमानस्य कामाः) जगदम्बार्पणमस्तु ॥ ऐसा बोलकर जल छोड़ना ॥

वैदिक आहुति १३ अध्याय की ।

एक पान पर शाकल्य १ कमलगट्टा, घी में भिगोकर १ सुपारी, २ लोंग, १ छोटी इलायची, गूगल, इस अध्याय में विशेष १ फल, व फूल है । सब चीजें स्रुची में रख खड़े होकर मंत्र बोलना ॥ मंत्र २५०पृष्ठ

तान्त्रिक आहुति ॥

क्लीं जयन्ती सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै* श्री विद्यायै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ॥ सामान सब ऊपर लिखा है ॥

अथोत्तर करषडङ्ग न्यासाः ॥

ओं ह्रीं हृदयाय नमः ॥ ओं चं शिरसे स्वाहा ॥ ओं डिं शिखायैवषट् ॥ ओं कां कवचायहुम् ॥ ओं यैं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ओं ह्रीं चंडिकायै अस्त्रायफट् ॥ ओं खड्गिनी शूलिनी घोरा गर्दिनो चक्रिणो तथा ॥ शंखिनी चापिनी वाणभुशुण्डी परिघायुधा ॥ हृदयाय नमः ॥ ओं शूलेनपाहिनो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके ॥ घण्टा स्वनेन नः पाहि चापज्या-निःस्वनेन च ॥ शिरसे स्वाहा ॥ ओं प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यांच चण्डिके रक्ष दक्षिणे ॥ भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यांतथेश्वरि ॥ शिखायैवषट् ॥ ओं सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते ॥ यानि

---

* श्री महा त्रिपुरसुन्दर्यै ।

चात्यर्थं घोराणि तैरक्षास्मांस्तथाभुवम् ।। कवचाय हुम् ।। उं खड्ग शूल गदादीनि यानि चास्त्राणितेम्बिके ।। कर पल्लव संगीनि तैरस्मान्रक्ष सर्वतः ।। नेत्रत्रयाय वौषट् ।। उं सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्ति समन्विते ।। भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोस्तु ते अस्त्रायफट् ।। इन्हीं मन्त्रों से पूर्व में कराङ्गन्यास करना ।।

अथ ध्यानम् ।।

उं विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां।कन्याभिः करवाल खेट विलसद्धस्ताभिरासेविताम् । हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखाँश्चापं गुणं तर्जनीं बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे ।। १ ।।*

अथ ऋग्वेदोक्त देवीसूक्तम् ।।

उं अहमित्यष्टर्चस्य सूक्तस्य वागम्भृणो ऋषिः सच्चित्सुखात्मकः सर्वगतः परमात्मादेवता, द्वितीयाया जगती, शिष्टानांत्रिष्टुप् छन्दः, देवी माहात्म्य पाठे विनियोगः ।।

अथ ध्यानम् ।।

उं सिंहस्था शशि शेखरा मरकत प्रख्यैश्च-

---

* इसका अर्थ बारहवें अध्याय के प्रारम्भ में है ।

तुर्भिर्भुजैः शंखं चक्र धनुः शरांश्च दधतीं नेत्रैस्त्रिभिः शोभिता ॥ आमुक्ताङ्गदहार-कंकणरणत्काञ्चीरणन्नूपुरा दुर्गा दुर्गति हारिणी भवतु नो रत्नोल्लसत्कुण्डला ॥

ॐ अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चराम्यहमादित्यैरुताविश्वदेवैः॥ अहंमित्रावरुणोभाविभर्म्यहमिंद्राग्नीअहमश्विनोभा ॥ १ ॥

सिंह पर बैठी हुई मस्तक पर चन्द्रमा शोभित है मरकत मणि (पन्ना) के समान कान्ति ४ हाथों में शंख चक्र धनु बाण धारण करे हुए तीन नेत्रों से सुशोभित रतन जड़े कुंडल तथा सम्पूर्ण आभूषण पहरे हुए पैरों में नूपुर बजते हुए जो हमारी दुर्गति तथा दरिद्र को नाश करे ऐसी दुर्गा का ध्यान करता हूँ॥

मैं (सच्चिदानन्द स्वरूप आत्मा) रुद्र, वसु, आदित्य, इस प्रकार विश्वदेवगण रूप से विचरती हूँ। मित्र, वरुण, इन्द्र, अग्नि और दोनों अश्विनी कुमारों को “मैं” (आत्मा) ही धारण किये हुए हूं ॥ (व्याख्या) (अहं = मैं) सत्सत्य, चित् = चैतन्य और आनन्द स्वरूप आत्मा ही (मैं) हूँ॥ यद्यपि “मैं” (आत्मा) कहने से साधारणतः देहात्म बुद्धि युक्त जनन, मरण, धर्मी सुख दुःख, से चन्चल संसार क्लिष्ट एक जीव मात्र समझा जाता है, तथापि कुछ धीर भाव से “मैं” (आत्मा) का स्वरूप विचारें तो हम इसे बहुत ऊंचे स्तर (पर्त वा तह) का “मैं” देखपाते हैं । आओ पिपासित साधक ! हम माता का नाम लेकर आगे बढ़ें ॥ १ ॥ “मैं” (आत्मा) शत्रु हन्ता

अहं सोममाहनसं बिभर्म्यहं त्वष्टारमुत पूषणं भगम् ॥ अहं दधामिद्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये ३ यजमानाय सुन्वते ॥ २ ॥

अहं राष्ट्री सङ्गमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमायज्ञियानाम्।।तां मादेवाव्यदधुः पुरुत्राभूरिस्थात्रां भूर्यावेशयन्तीम् ॥ ३ ॥

मयासो अन्नमत्तियो विपश्यति यः प्राणिति य ईं शृणोत्युक्तम् ॥ अमन्तवो मान्त उपक्षियन्ति श्रुधि श्रुत श्रद्धिवन्ते वदामि ॥४॥

सोम, (सोम याग) त्वष्टा, (विश्व कर्मा पूषा (सूर्य) एवं भग (ईश्वर) नामक देवताओं को धारण करती हूँ जो देवताओं के उद्देश्य से प्रचुर हवि युक्त सोमयागादि का अनुष्ठान करते हैं, उन यजमानों का यज्ञफल "मैं" (आत्मा) धारण करती हूँ ॥२॥ "मैं" (आत्मा) इस ब्रह्माण्ड की एक मात्र अधीश्वरी हूँ ॥ "मैं" पार्थिव और, अपार्थिव धन देनेवाली हूँ "मैं" (आत्मा) ब्रह्म साक्षात्कार रूपा सम्बित् वा ज्ञान रूपा हूँ ॥ यह ज्ञान ही सब उपासनाओं का आदि है, "मैं प्रपञ्च रूप से अनेक भाव में अवस्थिता हूँ । भूरि भाव से अनन्त जीवों में प्रविष्टा हूँ, देवता इस प्रकार मेरी अनेक भाव से उपासना करते हैं ॥३॥ जीव जो अन्नादि खाद्य द्रव्य भक्षण करता है, दर्शन करता है एवं प्राण धारण करता है ये सब क्रियायें मेरे द्वारा ही सिद्ध होती हैं ॥ जो मुझको इस तरह (सब कर्मों में) नहीं देखते, समझ नहीं सकते, वे ही संसार में क्षीणता (नाश को प्राप्त होते हैं) ॥ हे

अहमेव स्वयमिदं वदामि जुष्टं देवेभिरुत मानुषेभिः ॥ यं कामये तंतमुग्रं कृणोमितंब्रह्माणं तमृषिं तं सुमेधाम् ॥ ५ ॥

अहं रुद्राय धनुरातनोमि ब्रह्म द्विषेशर वेहन्त वा उ ॥ अहंजनाय समदंकृणोम्यहं द्यावा-पृथिवी आविवेश ॥ ६ ॥

अहंसुवे पितरमस्य मूर्द्धन्मम योनिरप्स्वन् १ तः समुद्रे ॥ ततो वितिष्ठे भुवनानु विश्वो तामूद्यां वर्ष्मणोपस्पृशामि ॥ ७ ॥

सौम्य ! तुमसे जो तत्व कहे हैं उन्हें श्रद्धासहित सुनो॥४॥ "मैं" (आत्मा) ने स्वयं ही इन तत्त्वों का उपदेश दिया है, देवता और मनुष्यों द्वारा यही परिसेवित (चरण सेवा) है, "मैं" जिसको इच्छा करती हूँ, उसको सबसे उच्च पद प्रदान करती हूँ उसको ब्रह्मा करती हूँ, ऋषि बनाती हूँ, उसको आत्म ज्ञान धारणोपयोगिनी मेधा (बुद्धि) प्रदान करती हूँ ॥५॥ "मैं" (आत्मा) ब्रह्म ज्ञान विरोधी विनाश योग्य रुद्र (एकादश इन्द्रिय) को हनन करने के लिए प्रणव रूप धनुष पर आत्म स्वरूप शर (बाण) युक्त करती हूँ, एवं इस प्रकार "मैं" ही जनमूह के लिये युद्ध करती हूँ ॥ "मैं" स्वर्ग मर्त्य दोनों लोकों में सर्वतो भाव से अनुप्रविष्टा हूँ ॥६॥ "मैं" (आत्मा) ने जगत्पिता को उत्पन्न किया ॥ इसके ऊपरी भाग में आनन्दमय कोषाभ्यन्तरस्थ विज्ञानमय कोष में हमारा कारण अवस्थित है ॥ "मैं" समग्र भुवनों में प्रविष्ट होकर अवस्थिता हूँ ॥ यह जो दूरवर्ती स्वर्ग लोक है

अहमेव वात इव प्रवाम्यारभमाणा भुवनानि विश्वा ॥ परोदिवा पर एना पृथिव्यै तावती महिना संबभूव ॥ ८॥

❀ ॐ तत्सत् ❀

ऋग्वेदोक्त देवी सूक्तं सम्पूर्णम् ॥

अथ देवीसूक्तम् ॥

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः॥नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम् ॥ १ ॥ रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमोनमः ॥ ज्योत्स्नायै चेन्दु रूपिण्यैसुखायै सततंनमः॥२॥कल्याण्यैप्रणतां वृद्ध्यै सिद्ध्यै कुर्मो नमोनमः ॥ नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमोनमः ॥३॥ दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै ॥ ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः ॥ ४ ॥ अतिसौम्यातिरौद्रायै नतास्तस्यै नमोनमः ॥ नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै

वह भी ‘‘मैं’’ ने अपने शरीर द्वारा स्पर्श किया है ॥७॥ ‘‘मैं’’ (आत्मा) जलवायु की भाँति प्रवाहित होती हूं तब ही यह समग्र भुवनों की सृष्टि आरम्भ होती है ॥ इस स्वर्ग, मर्त्य के परे भी ‘‘मैं’’ (आत्मा) वर्तमान हूँ ॥ यही मेरी महिमा है ॥८॥

नमोनमः ॥ ५ ॥ या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥ ६ ॥ या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्यभिधी यते नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥७॥ या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता॥नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यैनमोनमः॥८॥यादेवीसर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता॥नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥ ९ ॥ या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥ १० ॥ या देवी सर्वभूतेषु छायारूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥११॥ या देवी सर्व भूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥१२॥ या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥१३॥ या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥१४॥ या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥ १५ ॥ या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥१६॥ या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै

नमस्तस्यै नमोनमः ॥१७॥ या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण
संस्थिता ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै
नमोनमः ॥१८॥ या देवी सर्वभूतेषु कान्ति-रूपेण
संस्थिता ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः
॥१९॥ या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता ॥
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥ २० ॥
या देवी सर्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥२१॥ या देवी सर्वभूतेषु
स्मृतिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै
नमस्तस्यै नमोनमः ॥ २२ ॥ या देवी सर्वभूतेषु
दयारूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै
नमोनमः ॥२३॥ या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण
संस्थिता ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः
॥२४॥ या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता ॥
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥ २५ ॥
या देवी सर्वभूतेषु भ्रांतिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥२६॥ इन्द्रियाणामधिष्ठात्री
भूतानां चाखिलेषु या ॥ भूतेषु सततं तस्यै
व्याप्ति देव्यै नमोनमः ॥ २७ ॥ चितिरूपेण या
कृत्स्नमेतद्व्याप्य स्थिता जगत् ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै
नमस्तस्यै नमोनमः ॥२८॥ स्तुता सुरैः पूर्वम-

भीष्टसंश्रयात्तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता ॥ करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरीशुभानि भद्राण्यभिहन्तुचापदः ॥२६॥ या साम्प्रतं चोद्धतदैत्यतापितैरस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्य ते ॥ या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः सर्वापदो भक्ति-विनम्रमूर्तिभिः ॥३०॥* इति देवीसूक्तं पठित्वा नवार्ण न्यासान्विधाय ध्यायेत् ॥

महाकाल्यादि ध्यानम् ॥

दशास्यां दशपादाञ्च दशहस्तां विधिस्तुताम् ॥ इन्द्रनील द्युतिं खड्गं चक्रं शंखं शिरः शरान् ॥ दशहस्तेषु दधतीं गदां शूलं भुशुंडिकाम् ॥ परिघञ्च धनुर्बाणौ दधतीं ब्रह्म संस्तुताम् ॥ मधुकैटभनाशार्थं सालंकारां त्रिवीक्षणाम् ॥१॥

ततोऽध्यायेन्महालक्ष्मीं महिषासुर मर्दिनीम् ॥ समस्त देवता तेजो जाताम्पद्मासन स्थिताम् ॥ अष्टादशभुजामक्षमालां च पञ्चसायकान् ॥ खड्गं वज्रं गदां चक्र दक्षहस्ते कमण्डलुम् ॥ शंखंचदधतीं वामे शक्तिं च परशुन्धनुः ॥ चर्मदण्डौ सुरापात्रं घण्टां पाशं त्रिशूलकम् ॥२॥

सरस्वतीं ततोऽध्यायेच्छरच्चन्द्र समप्रभाम् ॥ शंखंचमुसलञ्चक्रं बाणान्दक्षेषु बिभ्रतीम् ॥ घण्टां

शूलं हलं चापं वाम हस्तेषु बिभ्रतीम् ॥ गौरी देह समुद्भूतां नृणामानन्द दायिनीम् ॥ आधारभूतां जगतः शुम्भादिक विमर्दिनोम् ॥३॥* इति ध्यात्वा मानसोपचारैर्पूजयेत् ॥ नवार्ण मन्त्रं जपेत् ॥

ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ॥१०८॥ नवार्ण मंत्रं जप्त्वा ३७४ पृ० पुनरुत्तर न्यासान्विधाय गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ॥ सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि ॥३१॥* ॥*

क्षमापनम् ॥

ओं यदक्षरं पदभ्रष्टं मात्राहीनञ्च यद्भवेत् ।
क्षन्तुमर्हसितद्देवि कस्य न स्खलितं मनः ॥ १ ॥
अज्ञानाद्विस्मृतेर्भ्रान्त्या यन्न्यूनमधिकं कृतम् ।
विपरीतं तु तत्सर्वं क्षमस्व परमेश्वरि ॥ २ ॥
यस्याः स्मृत्याचनामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु ।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति त्वत्प्रसादान्महेश्वरि ॥ ३ ॥
मन्त्र हीनं क्रिया हीनं भक्ति हीनं सुरेश्वरि ।
या स्तुतासि मयादेवी तस्मात्त्वं वरदाभव ॥ ४ ॥
कामेश्वरि जगन्मातः सच्चिदानन्द विग्रहे ।
गृहाण त्वं स्तुतिमिमां प्रसीद परमेश्वरि ॥ ५ ॥

---

* इन श्लोकों का अर्थ अध्याय १।२।५ में देखना ।

यदत्रपाठे जगदम्बिके मया, विसर्गविंद्वक्षरहीनमीरितम् ।
तदस्तु सम्पूर्णतमं प्रसादतः संकल्पसिद्धिश्च सदैवजायताम् ।।६।।
यन्मात्रा विन्दु-विन्दु द्वितय-पद-पद-द्वन्द्व-वर्णादिहीनम् ।
भक्त्या-भक्त्यानु पूर्वं प्रसभ-कृति-वशाद्व्यक्तमव्यक्तमम्ब ।।
मोहादज्ञानतो वा पठितमपठितं साम्प्रतं ते स्तवेस्मिन् ।
तत्सर्वं साङ्गमास्तां भगवति वरदे त्वत्प्रसादात्प्रसीद ।। ७ ।।
प्रसीद भगवत्यम्ब प्रसीद भक्तवत्सले ।
प्रसादं कुरु मे देवि दुर्गे देवि नमोस्तु ते ।। ८ ।।
यस्यार्थे पठितं स्तोत्रं तवेदं शङ्कर प्रिये ।
तस्य देहस्य गेहस्य शान्तिर्भवतु सर्वदा ।। ९ ।।
यत्किंचित्क्रियते देविमया सुकृत दुष्कृतम् ।।
तत्सर्वं त्वयिसन्यस्तं त्वत्प्रयुक्तः करोम्यहम् ।।

इति सर्वसमर्पयेत्

ॐ शान्तिः ।। ॐ शान्तिः ।। ॐ शान्तिः ।।

अथ प्राधानिक रहस्यारंभः ।।

ॐ अस्य श्रीसप्तशतीरहस्यत्रयस्य नारायण ऋषिरनुष्टुप्छन्दः महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वती देवता यथोक्तफलावाप्त्यर्थं जपे विनियोगः ।।

इस सप्तशती के—तीनों रहस्यों के नारायण ऋषि तथा अनुष्टुप् (३२ अक्षर का) छन्द है और तीनों रहस्यों की महाकाली महा लक्ष्मी तथा महा सरस्वती देवता हैं मनवाँछित फल प्राप्ति के लिये इनका पाठ करते हैं ।।

राजोवाच ॥

भगवन्नवतारा मे चण्डिकायास्त्वयोदिताः ॥ एतेषां प्रकृतिं ब्रह्मन्प्रधानं वक्तुमर्हसि ॥१॥ आराध्यं यन्मया देव्याः स्वरूपं येन तद्द्विज ॥ विधिना ब्रूहि सकलं यथावत्प्रणतस्य मे ॥२॥ ऋषिरुवाच ॥ इदं रहस्यं परममनाख्येयं प्रचक्षते ॥ भक्तोसीति न मे किञ्चित्तवावाच्यं नराधिप ॥३॥ सर्वस्याद्या महालक्ष्मीस्त्रिगुणा परमेश्वरी ॥ [1]लक्ष्यालक्ष्यस्वरूपासा व्याप्यकृत्स्नंव्यवस्थिता ॥४॥ [2]मातुलिङ्गं गदां खेटं

राजा बोला—हे भगवन् ! आपने दुर्गा (चण्डिका) के अवतार कहे परन्तु हे ब्रह्मन् इनकी प्रकृति कहिये ॥१॥ और हे द्विज ! भगवती के जिस स्वरूप की आराधना (उपासना) मुझ को करनी है वह विधि पूर्वक मुझ दीन को बतलाइये ॥२॥ ऋषि ने कहा—कि यह रहस्य परम गुप्त है और किसी से कहने लायक नहीं है तथापि हे राजन् तू भक्त है इस कारण मेरे समीप ऐसा कोई पदार्थ नहीं जो तुझ से न कहूं ॥३॥ सब की आदि स्वरूपा महालक्ष्मी तीनों गुण वाली परमेश्वरी है तथा वह लक्ष्य और अलक्ष्य स्वरूपा है और सम्पूर्ण में व्याप्त होकर स्थित है ॥४॥ हे राजन् वह मातुलिंग (बिजौराफल), गदा, खेट, (ढाल)

१—अस्ति भाति प्रियं रूपं नामचेत्यंश पञ्चकम् ॥
आद्यं त्रयं ब्रह्मरूपं माया रूपं ततोद्वयम् ॥
२—सह्याद्रिखण्डे रेणुका माहात्म्ये ॥
दक्षिणेधः करे पात्रं मूर्ध्वे कौमोदकीं गदाम् ॥

पानपात्रं च बिभ्रती ॥ नागंलिङ्गं च योनिं च बिभ्रती नृपमूर्द्धनि ॥५॥ तप्तकाञ्चनवर्णाभा तप्तकाञ्चनभूषणा ॥ शून्यंतदखिलं स्वेन पूरयामास तेजसा ॥६॥ शून्यंतदखिलं लोकं विलोक्य परमेश्वरी ॥ बभार परमंरूपं तमसा केवलेन हि ॥७॥ सा भिन्नाञ्जनसंकाशादंष्ट्राङ्कितवरानना ॥ विशाललोचनानारी बभूव तनुमध्यमा ॥८॥ खड्गपात्रशिरः खेटैरलंकृ-

---

पानपात्र (कटोरा) इनको शिर पर धारण करती है ॥५॥ तथा तप्त सुवर्ण के समान सुन्दर आभूषण पहरे हुए अपने तेज से सम्पूर्ण आकाश को पूरित करती है ॥६॥ उस परमेश्वरी ने सम्पूर्ण जगत् को शून्य (०) देख कर केवल तमोगुण से एक अन्य रूप धारण किया ॥७॥ और वह भिन्न अञ्जन के समान कान्तिवाली दंष्ट्रा से शोभायमान मुखवाली विशाल नेत्रों से शोभित तथा सूक्ष्म कटि (कमर) वाली स्त्री के स्वरूप हो गई ॥८॥ और

वामेथ खेटकं धत्ते श्रीफलं तदधः करे ॥
बिभ्रती मस्तके लिङ्गं पूजनीया विभूतये ॥
भुवनेश्वरी संहितायामेतेषामर्थः ॥
मात लिङ्गं कर्मवृन्दं क्रिया शक्त्यात्मिका गदा ॥
ज्ञान शक्त्यात्मकं खेटं तुर्यं वृत्तिस्तु पानकम् ॥
लिङ्गं पुरुष इत्युक्तो योनिस्तु प्रकृतिः स्मृता ॥
नागः कालः समाख्यातः सम्बन्धस्तु तयोर्द्वयोः ॥

तथाचमातुलिङ्ग ग्रहणेन सर्व कर्मणां फलदात्र्यहमस्मीति बोध्यते ॥ गदा धारणेन क्रिया स्वरूपा विक्षेप शक्तिर्मय्यस्तीति बोधितम् ॥ खेट धारणेन ज्ञानशक्ति सद्भावदर्शनेनावरणा भावो बोधितः ॥ पानपात्रेण निरन्तरमहं स्वात्मानन्दानुभवंरसं पिवामीति बोध्यम् ॥

तच्चतुर्भुजा ॥ कबन्धहारं शिरसा विभ्राणाहि शिरःस्रजम् ॥९॥ सा प्रोवाच महालक्ष्मीं तामसी प्रमदोत्तमा ॥ नाम कर्म च मे मातर्देहि तुभ्यं नमोनमः ॥ १०॥ तां प्रोवाच महालक्ष्मीस्तामसीं प्रमदोत्तमाम् ॥ ददामि तव नामानि यानि कर्माणि तानि ते ॥११ ॥ महामाया महाकाली महामारी क्षुधा तृषा ॥ निद्रा तृष्णा चैकवीरा कालरात्रिर्दुरत्यया ॥१२॥ इमानि तव नामानि प्रतिपाद्यानि कर्मभिः ॥ एभिः कर्माणि ते ज्ञात्वा योऽधीते सोऽश्नुते सुखम् ॥१३॥

खड्ग, पानपात्र, (कटोरा) शिर, तथा माला शिर से धारण करती हुई ॥९॥ उस तामसी उत्तम नारी (स्त्री) ने महालक्ष्मी से कहा कि, हे माता ! तुम मेरा नाम धरो और मेरा कर्म बताओ मैं तुमको नमस्कार करती हूँ ॥१०॥ फिर उस महालक्ष्मी ने उस उत्तम तामसी स्त्री रूप से कहा कि, मैं तेरे नाम और जो कुछ कर्म हैं सो कहे देती हूँ ॥११॥ महामाया १, महाकाली २, महामारी ३, (प्लेग) ४, क्षुधा (भूख) ५, तृषा (प्यास) ६, निद्रा ७, तृष्णा ८, एक वीरा ९, कालरात्री और दुरत्यया १०, ॥१२॥ यह तेरे नाम कर्म के अनुसार और उन नामों से जो तेरे कर्मों को जानकर पढ़ता है वह सुख पाता है ॥१३॥ हे राजन् ! महालक्ष्मी

द्वयोः प्रकृति पुरुषयोः संबन्धात्मकोहि कालः ॥

तथा च तेषां धारणेन तेषां प्रकृति पुरुषकालानामधिष्ठान ब्रह्म रूपिण्यहमस्मीति देव्या बोधितम् ।

स्थूल रूप से यही पाश अंकुश अभय वर आयुध हैं ॥

तामित्युक्त्वा महालक्ष्मीः स्वरूपमपरं नृप॥ सत्त्वाख्येनातिशुद्धेनगुणेनेन्दुप्रभंदधौ ॥१४॥ अक्षमालाङ्कुशधरा वीणापुस्तकधारिणी ॥ सा बभूव वरा नारी नामान्यस्यै च सा ददौ ॥१५॥ महाविद्यामहावाणी भारती वाक् सरस्वती ॥ आर्या ब्राह्मी कामधेनुर्वेदगर्भा च धीश्वरी ॥१६॥ अथोवाच महालक्ष्मीर्महाकालीं सरस्वतीम् ॥ युवां जनयतां देव्यौ मिथुने स्वानुरूपतः ॥१७॥ इत्युक्त्वा ते महालक्ष्मीः ससर्ज मिथुनं स्वयम् ॥ हिरण्यगर्भौ रुचिरौ स्त्रीपुंसौ कमलासनौ ॥१८॥ ब्रह्मन्विधे विरञ्चेति धातरित्याह तं नरम् ॥ श्रीःपद्मे कमले लक्ष्मीत्याह माता च तां

ने उस से ऐसा कहकर अति शुद्ध सतोगुण युक्त चन्द्रमा के समान कान्ति दूसरा स्वरूप धारण कर लिया ॥१४॥ तथा अक्ष (रुद्राक्ष) माला, अंकुश, वीणा, और पुस्तक इनको धारण करे हुए वह उत्तम नारी हो गई और इसके नाम भी कहने लगी ॥१५॥ महाविद्या १, महावाणी २, भारती ३, वाक् ४, सरस्वती ५, आर्या ६, ब्राह्मी ७, कामधेनु ८, वेदगर्भा ९, और धीश्वरी १०, ॥१६॥ तदन्तर महालक्ष्मी ने कहा कि तुम दोनों देवी अपने स्वरूप के अनुसार स्त्री पुरुष का जोड़ा उत्पन्न करो ॥१७॥ फिर महालक्ष्मी ने उन दोनों से यह कह कर आप ही महाकाली और महासरस्वती हिरण्यगर्भ वाले सुन्दर कमलासन पर बैठ स्त्री पुरुष का १ जोड़ा उत्पन्न किया ॥१८॥ फिर उस

स्त्रियम् ॥१९॥ महाकाली भारती च मिथुने सृजतः
सह ॥ एतयोरपि रूपाणि नामानि च वदामि ते
॥२०॥ नीलकण्ठं रक्तबाहुं श्वेताङ्गं चन्द्रशेखरम्
॥ जनयामास पुरुषं महाकाली सितां स्त्रियम् ॥
२१॥ स रुद्रः शङ्करः स्थाणुः कपर्दी च त्रिलोचनः
॥ त्रयो विद्या कामधेनुः सा स्त्री भाषाक्षरा स्वरा ॥
॥२२॥ सरस्वती स्त्रियं गौरीं कृष्णं च पुरुषं नृप ॥
जनयामास नामानि तयोरपि वदामि ते ॥ २३ ॥
विष्णुः कृष्णो हृषीकेशो वासुदेवो जनार्दनः ॥ उमा
गौरी सती चण्डी सुन्दरी सुभगा शिवा ॥ २४ ॥

पुरुष के हे ब्रह्मन् १, हे विधि २, हे विरंचि ३, हे धातः ४ नाम धरे और उस स्त्री से श्रीः १, पद्मा २, कमला ३, और लक्ष्मी ४ ये नाम कहे ॥१९॥ तिस के बाद महाकाली और महासरस्वती ने भी अपने अपने दोनों जोड़े रचे उनके भी स्वरूप और नाम तुझ से कहता हूँ ॥२०॥ महाकाली ने नीलकण्ठ वाले रक्तवाहु श्वेत शरीर वाले तथा चन्द्रमा को ललाट पर धारण करे हुए पुरुष को और गौरी स्त्री को उत्पन्न किया ॥ २१ ॥ और उस पुरुष के रुद्र, शंकर स्थाणु, कपर्दी, और त्रिलोचन ये नाम कहे तथा उस स्त्री के त्रयी, विद्या, कामधेनु, भाषा, अक्षरा, और स्वरा ये नाम धरे ॥२२॥ और हे राजन्! सरस्वती ने गौरी स्त्री और कृष्ण पुरुष को उत्पन्न किया। उन दोनों के नाम मैं तुझ से कहता हूँ ॥२३॥ पुरुष के विष्णु कृष्ण, हृषीकेश, वासुदेव और जनार्दन, तथा स्त्री के उमा, गौरी, सती

एवं युवतयः सद्यः पुरुषत्वं प्रपेदिरे ॥ चक्षुष्मन्तो नु पश्यन्ति नेतरेऽतद्विदो जनाः ॥२५॥ ब्रह्मणे प्रददौ पत्नीं महालक्ष्मीर्नृपत्रयीम् ॥ रुद्राय गौरीं वरदां वासुदेवाय च श्रियम् ॥ २६॥ स्वरया सह संभूय विरञ्च्योऽण्डमजीजनत् ॥ बिभेद भगवान् रुद्रस्तद् गौर्या सह वीर्यवान् ॥२७॥ अण्डमध्ये प्रधानादि कार्यजातमभून्नृप ॥ महा भूतात्मकं सर्वं जगत्स्थावरजङ्गमम् ॥२८॥ पुपोष पालयामास तल्लक्ष्म्या सह केशवः ॥ संजहार जगत्सर्वं सह गौर्या महेश्वरः

चण्डी सुन्दरी सुभगा, और शुभा, ॥२४॥ बाद में यह स्त्रियां तत्काल ही पुरुषत्व को प्राप्त हो गईं सो ऐसा दिव्य दृष्टि वाले पुरुष तो देखते हैं और मनुष्य नहीं जानते ॥२५॥ हे नृप ! महालक्ष्मी ने वेदत्रयी पत्नी को ब्रह्मा को दिया और समाचार देने वाली गौरी को शिव के लिये और विष्णु को लक्ष्मी दी ॥२६॥ फिर ब्रह्मा ने स्वरा के साथ मिल कर इस ब्रह्माण्ड (जगत) को रचा और वीर्यवान् रुद्र भगवान ने गौरी के साथ मिलकर उस (ब्रह्माण्ड) को फोड़ा ॥२७॥ और हे राजन् ! ब्रह्माण्ड (संसार) में प्रधानादि जो कुछ कार्य हुआ वह संपूर्ण जगत् स्थावर, जंगम और महाभूत पृथ्वी, जल, प्रकाश, वायु, आकाश हैं इनसे उत्पन्न हुआ है ॥२८॥ तदनन्तर विष्णु भगवान ने लक्ष्मी के साथ ही सब का पालन किया और महेश्वर ने गौरी के साथ उस संपूर्ण जगत का संहार [नाश] किया ॥२९॥ हे महाभाग राजा सुरथ !

॥२६॥ महालक्ष्मीर्महाराज सर्वसत्त्वमयीश्वरी ॥
निराकारा च साकारा सैव नानाभिधानभृत् ॥३०॥
नामान्तरैर्निरूप्यैषा नाम्ना नान्येन केनचित् ऊँ ॥
३१॥ इतिप्राधानिकं रहस्यं सम्पूर्णम् ॥

अथ वैकृतिरहस्यारम्भः ॥

ऋषिरुवाच ॥

ऊँ त्रिगुणा तामसा देवी सात्त्विकी या त्रिधोदिता ॥ सा शर्वा चण्डिका दुर्गा भद्रा भगवतीर्यते
॥ १ ॥ योगनिद्रा हरेरुक्ता महाकाली तमोगुणा ॥
मधुकैटभ-नाशार्थं यां तुष्टावाम्बुजासनः ॥ २ ॥

महालक्ष्मी सर्वसत्त्वमयी ईश्वरी है वही निराकार और साकार नामों को धारण करती है ॥३०॥ तथा यही महालक्ष्मी और नामों से भी निरूपण की जाती है परन्तु जो नाम कहे हैं उन से भिन्न नाम करके नहीं ॥३१॥

ऋषि बोले—तुमने जो त्रिगुणा तामसी और सात्त्विकी देवी कही वही शर्वा, चण्डिका, दुर्गा, भद्रा और भगवती कहाती है ॥ १ ॥ तथा तमोगुणवाली महाकाली विष्णुभगवान् की योगनिद्रा कहाती है कि जिसकी स्तुति मधुकैटभके नाश के लिये ब्रह्मा ने करी थी ॥ २ ॥ दशमुखा, दशभुजा और दश

दशवक्त्रा दशभुजा दशपादाञ्जनप्रभा ॥ विशालया राजमाना त्रिंशल्लोचनमालया ॥ ३ ॥ स्फुरद्दशनदंष्ट्रा सा भीमरूपापिभूमिप ॥ रूपसौभाग्यकान्तोनां सा प्रतिष्ठा महाश्रियः ॥ ४ ॥ खड्गबाणगदाशूलंशंखचक्रभुशुण्डिभृत् ॥ परिघं कार्मुकंशीर्षं निश्च्योतद्रुधिरन्दधौ ॥ ५ ॥ एषा सा वैष्णवी माया महाकाली दुरत्यया ॥ आराधितावशी कुर्यात्पूजाकर्तुश्चराचरम् ॥६॥ सर्वदेवशरीरेभ्यो याऽऽविर्भूताऽमितप्रभा ॥ त्रिगुणा सा महालक्ष्मीः साक्षान्महिषमर्दिनी ॥७॥ श्वेतानना नीलभुजा सुश्वेतस्तनमण्डला ॥ रक्त-

चरणवाली तथा काजल के समान श्याम प्रभावाली एवं तीन नेत्रों की विशाल माला से शोभायमान ॥ ३ ॥ हे राजन् ! देदीप्यमान दांत और दंष्ट्रावाली वह भयंकर स्वरूपिणी भी महालक्ष्मी में रूप सौभाग्य और कान्ति इनकी प्रतिष्ठारूप होकर स्थित है ॥ ४ ॥ तथा खड्ग, बाण, गदा, शूल, शंख चक्र, भुशुण्डी, परिघ, धनुष और रुधिर टपकते हुए शिरको धारण करती है ॥ ५ ॥ यह महाकाली दुरत्यया विष्णु की माया है कि जिसकी आराधना करने से सब चराचर पूजा करने वाले के वश में हो जाते हैं ॥ ६ ॥ जो सम्पूर्ण देवताओं के शरीर से उत्पन्न हुई है वह अतुल कांतिवाली त्रिगुणा महालक्ष्मी साक्षात् महिषमर्दिनी है ॥ ७ ॥ श्वेतमुख नीलभुजा और श्वेतस्तनमंडल वाली एवं रक्त कटि तथा चरणवाली नीली पिण्डली और

मध्या रक्तपादा नीलजंघोरुरुन्मदा ॥ ८ ॥ सुचित्रजघना चित्रमाल्याम्बरविभूषणा ॥ चित्रानुलेपना कान्तिरूपसौभाग्यशालिनी ॥ ९ ॥ अष्टादशभुजा पूज्या सा सहस्रभुजा सती ॥ आयुधान्यत्र वक्ष्यन्ते दक्षिणाधःकरक्रमात् ॥ १० ॥ अक्षमाला च कमलं बाणोसिः कुलिशं गदा ॥ चक्रं त्रिशूलंपरशुः शङ्खो घण्टा च पाशकः ॥ ११ ॥ शक्तिर्दण्डश्चर्म चापं पानपात्रं कमण्डलुः ॥ अलंकृतभुजामेभिरायुधैः कमलासनाम्॥ १२ ॥ सर्वदेवमयीमीशां महालक्ष्मीमिमां नृप ॥ पूजयेत्सर्वलोकानां स देवानां प्रभुर्भवेत्

जंघावाली तथा उत्कट मदवाली ॥८॥ चित्र विचित्र जघनोंवाली और चित्र विचित्र ही माला वस्त्र तथा आभूषण धारण करने वाली अतीव विचित्र लेपन किये कांति रूप और सौभाग्य से शोभायमान ॥९॥ ऐसी वह पूज्य अठारह भुजावली सहस्र भुजावाली है अब यहां क्रम से दक्षिण और वाम हाथों के आयुध कहेंगे ॥१०॥ १ अक्षमाला, २ कमल, ३ बाण, ४ तरवार, ५ वज्र, ६ गदा, ७ चक्र, ८ त्रिशूल, ९ फरसा, १० शंख, ११ घंटा, १२ फांसी ॥११॥ १३ शक्ति, १४ दंड, १५ ढाल, १६ धनुष, १७ पानपात्र, १८ कमंडलु [लोटा व तोंबी] इन आयुधों से अलंकृत भुजावाली और कमल पर आरूढ ॥१२॥ सर्व देवमयी ईश्वरी इस महालक्ष्मी को जो पूजा करे वह पुरुष सब मनुष्य और देवताओं का स्वामी होय ॥१३॥ केवल सत्वगुण-

॥१३॥ गौरीदेहात्समुद्भूता या सत्त्वैकगुणाश्रया ॥
साक्षात्सरस्वती प्रोक्ता शुम्भासुरनिबर्हिणी ॥१४॥
दधौ चाष्टभुजा बाणमुसलंशूलचक्रभृत् ॥ शङ्खं घण्टां
लाङ्गलं च कार्मुकं वसुधाधिप ॥१५॥ एषा संपूजिता
भक्त्या सर्वज्ञत्वं प्रयच्छति ॥ निशुम्भमथिनी देवी
शुम्भासुरनिबर्हिणी ॥ १६ ॥ इत्युक्तानि स्वरूपाणि
मूर्तीनां तव पार्थिव ॥ उपासनं जगन्मातुः पृथगासां
निशामय ॥ १७ ॥ महालक्ष्मीर्यदा पूज्या महाकाली
सरस्वती ॥ दक्षिणोत्तरयोः पूज्ये पृष्ठतोमिथुनत्रयम् ॥ १८ ॥ विरञ्चिः स्वरया मध्ये रुद्रो गौर्या च
दक्षिणे ॥ वामेलक्ष्म्याहृषीकेशः पुरतोदेवतात्रयम् ॥

प्रधानवाली जो गौरी के देह से उत्पन्न हूई है वह शुंभासुर को मारने वाली साक्षात् सरस्वती कहलाती है ॥१४॥ हे राजन् ! और वह आठ भुजावाली है १ बाण, २ मूसल, ३ शूल, ४ चक्र, ५ शंख, ६ घंटा, ७ हल और ८ धनुष को धारण करती है ॥१५॥ भक्तिपूर्वक पूजन करने से वह शुंभ, निशुंभनाशिनी देवी सर्वज्ञत्वको देती है ॥१६॥ हे राजन् ! अभी ये तो मूर्तियों के स्वरूप तुझसे कहे और अब इन जगन्माताओं की अलग २ उपासना सुन ॥१७॥ कि, जब महालक्ष्मी का पूजन करे तब दक्षिण और उत्तर की ओर क्रमसे महाकाली और महासरस्वती का पूजन करना चाहिये और पीछे की ओर तीनों मिथुनों का पूजन करे ॥१८॥ सरस्वती के साथ ब्रह्मा का मध्यमें, गौरी के

॥ १९ ॥ अष्टादशभुजा मध्ये वामे चास्या दशानना।
दक्षिणेऽष्टभुजा लक्ष्मीर्महतीतिसमर्चयेत् ॥ २० ॥
पूर्वादिदलतः पूज्या असिताङ्गादिभैरवाः॥अष्टादशभुजा
चैषा यदा पूज्या नराधिप ॥ २१ ॥ दशानना
चाष्ट भुजा दक्षिणोत्तरयोस्तदा ॥ दशानना यदा
पूज्या दक्षिणोत्तरयोस्तदा ॥ २२ ॥ कालमृत्यू च
संपूज्यौ सर्वारिष्टप्रशान्तये ॥ यदा चाष्टभुजा पूज्या

साथ रुद्रका दक्षिण में, और लक्ष्मी के साथ हृषीकेशका उत्तर में पूजन करे इसके आगे इन तीन देवताओं के पूजन करे ॥१९॥ मध्यमें अर्थात् महालक्ष्मी के सामने अष्टादशभुजा लक्ष्मी का और इसके वामभाग में अर्थात् महाकाली के सम्मुख दशमुखी महाकाली का और दक्षिणभाग में महासरस्वतीका इस प्रकार महालक्ष्मी का पूजन करना चाहिये॥२०॥ पूर्वादि दलमें असितांगादि ८ भैरवों का पूजन करे ॥ और हे राजन्! जो केवल अष्टादश भुजाका ॥२१॥ अथवा दशानना का अथवा अष्टभुजीका पूजन करना हो तो दक्षिण और उत्तर की ओर क्रमसे सम्पूर्ण अरिष्टशान्ति करने के लिए काल और मृत्यु का पूजन करे और आगे (अष्टभुजाका दूसरा प्रकार विशेषरूप से कहते हैं कि) जब आठ भुजावाली शुंभासुरमर्दिनी का पूजन करनाहो तो ॥२२॥ *जयादि नवशक्तिका पूजन [और दक्षिण-उत्तर की ओर क्रमसे] रुद्र और गणेश का पूजन करे और 'नमोदेव्यै'

---

* नवशक्ति यह ही हैं जो नारायणीस्तुती में कही गई हैं ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, नारसिंही, ऐन्द्री-शिवदूती, चामुण्डा

शुम्भासुरनिबर्हिणी ॥ २३ ॥ नवास्याः शक्तयः पूज्यास्तदा रुद्रविनायकौ ॥ नमोदेव्या इति स्तोत्रैर्महालक्ष्मीं समर्चयेत् ॥ २४ ॥ अवतारत्रयार्चायां स्तोत्रमन्त्रास्तदाश्रयाः । अष्टादशभुजा चैषा पूज्या महिषमर्दिनी ॥२५॥ महालक्ष्मीर्महाकाली सैव प्रोक्ता सरस्वती ॥ ईश्वरी पुण्यपापानां सर्वलोकमहेश्वरी ॥ २६ ॥ महिषान्तकरी येन पूजिता स जगत्प्रभुः॥ पूजयेज्जगतां धात्रीं चण्डिकां भक्तवत्सलाम् ॥२७॥ अर्घ्यादिभिरलंकारैर्गन्धपुष्पैस्तथाक्षतैः॥धूपैर्दीपैश्च नैवेद्यैर्नानाभक्ष्यसमन्वितैः॥२८॥ रुधिराक्तेन बलिना

(५ अध्यायमें है) इस स्तोत्रसे महालक्ष्मी का पूजन करे ॥२३॥ जगदम्बा के तीनों अवतारों के पूजन में स्तोत्र मंत्रादिक उनही के आश्रित हैं तथा यह अष्टादश भुजावाली है और वही महिषमर्दिनी॥२४॥ महासरस्वती है यह पुण्य पापों की ईश्वरी और सम्पूर्ण लोकोंकी महेश्वरीहै॥२५॥जिसने महिषासुरमर्दिनी का पूजन किया वह जगत् का स्वामी है सम्पूर्ण जगतकी धारण करनेवाली तथा भक्तों से प्रीति करनेवाली चण्डिका का ॥२६॥ अर्घादिक आभूषण तथा उत्तम २ गन्ध पुष्प धूप दीप नैवेद्य तथा और अनेक भक्ष, भोज्य, चोष्य, लेह्य, ४ प्रकार के खाद्य पदार्थ इनसे पूजन करना चाहिये ॥ २७ ॥ (तामसी) रुधिर मिले हुए मांस के बलि से तथा मद्य से पूजा करना किन्तु बलि मांसादिका पूजन ब्राह्मणों के लिये मने किया है ॥२८॥ और हे राजन् ! ब्राह्मणों को मद्यमांस पूजा करना

मांसेन सुरया नृप ॥ बलिमांसादिपूजेयं विप्रवर्ज्या मयेरिता ॥ २६ ॥ तेषां किल सुरामांसैर्नोक्ता पूजा नृप क्वचित्॥प्रणामाचमनीयैश्च चन्दनेनसुगन्धिना ॥ ३० ॥ सकर्पूरैश्च ताम्बूलैर्भक्तिभावसमन्वितैः । वामभागेऽग्रतो देव्याश्छिन्नशीर्ष महासुरम् ॥ ३१ ॥ पूजयेन्महिषं येन प्राप्तं सायुज्यमीशया ॥ दक्षिणे पुरतः सिंहं समग्रं धर्ममीश्वरम् ॥ ३२ ॥ वाहनं

कहीं नहीं कहा है इनको तो प्रणाम आचमन चन्दन और सुगन्धि इनके द्वारा ॥२६॥ तथा भक्तिभावपूर्वक कर्पूर और ताम्बूलों करके पूजन करना चाहिये एवं देवी के आगे वामभाग में महिषासुर के कटे हुए शिरका पूजन करना ॥३०॥ और जो ईश्वरी से मोक्ष चाहता हो वह महिषासुर का पूजन करे और दक्षिण की ओर अग्रभाग में समग्र धर्म रूप ईश्वर सिंह को ॥ ३१॥ कि, जिसने चराचर को धारण कर रक्खा है यह जो देवी का वाहन सिंह है उसका पूजन करना और फिर अंजली बांधकर इन चरित्रों से स्तुति करे ॥३२॥ तथा जो समय न मिले

अथ कुञ्जिका स्तोत्रम् ॥

ईश्वर उवाच ॥ शृणुदेवि प्रवक्ष्यामि कुञ्जिका मंत्र मुत्तमम् ॥ येन
मन्त्र प्रभावेन चण्डी जपसुसिद्धिदम् ॥ १ ॥ कवचं नार्गलास्तोत्रं कीलकं
नरहस्यकम् ॥ न सूक्तं नापि ध्यानं च न न्यासं नापिचार्चनं ॥२॥ कुञ्जिका
पाठमात्रेण दुर्गा पाठ फलं लभेत् ॥ अति गुह्यतरं देवि देवानामपिदुर्लभं
। ३ ॥ गोपनीयं प्रयत्नेन स्व योनिमिवपार्वति ॥ मारणं मोहनं वश्यं
स्तम्भनोच्चाटनादिकम् ॥ ४ ॥ पाठमात्रेण सं सिद्धिः कुंजिकाः स्तोत्र मुत्त-
मम् ॥ मन्त्रोऽयम् ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ॥ ॐ ग्लौं हुं क्लीं
जूं सः ज्वालय २ ज्वल २ प्रज्वल २ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चेज्वल

पूजयेद्देव्या धृतं येनचराचरम् ॥ततः कृताञ्जलिर्भूत्वा स्तुवीत चरितैरिमैः ॥ ३३ ॥ एकेन वा मध्यमेन नैकेनेतरयोरिह । चरितार्धं तु न जपेज्जपच्छिद्रमवाप्नुयात् ॥ ३४ ॥ स्तोत्रमन्त्रैः स्तुवीतेमां यदि वा जगदम्बिकाम् ॥ प्रदक्षिणानमस्कारान्कृत्वा मूर्ध्नि कृताञ्जलिः ॥ ३५ ॥ क्षमापयेज्जगद्धात्रीं मुहुर्मुहुरतन्द्रितः ॥ प्रतिश्लोकं च जुहुयात्पायसंतिलसर्पिषा ॥३६॥ जुहुयात्स्तोत्रमन्त्रैर्वा चण्डिकायै शुभं हविः ।

तो केवल मध्यम चरित्र से ही स्तुति करे (क्योंकि लक्ष्मी मूल प्रकृति है) किन्तु दूसरे जो प्रथम और उत्तर चरित्र का पाठ न करे और आधे चरित्र का भी पाठ न करे ऐसा करने से जप में छिद्र हो जाता है ॥ ३३ ॥ और स्तोत्र तथा मंत्रों करके जगदम्बिकाकी स्तुति करके प्रदक्षिणा और नमस्कार करके अञ्जली बांध शिरसे दण्डवत् करे ॥३४॥ और सावधान हो कर जगद्धात्री से बारंबार क्षमा मांगे तिल घी और क्षीर (खीर) से प्रत्येक श्लोक करके हवन करे फिर सावधान होकर नाम और पदों से देवी का पूजन करे ॥३६॥ फिर निश्चल हो अं-

---

हं सं लं क्षं फट् स्वाहा ॥ इति मन्त्रः ॥ नमस्ते रुद्र रूपिण्यै नमस्ते मधु मर्दिनि ॥ नमः कैटभहारिण्यै नमस्ते महिषार्दिनि ॥ १ ॥ नमस्ते शुम्भ हन्त्र्यै च निशुम्भासुर विघातिनी ॥ २ ॥ जाग्रतंहि महादेवि जपसिद्धिं कुरुष्व मे ॥ ऐंकारी सृष्टि रूपायै ह्रींकारी प्रतिपालिका ॥ ३ ॥ क्लींकारी कामरूपिण्यै वीज रूपां नमोस्तु ते ॥ चामुण्डा चण्ड घाती च यैकारी वरदायिनी ॥ ४ ॥ विच्चे चा भयदायी च नमस्ते मन्त्र रूपिणी ॥ ५ ॥ धां धीं घूं धूर्जपत्नी वां वीं वूं वागीश्वरी तथा ॥ क्रां क्रीं क्रूं कालिकादेवि

भूयो नामपदैर्देवीं पूजयेत्सुसमाहितः ॥३७॥ प्रयतः प्राञ्जलिःप्रह्वःप्राणानारोप्य चात्मनि ॥ सुचिरंभावयेद्देवीं चण्डिका तन्मयो भवेत् ॥ ३८ ॥ एवं यः पूजयेद्भक्त्या प्रत्यहं परमेश्वरीम् ॥ भुक्त्वाभोगान्यथाकामं देवीसायुज्यमाप्नुयात् ॥३६॥ यो न पूजयते नित्यं चण्डिकां भक्तवत्सलाम् ॥ भस्मी कृत्यास्य पुण्यानि निर्दहेत्परमेश्वरी ॥ ४० ॥ तस्मात्पूजय भूपाल सर्वलोकमहेश्वरीम् । यथोक्तेन विधानेन चण्डिकां सुखमाप्स्यसि ओं ॥ ४१ ॥ इति वैकृति रहस्यं सम्पूर्णम् ॥

जली बांधकर तथा आत्मा में प्राणों को रोककर बहुत काल तक चण्डिका देवी की भावना करे और तन्मय होजाय ॥३७॥ इस प्रकार जो मनुष्य भक्तिपूर्वक परमेश्वरी का नित्य पूजन करता है वह अभीष्ट भोगों को भोगकर देवी के द्वारा मोक्षपद को प्राप्त होता है ॥३८॥ और जो पुरुष भक्तों से प्रीति करने वाली चण्डिका को नित्य नहीं पूजता है तो परमेश्वरी उसके

शां शीं शूं मे शुभं कुरु ॥ ६ ॥ हुँ हुँ हुँकार रूपिण्यै जं जं जं जंभनादिनी ॥ भ्रां भ्रीं भ्रूं भैरनी भद्रे भवान्यैते नमोनमः ॥ ७ ॥ अं कं चं टं तं पं यं शं वीं दुं ऐं वीं हं क्षं धिजाग्रं २ त्रोटय २ दीप्तं कुरु २ स्वाहा ॥ पां पी पूं पार्वति पूर्णा खां खीं खूं खेचरी तथा ॥ ८ ॥ सां सीं सूं सप्तशती सिद्धिं कुरु स्वजनमात्रतः ॥ इदं तु कुंजिकास्तोत्रंयंत्रं जाग्रते हेतवे ॥ मक्तेनैव तु दातव्यं गोपने रक्षपार्वति ॥ यस्तु कुञ्जिकया देविहीनं सप्तशतीं पठेत् ॥ न तस्य जायतेसिद्धिः अरण्येरोदनंयथा ॥

रुद्रयामले कुञ्जिका स्तोत्रम ॥

अथ मूर्तिरहस्य प्रारम्भः ॥

ऋषिरुवाच ॥

ॐ नन्दा भगवती नाम या भविष्यति नन्दजा ।
स्तुता सम्पूजिता भक्त्या वशीकुर्याज्जगत्त्रयम् ॥१॥
कनकोत्तमकान्तिः सा सुकान्तिकनकाम्बरा । देवी
कनक वर्णाभा कनकोत्तमभूषणा ॥ २ ॥ कमला-
ङ्कुशपाशाब्जैरलङ्कृतचतुर्भुजा । इन्दिरा कमला
लक्ष्मीः सा श्री रुक्माम्बुजासना ॥ ३ ॥ यारक्तद-

पुण्यों को भस्म करके उसको दग्ध कर देती है ॥३६॥ इसलिये हे राजन् ! यह सम्पूर्ण लोकों की महेश्वरी चण्डिका का कथित विधान से पूजन कर इसके करने से तू सुख पावेगा ॥४०॥
इति आगरा निवासी श्री घनश्याम गोस्वामी कृत दुर्गा पाठ के वैकृतिक रहस्य की भाषाटीका समाप्त हुई ॥

ऋषि बोले---नन्दा भगवती नामवाली जो नन्द से उत्पन्न होगी उसकी भक्ति पूर्वक स्तुति और पूजा करने से मनुष्य तीनों लोकों को वश में कर लेता है ॥ १ ॥ उसकी कान्ति सुवर्ण के समान उत्तम है और उसके वस्त्र सुवर्ण सदृश सुन्दर हैं और वह देवी सुवर्ण के समान दीप्तिमान् है ॥ २ ॥ कमल, अंकुश, पाश और अब्ज (शंख) इनसे चारों भुजा शोभित हैं और उसके इन्दिरा, कमला, लक्ष्मी, श्री, रुक्मा कमलासना ये नाम हैं ॥ ३ ॥ और हे धर्मिष्ट ! मैंने जो रक्तदन्तिका नाम देवी कही थी सम्पूर्ण भय का नाश करने वाली है उसका स्व-

न्तिका नामदेवी प्रोक्ता मयाऽनघ ।। तस्याः स्वरूपं वक्ष्यामि शृणु सर्वभयापहम् ।।४।। यच्छ्रुत्वा सर्वपापेभ्योमुच्यतेनात्रसंशयः ।। रक्ताम्बरारक्तवर्णा रक्तसर्वाङ्गभूषणा।।५।।रक्तायुधारक्तनेत्रारक्तकेशातिभीषणा।। रक्ततीक्ष्णनखारक्त-रसना रक्तदन्तिका ।।६।। पतिं नारीवानुरक्ता देवीभक्तं भजेज्जनम् ।। वसुधेव विशाला सा सुमेरु युगलस्तनो ।।७।। दीर्घौ लम्बावतिस्थूलौ तावतोव मनोहरौ । कर्कशावतिकान्तौ तौ सर्वानन्दपयोंनिधि ।। ८ ।। भक्तान्सम्पाययेद्देवी सर्वकामदुघौ स्तनौ । खड्ग पात्रशिरः खेटैरलंकृतचतुर्भुजा

रूप कहता हूं सो सुन ।। ४ ।। जिसके सुनने से मनुष्य सम्पूर्ण पापों से छूट जाता है इसमें कुछ संशय नहीं है, रक्त वस्त्र रक्त वर्ण और रक्त ही सम्पूर्ण अंगों के आभूषणों से शोभित ।।५।। रक्त आयुध, रक्त नेत्र तथा केशवाली अति भयंकर तथा रक्त नेत्र तीक्ष्ण नखवाली, रक्त आसन पर स्थित, रक्त दांत वाली देवी ।।६।। जैसे स्त्री पति के अनुकूल रहती है वैसे ही देवी भक्तजन के वश में रहती है और वह पृथ्वी के समान विशाल है और उसके दोनों स्तन सुमेरुपर्वत के समान हैं ।।७।। वे दोनों स्तन बड़े लम्बे, अतिस्थूल और अत्यन्त मनोहर कठोर कांतिमान और सर्व आनन्द के समुद्ररूप हैं ।।८।। ऐसे उन संपूर्ण कामनाओं को देनेवाले दोनों स्तनों को देवी अपने भक्तजनों को पिलाती है खड्ग, पात्र, शिर और खेट इनसे चारों भुजा शोभित हैं ।।९।। और रक्त चंडिका और योगेश्वरी देवी इस नाम से

॥९॥ आख्याता रक्त चामुण्डा देवी योगेश्वरीति च ॥ अनया व्याप्तमखिलं जगत्स्थावरजङ्गमम् ॥१०॥ इमां यः पूजयेद्भक्त्या स व्याप्नोति चराचरम्॥ भुक्त्वा भोगान्यथाकामं देवी सायुज्यमाप्नुयात् ॥११॥ अधीते य इमं नित्यं रक्तदन्त्या वपुःस्तवम्॥तं सा परिचरेद्देवी पतिं प्रियमिवांगना॥१२॥ शाकम्भरी नीलवर्णा नीलोत्पलविलोचना ॥ गम्भीरनाभिस्त्रिवलीविभूषिततनूदरी ॥१३॥सुकर्कशसमोत्तुङ्गवृत्तपीनघनस्तनी ॥ मुष्टौ शिलीमुखापूर्णं कमलं कमलालया ॥ १४ ॥ पुष्पपल्लवमूलादिफलाढ्यं शाकसञ्चयम्॥ काम्यानन्तरसैर्युक्तं क्षुत्तृण् मृत्यु-

---

विख्यात है ये संपूर्ण जगत् स्थावर जंगम में व्याप्त है ॥१०॥ जो पुरुष इसे भक्तिपूर्वक पूजता है वह चराचर में व्याप्त होता है ॥११॥ और जो पुरुष रक्तदन्तिका के इस स्तव को पढ़ता है तो देवी उसकी ऐसी परिचर्या करती है कि, जैसी स्त्री अपने प्रिय पति की ॥१२॥ शाकंभरी जो देवी है उसका नीलवर्ण है नील कमल के समान नेत्र हैं ॥ गंभीर नाभि है और त्रिवली से भूषित सूक्ष्म उत्तम उदर है ॥१३॥ कठोर, समान, ऊँचे, गोल और चिकने स्तन हैं, मुष्टि में सुन्दर कमल है कि, जिस पर भौंरे गूँज रहे हैं तथा रक्त कमल पर विराजमान है ॥१४॥ पुष्प पल्लव, मूल और फल इनसे युक्त तथा अनेक सुन्दर रसवाले एवं क्षुधा, तृष्णा, मृत्यु और वृद्धावस्था को दूर करने वाले शाक-

जरापहम् ॥१५॥ कार्मुकं च स्फुरत्कान्तिं बिभर्ति परमेश्वरी ॥ शाकम्भरी शताक्षी सा सैव दुर्गा प्रकीर्तिता ॥१६॥ उमा गौरी सती चण्डी कालिका सा च पार्वती ॥ शाकम्भरीं स्तुवन्ध्यायञ्जपन्सम्पूजयन्नमन् ॥१७॥ अक्षय्यमश्नुते शीघ्रमन्नपानामृतं जलम् ॥ भीमापि नीलवर्णा सा दंष्ट्रादशनभासुरा ॥१८॥ विशाललोचना नारी वृत्तपीनपयोधरा ॥ चन्द्रहासं च डमरुं शिरःपात्रं च बिभ्रती ॥१९॥ एकवीरा कालरात्रिः सैवोक्ता कामदा स्तुता ॥ तेजोमण्डलदुर्धर्षा भ्रामरीचित्रकान्तिभृत् ॥२०॥ चित्रभ्रमरसङ्काशा महामारीति गीयते ॥ इत्येता मूर्तयो देव्या व्याख्याता

समूह ॥१५॥ और चमकती हुई कांतिवाले धनुष को धारण करती है, वह परमेश्वरी शाकंभरी शताक्षी है और वही दुर्गा कही गई है ॥१६॥ वही उमा, गौरी, सती, चण्डी, कालिका और पार्वती है तथा जो मनुष्य शाकंभरी का ध्यान करता है एवं जप पूजन और नमस्कार करता है ॥१७॥ वह शीघ्र ही अन्न पान अमृत और जल को निरन्तर पाता है भीमादेवी भी नीलवर्णा हैं और उसके दंष्ट्रा (डाढ़) दांत बड़े कान्तिमान् हैं ॥१८॥ नेत्र विशाल हैं, गोल और स्थूल कुच हैं तथा खड्ग, डमरू, शिर तथा पात्र इनको धारण किये है ॥१९॥ और वही एकवीरा, कालरात्रि, कामदा, तेजोमण्डलदुर्धर्षा, भ्रामरी और चित्रकांतिभृत ॥२०॥ चित्रभ्रमरसंकाशा तथा महामारी इन नामों से कही गई व गाई जाती है सो हे राजन्! ये देवी की मूर्तियां

वसुधाधिप ॥२१॥ जगन्मातुश्चण्डिकायाः कीर्तिताः कामधेनवः ॥ इदं रहस्यं परमं न वाच्यं कस्यचित्त्वया ॥२२॥ व्याख्यानन्दिव्यमूर्तीनामधीष्वावहितः स्वयम् ॥ एतस्यास्त्वं प्रसादेन सर्वमान्यो भविष्यसि ॥२३॥ सर्वरूपमयी देवी सर्वं देवीमयं जगत् ॥ अतोऽहं विश्वरूपां त्वां नमामि परमेश्वरीम् ॥२४॥ इति मूर्तिरहस्यं सम्पूर्णम् ॥

अनुग्रहेनव श्लोकाः

ॐ विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थितिसंहारकारिणीं । करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी शुभानि भद्राण्यभिहंतु चापदः ॥ १ ॥ ॐ स्तुतासुरैः पूर्वमभीष्ट संश्रयात्तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता ॥ करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी शुभानि भद्राण्यभिहंतु चापदः ॥ २ ॥ ॐ या सांप्रतं चोद्धत दैत्यतापितैरस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते ॥ करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी

विख्यात हैं ॥२१॥ इस प्रकार ये मूर्तियां जगन्माता चण्डिका की कामधेनु कहलाती हैं यह चरित्र परमगुप्त है इसको किसी से कहना नहीं चाहिए ॥२२॥ तू आपही इन सब मूर्तियों के व्याख्यान को सावधान होकर पढ़ उसके प्रसाद से तू सब का मान्य हो जायगा ॥२३॥ देवी सर्वरूपमयी है और यह सम्पूर्ण जगत् देवीमय है इसलिए मैं तुझ विश्वरूपा परमेश्वरी को नमस्कार करता हूँ ॥२४॥

इति आगरा निवासी श्रीलक्ष्मीनारायण गोस्वामी तत्सूनु श्री घनश्याम गोस्वामी कृत दुर्गा भाषा टीका में मूर्ति रहस्य की कथा समाप्त हुई ॥

शुभानि भद्राण्यभि हंतु चापदः ॥ ३ ॥ ॐ या च स्मृतातत्क्षणमेव हंति नः सर्वापदोभक्तिविनम्र मूर्तिभिः ॥ करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी शुभानि भद्राण्यभिहंतु चापुदः ॥४॥ ॐ सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि❀॥ करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी शुभानि भद्राण्यभिहंतु चापदः । ५॥ ॐ सर्व मंगलमंगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ॥ करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी शुभानि भद्राण्यभिहंतु चापदः ॥६॥ ॐ सृष्टि स्थिति विनाशानां शक्तिभूतेसनातनि ॥ करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी शुभानि भद्राण्यभिहंतु चापदः ॥७॥ ॐ शरणागतदीनार्त परित्राणपरायणे ॥ करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी शुभानि भद्राण्यभिहंतु चापदः ॥ ८ ॥ ॐ सर्वस्वरूपे सर्वेशेसर्वशक्ति समन्विते ॥ करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी शुभानि भद्राण्यभिहंतु चापदः ॥ ९ ॥

एतेऽनुग्रहे नवश्लोकाः वश्ये तु शेषः ॥ ॐ ह्रीं रक्तचामुण्डे तूर्णममुकं मे वशमानय स्वाहा ॥ अनेनप्रत्यध्यायमाद्यंतयोः पूजा सर्वांते अयुतमंत्रश्च दश साहस्रम् ॥ होमयेत्कुटुतैलेन रक्त चन्दन राजिकाः सहस्राहुति मात्रेण राजानं वशम्मानयेत् ॥ मधुना चाशोकपुष्पैः रात्रौहुत्वातु पूर्ववत्।चक्रवर्ती भवेद्वश्यश्चंडी मंत्र प्रभावतः ॥

———

अथ सरस्वती कवच प्रारम्भः ॥

ब्रह्मोवाच ॥

शृणु वत्स प्रवक्ष्यामि कवचं सर्व कामदम् ॥ श्रुतिसारं श्रुतिमुखं श्रुत्युक्तं श्रुतिपूजितम् ॥१॥ उक्तं कृष्णेन गोलोके मह्यं वृन्दावने वने ॥ रासेश्वरेण विभुना रासने रासमण्डले ॥२॥ अतीवगोपनीयं च कल्पवृक्षसमं परम् ॥ अश्रुताद्भुतमन्त्राणां समूहैश्च समन्वितम् ॥ ३ ॥ यद्धृत्वा पठनाद्ब्रह्मन्

❀ अत्र वैरि नाशनमित्यत्ररोगनाशनमित्याद्यूहः ॥ एवं दैत्यतापितैरित्यपि ॥ अपराधक्षमापनस्तत्रो ५६ पृष्ठे ॥ संकष्टनाशन दुर्गा स्तोत्र ६२ पृष्ठे ॥ आपदुद्धाराष्टक ६१ पृष्ठे ॥

बुद्धिमाँश्च बृहस्पतिः ॥ यद्धृत्वा भगवाञ्छुक्रः सर्वेदैत्येषु पूजितः ॥ ४ ॥ पठनाद्धारणाद्वाग्मी कवीन्द्रो वाल्मिको मुनिः । ५ ॥ स्वायम्भुवो मनुश्चैव यद्धृत्वा सर्वपूजितः ॥ कणादो गौतमः कण्वः पाणिनिः शाकटायनः ॥ ६ ॥ ग्रंथं चकार यद्धृत्वा दक्षः कात्यायनः स्वयम् ॥ धृत्वा वेदविभागं च पुराणान्यखिलानि च ॥७॥ चकार लीलामात्रेणकृष्णद्वैपायनः स्वयम् ॥ शातातपश्च संवर्त्तो वसिष्ठश्च पराशरः ॥ ८ ॥ यद्धृत्वा पठनाद् ग्रन्थं याज्ञवल्क्यश्चकार सः ॥ ऋष्यश्रृङ्गो भरद्वाजश्चास्तीको देवलस्तथा ॥९॥ जैगीषव्योऽथ जावालिर्यद्धृत्वा सर्वपूजितः ॥ कवचस्यास्य विप्रेन्द्र ऋषिरेष प्रजापतिः ॥ १० ॥ स्वयंबृहस्पतिश्छन्दो देवो रासेश्वरः प्रभुः ॥ सर्वतत्त्व परिज्ञानसर्वार्थसाधनेषु च ॥ ११ ॥ कवितासु च सर्वासु विनियोगः प्रकीर्तितः ॥ ॐ ह्रीं सरस्वत्यै स्वाहा शिरो मे पातु सर्वतः ॥ १२ ॥ श्रींवाग्देवतायै स्वाहा भालं मे सर्वदावतु ॥ ॐ सरस्वत्यै स्वाहेति श्रोत्रं पातु निरन्तरम् ॥ १३ ॥ ॐ श्रीं ह्रीं भारत्यै स्वाहा नेत्रयुग्मं सदावतु ॥ ॐ ह्रीं वाग्वादिन्यै स्वाहा नासां मे सर्वतोऽवतु ॥ १४ ॥ ह्रीं विद्याधिष्ठातृदेव्यै स्वाहा ओष्ठं सदावतु ॥ ॐ श्रीं ह्रीं ब्राह्म्यै स्वाहेति दन्तपङ्क्तीः सदावतु ॥१५॥ ऐमित्येकाक्षरो मन्त्रो मम कण्ठं सदावतु ॥ ॐ श्रीं ह्रीं पातु मे ग्रीवां स्कन्धं मे श्री सदावतु ॥१६॥ श्रींविद्याधिष्ठातृ देव्यै स्वाहा वक्षः सदावतु ॥ ॐ ह्रींविद्यास्वरूपायै स्वाहा मे पातु नाभिकाम् ॥ १७ ॥ ॐ ह्रीं ह्रींवाण्यै स्वाहेति मम पृष्ठं सदावतु ॥ ॐ सर्ववर्णात्मिकायै पदयुग्मं सदावतु ॥१८॥ ॐ रागाधिष्ठातृदेव्यै सर्वाङ्गं मे सदावतु ॥ ॐ सर्वकण्ठवासिन्यै स्वाहा प्राच्यां सदावतु ॥ १९ ॥ ॐ ह्रीं जिह्वाग्रवासिन्यै स्वाहाऽग्निदिशि रक्षतु ॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सरस्वत्यै बुधजनन्यै स्वाहा ॥२०॥ सततं मन्त्रराजोऽयं दक्षिणे मां सदावतु ॥ ॐ ह्रीं श्रींत्र्यक्षरो मन्त्रो नैर्ऋत्यां मे सदावतु ॥२१॥ कविजिह्वाग्र वासिन्यै स्वाहा मां वारुणेऽवतु ॥ ॐ सदाम्बिकायै स्वाहा वायव्ये मां सदावतु ॥२२॥ ॐ गद्यपद्यवासिन्यै स्वाहा मामुत्तरेऽवतु ॥ ॐ सर्वशास्त्रवासिन्यै स्वाहेशान्यां सदावतु ॥२३॥

ॐ ह्रीं सर्वपूजितायै स्वाहा चोर्ध्वं सदावतु ॥ ॐ ऐं ह्रीं पुस्तकवासिन्यै स्वाहाधो मां सदावतु ॥ २४ ॥ ॐ ग्रन्थवीजस्वरूपायैस्वाहा मां सर्वतोऽवतु ॥ इति ते कथितं विप्र सर्वमन्त्रौघविग्रहम् ॥२५। इदं विश्वजयं नाम कवचं ब्रह्मरूपिणम् ।।२६।। पुराश्रुतं धर्म वक्त्रात् पर्वते गन्धमादने ॥ तव स्नेहान्मयाख्यातं प्रवक्तव्यं न कस्यचित् ।।२७।। गुरुमभ्यर्च्य विधिवद्वस्त्रालंकारचन्दनैः ॥ प्रणमेद्दण्डवद् भूमौ कवचं धारयेत्सुधीः ॥ २८ ॥ पञ्चलक्षजपेनैव सिद्धं तु कवचं भवेत् ॥ यदि स्यात् सिद्धकवचो बृहस्पतिसमो भवेत् ।।२६।। महावाग्मी कवीन्द्रश्च त्रैलोक्यविजयी भवेत् ॥ शक्नोति सर्वं जेतुं स कवचस्य प्रसादतः ॥ ३० ॥ इति ते काण्वशाखोक्तं कथितं कवचं मुने ॥ स्तोत्रं पूजाविधानं च ध्यानं च वन्दनं तथा ॥ ३१ ॥ इति श्रीब्रह्मवैवर्त्ते महापुराणे प्रकृतिखण्डे नारायणनारदसंवादे सरस्वतीकवचं नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

नवार्ण भेदाः

ओं ऐं ह्रीं क्लीं लॄं श्रीं ह्रीं क्लीं नमः ॥ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ॥ हूँ ऐं ऐं ह्रीं चामुण्डायै स्वाहा इति डामरोक्तः ॥ ओं ऐं ह्रीं क्लीं लृं ह्रीं नमः इति दाक्षिणात्याः ॥ हूँ ऐं ऐं ह्रीं चामुण्डायै स्वाहा इति सारस्वताः ॥ देव्यथर्व शिरोनुयायिनो डामर तंत्रानुयायिनश्चशिष्टाः ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे इत्येव प्रमाणयन्ति एवमुक्त प्रमाणेन जीवनादयोपि वोध्याः ॥ महिमातिशयोर्थश्च विधानञ्च विपश्चिताः ॥ मन्त्रं जिज्ञासमानेन वेदितव्यंपदेपदे ॥ इति यजुर्वेद भाष्यस्थित स्मृतेस्तदपेक्षायामेवतन्मन्त्र महिमातिशयोर्थश्च डामरतन्त्रोक्तो निरूप्यते ॥

चतुर्वर्ग समुद्भूतं चतुर्वर्ग फलप्रदम् ॥
चतुर्वर्ण चतुर्वर्ण शंकरं शांकरिं भजे ॥

अथ प्रयोगान्तराणि कात्यायनी तन्त्रोक्तानि ॥

प्रति श्लोक माद्यन्तयोर्मंत्रंजपेन्मंत्र सिद्धिः मंत्रमित्यत्र प्रणव-

सित्युक्तः ॥ नागेशभट्टैः सप्रणव-मनुलोम व्याहृति त्रयमादौ अन्तेतुविलोमं तदित्येवं प्रतिश्लोकं कृत्वा शतावृत्ति पाठे अति शीघ्रं सिद्धिः ॥ प्रति श्लोकमादौ ॥ ॐजातवेदसेसुनवामसोममरातीयतोनिदहातिवेदः सनः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेवसिन्धुन्दुरितात्यग्निः इत्यृचं पठेत्सर्व काम सिद्धिः ॥ अपमृत्युवारणायादावन्ते त्र्यम्बक मंत्रंजपेत् प्रति-श्लोकं तन्मन्त्रजप इति वा ॥ प्रतिश्लोकं शरणागतदीनार्त्तेति श्लोकं पठेत् सर्व कार्य्य सिद्धिः । अन्येतु शरणागत रक्षेत्याहुः ॥ सर्वमङ्गलावाप्त्यै सर्व मंगल मंगल्ये इति प्रति मन्त्र पठेदिति कालिका पुराणेस्थितं ॥ प्रतिश्लोकं करोतुसानः शुभेत्यर्द्धंपठेत्सर्व कामावाप्तिः ॥ स्वाभीष्ट वरप्राप्त्यै एवं देव्या वरमिति श्लोकं प्रतिश्लोकं पठेत् इतिदत्त्वेत्यर्द्ध श्लोकात्मको मन्त्रो जपाद्वाञ्छितार्थद इत्यन्ये ॥ सर्वापन्निवारणाय दारिद्र-दूरीकरणाय च प्रति श्लोकं दुर्गेस्मृतेति पठेत् अस्य केवलस्यापि श्लोकस्य कार्य्यानुसारेण लक्षमयुतं सहस्रं शतं वा जपः ॥सर्वाबाधेत्यस्य लक्ष जपे श्लोकोक्तं फलम् ॥ नारायणस्तुसमन्वित इत्यत्र सुतान्वित इत्यपि पाठात्तेन सुत प्रदोप्ययं मन्त्रइति तदाशयोलक्ष्यते ॥ इत्थं यदायदेति श्लोकस्य लक्ष जपे महामारी शान्तिः ॥ ततो वव्रे नृपोराज्यमिति मन्त्रस्य लक्षजपे पुनः स्वराज्यलाभः॥ स्वल्पै रहोभिरिति मन्त्रस्य लक्ष जपे प्रति मन्त्र पाठे वा स्वराज्य लाभ इति बहवः ॥ हिनस्ति दैत्य तेजांसीत्यनेन सदीप दाने घण्टा वादने च बालग्रह-शान्तिः। घण्टा-वादन इत्यत्रनागेश भट्टादयो घण्टा-बन्धन इत्याहुः ॥ घण्टां कांस्य मयीं बध्वा माष भक्त वलिं हरेदिति वचनात् ॥ मन्त्रमुच्चार्य्य तद्घण्टानादं कुर्य्याद्विचक्षण ॥ तन्नाद-श्रवणाद्देविपलायन्ते पिशाचका इति पूर्वापर वैलक्षण्येपि वादनार्थमेव तद्बन्धनमित्युभयोरेकमेव प्रयोजनं समर्थंप्रति तद्वादनमिति वा प्रयोजनैक्यं वोध्यम् ॥ आद्यावृत्तिमनुलोमेन त्रयोदशाध्यायं पठित्वा ततोविपरीत क्रमेण द्वितीयां कृत्वा पुनरनुलोमेन तृतीयामित्येवमावृत्तित्रये उक्तेषु प्रकारेषु शीघ्रं कार्य्य सिद्धिः, सर्वापत्ति निवारणाय दुर्गेस्मृतेत्यर्द्धं ततो यदन्ति

यच्चदूर के भयं विन्दतिमामिह पवमान वितज्जहि इत्यृचंतदन्तेदारिद्र्य दुःखेत्यर्द्धमेवं कार्यानुसारेण लक्षमयुतं सहस्रं शतं वा जपः ।: कांसोस्मितांहिरण्य प्राकारामार्द्रां ज्वलंतींतृप्तां तर्प्पयन्तीं पद्मेस्थितां पद्मवर्णातामिहोपह्वये श्रियमित्यृचं प्रतिश्लोकं पठेल्लक्ष्मी-प्राप्तिः ॥ प्रतिश्लोकं अनृणा अस्मिन्ननृणाः परस्मिन्तृतीयेलोके अनृणाःस्याम ये देवयानाः पितृयाणाश्च लोकाः सर्वान्पथो अनृणाआक्षियेमेत्यृचं पठेत् ऋणपरिहारः ॥ मारणार्थमेव मुक्ता समुत्पत्त्येति श्लोकं पठेन्मारणोक्तावृत्तिभिः फल सिद्धिः ॥ सर्वाबाधा प्रशमन मिति मंत्रोयं शत्रु नाशक आपन्नाशकश्च ॥ ज्ञानिनामापि चेतांसीति श्लोकस्य जपमात्रेण सद्यो मोहन मित्यनुभव सिद्धम् ॥ तच्छ्लोक पाठे त्ववश्यम् ॥ रोगानशेषा नितिश्लोकस्य-प्रति श्लोके पाठे सकल रोग नाशः तन्मन्त्र जपेपि सः ॥ इत्युक्ता सातदा देवी गम्भीरेति श्लोकस्य प्रतिश्लोकं पाठे पृथग्जपे वा विद्या प्राप्तिर्वाग्विकार नाशश्च ॥ मेधे सरस्वति वरे इत्ययमपि विद्याप्रद इत्यन्ये ॥ भगवत्या कृतं सर्वमित्यादि द्वादशोत्तर शताक्षरो मन्त्रः सर्वकामदः सर्वापन्निवारणश्च होमेतु अर्द्धमेवेति पूर्व- मुक्तम् ॥ देवि प्रपन्नार्ति हरे प्रसीदेति श्लोकस्य यथा कार्य्यं लक्षमयुतं शतं वा जपे प्रति श्लोकं पाठे वा सर्वापन्निवृत्तिः सर्वकामाप्तिश्च ॥ इयुक्ता सा भगवती त्यर्द्धं मन्त्रोयं जपात् शौर्य्यं प्रदायकः ॥ देवि प्रसीदेति मंत्रस्य जपे पाठे वा शत्रु पापोपसर्ग नाशः ॥ वञ्चिताभ्यामित्यर्द्धं मन्त्रो जल प्रद इति हरगौरी तंत्रात् ॥ महां ॥२॥ इन्द्रोपऽॐजसा पर्ज्जन्यो वृष्टिमा हुवस्तो भैर्व्वत्सस्य वावृधेऽउपया मगृहीतोसि महेन्द्रायत्वैषते योनिर्म्महेन्द्रायत्वेपि जल प्रद इति याज्ञु .. ॥ अतिवृष्टि शान्तये ॐसमुद्रं गच्छ स्वाहान्तरिक्षङ्गच्छस्वाहादेवꣳसवितारं गच्छ स्वाहा मित्रावरुणौ गच्छ स्वाहा हो रात्रेगच्छ स्वाहा छन्दाꣳसि गच्छ स्वाहाद्यावा पृथिवी गच्छ स्वाहायज्ञं गच्छ स्वाहा सोमंगच्छ स्वाहा दिव्यंनभोगच्छाग्निं वैश्वानरं गच्छ स्वाहा मनोमेहार्दियच्छदिवन्तेधूमोगच्छतुस्वर्ज्योतिः पृथिवीम्भस्मना पृणस्वाहेतिजपेत ॥ यत्प्राध्वर्यत्वया-

भूपेत्येकैनैवश्लोकेनासकृदावर्तितेन देवीतोषकृद्भवति ॥ शंख चक्र गदाशार्ङ्ग गृहीतपरमायुधे इत्ययमप्येतत्फलदमित्यन्ये॥ स्त्रियः सौभाग्यकामनयाविद्युक्तपतिप्राप्तयेच अम्बेऽअम्बिकेम्बालिकेनमानयति कश्चन ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कांपीलवासिनीमितिमन्त्रं।प्रतिमन्त्रं च पठेत ॥ सर्वत्रसंपुटीकृत्य पल्लवीकृत्य वा पठेत् ॥ मन्त्रान्कांश्चिज्जपेदेवक्रम एष शिवोदित इति एषु प्रयोगेषु प्रतिश्लोकं दीपाग्रे केवल-मेव वा नमस्कार-करणेत्ति शीघ्रं सिद्धिः ॥ इति कात्यायनी तन्त्रोक्त प्रयोग विधिः समाप्ता ॥ इत्यर्गलपुर निवासि गौड़ जातीय भारद्वाज वंशोद्भवविद्वद्वर गोस्वाम्युपाह्व पं० बुलाखीराम सूनुना श्री विद्याधर्मवर्द्धिनी पाठशालायाः कर्मकाण्ड यजुर्वेदाध्यापकेन विद्याभूषण कर्म काण्डमणीत्युपाधि विभूषितेन श्री लक्ष्मीनारायण गोस्वामिना संग्रहीता "दुर्गार्चन स्मृतिः" समाप्ता ॥

॥ विजया दशम्यां शमो पूजनम् ॥

अथ विजया-दशम्यां वर्ष पर्यन्तं यात्रा निर्विघ्न प्राप्तये शमी पूजनम् ॥

शमी पूजने कालः॥ ज्योतिर्निबंधे॥ ईषत्संध्यामति क्रान्तः किंचिदुद्भिन्नतारकाः ॥ विजयोनामकालोयं सर्वकामार्थ साधकः ॥ नगराद्ग्रामाद्वावहिरीशकोणे शमी वृक्ष समीपं गत्वा ॥ भूमिं प्रोक्ष्यतस्योपरि श्वेत वस्त्रं प्रसार्य तदुपरि तन्दुलेनाष्टदलं कृत्वा मध्ये कलशं स्थाप्य ॥

आचम्य प्राणानायम्य स्वस्तिवाचन पूर्वकं संकल्पं विधाय । गणेश पंचोंकार षोडशमातृका नवग्रह कलशादीन्प्रपूजयेत् । ततः शमी मूलाद्भूमिमुत्कृत्य श्वेततन्दुल पूग स्वर्ण तारं वा धृत्वा परिक्रम्य ततः शमीपत्राणि सह गोलकं बध्वा सर्वकार्यसिद्ध्यर्थं पूजांते गृह्णाति ॥

संकल्पः । तिथि वाराद्युच्चार्य ॥ यात्रायां विजय सिद्ध्यर्थं वास्तु पूजन दिग्पाल पूजन मार्ग देवता पूजन शमी पूजन अपराजिता पूजनञ्च करिष्ये ॥ ॐ अपराजितयै नमः ॥ दक्षिणे ॐ क्रियायैनमः । वामे ॐ उमायैनमः ॥ पश्चात् शमीं ध्यायेत् ॥

अमंगलानांशमनीं शमनींदुष्कृतस्य च ॥ दुःस्वप्ननाशिनीं धन्यां प्रपद्येहंशमींशुभाम् ॥ शमी देवतायै नमः ॥ इति मंत्रेण यथोपचारैः शमी वृक्षं पूजयेत् ॥ ततः प्रार्थना ॥ भविष्ये ॥ शमीशमय मे पापं शमी लोहित कंटका ॥ धारिण्यर्जुनवाणानां रामस्य प्रियवादिनी ॥ करिष्यमाणयात्रायां यथा कालं सुखं मया ॥ तत्र निर्विघ्नकर्त्रीत्वं भव श्रीरामपूजिता ॥ शमीशमय मे पापं शमी शत्रु विनाशिनी ॥ अर्जुनस्य धनुर्धारी रामस्य प्रियवादिनी ॥ इति प्रार्थना ॥ धारामंत्रः ॥ आसिंचिता मयादेवि सदा शान्तिं प्रयच्छ मे ॥ इति शमीमूले धारां दद्यात् पूजन कर्मणि ॥ उत्तरे कर्मण्यविघ्नमस्तु ॥ आपेहिष्ठेति अभिषेकः ॥ मांगल्यं ॥ आशिषः ॥ अनया पूजया शमी देवताः प्रीयताम् ॥

यात्रा काले चाष दर्शनं शुभम् ॥

नीलकंठो मणिग्रीवः स्वस्तिकश्चापराजितः अशोकश्चा विशोकश्च नंदनः पुष्टिवर्द्धनः ॥ अष्टौ चाषस्यनामानि चाषं दृष्ट्वा तु यो पठेत् ॥ कार्यसिद्धिर्भवेत्तस्य मिष्टमन्नं वरांगना ॥ अभिलाषादोग्ध्र्यै शम्यैनमः ॥ पूर्वस्यांदिशि यानि कार्याणि तत्सिद्धये प्रयाणमारंभयामि ॥ ॐ या यात्रा शंकरस्य त्रिपुरविदहने खांडवेचार्जुनस्य, यायात्रा राघवस्य जलनिधि तरणे सेतु बंधे समुद्रे ॥ यायात्रा वायुसूनोरौषधि गमने लक्ष्मणे शक्तिभिन्ने सायात्रा सिद्धिदात्री भवतु ममगृहे सर्व सौख्य प्रदात्री ॥ शत्रु प्रतिमा कार्यास्तंडुलैः सर्वदिक्षु च ॥ पद चतुष्टयं वा दश गत्वा ॥ १त्रातारमिन्द्रेति इन्द्रायनमः ॥ दुग्धधारा दीपादिना पूजयेत् ॥ पुनः तन्दुल रचित शत्रु प्रतिमोपरिपादं धृत्वा ॥ पश्चाच्छमीमूलमागत्य ॥ अभिलाष दोग्ध्र्यै शम्यैनमः ॥ सनाभिलषित कार्यसिद्ध्यर्थंदक्षिणस्यां दिशि प्रयाणमारंभयामि ।' ॐ यायात्रेत्यादि पठित्वा ॥ पद चतुष्टयं दश वा गत्वा ॥ २ॐ यमायत्वेति मंत्रेण ॐ यमाय नमः नाम मंत्रेण वा दुग्धधारा दीपादिना पूजयेत् ॥ ततः चित्तस्थः कार्य सिद्ध्यर्थं प्रतीच्यांदिशि प्रयाणमारंभयामि ॥ दुग्धधारादीपादिना पूजयेत् ॥ शमी मूलमा-

गत्य ॥ पुनअभिलाष दोग्ध्र्यै शम्यैनमः यायात्रेत्यादि पठित्वा ॥ पदचतुष्टयं दश वा गत्वा ॥ ३ॐ वरुणस्योत्तमिति मंत्रेण वरुणाय नमः इति मंत्रेण वा वरुणं दुग्धधारा दीपादिना पूजयेत् ॥ शमी मूल मागत्य ।। अभिलाष दोग्ध्र्यै शम्यै नमः ॥ ततः उत्तरस्यां दिशि यानि कार्याणि सर्वार्थ साधनार्थं प्रयाणमारंभयामि ॥ ॐ यायात्रेत्यादिपठित्वा ॥ पद चतुष्टयं दश वा गत्वा ॥ ४ॐ वयर्ठ॰सोमव्रतेति मंत्रेण ॐ सोमाय नम इतिमंत्रेण वा दुग्धधारा दीपादिना पूजयेत् ॥ ततः शमीमूले आगत्य मृत्तिकां शमी पत्राणि च संगृह्य तथा चोक्तं मत्स्य पुराणे ॥ पूजान्तेमृत्तिका ग्राह्या साग्राह्या शमीमूलकात् ॥ तस्माच्छमी प्रसादेन सुवर्णं चोपपद्यते ॥ तत्रमंत्रः ॥ ॐअग्ने अच्छाव्वदेहिनः प्रतिनः सुमनाभव ॥ प्रनोयच्छ सहस्र जितर्ठ॰हि धनदाऽअसि स्वाहा ॥

---

१ ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रर्ठ॰ हवेहवेसुहवर्ठ॰ शूरमिन्द्रम् ॥ ह्वयामिशक्रं पुरुहूतमिन्द्र र्ठ॰ स्वस्तिनो मघवाधात्विन्द्रः ॥

२ ॐ यमायत्वामखायत्वा सूर्यस्यत्वा तपसे ॥ देवस्त्वा सविता-मद्ध्वानक्तुपृथिव्याः स र्ठ॰ स्पृशस्पाहि ॥ अर्चिरसि शोचिरसितपोसि ॥

३ ॐ वरुणस्योत्तं भनमसि वरुणस्यस्कंभसर्जनीस्थोवरुणस्यऽऋत सदन्यसि वरुणस्यऽऋत सदनमसि वरुणस्यऽऋतसदनमासीद ॥

४ वयर्ठ॰ सोमव्रतेतवमनस्तनूषु बिभ्रतः ॥ प्रजावन्तः सचेमहि ॥

॥ खञ्जरीट प्रार्थना ॥

नील ग्रीव शुभ ग्रीव सर्वकाम फलप्रदः ॥ पृथिव्यामवतीर्णोसि खंजरीट नमोस्तु ते ॥ त्वं योगयुक्तो मुनिपुत्र कस्त्वमदृश्यतामेपि शिखोद्गमेन ॥ संदृश्यसे प्रावृषि निर्गतायां त्वं खंजनाश्चर्य नमो नमस्ते ॥

॥ खंजरीट दर्शन फलं प्रति दिशायां ॥

अब्जेषु गोषु गज वाजि महोरगेषु राज्यप्रदः कुशलदः शुचि शाद्वलेषु ॥ भस्मास्थिकेश नखलोमतुषेषु दृष्टो दुःखं ददाति बहुशः खलु खंजरीट ॥

वित्तं ब्रह्मणि कार्यसिद्धिरतुला शक्रेहुताशे भयं याम्यामग्नि भयं सुरद्विषि कलिर्लाभः समुद्रालये ॥ वायव्यां वर वस्त्र गन्धसलिलं दिव्यांगना चोत्तरे ऐशान्यां मरणं ध्रुवं निगदितं दिग्लक्षणं खञ्जने ॥

कैश्चिद्दक्षैस्तत्र भाव्यं कैश्चिद्भाव्यं तु वानरैः ।
कैश्चिद्रक्तमुखैर्भाव्यं कोसलेन्द्रस्य तुष्टये ॥
निर्जिता राक्षसा दैत्या वैरिणो जगती तले ।
राम राज्यं राम राज्यं राम राज्य मिति ब्रुवन् ॥ १ ॥

शमीपूजन सामग्री ॥

श्रीफल, रोली, मौली, चावल, पान, सुपारी, दीपक, धूप, रुई, दियासलाई, गाढ़ा, एलायची, लौंग, नैवेद्य, ऋतुफल, दूध कच्चा, कलश, अनार की कलम १० अंगुल, दक्षिणा, मटकेने आसन स्वर्ण, चांदी ॥

इति शमी पूजन विधिः समाप्ता ॥

रुद्रकल्पे वरणद्रव्याणि ॥

भोजनं भोजनाधारश्छत्रोपानत्कमण्डलु ।
आसनं वस्त्रं मुद्राकर्णभूषोपवीतकम् ॥
एतद्दशविधं देयं पदं वरण सिद्धये ।
पदाभावेत्रयं देयं पात्र वस्त्रांगुलीयकम् ॥ १ ॥

अथ छायापात्रदान विधिः ॥

कांस्यपात्रे स्थिताज्यं च आत्मरूपं निरीक्ष्य तु ॥
ससुवर्णन्तु यो दद्यात्सर्वविघ्नोपशान्तये ॥

मन्त्रः ॥ ॐ रूपर्ठ० रूपं प्रतिरूपो बभूवतदस्य रूपं प्रतिचक्षणाय ॥ इन्द्रोमायाभिः पुरुरूपऽएते युक्ताह्यस्य हरयः शतादशोत्ययंवै हरयोयं दशच सहस्राणि बहूनि च नन्तातदेतद्ब्रह्मपूर्वमनवाह्य जमनुः सर्वानुशासनम् ॥ इत्याज्ये मुखमवलोक्य ॥ संकल्पः ॥ अद्येत्यादि० ममैतच्छरीरावच्छिन्न समस्तपापक्षय सर्वग्रहपीडाशान्ति शरीरोत्थार्त्तिनाशाय प्रासाद वांछा-

युरारोग्यादिसर्वं सौभाग्यप्राप्तये सर्वसौख्यप्राप्तये च इदं स्वदेह छायावीक्षिताज्य पूरितकांस्य पात्रं ससुवर्णं (सदक्षिणाकं) विष्णु दैवतं अमुक गोत्राय अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय सुपूजिताय तुभ्यमहं संप्रदते नमम ॥

मन्त्रौ ॥

याऽलक्ष्मीर्यच्चमे दौस्थ्यंसर्वाङ्ग समुपस्थितम् ॥
तत्सर्वं नाशयाज्यत्वं श्रियमायुश्च वर्द्धय ॥ १ ॥
आज्यंसुराणामाहारः सर्वमाज्ये प्रतिष्ठितम् ॥
आज्यपात्र प्रदानेन शान्तिरस्तु सदामम ॥ २ ॥

इति छायादान विधिः ॥

अथ क्षेत्रपाल वलिदान विधिः ॥

एकस्मिन्वंश पात्रे कुशानास्तीर्य तदुपरि आहार चतुर्गुणं द्विगुणं वा माषभक्त दध्योदनं जलपात्रं च निधाय हरिद्रा कुंकुम सिन्दूर कज्जल द्रव्यपताका दीपयुतं कृत्वा ॥ ॐ अद्येत्यादि० सकलारिष्ट शान्तिपूर्वकं प्रारिप्सितस्य कर्मणः सांगतासिद्ध्यर्थं क्षेत्रपाल पूजनं वलिदानं च करिष्ये ॥ इति प्रतिज्ञा ॥ अक्षतान्गृहीत्वा ॥ ॐ नहिस्पृशमविदस्यन्यमस्माद्वैश्वा नरापुर एतारमग्नेः ॥ एमेनवृधन्न मृताऽअमर्त्यं वैश्वानरं क्षैत्रजित्याय देवाः ॥ ॐ ह्रीं (क्षं) क्षेत्रपालाय नमः ॥ इति मन्त्रेण यथोपचारैः सम्पूज्य ध्यायेत् ॥

ॐ नीलाञ्जनाद्रि निभमूर्ध्व पिशंगकेशम् ।
वृत्तोग्रलोचन मुदान्तगदाकपालम् ॥
आशाम्बरं भुजगभूषणमुग्र दंष्ट्रं ।
क्षेत्रेशमद्भुत तनुं प्रणमामिदेवम् ॥

प्रार्थना ॥

ॐ नमो क्षेत्रपालस्त्वं भूतप्रेतगणैः सह ।
पूजावलिंगृहाणेमं सौम्योभवतु सर्वदा ॥

आयुरारोग्यंमे देहि निर्विघ्नंकुरु सर्वदा ॥
अनेन पूजनेन क्षेत्रपालः प्रीयताम् ॥

ततोवलिदानम् ॥

ॐ क्षेत्रपाल महाबाहो महाबल पराक्रम ॥
क्षेत्राणां रक्षणार्थाय वलिंगृह्ण नमोस्तु ते ॥

क्षं क्षेत्रपालाय सांगाय भूतप्रेत पिशाच डाकिनी शाकिनी वेतालादि परिवारयुताय सायुधाय सशक्तिकाय सवाहनाय इमंसदीप दधिमाषभक्त वलिंसमर्पयामि नमः भो भोः क्षेत्रपाल सर्वतोदिशं रक्ष वलिंभक्ष दीपं पश्य मम (यजमानस्य) सकुटुम्बस्य अभ्युदयं कुरु आयुः कर्ताक्षेम कर्ताशान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता शुभदो वरदो भव ॥ वलिदानेनानेन क्षेत्रपः प्रीयताम् ॥ इदं वलिं अनवेक्ष्यमाणेनदुर्ब्राह्मणेन नीत्वा चतुष्पथे निक्षिपेत् स यजमानोऽपि तस्य पृष्ठतोद्वारपर्यन्तं गत्वाजलं क्षिपेत् ॥ इति क्षेत्रपाल वलिदान विधिः ॥ हस्तौपादौ प्रक्षाल्याचम्य आसन उपविशेत् ॥ वलिदानानन्तरंगणेशादिदेवतानामुत्तरपूजनंकुर्यात् ॥

अथ सर्वतोभद्रमण्डल विधिः ॥

हेमाद्रौ स्कान्दे ॥

प्रागुदीच्यागता रेखाः कुर्यादेकोन (१६) विंशतिम् ॥ खंडेन्दुस्त्रिपदः कोणे श्रृङ्खलापञ्चभिः पदैः ॥ एकादशपदावल्ली भद्रं तु नवभिः पदैः ॥ चतुर्विंशत्पदा वापी विंशत्यापरिधिः पदैः ॥ २ ॥ मध्ये षोडशभिः कोष्ठैः पद्ममष्टदलंस्मृतम् ॥ श्वेतेन्दुः श्रृङ्खलाः कृष्णा वल्लीर्नीलेन पूरयेत् ॥ ३ ॥ भद्रं रक्तं सितावापी परिधिः पीतवर्णकः ॥ वाह्यानन्तरदलश्चैव कर्णिकापीतवर्णका ॥ ४ ॥ परिध्यावेष्टितं पद्मं वाह्ये सत्वं रजस्तमः ॥ तन्मध्ये स्थापयेद्देवान् ब्रह्माद्यांश्च सुरेश्वरान् ॥ ५ ॥ इति सर्वतोभद्र पीठम् ॥ शिवव्रतं विना सर्व व्रतोद्यापनेषु सर्वतो भद्र मण्डलंकारयेत् ॥ तत्रकारिका ॥ वाहुमात्रांयदा वेदीं कुर्याच्छुद्धमृदाबुधः ॥ तद्वेद्यां सर्वतोभद्रं मण्डलं-

विलिखेत्ततः ।। विलिखेत्सर्वतोभद्रं वेदिकायान्तुसुन्दरम् ।। अथ मण्डल देवताः ।। आचम्य प्राणानायम्य ।। देशकालौस्मृत्वा ।। ॐ अद्यदुर्गाहवनाख्ये कर्मणि एतत्सर्वतो भद्रमण्डले वेदमन्त्रैः ब्रह्मादि षट् पञ्चाशद्देवतावाहनं प्रतिष्ठा पूजनं च करिष्ये ।। पुष्पाक्षतान्गृहीत्वा ।। मध्ये ब्रह्माणमा वाहयेत् ।। ॐ ब्रह्मयज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोऽवेनऽआवः ।। सवुन्ध्याऽउपमाऽअस्यविष्ठाः सतश्चयोनिमसतश्चऽविवः ।। १ ।। भो ब्रह्मन् इहागच्छ इहतिष्ठ ब्रह्मणे नमः ।। ब्रह्माणं आवाहयामि स्थापयामि नमः ।। पूजां गृहाणमम संमुखोभव ।। एवं सर्वत्र ।।१।। उत्तरेसोमावाहनम् ।। ॐ आप्यायस्वसमेतुते विश्वतः सोम वृष्ण्यम् ॥ भवावाजस्यसंगथे ।। सोमाय नमः ।। २ ।। ईशान्यामीशानम् ।। ॐ अभित्वा देव सवितरीशानं वर्याणाम् ।। सदावन्भागमीमहे ।। ईशानाय० ।। ३ ।। पूर्वे इन्द्रम् ।। ॐ इन्द्रं वो विश्वतस्परि हवामहे जनेभ्यः ।। अस्माकमस्तु केवलः।। इन्द्राय० ।।४।। आग्नेयामग्निम् ।। ॐ अग्निन्दूतं वृणीमहेहोतारं विश्ववेदसम् ।। अस्ययज्ञस्य सुक्रतुम् ।। ५ ।। दक्षिणेयमम् ।। ॐ यमाय सोमं सुनुतयमाय जुहुता हविः ।। यमं ह यज्ञोगच्छत्यग्नि दूतोऽअरंकृतः ।। ६ ।। नैर्ऋत्यान्नैर्ऋतिम् ।। ॐ मोखुणः परापरानिर्ऋतिदुर्हणावधीत् ।। पदीष्टतृष्णयासह ।। ७ ।। पश्चिमे वरुणम् ।। ॐ तत्वायामिब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानोहविर्भिः ।। अहेडमानो वरुणेहवोध्युरुशर्ठ० समानऽआयुः प्रमोखीः ।।८।। वायव्यां वायुम् ।। ॐ वायोशतं हरीणांयुवस्वपोष्याणाम् ।। उतवाते सहस्रिणोरथ आयातुवाजसा ।। ९ ।। ईशान पूर्वयोर्मध्ये ब्रह्माणम् ।। ॐ अस्मेरुद्रामेहनापर्वता सोवृत्रहत्येभरहूतौ सजोषाः ।। यः शर्ठ० सतेःतुवते धायि पज्रऽइन्द्रज्येष्ठाऽअस्मां २ अवन्तु देवाः ।। १० ।। वायु सोमयोर्मध्ये अष्टवसून् ।। ॐ जाया अत्र वसवोरन्त देवाऽएवंतरिक्षे मर्ज यन्तशुभ्राः ।। अर्वाक्पथऽउरुजायः ।। कृणुध्वं श्रोतादूतस्य कृणुध्वं श्रोता दूतस्य जग्मुषो नो अस्य ।। ११ ।। सोमेशानयोर्मध्ये एकादशरुद्रान् ।। ॐ आरुद्रासऽइन्द्रवन्तः सजोषसोहिरण्यरथाः सुवितामयं तन ।। इयं वो

ऽअस्मत्प्रति हर्यते मतिस्तृष्णजनेदिवऽउत्साऽउदन्यवे ॥ १२ ॥ ईशानेन्द्रग्योर्मध्येद्वादशादित्यान् ॥ ॐ त्यांनुक्षत्रियां अवऽआदित्यान्या चिषामहे ॥ सुमृडीकाऽ अभिष्टये ॥ १३ ॥ इन्द्राग्न्योर्मध्ये अश्विनौ ॥ ॐ अश्विनावर्तिरस्मदागोमद्दस्रा हिरण्यवत् ॥ अर्वाग्रथं समनसानियच्छतम् ॥ १४ ॥ अग्नियमयोर्मध्येविश्वेदेवान् ॥ ॐ ओ मा सश्चर्षणीधृतो विश्वेदेवासऽआगत ॥ दाश्वां सोदाश्वाशुषः सुतम् ॥१५॥ तत्रैव पितॄन् ॥ ॐ आयन्तुनः पितरः सोम्यासोग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः॥ अस्मिन्यज्ञेस्वधयामदन्तोधिब्रुवन्तु तेवन्त्वस्मान् ॥ १६ ॥ यमनिर्ऋत्योर्मध्ये सप्तयक्षान् ॥ ॐ अभित्यं देवं सवितारमोण्योः कवि क्रतुमर्चासि सत्य सवंरत्न धामभिप्रियं मतिं कविम् ॥ ऊर्ध्वायस्यामतिर्भाऽअदिद्युतत्सवीमनि हिरण्यपाणि रमिमीत सुक्रतुः कृपास्वः ॥१७॥ निर्ऋति वरुणयोर्मध्ये सर्पान् ॥ ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमी दसदन्मातरं पुरः पितरं च प्रयन्त्स्वः ॥१८॥ वरुणवाय्वोर्मध्ये गन्धर्वाप्सरसो ॥ अप्सरसां गन्धर्वाणां मृगाणां चरणेचरन् ॥ केशीकेतस्यविद्वान्सखा स्वादुर्मदिन्तमः ॥ १९ ॥ ब्रह्मसोमयोर्मध्ये स्कन्दम् ॥ ॐ यदक्रन्दः प्रथमंजायमानऽउद्यन्त्समुद्रादुतवापुरीषात् ॥ श्येनस्य पक्षाहरिणस्यबाहूऽउपस्तुत्यंमहिजातन्तेऽअर्वन् ॥२०॥ तत्रैवनन्दीश्वरम् ॥ ऋषभंमासमानानां सपत्नानां विषासहिम् ॥ हंतारंशत्रूणां कृधिविराजं गोपतिंगवाम् ॥२१॥ तत्रैवशूलम् ॥ ॐ कद्रुद्रायप्रचेतसे मीढुष्टमायतव्यसे ॥ वोचे मशंतमंहृदे ॥२२॥ तत्रैव महाकालं ॥ ॐ कुमारं माता युवतिः समुब्धं गुहाविभर्तिनददातिपित्रे ॥ अनीकमस्यनमिवज्जनासःपुरः पश्यन्तिनिहितमरतौ ॥ २३ ॥ ब्रह्मेशानयोर्मध्ये दक्षम् ॥ ॐ अदितिर्ह्यजनिष्ट दक्षयादुहिता तव ॥ तां देवाऽअन्वजायन्त भद्राऽअमृतबंधवः ॥ २४ ॥ ब्रह्मेन्द्रयोर्मध्ये दुर्गां ॥ ॐ तामग्नि वर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलेषुजुष्टाम् ॥ दुर्गां देवीं शरणमहं प्रपद्येसुतरसितरसेनमः ॥ २५ ॥ ब्रह्मेन्द्रयोर्मध्ये विष्णुम् ॥ ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमेत्रेधानिदधेपदम् ॥ समूढमस्य पाᳫंसुरे स्वाहा ॥ २६ ॥ ब्रह्माग्न्योर्मध्ये स्वधाम ॥ ॐ उदीरतामवरसऽ-

उत्परासऽउन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः ॥ असुंयऽईयुरवृकाऽऋतज्ञास्ते नोवन्तुपितरोहवेषु ॥ २७ ॥ ब्रह्मयमयोर्मध्ये मृत्युरोगौ ॥ ॐ परंमृत्योऽअनुपरेहिपन्थांयस्ते सऽइतरोदेवयानात् ॥ चक्षुष्म ते शृण्वते ते ब्रवीमि मानः प्रजांरीरिषमोत वीरान् ॥ २८ ॥ ब्रह्मनिर्ऋत्योर्मध्ये गणपतिम् । गणानान्त्वा गणपतिं कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम् ॥ ज्येष्ठ राजं ब्रह्मणं ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नूतिभिः सीद सादनम् ॥ २९ ॥ ब्रह्मवरुणयोर्मध्ये अपः ॥ ॐ शन्नो देवी रभिष्टयऽआपोभवन्तु पीतये ॥ शंयो रभिस्रवन्तुनः ॥ ३० ॥ ब्रह्मवाय्वोर्मध्येमरुद्गणान् ॥ ॐ मरुतोयस्यहिक्षये पाथादिवोविमहसः ॥ ससु गोपातमोजनः ॥ ३१ ॥ ब्रह्मणः पाद मूले पृथ्वी ॥ ॐ स्योना पृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनि ॥ यच्छानः शर्म सप्रथाः ॥३२॥ तत्रैव गङ्गादि सरितः ॥ ॐ इमं मे गंगे यमुने सरस्वति शुतिद्रि स्तोमं स चताप रुष्णया ॥ असि कन्यामरुद्वृधे वितस्तयार्जी की ये शुणुह्या सुषोमया ॥३३॥ तत्रैवसप्तसागरान् ॥ ॐ धाम्नोधाम्नोराजन्नितोवरुणनोमुञ्च ॥ यदापोऽअघ्न्याऽइतिवरुणेति शपामहे ततोवरुणनोमुञ्च ॥ मयिवायोमोषधीर्हिंꣳ सीरतोविश्वव्यचाभूस्त्वेतो वरुणनोमुञ्च ॥३४॥ तदुपरिनाममन्त्रेण पूजयेत् ॥ ॐ मेरवेनमः ॥३५॥ ततो मण्डलाद्वहिः दिग्पाल हेतयः ॥ उत्तरे गदाम् ॥३६॥ ईशान्यांत्रिशूलं ॥३७॥ पूर्वेवज्रम् ॥३८॥ अग्नौशक्तिम् ॥३९॥ दक्षिणेदण्डम् ॥४०॥ निर्ऋत्यां खड्गम् ॥४१॥ पश्चिमे पाशम् ॥४२॥ वायव्यामंकुशम् ॥४३॥ तद्वाह्ये ॥ उत्तरेगौतमम् ॥४४॥ ईशान्याम्भरद्वाजम् । ॥४५॥ पूर्वे विश्वामित्रम् ॥४६॥ आग्नेयां कश्यपम् ॥४७॥ दक्षिणे यमदग्निम् ॥४८॥ नैर्ऋत्यां वसिष्ठम् ॥४९॥ पश्चिमे अत्रिम् ॥५०॥ वायव्यामरुन्धतीम् ॥५१॥ तद्वाह्ये पूर्वादिक्रमेण ॥ ऐन्द्रीं ॥५२॥ कौमारीं ॥५३॥ ब्राह्मीं ॥५४॥ वाराहीं ॥५५॥ चामुण्डाम् ॥५६॥ वैष्णवीं ॥५७॥ माहेश्वरीम् ॥५८॥ वैनायकीम् ॥५९॥ इत्यष्टौ शक्तयः ॥ चतुष्कोणेषु चतुष्कलशेषु यजुरादि चतुर्वेदेभ्यो नमः नाममंत्रेण पूजयेत् ॥ इति सर्वतो भद्र मण्डलस्थ देवान् पूजयित्वा तदुपरि कलशं प्रतिष्ठाप्य कलश प्रतिष्ठा २३ और प्राणप्रतिष्ठा ९८ पृष्ठ में देखिये ॥ ततः प्रधान देवतायाः प्राणप्रतिष्ठा दीन्कृत्वा पूजयेत् ॥

अथ पंचभूः संस्कार पूर्वकमग्नि स्थापनम् ॥

अथाचार्योस्थण्डिले कुण्डे वा पञ्चभूसंस्कारान्कृत्वा लौकिकाग्निं स्थापयेत् ॥ अथ पञ्चभूसंस्काराः ॥ तत्र कुशैर्हस्त परिमितां चतुरस्रां भूमिं परिसमुह्य (३ बार) तान्कुशानैशान्यां निक्षिप्य ॥ गोमयोदकेनोपलिप्य (३ बार) स्रुवमूलेनप्रादेशमात्रमुत्तरोत्तर क्रमेण प्रागग्रंत्रिरुल्लिख्य ॥ उल्लेखन क्रमेणानामिकां गुष्ठाभ्यां मृदमुद्धृत्य (३ बार) वारिणा तं देशमभ्युक्ष्य (३ बार) कांस्यपात्रस्थं लौकिकाग्निमग्नि कोणादानीय प्रत्यङ्मुखमुप समाधाय ॥ क्रव्यादांशंत्यजेदनेनमंत्रेण ॥ ॐ क्रव्यादमग्निंप्रहिणोमि दूरं यमराज्यं गच्छतुरिप्रवाहः ॥ इहै वा यमितरो जातवेदा देवेभ्यो हव्यं वहन्तु प्रजानन् ॥ अथावाहनम् ॥ ॐ अग्निं दूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे ॥ देवांऽआसादयादिह ॥ अग्न्यानीत पात्रे साक्षतोदकं निषिञ्चेत् ॥ संमुखी करणम् ॥ ॐ चत्वारि शृङ्गात्रयोऽअस्य पादाद्वेशीर्षे सप्त हस्ता सो अस्य ॥ त्रिधावद्धो वृषभो रोरवीति महोदेवोमर्त्यांऽआविवेश ॥ अग्ने वैश्वानर शांडिल्य गोत्र शांडिल्यासित देवलेति त्रिप्रवरान्वित भूमिमातः वरुणपितः मेषध्वज प्राङ्मुखमम संमुखोभव ॥ वरदनामाग्नि प्रतिष्ठाप्य ॥ वरदनामाग्नये नमः॥ इति नाम मंत्रेण वायव्य कोणस्थंडिलाद्वहिरग्नि पूजनं विधाय । अथ ध्यानम् ॥ॐ(१)रुद्रतेज समुद्भूतं द्विमूर्द्धानं द्विनासिकम् ॥ षण्नेत्रं च चतुःश्रोत्रं त्रिपादं सप्तहस्तकम् ॥ याम्यभागे चतुर्हस्तं सव्य भागे त्रिहस्तकम् ॥ श्रुवं श्रुचिं च शक्तिश्च अक्षमालां च दक्षिणे ॥ तोमरं व्यञ्जनं चैवघृतपात्रं तु वामके ॥ विभ्रंतं सप्तभिर्हस्तैर्द्विमुखंसप्तजिह्वकम् ॥ दक्षिणे च चतुर्जिह्वं त्रिजिह्वं चोत्तरेमुखे॥ द्वात्रिंशत्कोटिमूर्त्याख्यं द्विपंचाशत्कलायुतं ॥ स्वाहास्वधा वषट् कारैरंकितं मेषवाहनम् ॥ रक्तमाल्याम्बररक्त रक्तपद्मासने स्थितं ॥ रुद्रं त्वां शुभना-

---

१ लक्ष्मीं ऋतु मतींतत्र प्रभोर्नारायणस्य च ॥
प्राप्य धर्मेण संजातमग्नि तत्र विचिन्तयेत् ॥

मांहंवन्हि मावाहयाम्यहम् ॥ त्वंमुखे सर्वदेवानां सप्तार्चिरमित द्युते ॥ आगच्छभगवन्नग्ने यज्ञेस्मिन्सन्निधिं कुरु ॥ ॐ अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम् ॥ हिरण्यवर्ण मनलं समृद्धं विश्वतोमुखम् ॥

अथ कुशण्डिका विधिः ॥

तत्रादौ कुण्ड (स्थंडिल) पश्चिमे यजमान उपविश्य ॥ देशकालौ संकीर्त्य–अमुक गोत्रोमुक शर्म्माहं दुर्गाहवन कर्मणि इदं हविर्द्रव्यं गणेश पञ्चोंकार द्वादशविनायक षोडशमातृका वास्तु पुरुष सपैतृक विश्वेदेवा ६४ योगिनि सप्तवसोद्धारा सूर्यादिग्रहा ईश्वराद्यधिदेवताग्न्यादि प्रत्यधि देवता पञ्चलोक पाल १० दिग्पाल ब्रह्मादि सर्वतोभद्र मण्डलस्थ पञ्चाशद्देवताभ्यो नमम ॥ ततआचार्योग्नेर्दक्षिणतः परिस्तरण भूमित्यक्त्वा ब्रह्मणे आसनं दत्वा तदुपरि प्रागग्रानुदगग्रान्कुशानास्तीर्य ब्रह्माणमग्नि प्रदक्षिण क्रमेणानीय अस्मिन्दुर्गाहवनकर्मणि त्वं मे ब्रह्माभव ॥ इत्यभिघाय ॥ वरण कर्मणा पूर्व संपादितं ब्राह्मणं तदभावे ५० पञ्चाशत्कुशनिर्मितं (ब्रह्माणं) कल्पितासने उपवेशयेत् पूजयेच्च ॥ ततः प्रणीतापात्रं पुरुतः कृत्वा जलेनापूर्य कुशत्रयेणाच्छाद्य ब्रह्मणोमुखमवलोक्य ॥ अग्नेरुत्तरतः कुशोपरिनिदध्यात् ॥

ततः परिस्तरणम् ॥

वर्हिषश्चतुर्थ (१६) भागमादाय चतुर्भिर्दर्भैः पूर्वाग्रैराग्नेया दीशानान्तम्॥४॥प्रागग्रैर्ब्रह्मणोग्निपर्यन्तम्॥४॥ प्रागग्रैर्नैर्ऋत्याद्वायव्यान्तम्॥४॥ प्रागग्रैरग्नितः प्रणीतापर्यन्तम् ॥४॥ परिस्तरणं कृत्वा ॥ ततः अग्नेरुत्तरतः पश्चिमदिशि पवित्र छेदनार्थं कुशात्रयम् ॥ पवित्र करणार्थ पवित्रे साग्ने-

---

दशाङ्ग धूपस्तु हेमाद्रौ व्रतखण्डे ॥

षड् भाग कुष्ठं द्विगुणो गुडश्च लाक्षात्रयं पञ्च नखस्य भागाः ।
हरीतकी सर्ज रसः समांशं भागैकमेकं त्रिलवं शिलाजम् ॥
घनस्य चत्वारि पुरस्यचैको धूपोदशाङ्गः कथितो मुनीन्द्रैः ॥

अनन्तर्गर्भद्विकुशंपत्रे ॥ प्रोक्षणी पात्रम् ॥ आज्यस्थाली ॥ चरुस्थाली ॥ संमार्जन कुशाः पञ्च ॥ उपयमन कुशाः सप्त ॥ समिधस्तिस्रः पालाश्यः प्रादेशमात्राः ॥ स्रुवः खादिरो हस्तमात्रः ॥ आज्यं गव्यम् ॥ शोधितास्तन्दुलाः ॥ पूर्णपात्रम् ॥ दक्षिणा वरोवा ॥ पवित्र छेदन कुशानां पूर्व पूर्व दिशिक्रमेणासादनीयम् ॥ ततः पवित्रच्छेदनैः पवित्र करणम् । द्वयोः पवित्रयोरुपरि पवित्र त्रयंनिधाय ॥ अग्रतः प्रादेशमात्रं विहाय त्रिभिः कुशैर्द्विकुशतरुणे प्रच्छिद्य ॥ द्वयोर्मूलं त्रीणिचोत्तरतःक्षिपेत् ॥ ततः सपवित्र हस्तेन प्रणीतोदकं त्रिःप्रोक्षणीपात्रेनिक्षिप्य ॥ अनामिकांगुष्ठाभ्यामुत्तराग्रे पवित्रो गृहीत्वा त्रिरुत्पवनम् ॥ प्रोक्षणी पात्रस्य सव्यहस्ते करणम् ॥ अनामिकांगुष्ठाभ्यां पवित्रेगृहीत्वा त्रिरुद्दिङ्गनम् ॥ ततः प्रणीतोदकेन प्रोक्षणी प्रोक्षणम् ॥ प्रोक्षणी जलेन आज्यस्थाल्यादीनि पूर्णपात्र पर्यन्तानि क्रमेणैकैकशःप्रोक्ष्य ॥ असञ्चरो प्रणीताग्न्योरन्तरालेप्रोक्षणीपात्रंनिधाय ॥ आसादितमाज्यं पश्चादग्नेर्निहितायामाज्यस्थाल्यां प्रक्षिप्य ॥ चरुस्थाल्यां प्रणीतोदकमासिच्य ॥ आसादितांस्तंडुलान्प्रक्षिप्य ॥ तत्राज्यं ब्रह्माधिश्रयति ॥ तदुत्तरतः स्वयं चरुमेवयुग पदग्नावारोप्य ईषच्छृते चरौ ज्वलदुल्मुकंप्रदक्षिणंआज्यचर्वोःसमन्ताद्भ्रामयेत् ॥ दक्षिणपाणिना स्रुवमादाय॥ अधोमुखमग्नौतापयित्वा सव्यपाणौ कृत्वा ॥

कुशंडिका

दक्षिणेनसंमार्जनाग्रैर्मूलतोग्रपर्यंतं मूलैरग्रमारभ्य अधस्तान्मूल पर्यन्तं ॥ संमृज्यप्रणीतोदकेनाभिषिञ्च्य ॥ पुनः प्रतप्य दक्षिणतोनिदध्यात् ॥ ततः आज्यमुत्थाप्य ॥ चरोः पूर्वेणनीत्वाग्नेरुत्तरतः स्थापयित्वा ॥ चरुमुत्थाप्य ॥ आज्यस्य पश्चिमतो नीत्वाज्यस्योत्तरतः स्थापयित्वा आज्यमग्नेः पश्चादानीय ॥ चरुं चानीय ॥ आज्यस्योत्तरतो निदध्यात् ॥ तत पूर्ववत्पवित्राभ्यामाज्यमुत्पूय ॥ अवलोक्य ॥ तस्मादप द्रव्यनिरसनं पुनः प्रोक्षिण्युत्पवनं ॥ ततः उपयमन–कुशानादाय ॥ उत्तिष्ठन् प्रजापतिम्मनसाध्यात्वा ॥ तूष्णीमग्नौघृताक्ताः समिधस्तिस्रः

प्रक्षिपेत् ॥ ततउपविश्य ॥ प्रोक्षिण्युदकेन सपवित्रेणाग्निमीशानादिउदक्पर्यन्तं परिषिच्य ॥ दक्षिणजान्वाच्य ॥ ब्रह्मणान्वारब्धः ॥ यजमानेनान्वारब्धश्च समिद्धतमेग्नौ स्रुवेणाज्याहुतीर्जुहुयात् ॥ तत्राघारावाज्यभागौ च हुत्वा अनन्तरंस्रुवावस्थितहुतशेषंघृतस्यप्रोक्षणी पात्रेप्रक्षेपः ॥

अथ होमः ॥

अग्नेरुत्तरभागे । ॐ (नमः) प्रजापतये स्वाहा, प्रजापतये इदंनमम ॥ अग्नेर्दक्षिणभागे ॥ ॐ इन्द्राय स्वाहा, इन्द्रायेदन्नमम ॥ इत्याघारौ ॥ मध्येसमिद्धतमे ॥ ॐ अग्नये स्वाहा, अग्नयेदन्नमम ॥ ॐसोमाय स्वाहा, सोमायेदन्नमम ॥ इत्याज्यभागौ ॥ अथाचार्योऽग्निं सम्पूज्य ॥ ततः गणेशादिमण्डल स्थापितदेवानां हवनं कुर्यात्तथैव सर्वतो भद्रमण्डलस्थ देवानामपि कुर्यात् ॥ पुनः कवचार्गला कीलकं पठित्वा नवार्णंन्यासान्विधाय नवार्णेनापि १०८ हुत्वा ततः सप्तशती न्यासान्कृत्वा च मार्कण्डेय उवाच इत्यारभ्य ॐ सावर्णिर्भवितामनुरित्यन्तं हुत्वा पुनरुत्तरन्यासान्विधाय १०८ नवार्णं च जुहुयात् ॥ ततो हुतशेषं हविर्द्रव्यं गृहीत्वा ब्रह्मणान्वारब्धः स्विष्टकृद्धोमंकुर्यात ॥ ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा. इदमग्नये० ॥ ततोभूराद्यानवाहुतयः ॐ भूः स्वाहा, इदमग्नये ॥ ॐ भुवः स्वाहा, इदंवायवे॥ॐस्वः स्वाहा, इदमग्निवायुसूर्येभ्यः॥ॐत्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्यहेडोऽअवयासि सीष्ठाः॥ · यजिष्ठोवन्हितमः शोशुचानो विश्वाद्वेषा थं सिप्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा, इदमग्नी वरुणाभ्याम् ॐ सत्वन्नोऽअग्नेवमो भवोतीनेदिष्ठो अस्याऽउषसोव्युष्टौ अवयक्ष्वनो वरुणठं० रराणो वीहिसुमृडीकठं० सुहवोनऽएधि स्वाहा, इदमग्नीवरुणाभ्याम् ॥ॐअयाश्चाग्नेस्य नभिशस्तिपाश्चसत्वमित्व मयाऽअसि॥अयानो यज्ञं वहास्ययानोधेहि भेषजठं० स्वाहा, इदंअयसेऽअग्नये ॥ ॐ येते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञिया पाशा विततामहान्तः ॥ ते भिर्नोऽअद्य सवितो तविष्णुर्मुंचन्तु मरुतःस्वर्काः स्वाहा, इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च ॥ ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्म दवा-

धमं विमध्यमर्ठ० श्रथाय ॥ अथावयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा ॥ इदंवरुणाय ॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये ॥ ॐ अग्नयेस्विष्ट कृते स्वाहा, इदमग्नये स्विष्टकृते ॥

अथ बलिदानम् ॥

अद्य कृतस्य कर्मणः सांगता सिद्ध्यर्थं दिग्पाल पूर्वकं आदित्यादि ग्रह मण्डल स्थापित देवताभ्यो बलिदानंच करिष्ये ॥पूर्वे॥ ओं त्रातारमिन्द्र मविता रमिन्द्र र्ठ० हवे हवे सुहव र्ठ० शूरमिन्द्रम् ॥ ह्वयामिशक्रं पुरु हूतमिन्द्रर्ठ० स्वस्तिनोमघवाधात्विन्द्रः ॥ इन्द्रायनमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पादिना संपूज्य एवं सर्वत्र ॥ ॐइन्द्राय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीप दधिमाषभक्त बलिं समर्पयामि ॥ भो इन्द्र दिशं रक्ष बलिं भुङ्क्ष्व मम सकुटुम्बस्य अभ्युदयं कुरु आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता वरदोभव ॥ अनेन बलिदानेन इन्द्रः प्रीयताम् ॥ अग्निकोणे ॥ ॐ त्वन्नोऽअग्नेतवदेव पायुभिर्मघोनो रक्षतन्वश्चवन्द्य ॥ त्राता तो कस्यतनयेगवा मस्य निमेषर्ठ० रक्षमाणस्तवव्रते ॥ अग्नयेनमः ॥ अग्नयेसा० ॥ भो अग्नेदिशं० ॥ दक्षिणेयमम् ॥ ओं यमाय त्वांगिरस्वतेपितृमते स्वाहा । स्वाहाघर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे ॥ यमाय नमः ॥ भोयम० ॥ नैर्ऋत्यां ॥ ओं असुन्वन्तम यजमानमिच्छस्तेन स्येत्यामन्विहितस्करस्य ॥ अन्यमस्मदिच्छ सातऽइत्यानमोदेविनिर्ऋते तुभ्यमस्तु ॥ निर्ऋतयेनमः ॥पश्चिमे॥ ओं तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्त दाशास्तेयजमानो हविर्भिः ॥ अहेडमानो वरुणेहवोध्युरुशठँ० समानऽआयुः प्रमोषीः ॥ वरुणायनमः॥वायव्यां॥ ओं आनोनियुद्भिःशतिनीभिरध्वरठँ० सहस्रिणीभिरुपयाहियज्ञम् ॥ वायोऽअस्मिन्त्सवनेमादयस्वं यूयंपातस्वस्तिभिः सदानः ॥ वायवे० ॥ उत्तरे ॥ ओं वयठँ० सोमव्रते तव मनस्त नूपु बिभ्रतः ॥ प्रजावन्तः सचेमहि ॥ सोमाय० ॥ ईशान्यां ॥ ओं तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियं जिन्वमवसेहूमहेवयम् ।पूषानोयथावेदसामसद्वृधेरक्षितापायुरदब्धः ॥ स्वस्तये ॥ ईश्वराय० ॥ पूर्वेशानयोर्मध्ये ॥ ऊर्ध्वे ॥

ॐ अस्मेरुद्रामेहनापर्वतासोवृत्रहत्ये भरहूतौसजोषाः ॥ यः शठँ० सतेस्तुवतेधायिपज्र इन्द्रोज्येष्ठाऽअस्मांऽअवन्तुदेवाः ॥ ब्रह्मणे० ॥ नैर्ऋतिपश्चिमयोर्मध्येऽधोभागे ॥ ॐ स्योनापृथि विनोभवान्नृक्षरा निवेशनी ॥ यच्छानः शर्म स प्रथाः ॥ अनन्ताय० ॥ ततो ग्रहवेदिसमीपे सूर्यादिग्रहाणां बलिः ॥ ॐ आकृष्णेन रजसा० ॥ सूर्यादिग्रहेभ्यः अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहितेभ्यः सांगेभ्यः सप० सश० इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि ॥ भो भो सूर्यादि देवताः दिशः रक्षत बलिंभक्षत दीपं पश्यत ॥ मम (यजमानस्य) सकुटुम्बस्याभ्युदयं कुरुत ॥ आयुःकर्तारः क्षेमकर्तारः शान्तिकर्तारः पुष्टिकर्तारः तुष्टिकर्तारः निर्विघ्न कर्तारः वरदाभवत ॥ अनेनबलिदानेन सूर्यादि ग्रहाः प्रीयन्ताम् ॥ ततो १६ मातृणामेकबलिं दद्यात् ॥ ॐ समख्येदेव्याधियासं दक्षिणयोरुचक्षसा ॥ मामऽआयुः प्रमोषीर्मोऽअहन्तववीरम्विदेयतवदेविसंदृशि ॥ गौर्यादि मातृभ्य इमं सदीपमाष भक्त बलिं समर्पयामि, भो भोगौर्यादि मातर इमं बलिं गृह्णीत मम (यजमानस्य) सकुटुम्बस्याभ्युदयं कुरुत आयुः कर्त्र्यः क्षेमकर्त्र्यः शान्तिकर्त्र्यः पुष्टिकर्त्र्यः तुष्टिकर्त्र्यः निर्विघ्न कर्त्र्यः वरदाभवन्तु ॥ बलिदानेनानेन गौर्यादिषोडशमातरः प्रीयन्ताम् ॥ ततः प्रधान बलिः ४६ पृष्ठ में देखिये ॥ क्षेत्रपाल बलिदान ४१४ पृष्ठ में है ॥

अद्येत्यादि वासन्तिक (शारदीय) नवरात्रौ हवनकर्मणि सांगतासिद्ध्यर्थं गणपत्यादि मण्डल स्थापित देवानामुत्तर पूजनं करिष्ये॥ ॐ गणानान्त्वा० ॥ ॐ ग्रहाऽऊर्जाहुतयो०यन्त विप्रायमतिम् ॥ तेषां विशिप्रियाणां वोहऽइषमूर्जँठँ० समग्रभम् ॥ ॐ अम्बेऽअम्बिकेम्बालिके० ॥ गणेशादि मण्डल स्थापितसर्वेभ्योदेवताभ्योनमः ॥ गन्धादिभिः संपूज्य ॥ वेदपाठः ॥ ॐ इषेत्वोर्जेत्वावायवस्थ देवोवः सविताप्रार्पयतुश्रेष्ठतमायकर्मणऽआप्यायध्वमघ्न्याऽइन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवाऽअयक्ष्मामा वस्तेनऽईशतमाघशठँ० सो ध्रुवाऽअस्मिन्गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून्पाहि ॥ ॐ अग्निमीलेपुरोहितं यज्ञस्यदेव-

मृत्विजम् । होतारं रत्नधातमम् ।। ओं अग्नऽआयाहि पीतये गृणानो-हव्यदातये । निहोता सत्सि बर्हिषि ।। ओं शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये । शंयोरभिस्रवन्तु नः ।। ओं ब्रह्मामुरारिस्त्रिपुरांतकारी भानुश्शशी भूमिसुतो बुधश्च । गुरुश्च शुक्रश्शनिराहुकेतवः सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु ।। हवन का दशांश ।। पात्र में कच्चा दूध जल मिलाकर हाथ में कुशा लेकर इस मन्त्र से तर्पण करना चाहिए जिन महानुभावों ने हवन करा है—दुर्गां तर्पयामि नमः ।। तर्पण से दशांश, दुर्गां मार्जयामि नमः ।। इससे मार्जन करना ।।

अथ पूर्णाहुतिः ।।

एवं होमं समाप्य उत्तराङ्गानि कुर्यात् ।।
पूजास्विष्टं नवाहुत्यो बलिः पूर्णाहुतिस्तथा ।।
आशीर्वादप्रदानं च अभिषेको विसर्जनम् ।।

ततो यजमानपत्नीमाहूय ग्रन्थिबन्धनं कृत्वा तद्दक्षिणे स्थित्वा गणेशादिदेवताभ्यो नमः ।। इत्येनन गंधाक्षतादिभिः संपूज्य ।। पश्चात् ॐ अग्ने नय सुपथारायेऽअस्मान्विश्वानि देवव्वयुनानि व्विद्वान् ।। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नमऽउक्तिंविधेम ।। मृडग्नयेनमः इति-गन्धादिभिः संपूज्य ।। ॐ अद्येत्यादि० कृतस्य दुर्गाहवनकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं वसोर्द्धारासमन्वितं पूर्णाहुतिहोमं करिष्ये ।। ततः पात्रांतरे स्रुवेण चतुर्गृहीताज्यं द्वादशवारं गृहीतं वा गृहीत्वा पात्रोपरि(समिधं) धृत्वा वस्त्रफलताम्बूलगंधमाल्यादिभिरलंकृत्य गृहीत्वा पात्रं स्रुच्युपरिनिधाय धृत्वोभयपाणिभ्यां यजमानस्तिष्ठेत् ।। ॐ समुद्रादूर्मिर्मधुमा ७ उदारदुपा ७ शुनासममृतत्वमानट् ।। घृतस्य नाम गुह्यन्त्यदस्ति जिह्वा देवानाममृतस्य नाभिः ।।१।। चत्वारि शृङ्गा त्रयोऽअस्यपादा द्वेशीर्षे सप्त हस्तासोऽअस्य त्रिधावद्धो वृषभो रोरवीति महोदेवो मर्त्यांऽ आविवेश ।। २ ।। पुनस्त्वादित्या रुद्रा व्वसवः समिन्धताम्पुनर्ब्रह्माणो व्वसुनीथ यज्ञैः ।। घृतेन त्वंतन्वंव्वर्धयस्वसत्याः संतु यजमानस्यकामाः ।३। सप्ततेऽअग्ने समिधः सप्तजिह्वः सप्तऽऋषयः सप्तधाम प्रियाणि ।। सप्तहोत्राः सप्तधा त्वा यजन्ति सप्तयोनीरापृणस्वाघृतेन स्वाहा ।।४।। पूर्णादर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत । वस्नेव विक्रीणावहाऽइषमूर्जं०

शतक्रतो स्वाहा ॥ ५ ॥ इदमग्नये वैश्वानराय वसुरुद्रादित्येभ्यः शतक्रतवे सप्तवते अग्नये अद्भ्यश्च न मम ॥ वरुणकलशे त्यागः ॥ ततोवसोर्द्धारां जुहुयात् ॥ सप्ततेऽअग्ने समिधः० ॥ ततः अग्निप्रार्थना ॥ श्रद्धां मेधां यशः प्रज्ञां विद्यां पुष्टिं श्रियं बलम् ॥ तेजआयुष्यमारोग्यं देहिमे हव्यवाहन ॥ भोभो अग्ने महाशक्ते सर्वकर्मप्रसाधन ॥ कर्मांतरे पि संप्राप्ते सान्निध्यं कुरु सर्वदा ॥

त्र्यायुषकरणम् ॥ ॐत्र्यायुषं यजमदग्नेरितिललाटे ॥ ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषमितिग्रीवायाम् ॥ ॐ यद्देवेषुत्र्यायुषमिति दक्षिणांसे ॥ तन्नो अस्तु त्र्यायुषमिति हृदि ॥ वामस्कन्धे च ॥ ततः संस्रवप्राशनम् ॥ पवित्राभ्यां मार्जनम् ॥ अग्नौ पवित्र प्रतिपत्तिः ॥ ब्रह्मणे पूर्णपात्रदानम् ॥ तद्यथा, अद्येत्यादि पठित्वा ॥ अद्य कृतैतद्दुर्गाहवनाख्य कर्मणि हवनकर्मप्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं सदक्षिणम् प्रजापतिदेवतममुकगोत्राय—अमुकशर्म्मणे ब्राह्मणाय ब्रह्मणे तुभ्यमहं संप्रददे ॥ ॐ स्वस्तीति प्रतिवचनम् ॥ ततो ब्रह्मग्रन्थिविमोकः ॥ ततः प्रणीतोदकेन ॥ ॐ सुमित्रियानऽआपऽ ओषधयः सन्त्विति ॥ ॐ आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमाः तास्ते कृण्वन्तु भेषजमिति ॥ यजमान मूर्द्धानमभिषिञ्चति ॥ ततः दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः । इति ईशान्यां प्रणीतां न्युब्जी कुर्यात् ॥ ततः परिस्तरण क्रमेणबर्हिरुत्थाप्याज्येनाभिघार्य ॥ ॐ देवतागातुविदोगातुं वित्वागातुमित ॥ मनसस्पतऽइमं देवयज्ञठं० स्वाहा वातेधाः स्वाहा ॥ इतिमन्त्रेण हस्तेनैव जुहुयात् ॥ ततः कलशजलं एकस्मिन्पात्रे निधाय दूर्वया यजमान मूर्द्धनि षिचेत् ॥ आपोहिष्ठेत्यादि ३ मन्त्रैः ॥ आपोऽअस्मान्मातरः शुन्धयन्तु घृतेननोघृतप्वः पुनन्तु ॥ विश्वठं० हिरिप्रम्प्रवहन्ति देवीरुदिदाभ्यः शुचिरापूतऽएमि ॥ ४ ॥ इदमापः प्रवहताव्वद्यञ्चमलञ्च यत् ॥ यच्चाभिदुद्रोहानृतंयच्चशेपेऽअभीरुणम् ॥ आपोमातस्मादेनसः पवमानश्च मुञ्चतु ॥५॥ यतोयतः समीहसे ततो नोऽअभयङ्कुरु ॥ शन्नः कुरु प्रजाभ्यो भयन्नः पशुभ्यः ॥ ११ ॥ अथपुराणोक्तमन्त्राः ॥ सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ॥ वासुदेवो

---

* अभिषेक में पत्नी को वाम भाग में बिठाना चाहिए ॥

जगन्नाथस्तथासंकर्षणो विभुः ॥१॥ प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्च भवन्तु विजयाय ते ॥ आखण्डलोग्निर्भगवान्यमो वै निर्ऋतिस्तथा । २ । वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथाशिवः ॥ ब्रह्मणा सहिताः सर्वे दिग्पालाः पांतु ते सदा ॥ ३ ॥ कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधापुष्टिः श्रद्धाक्रियामतिः ॥ बुद्धिर्लज्जावपुः शान्तिस्तुष्टिः कान्तिश्च मातरः ॥ ४ ॥ एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु देवपत्न्यः समागताः ॥ आदित्यश्चंद्रमाभौमबुधजीवसितार्कजाः ॥ ५ ॥ ग्रहास्त्वामभिषिञ्चन्तु राहुकेतुश्च तर्पिताः ॥ देवदानव गन्धर्वाः यक्षराक्षसपन्नगाः ॥६॥ ऋषयो मनवो गावोदेवमातर एवच ॥ देवपत्न्यो द्रुमान्नागा दैत्याश्चाप्सरसांगणाः ॥७॥ अस्त्राणि सर्व शस्त्राणिराजानो वाहनानि च । औषधानिच रत्नानिकालस्यावयवाश्च ये ॥ ८ ॥ सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः ॥ एतेत्वामभिषिञ्चन्तु सर्वकामार्थसिद्धये ॥ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ० शान्तिः० ॥

आरती पृष्ठे लिखितः ॥

मन्त्रपुष्पाञ्जलिः पृष्ठे ॥ ये तीर्थानिप्रचरन्तिसृकाहस्ता निषङ्गिणः ॥ तेषाꣳसहस्रयोजनेऽवधन्वानितन्मसि ॥ यानिकानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च ॥ तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिण पदेपदे ॥ पापोहं पापकर्माहं पापात्मा पापसंभवः ॥ त्राहि मां चण्डिके देवि सर्वपापहराभव ॥ प्रणाम करना ॥ गोचारिणीदक्षिणा ॥ अद्येत्यादिकृतस्य दुर्गाहवनाख्यकर्मणि अपूर्णपूर्णार्थं न्यूनातिरिक्तदोषपरिहारार्थं गोरभावे गोचारिणीं (गोदुग्धपानार्थंवा) दक्षिणां अमुक गोत्राय अमुकशर्म्मणे सुपूजिताय ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे ॥ कृतस्य दुर्गाहवनकर्मणि सांगतासिद्ध्यर्थं नाना गोत्रेभ्यः आचार्यादिऋत्विग्भ्यो दक्षिणां यथायथं विभज्य युष्मभ्यमहमुत्सृजे ॥ भूयसीदानम् ॥ कृतस्य दुर्गाहवनकर्मणः सांगतासिद्धयर्थं अपूर्णपूर्णार्थं भूयसीं दक्षिणां नानानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दीनानाथेभ्यो अन्धपंगुभ्यश्च यथायथं विभज्यदातुमहमुत्सृजे ॥

आशीर्वादः ॥

ॐस्वस्तिनऽइन्द्रो० ॥ श्रीर्वर्चस्वमा० ॥ पुनस्त्वारुद्रादित्या० ॥ मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः । शत्रूणां बुद्धिनाशोस्तुमित्राणामुदयस्तथा ॥ आयुष्कामो यशस्कामो पुत्रपौत्रस्तथैव च ॥ आरो-

ग्यं धनकामश्चसर्वेकामाभवन्तुते । आशिषोगृह्णीयात् । ततो देवताग्निविसर्जनम् ॥ यान्तु देवगणाः सर्वे स्वशक्त्यापूजिता मया । इष्टकामप्रसिद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च ॥ ॐ उत्तिष्ठब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे ॥ उपप्रयन्तु मरुत सुदानवऽ इन्द्रप्राशूर्भवासचा ॥ गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर ॥ यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशन ॥ पुष्पाक्षत छोड़ै ॥ मासोत्तमे अमुकमासे अमुक पक्षेऽमुकतिथौ मया यत्कृतं दुर्गाहवनशांत्याख्यं कर्म तत्कालहीनं भक्तिहीनं श्रद्धाहीनं ब्राह्मणानां वचनात् श्रीसूर्याद्यावाहितदेवताप्रसादात्सर्वं परिपूर्णमस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु ॥ अस्तु परिपूर्णं इति ब्राह्मणाः अपि ब्रूयुः । प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत् ॥ स्मरणादेव दुर्गायाः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः ॥ यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु । न्यूनं संपूर्णतां याति सद्यो वंदे तु चण्डिकाम् ॥ एवं य कुरुते शांतिं वेदशास्त्र प्रमाणतः ॥ तदनिष्टं तु सकलं सद्य एव विनश्यति ॥ दुर्गार्चनसृतिः समाप्ता ॥

हवन क्रम सूत्र ॥

आदौ गणेश्वरः पूज्यः ओंकारं पंचधा ततः ॥ गणयागो गणेशस्य वास्तु योगिनिपूजनम् ॥ मातरो मातृपूजा च वृद्धिः श्राद्धमतः परम् ॥ ऋत्विजां वरणं रक्षाविधिवच्च कुशंडिका ॥ उत्पत्तिस्थापनं प्रोक्तं कलशं तदनन्तरम् ॥ प्रधानावाहनं पूजाग्रहादीनां च पूजनम् ॥ होमश्च बलिदानं च पूजायास्तदनन्तरम् ॥ वेदपाठोग्रहां स्तुत्वा द्विजातीनां प्रतर्पणम् । पूर्णाहुत्यभिषेकं च ततो यज्ञप्रदक्षिणा ॥ विसर्जनंक्रमः शान्तेर्घनश्यामेन कीर्तितम् ।

* * *